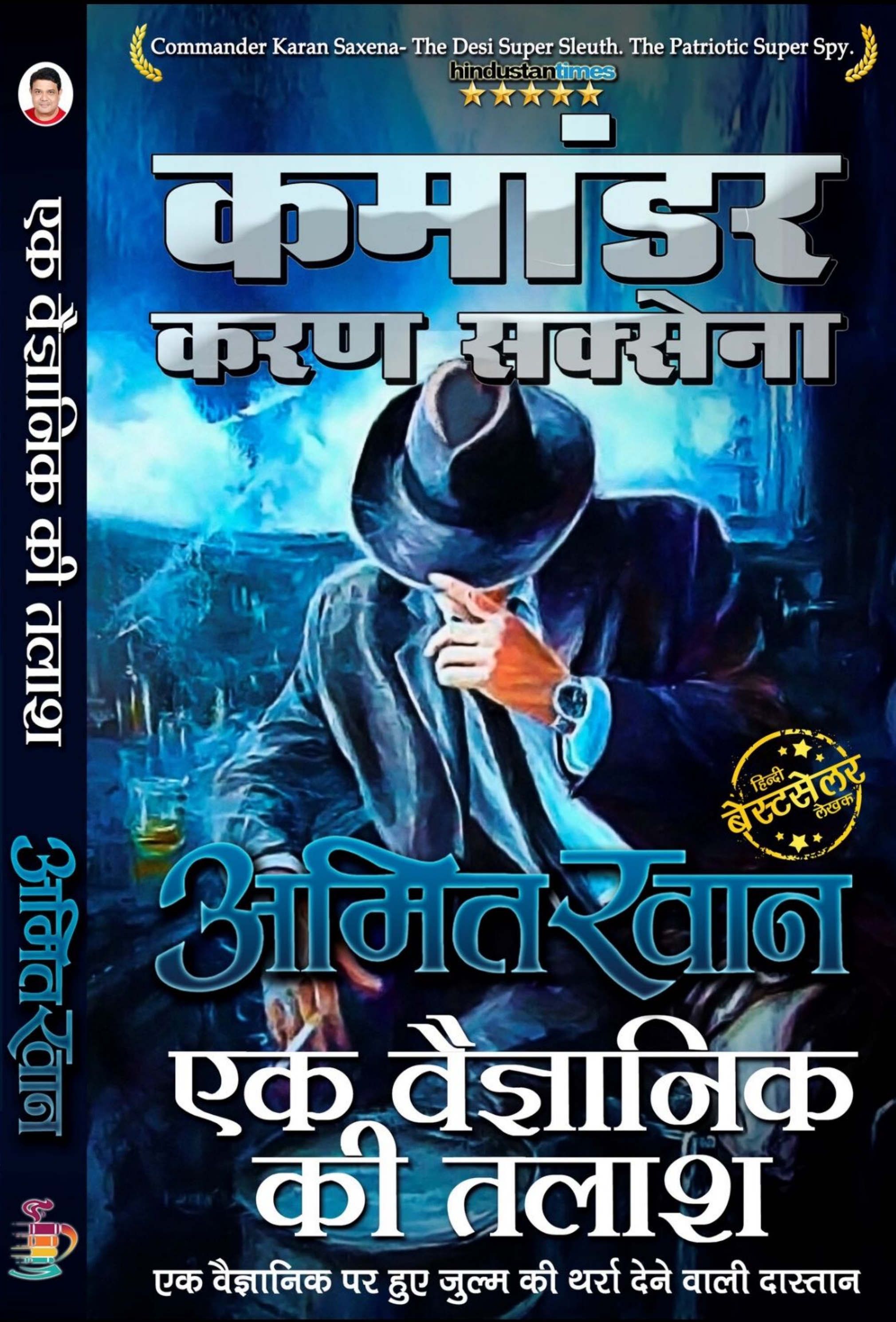

Commander Karan Saxena- The Desi Super Sleuth. The Patriotic Super Spy.
hindustantimes
कमांडर
करण सक्सेना
हिन्दी बेस्टसेलर लेखक
अमित खान
एक वैज्ञानिक की तलाश
एक वैज्ञानिक पर हुए जुल्म की थर्रा देने वाली दास्तान
एक वैज्ञानिक की तलाश
अमित खान



एक वैज्ञानिक की तलाश

अमित खान

एक वैज्ञानिक पर हुए जुल्म की कहानी।

वह एक पाक़िस्तानी वैज्ञानिक था। लेकिन रहम के क़ाबिल था। इन्साफ के क़ाबिल था। उस पर उसके अपनों ने ही जुल्म किया था।

एक वैज्ञानिक की तलाश

अमित खान

इयान फ्लेमिंग जैसा एक्शन । अगाथा क्रिस्टी जैसा सस्पैंस ।
जेम्स हेडली चेइज़ जैसा थ्रिल । सब एक जगह । एक साथ ।
हिन्दी उपन्यासों के बेताज बादशाह 'अमित खान' के उपन्यास में ।

'अमित खान' मतलब बेहतरीन उपन्यासों की गारन्टी ।

एक वैज्ञानिक की तलाश

कमाण्डर करण सक्सेना सीरीज

ISBN: 978-81-953684-8-8

पहला संस्करण: 1990
दूसरा संस्करण: 2002
तीसरा संस्करण: मई 2016
चतुर्थ संस्करण: अगस्त 2021

लेख़क का परिचय

लेखक का जन्म गाजियाबाद जनपद के पिलखुआ क़स्बे में हुआ । उनके द्वारा लिखी गयी पहली कहानी मात्र 12 वर्ष की अल्प आयु में और पहला उपन्यास मात्र 15 वर्ष की आयु में प्रकाशित हो गया था, जो संभवत विश्व रिकॉर्ड है । उनके द्वारा लिखी गयी कहानियां बहुत कम आयु में ही देश की बड़ी प्रसिद्द पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं ।

देश के बड़े प्रकाशन संस्थानों द्वारा अभी तक उनके लिखे गए 100 से ज्यादा उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं ।

देश के प्रसिद्ध 'राइटर फेस्टिवल' में उन्हें 'स्पीकर' के तौर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है ।

उन्होंने 'डायमंड कॉमिक्स' भी काफी बड़ी संख्या में लिखे, जो हिंदी, अंग्रेजी और बंगला भाषाओ में प्रकाशित हुए ।

इसके अलावा आज उनका पात्र 'कमाण्डर करण सक्सेना' हिंदी उपन्यास जगत में मील का पत्थर बन चुका है, जिस सीरिज पर उन्होंने 58 उपन्यास लिखे ।

वह आजकल मुंबई में रहते हैं और मुंबई फ़िल्म इंडस्ट्री में भी काफी सक्रिय हैं । उनके द्वारा लिखी कथा, पटकथा, संवादों पर कई भाषाओँ (हिंदी-मराठी-पंजाबी) में फ़िल्में बन चुकी हैं और टीवी पर भी वह अभी तक अलग-अलग धारावाहिकों के सौ से ज्यादा एपिसोड लिख चुके हैं ।

उन्हें 'विश्व हिंदी अकादमी ' द्वारा 'हिंदी सेवा सम्मान' से भी अलंकृत किया जा चुका है ।

'नाशिक इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल' में भी उन्हें 'बेस्ट कथा –पटकथा' का अवार्ड दिया गया है ।

इस समय आपके हाथ में उन्ही हिंदी उपन्यासों के बेताज बादशाह 'अमित खान' का एक बेहद तेजरफ़्तार उपन्यास '**एक वैज्ञानिक की तलाश**' है, जो आपका भरपूर मनोरंजन करने वाला है ।

कमांडर करण सक्सेना

एक संक्षिप्त परिचय

- **वह भारत की सर्वोच्च जासूसी संस्था रॉ का एजेंट है ।**
- **वह काले रंग का लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहनता है ।**

❖ उसे .38 कैलीबर की कोल्ट रिवाल्वर पसंद है, जिसे वह हमेशा अपने ओवरकोट की जेब में रखता है । जबकि दूसरी कोल्ट रिवाल्वर अपने काले गोल क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसाकर रखता है, जो विपरीत परिस्थितियों में उसके बहुत काम आती है ।

❖ कमाण्डर को आदत है कि वह रिवाल्वर हाथ में आते ही उसे तीन बार अपनी उँगलियों के गिर्द घुमाकर उसे बैरल की तरफ से पकड़ता है, इसे जगलरी करना कहा जाता है ।

❖ कमांडर को "डनहिल" सिगरेट पसंद है ।

❖ लड़कियों में उसकी विशेष दिलचस्पी है और देखा गया है कि सुन्दर लड़कियां भी कमाण्डर में ख़ास रुचि रखती हैं ।

अमित खान

का रहस्यमयी रचना संसार

अमित खान

का रहस्यमयी रचना संसार

कमाण्डर सीरीज़

- तिलक रोड का भूत
- दो डकैत
- जान खतरे में
- मौत की कुर्सी
- खतरनाक आदमी
- मुट्ठी में बंद मौत
- गैंडास्वामी का आतंक
- एक चिट्ठी खून भरी
- मिस्टर ज़ीरो
- चौकी नम्बर तीन
- गोली करेगी फैसला
- आगे खतरा, पीछे मौत
- हत्यारे का चैलेन्ज
- लाल कफ़न
- गन मास्टर
- भेदिया
- कत्ल होगा सरेआम
- चक्रा का चक्रव्यूह
- मेरे हाथ, मेरे हथियार
- बारूद का बेटा
- 10 टन सोना
- मौत के मुँह में
- आखिरी गोली
- हिटलर का खज़ाना
- आतंकवादी
- हेराफेरी
- सात तालों में बंद मौत
- सरहद का सिपाही
- एक वैज्ञानिक की तलाश
- कौन जीता, कौन हारा
- एक गोली, एक निशाना
- 100 करोड़ का पहरेदार
- पासे पलट गये
- रॉयल पैलेस
- सांप सीढ़ी का खेल
- नक़ाब के पीछे
- बाज ब्रिगेड
- मैडम नताशा का प्रेमी
- पुरानी बीवी, नया प्यार
- साथ जियेंगे, साथ मरेंगे
- करिश्मा हाथों का
- औरत मेरी दुश्मन
- भगवान पर मुकद्दमा
- लौट आई छाया

शीतल राजपूत सीरीज

- घायल शेरनी
- निशाना निगाहों का

गॉड फादर सीरीज

- पाप की दुनिया
- बवंडर
- छापामार

कहानी संग्रह

- रांग नम्बर
- तेरी मेरी कहानियाँ

- जलता शहर
- हाहाकार
- कैदी
- मेरा देश, मेरे लोग
- डण्डा परेड
- एक डकैती ऐसी भी
- हमलावर
- सर्जिकल स्ट्राइक
- सात दिन का अभियान
- गद्दार
- कमाण्डर
- दोहरी चाल
- मुर्दाघर
- बम काण्ड
- एक चोट लौहार की
- झांसेबाज
- प्लानर
- मरियम का बेटा
- परकटा पंछी
- वन मैन आर्मी

थ्रिलर

- चकमे पर चकमा
- बिच्छू का खेल
- बॉस
- फंस जाओ मेरे लिए
- तुम मरोगी मेरे हाथों
- गरम छुरी
- नाइट क्लब

अंग्रेजी उपन्यास

- एन इटरनल लव स्टोरी
- नाइट क्लब
- डिजास्टर एट डोरस्टेप
- ऑब्जेक्शन माई गॉड

बाल उपन्यास-विजय हमीद सीरीज

- आदमखोर शैतान
- भूतों का शंहशाह
- दिमाग की चोरी
- जहांगीरा का इंसाफ़

लेखकीय

प्रिय पाठकों,

बुक कैफ़े पब्लिकेशन के नये सेट में पेश है- **एक वैज्ञानिक की तलाश** !

इस उपन्यास को लिखने में मैंने भरपूर मेहनत की थी और अब इसे पुन: सजाने-सँवारने में, संशोधित करने में भी कोई कोर-कसार उठाकर नहीं रखी है। पहले भी यह उपन्यास कमांडर के फैन्स को खूब-खूब पसंद आया था और उम्मीद करता हूँ, अब भी यह तमाम पाठकों को पसंद आयेगा।

इस उपन्यास के एक-एक सीन को मैंने अच्छे से सजाया है। प्रस्तुत उपन्यास में एक पाकिस्तानी वैज्ञानिक के दर्द को चित्रित किया गया है। यह एक ऐसे वैज्ञानिक की कहानी है, जिसने अपने देश के लिये, अपनी पूरी कौम के लिये सब कुछ किया। अपनी पूरी ज़िन्दगी उनके नाम कर दी, लेकिन बदले में अगर उनसे उसे कुछ मिला, तो तबाही ! बर्बादी !

यह एक इंसान की दिल दहला देने वाली दास्तान है।

यह मानवता और पैशाचिकता के टकराव की कहानी है, जिस टकराव में उसका पूरा परिवार तबाह हो गया। अपने मुल्क से प्रेम के बदले अगर उसे कुछ मिला, तो सिर्फ आँसू ! सिर्फ दर्द !

इस उपन्यास के साथ ही कमांडर का एक और शानदार उपन्यास भी प्रकाशित हुआ है, **प्राइम मिनिस्टर का मर्डर** !

प्राइम मिनिस्टर का मर्डर

इस बार पाकिस्तान की ISI ने बड़ा खतरनाक प्लान बनाया था। इण्डियन प्राइम मिनिस्टर के मर्डर का प्लान। प्लान भी बड़ा चौंका देने वाला था। राजीव गाँधी के बाद पहली बार किसी इण्डियन प्राइम मिनिस्टर की मास्को विज़िट हो रही थी, जहाँ इण्डियन प्राइम मिनिस्टर के स्वागत की बड़ी ज़बरदस्त तैयारियां थीं। मास्को में जगह-जगह इण्डियन प्राइम मिनिस्टर के बड़े-बड़े होर्डिंग लगे थे। मास्को में वह 8 किलोमीटर लम्बा रास्ता था, जिस रास्ते से इण्डियन प्राइम मिनिस्टर का काफिला गुजरना था। उस सड़क के दोनों तरफ पब्लिक का हुज्जूम उमड़ता। लाखों की भीड़ जमा होती और उस भीड़ में एक शार्प शूटर ने इण्डियन प्राइम मिनिस्टर को पॉइंट ब्लैंक शूट कर देना था।

ISI एक तीर से दो शिकार कर रही थी। इण्डियन प्राइम मिनिस्टर का मर्डर भी होता और रूस-इण्डिया के रिश्ते भी ख़राब होते। लेकिन ISI की बदकिस्मती से इण्डियन प्राइम मिनिस्टर की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी सौंप दी गयी, कमांडर करण सक्सेना को। फिर उसके बाद कमांडर ने जो किया, उफ्फ !!! वह तो और भी हैरतअंगेज था।

एक वैज्ञानिक की तलाश के साथ-साथ मैंने **प्राइम मिनिस्टर का मर्डर** को भी पुन: संशोधित किया है और भरपूर कौशिश की है कि वह भी आपका खूब-खूब मनोरंजन करे।

फिलहाल **एक वैज्ञानिक की तलाश** आपको कैसा लगा, इस सम्बन्ध में अपनी मूल्यवान राय से मुझे जरुर अवगत करायें। ई-मेल नीचे दी गयी है। धन्यवाद सहित।

आपका अपना



मुंबई – 400104

सम्पर्क सूत्र :

Email- foramitkhan@gmail.com

Facebook- @authoramitkhan

Facebook Page- @AuthorAmitKhanOfficial

Instagram- @author_amit_khan

Twitter- @AuthorAmitKhan

एक वैज्ञानिक की तलाश

कमांडर करण सक्सेना टिप-टॉप क्लब की 17 नंबर टेबल पर बैठा हुआ था।

उसने बड़ी बेचैनी के साथ अपनी रिस्टवॉच पर निगाह डाली।

शाम के 7:00 बस बजने ही वाले थे।

टिप-टॉप क्लब में जबरदस्त हंगामे का माहौल था।

सामने डांसिंग फ्लोर पर एक डांसर अपना डांस आइटम पेश कर रही थी। उसने सलमे सितारों वाली बड़ी खूबसूरत ड्रेस पहनी हुई थी। आर्केस्ट्रा पर अरेबियन नाइट्स वाला म्यूजिक बज रहा था और लड़की के डांस स्टेप भी अरेबियन नाइट्स वाले थे।

पूरा क्लब नौजवानों से खचाखच भरा हुआ था।

शराब की तीखी गंध की भरमार थी और वासना में डूबी आहें-कराहें वहाँ छूट रही थीं।

वह उस शहर के सबसे बदनाम क्लबों में से एक था। वहाँ शराब और जुए से लेकर गरम गोश्त तक का कारोबार होता था।

परंतु कमांडर करण सक्सेना उस वक्त वहाँ एक खास उद्देश्य से मौजूद था।

उसने रौनक शाह से मिलना था और रौनक शाह ने उससे उसी क्लब में मिलने का प्रोग्राम सेट किया था। खास उसी टेबल पर। जरूर व टिप-टॉप क्लब रौनक शाह के पसंदीदा क्लबों में से एक था। हालांकि करण सक्सेना पहले कभी रौनक शाह से नहीं मिला था। उसके व्यवहार और संगतों से परिचित नहीं था। उसे बस इतना मालूम था कि वह एक रॉ एजेंट था और जो मिशन कमांडर करण सक्सेना को इस बार सौंपा गया था, उस मिशन पर काम करने से पहले उसका रौनक शाह से मिलना इंतहाई जरूरी था, क्योंकि मिशन से संबंधित आगे के तमाम क्लू उसे रौनक शाह से ही मिलने थे।

7:00 बज गये।

रौनक शाह न आया।

करण सक्सेना की बेचैनी अब बढ़ने लगी।

उसने टाइम गुजारने की गरज से डनहिल निकालकर होंठों से चिपकाई तथा फिर लाइटर निकालकर जैसे ही उसे सुलगाना चाहा, उसी क्षण एक बड़ा खूबसूरत हाथ उसके बराबर में नमूदार हुआ, जिसमें पहले से ही लाइटर था। उस हाथ ने करण सक्सेना की सिगरेट सुलगा दी।

"हैलो ।" एक बड़ी खनकती हुई मधुर आवाज गूँजी ।

करण सक्सेना ने सिगरेट का कश लगाने के बाद पलटकर देखा ।

तौबा ।

वह बिल्कुल हूर की परी थी ।

हुस्न की मल्लिका ।

उसने काले रंग की स्कर्ट पहन रखी थी और उसी से मैच करता प्लाजो । उस ड्रेस में उसका यौवन और भी ज्वालामुखी की तरह खोलता नजर आ रहा था । स्किन फिट स्कर्ट में से उसके उरोज साफ-साफ बाहर झांक रहे थे, जो ब्रा में कसे हुए नहीं थे । उसका प्लाजो भी टखनों से ऊँचा था । कुल मिलाकर वह लड़की उस ड्रेस में और भी ज्यादा सेक्सी नजर आ रही थी तथा एक सिगरेट को पाइप से लगाकर पी रही थी ।

"हैलो ।" करण सक्सेना ने भी धीरे से कहा ।

वह उस लड़की को देखते ही पहचान गया ।

वह एक स्ट्रीट वॉकर थी ।

सड़कों और क्लबों में घूम-घूमकर पेशा करने वाली लड़की ।

"लगता है, तुम किसी का इंतजार कर रहे हो हैंडसम ।" उसकी आवाज सचमुच बहुत नशीली थी ।

"हाँ, यह सच है ।"

"दैट्स गुड । फिर तो जरूर कोई बहुत हसीन लड़की होगी ।"

"जी नहीं, वह कोई लड़की नहीं है ।" करण सक्सेना मुस्कुराया ।

उसकी आवाज में शरारत झलक रही थी ।

आखिर उसे भी वक्त काटना था ।

"फिर ?"

"वह एक आदमी है, जो जरूर सिर से गंजा है । शक्ल बहुत भौंडी और एकदम स्याह काला रंग है ।"

"ओहो, आई एम वेरी सॉरी टू हियर दिस । "

करण सक्सेना ने डनहिल का एक छोटा-सा कश लगाया ।

"तब तो लगता है, आप जैसे खूबसूरत आदमी की आज की शाम खराब होने वाली है ।" लड़की के स्वर में हमदर्दी के भाव थे ।

"लगता तो मुझे भी यही है ।"

एकाएक उस लड़की ने टेबल पर अपनी दोनों हथेलियाँ टीका ली तथा वह कमांडर करण सक्सेना की तरफ और झुक गई ।

वह और झुकी तो करण सक्सेना को उसकी घाटियाँ अंदर तक नजर आई । जरूर वह इसीलिए चुकी थी, ताकि कमांडर उसका पूरा तामझाम देख सके । इसके अलावा वह ब्लू लैगून नाम का वह लेडीस सैंट भी लगाये हुए थी, जिसकी गंध से पुरुषों में कामोत्तेजना भड़कती है ।

"जेंटलमैन, क्या आज की शाम को रंगीन बनाने के लिए मैं तुम्हारी कुछ हेल्प कर सकती हूँ ?"

"कैसी हेल्प ?" करण सक्सेना पूरी तरह अनजान बना ।

"हर वह हेल्प जो कोई औरत ही किसी मर्द की कर सकती है ।"

"रियली ?"

"आफकोर्स रियली ।"

"ल... लेकिन... ।"

करण सक्सेना के चेहरे पर थोड़े हिचकिचाहट के भाव उभरे ।

"लेकिन क्या ?"

"जगह ।"

"जगह की तुम चिंता मत करो । वह सब मेरे पास है ।"

"किधर ?" करण सक्सेना पुनः फुसफुसाया ।

"क्लब की छत पर काफी सारे कमरे बने हुए हैं, जो खासतौर पर इसी काम के लिए इस्तेमाल होते हैं ।"

"सेफ है ?"

"बिल्कुल सेफ । पुलिस वालों की बात तो बहुत दूर है, कोई परिंदा भी उधर पर नहीं मार सकता । "

"बहुत अच्छे । तुम एक काम करो । तुम क्लब से कोई और मुर्गा तलाशने की कोशिश करो । अगर घंटे-दो घंटे में कोई और मुर्गा नहीं फँसता और मेरा पार्टनर भी इधर नहीं आता है, तब मैं तुम्हारे साथ ऊपर चलूँगा ।"

लड़की के चेहरे की रंगत एकदम यूँ भक्क से उड़ गई, जैसे कोई बल्ब फ्यूज हो गया हो ।

"ब्लडी शिट ।"

उसने सिगरेट फोल्डर में लगी सिगरेट का एक कश लगाया तथा फिर अपने

पैर पटकती हुई वहाँ से चली गई ।

करण सक्सेना मुस्कुराने लगा ।

उस मुस्कुराहट में शरारत अभी भी थी ।

□□□

अब वक्त बहुत धीरे-धीरे गुजरने लगा।

तभी इधर से उधर घूमता एक वेटर कमांडर करण सक्सेना के नजदीक आ खड़ा हुआ।

"आपको कुछ चाहिये सर ?"

"हाँ, एक कॉफी।"

"ओके सर !"

वेटर चला गया।

फिर सेकंड के सौवें हिस्से में वह पुनः नमूदार हुआ तथा कॉफी के साथ नमूदार हुआ।

कमांडर करण सक्सेना ने कॉफी का एक छोटा-सा घूंट भरा।

कॉफी वाकई बहुत लाजवाब बनी हुई थी।

मगर रौनक शाह को लेकर उसकी चिंता अब बढ़ने लगी थी। 7:15 बज चुके थे, लेकिन रौनक शाह का कहीं कुछ अता-पता नहीं था। न मालूम वह आदमी कहाँ गायब हो गया था ? किधर चला गया था ? वरना अभी तक तो उसने आ जाना चाहिये था।

रौनक शाह के बारे में सोच सोच कर करण सक्सेना की व्यग्रता बढ़ने लगी।

8:00 बज गये।

रौनक शाह तब भी न आया।

करण सक्सेना की निगाहें बार-बार टिप-टॉप क्लब के ग्लास डोर पर जाकर अटक जाती थीं। काफी लोग आ जा रहे थे। मगर उसमें रौनक शाह कोई न था।

तभी किसी ने पीछे सेकमांडर करण सक्सेना के कंधे पर हाथ रखा।

करण सक्सेना यूँ चौंका, जैसे बिच्छू उसके कंधे पर आ बैठा हो।

वह तेजी से पलटा।

फौरन ही एक तेज खनखनाती हुई हँसी चारों तरफ गूँजी और वही हूर की परी जैसी स्ट्रीट वॉकर एक बार फिर खिलखिलाकर हँसती हुई उसके सामने आ खड़ी हुई।

"हाय जेंटलमैन, जरूर तुम यह समझ रहे होगे कि तुम्हारा पार्टनर आ गया है ?"

"हाँ।" कमांडर ने कबूल किया, "एक पल के लिए तो मैं यही समझा था।"

"सॉरी, दरअसल मुझे मजाक करने की बुरी आदत है।"

"मेंशन नॉट। वैसे यह आदत बुरी भी नहीं।"

"काफी दिलचस्प बातें करते हो।"

लड़की ने सिगरेट होल्डर में फँसी सिगरेट से एक लंबा कश लगाया और सिगरेट होल्डर होंठों के बीच दबाए-दबाए पहले की तरह एक बार फिर उसका तामझाम नजर आने लगा। लड़की वाकई बड़ी रंगीन तबीयत की मालिक थी।

"किस वक्त आने वाला था तुम्हारा पार्टनर ?" उसने शोखी से अपने होंठ चुभलाए ।

"7:00 बजे ।"

"माय गुड गॉड । तब तो उसने अब तक आ जाना चाहिये था । "

"हाँ, आ तो जाना चाहिये था; लेकिन अभी तक आया नहीं है और यही बात मुझे फिक्र में डाल रही है ।"

"अब क्या करोगे ?"

"कुछ नहीं । अभी मैं इधर ही बैठकर उसका और इंतजार करूँगा ।"

"अभी और ?"

"हाँ, अभी और ।"

लड़की के मुँह से निःश्वास छूट गई ।

उसके चेहरे पर हताशा के भाव मंडराने लगे ।

"लगता है, तुम आज इधर यह कसम खाकर आये हो जेंटलमैन; कि तुम अपनी शाम हर हालत में खराब करोगे ।"

"ऐसी कोई बात नहीं है । " करण सक्सेना मुस्कुराया, "अगर मेरा पार्टनर इधर आ जाता है, तो मेरी शाम खराब नहीं होगी बल्कि सुधर जायेगी । हाँ, उसके न आने की सूरत में मुझे अपनी शाम खराब होने का अंदेशा जरूर है ।"

"बड़ी अजीब बात है ।"

"हाँ, अजीब ही है ।"

"मुझे तो अब ऐसा मालूम हो रहा है ।" लड़की बोली, "कि तुम्हारा पार्टनर कोई बड़ा ही खास आदमी है । तुम खामखाह उसे कम करके आँक रहे हो ।"

करण सक्सेना मुस्कुराया ।

मगर वह बोला कुछ नहीं ।

"ऐनीवे, परंतु मैं अपनी शाम खराब नहीं जाने दूँगी ।" लड़की ने पूरे यकीन के साथ कहा ।

"क्यों, क्या कोई मुर्गा फँस गया है ?"

"मुर्गा ।" लड़की उसके मुर्गा कहने पर हँसी, "नहीं, अभी तो कोई मुर्गा नहीं फँसा जेंटलमैन । लेकिन सामने बैठे उस बुढ़ऊ को देख रहे हो ।"

"हाँ ।" करण सक्सेना ने बूढ़े को देखते हुए स्वीकृति में गर्दन हिलाई ।

"दरअसल वह बुढ़ऊ अपनी बैक पॉकेट है ।"

"बैक पॉकेट ?"

"यस जेंटलमैन । बैक पॉकेट । यानी खास जेब । सुरक्षित जेब जिसमें माल-मत्ता रखा जाता है । दरअसल जिस दिन इधर अपने शिकंजे में कोई मुर्गा नहीं फँसता, तो उस

दिन मैं उस बुढ़ऊ को अपने जाल में फांस लेती हूँ। बुढ़ऊ अपना पक्का एडमायरर है। पक्का मुरीद। बिस्तर पर पहुँचने के बाद मैं उससे रात को दिन बोलूँ तो दिन। दिन को रात बोलूँ तो रात। उसे अपने इशारों पर जिस तरफ चाहो नाचता है। उस बुढ़ऊ के रहते मेरी शाम भी खराब नहीं जाती। इस बैक पॉकेट से हमेशा कुछ न कुछ माल मिल ही जाता है।"

"वेरी गुड। सचमुच तुम काफी समझदार लड़की हो। जो चारों खाने चौकस करके रखे हुई हो।" करण सक्सेना ने उसे प्रशंसनीय नजरों से देखा।

लड़की बहुत खनकती हुई हँसी हँसी।

"जेंटलमैन, जिंदगी की इस गाड़ी को चलाने के लिए चारों खाने चौकस करके रखने ही पड़ते हैं।"

करण सक्सेना चौंककर उसकी तरफ देखने लगा।

हालांकि बाद उसने मजाक में कही थी, लेकिन जिंदगी की कड़वी सच्चाई से भरपूर थी।

"मैं अब चलती हूँ। धंधे पानी का टाइम खोटी हो रहा है। हाँ, जाते जाते एक बात जरूर बोलूँगी। अगर कभी अपनी शाम रंगीन करने का मूड हो, तो सीधे इधर चले आना। मेरा नाम लवलीना है।"

"लवलीना।"

जैसी खूबसूरत वह थी, वैसा ही खूबसूरत उसका नाम था।

"गुड बाय माय हनी !"

"गुड बाय !"

लवलीना सिगरेट के कश लगाती हुई फिर क्लब के उस हंगामे में कहीं लोप हो गई।

कमांडर करण सक्सेना का दिमाग वापस रौनक शाह पर जाकर केंद्रित हो गया।

समझ नहीं आ रहा था, वह आदमी किधर गया ?

करण सक्सेना को क्लब की उसी 17 नंबर टेबल पर बैठे-बैठे रात के 10:00 बज गये, लेकिन रौनक शाह उधर न आया।

अब उसका और ज्यादा इंतजार करना फिजूल था।

करण सक्सेना टेबल छोड़कर खड़ा हो गया।

तभी उसने लवलीना को भी क्लब से जाते देखा। वह खुश थी। बूढ़ा उसके साथ था और उसने बूढ़े को इस तरह अपनी बगल में दबाया हुआ था, जैसे कोई मां अपने बच्चे को दबाए हुए हो। बूढ़ा भी उस हसीन लड़की का संसर्ग पाकर पुलकित हो रहा था।

क्लब के ग्लास डोर से बाहर निकलने से पहले लवलीना ने एक बार पलट कर कमांडर करण सक्सेना की तरफ देखा। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें एक दूसरे से टकराई।

उसी लम्हा लवलीना ने उसे आँख मार दी ।

करण सक्सेना एक बार फिर मुस्कुराये बिना न रहा । वाकई वह बहुत चंचल और शरारती लड़की थी ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना एक बार फिर बड़े खौफनाक मिशन पर था ।

इस बार वह युगांडा की राजधानी कंपाला में था, जो अफ्रीका महाद्वीप का एक हिस्सा है ।

कंपाला ।

जहाँ वह एक बार पहले भी आ चुका था और जहाँ उसकी अलर्टा नाम की एक बड़ी खूंखार औरत से जबरदस्त मुठभेड़ हुई थी ।

(पढ़ें - कमांडर करण सक्सेना सीरीज का एक बेहद सुपर-डुपर हिट उपन्यास 'कमांडर')

बहरहाल इस बार सारा मामला फारूख अहमद मसूदी को लेकर था ।

फारूख अहमद मसूदी जो पाकिस्तान का श्रेष्ठ वैज्ञानिक था । कहने को वह पाकिस्तानी था, मगर उसकी गणना विश्व के चंद बड़े वैज्ञानिकों में होती थी । इसके अलावा फारूख अहमद मसूदी में एक खूबी और थी । वह हमेशा विश्वकल्याण की बात सोचता था ।

वह सोचता था कि वह जो प्रयोग करें, उससे पूरी दुनिया को फायदा पहुँचे ।

वह किसी एक देश या एक कौम का रहनुमा बनकर नहीं रहना चाहता था ।

फारूख अहमद मसूदी की सोच जहाँ इस कदर यूनिवर्सल थी, वहीं पाकिस्तान गवर्नमेंट की सोच हमेशा तंग रही है । पाकिस्तान ने सदा अपने और अपने फायदे के बारे में सोचा है ।

बहरहाल इसी मुखालिफ सोच के चलते हंगामा हुआ ।

और जबरदस्त हंगामा हुआ ।

फारूख अहमद मसूदी उन दिनों अपने जीवन के श्रेष्ठतम आविष्कार को जन्म देने में लगा हुआ था । वह पानी से पेट्रोल बनाना चाहता था और सबसे दिलचस्प बात यह थी कि अपने उस आविष्कार में काफी हद तक कामयाब भी हो चुका था ।

बिना शक अगर पानी से पेट्रोल बन जाता, तो वह उस पूरी सदी की सबसे बड़ी सनसनी होती ।

पूरे विश्व के लिए फारूख अहमद मसूदी का वह आविष्कार अत्यंत जिज्ञासा का कारण बना हुआ था । आखिर पूरी दुनिया के सामने पेट्रोल की खपत घट जाने का निदान

आने वाला था । अब वह दिन दूर नहीं था, जब सड़कों पर कारें पेट्रोल की बजाय पानी से दौड़ती । हालांकि बात सुनने में अजीब लगती है, परंतु विज्ञान ऐसे ही चमत्कारों का दूसरा नाम है ।

विश्वसनीय सूत्र जहाँ तक बताते हैं, फारूख अहमद मसूदी अपने उस आविष्कार को लगभग कंप्लीट कर चुका था ।

लेकिन फिर कुछ ऐसे हालात बने कि पाकिस्तान की खुफिया संस्था आईएसआई का कहर उस महान वैज्ञानिक तथा उसके पूरे परिवार पर टूट पड़ा ।

दरअसल फारूख अहमद मसूदी को किसी तरह यह पता चल गया था कि पाकिस्तान गवर्नमेंट खुद ही उसके उस आविष्कार से फायदा उठाने की सोच रही है ।

पाकिस्तान गवर्नमेंट स्वयं ही पानी से पेट्रोल बनाती और उसे विश्व के बाजार में बेचती ।

यानी पेट्रोल की जो समस्या अब थी, वह तब भी बनी रहती । अलबत्ता तब पेट्रोल के कारोबार पर पाकिस्तान का एकछत्र राज जरूर होता, जो अब संयुक्त अरब अमीरात का भी नहीं था और उसी पेट्रोल पर एकछत्र राज के चलते पाकिस्तान गवर्नमेंट अपनी आणविक शक्ति भी मजबूत करती । पेट्रोल के बदले में वह दूसरी सरकारों से बड़े-बड़े खतरनाक हथियार खरीदती । बमवर्षक विमानों के सौदे करती । कुल मिलाकर पाकिस्तान सिर्फ उस एक आविष्कार की बदौलत बहुत जल्द दुनिया की एक बहुत बड़ी ताकत बन जाता ।

फारूख अहमद मसूदी को पाकिस्तान के विश्व शक्ति बनने से गुरेज नहीं था, अपने आविष्कार के राजनीति-करण से था ।

वह नहीं चाहता था कि उसके आविष्कार का लाभ सिर्फ कोई एक देश ही उठाए । उसने तो पूरी दुनिया के लिए, पूरे मानव समाज के लिए उस आविष्कार को जन्म दिया था ।

और तब फारूख अहमद मसूदी ने मन ही मन एक फैसला किया ।

फैसला खतरनाक था ।

लेकिन उसके एतबार से दुरुस्त था ।

फारूख अहमद मसूदी ने फैसला किया, वह अपना आविष्कार पाकिस्तान गवर्नमेंट के हवाले नहीं करेगा । फिर हालातों ने खौफनाक मोड़ तब लिया, जब आईएसआई को न जाने कैसे फारूख अहमद मसूदी के उस बागी इरादों की भनक लग गई ।

उसके बाद तो फारूख अहमद मसूदी और उसके परिवार के ऊपर ऐसा कहर टूटा कि उन लोगों की जिंदगी नरक बन गई । उसकी पत्नी और अल्प वयस्क दो बच्चियों को अगवा कर लिया गया । पत्नी को फारूख अहमद मसूदी के सामने ही इस तरह अमानवीय

यातनाएँ दी गई कि वे पाकिस्तान गवर्नमेंट के सामने झुकने की बजाय अर्द्ध विक्षिप्त-सा हो गया।

उसकी अल्प वयस्क बच्चियों को भयानक यातना देने के नाम पर उसे झुकाने की चेष्टा की गई।

तब फारूख अहमद मसूदी ने ऐसा शो किया, जैसे वह पाकिस्तान गवर्नमेंट के सामने झुक गया हो और वह पानी से पेट्रोल बनाने का फॉर्मूला तैयार करके गवर्नमेंट के ही हवाले करेगा।

लेकिन फिर वह अचानक पाकिस्तान से भाग निकला और अफगानिस्तान तथा रूस के रास्ते होता हुआ खामोशी से युगांडा पहुँच गया।

इतना ही नहीं, पाकिस्तान गवर्नमेंट ने उसकी दोनों अल्प वयस्क बच्चियों को जिस जगह कैद करके रखा था, वह दोनों बच्चियाँ भी रातों-रात कैद खाने से गायब हो गईं।

वह दोनों कहाँ गईं ?

कैसे गायब हुईं ?

यह पाकिस्तान गवर्नमेंट को अभी तक पता न था। कुल मिलाकर फारूख अहमद मसूदी अब युगांडा में किसी गुमनाम जगह छिपा हुआ था और उसकी दिली ख्वाहिश थी कि वह अपना वह फॉर्मूला भारत सरकार के हवाले करे।

क्योंकि भारत सरकार पर ही उसे पूरा भरोसा था।

फारूख अहमद मसूदी की निगाह में भारत ही एकमात्र ऐसा देश था, जो उसके उस फॉर्मूले को सही तरह से मानवता के कल्याण में लगा सकता था।

युगांडा में ही फारूख अहमद मसूदी का सामना किसी प्रकार रौनक शाह से हुआ और उसने रौनक शाह के सामने यह प्रस्ताव रखा कि उसे युगांडा से निकालकर भारत पहुँचाया जाये। वह अपना फॉर्मूला भारत सरकार के हवाले करना चाहता है।

बिना शक भारत सरकार के लिए वह एक स्वर्णिम अवसर था।

फारूख अहमद मसूदी के फॉर्मूले पर पूरी दुनिया की निगाहें लगी थीं, वही फॉर्मूला वह भारत सरकार को सौंपना चाहता था। अब उसी मिशन को अंजाम देने के लिए कमांडर करण सक्सेना अफ्रीका के युगांडा की राजधानी कंपाला की धरती पर मौजूद था।

उसने वहाँ सबसे पहले रौनक शाह से मिलना था। क्योंकि रौनक शाह को भी मालूम था कि फारूख अहमद मसूदी इस वक्त किस जगह मौजूद है। उसके बाद उसने फारूख अहमद मसूदी को किसी प्रकार सुरक्षित तौर पर युगांडा से निकालकर कई देशों की सीमाएँ पार करते हुए भारत तक ले आ जाना था।

मिशन आसान नहीं था।

मगर ऐसे असंभव नजर आने वाले मिशन को अंजाम देना ही तो हमेशा से कमांडर करण सक्सेना की फितरत रही है ।

□□□

कंपाला की सड़कों पर रात के 10:00 बजे भी काफी चहल-पहल थी और काले अफ्रीकन लोग बड़ी संख्या में इधर से उधर आ जा रहे थे ।

कमांडर करण सक्सेना ने क्लब से बाहर निकलते ही टैक्सी पकड़ ली ।

"किधर चलना है साहब ?"

"डाउनिंग स्ट्रीट ।"

टैक्सी फौरन डाउनिंग स्ट्रीट की तरफ भागने लगी ।

डाउनिंग स्ट्रीट वह जगह थी, जहाँ रौनक शाह रहता था ।

चीफ ने ही उसे रौनक शाह के घर का भी एड्रेस दिया था । अब जबकि करण सक्सेना की रौनक शाह से क्लब में मुलाकात नहीं हुई थी, तो उसने उसके घर जाने का फैसला कर लिया था ।

रौनक शाह का क्लब में न पहुँचना ही उसे भारी संशय में डाल रहा था ।

शीघ्र ही टैक्सी डाउनिंग स्ट्रीट पहुँचकर रुकी ।

"कितना भाड़ा हुआ ?"

"20 शिलिंग !"

करण सक्सेना ने टैक्सी चालक को बीस शिलिंग निकालकर दिये ।

टैक्सी चली गई ।

फिर करण सक्सेना ने डाउनिंग स्ट्रीट के उस इलाके में चारों तरफ नजर दौड़ाई । मध्यमवर्गीय इलाका था, जहाँ औसत से नीचे दर्जे के लोग रहते थे । वहाँ बड़ी पुरानी जर्जर-सी इमारतें थी । सड़कें टूटी हुई थी । इसके अलावा हर तरफ से एक शोर-सा उमड़ रहा था । औरतों के जोर-जोर से बोलने तथा टीवी चलने की आवाजें आ रही थीं ।

सामने ही एक ग्रोसरी शॉप थी, जो अभी भी खुली थी ।

करण सक्सेना उस ग्रोसरी शॉप पर पहुँचा ।

"यहाँ कारपोरेशन बिल्डिंग किधर है ?"

"वह सामने चौड़ी-सी गली नजर आ रही है ।" शॉप ओनर ने नोट गिनते हुए जवाब दिया ।

"हाँ ।"

"उसी गली में बिल्कुल सीधे चले जाइये । सबसे आखिर में जाकर दाईं तरफ वही बिल्डिंग है ।"

"थैंक्यू ।"

करण सक्सेना सड़क पार करके उस गली की तरफ बढ़ा ।

थोड़ी देर बाद ही पीले रंग से पुती हुई तीन मंजिली हद से ज्यादा खस्ताहाल इमारत थी । उसकी सीढ़ियाँ लकड़ी के लट्ठों से बनी हुई थी और बड़ी चौड़ी-चौड़ी थी । रौनक शाह उसी बिल्डिंग के तीसरे माले पर रहता था और उसका रूम नंबर 34 था ।

करण सक्सेना ने सीढ़ियाँ चढ़नी शुरू की ।

बिल्डिंग की हालत वाकई बहुत खस्ता थी । सीढ़ियाँ चढ़ते हुए लकड़ी के लट्ठे चर्र-चर्र बोल रहे थे और ऐसा लग रहा था, जैसे वह अब टूटे ।

अब टूटे ।

खुदा-खुदा करके करण सक्सेना तीसरे माले पर रौनक शाह के रूम के सामने पहुँचा, परंतु वहाँ पहुँचते ही करण सक्सेना की सारी हिम्मत पस्त हो गई ।

रौनक शाह के रूम के दरवाजे पर भी एक मोटा-सा ताला पड़ा था ।

रौनक शाह वहाँ भी नहीं था ।

किधर गायब हो गया था वह आदमी ?

क्या वह इस बात को बिल्कुल भूल चुका था कि वह उस मिशन को अंजाम देने के लिए कंपाला आने वाला था और आज शाम उसकी टिप-टॉप क्लब में मुलाकात फिक्स थी ? ऐसा भुलक्कड़ वह होना तो नहीं चाहिये था । आखिर सारा प्रोग्राम उसी ने फाइनल किया था ।

अभी करण सक्सेना, रौनक शाह के बारे में सोच ही रहा था कि तभी उसे लकड़ी के लट्ठों पर किसी के कदमों की आवाज सुनाई पड़ी । कोई ऊपर की तरफ ही आ रहा था ।

करण सक्सेना अपना ओवरकोट दुरुस्त करता हुआ तेजी से सीढ़ियों की तरफ घुमा । वह लगभग 50 साल पार कर चुकी एक अधेड़ अफ्रीकन औरत थी । अलबत्ता उसने कॉलेज की लड़कियों जैसी फूलदार फ्रॉक पहनी हुई थी । आँखों पर काले फ्रेम का मोटा चश्मा चढ़ा था और गले में रुद्राक्ष जैसी भारी-भरकम मालाएँ थीं । उसके पास एक वैनिटी बैग भी था, जिसे उसने अपने दाएँ हाथ में पकड़ा हुआ था । वह जरूर कोई दफ्तर में काम करने वाली महिला थी ।

"या मेरे खुदा !" ऊपर तक आते-आते वह बुरी तरह हाँफने लगी, "पहले तो सारा दिन दफ्तर में लोगों की चख-चख सुनते हुए ही जिस्म की आधी जान निकल जाती है और थोड़ी-बहुत जो बचती है, तो तीन माले तक चढ़ना पूरी जान निकाल देता है ।"

ऊपर जाकर उस महिला ने हाँफते हुए ही अपना चश्मा दुरुस्त किया और फिर वैनिटी बैग खोलकर अपने घर की चाबी निकाली ।

"जस्ट अ मिनट !"

करण सक्सेना तेजी से उस महिला की तरफ बढ़ा ।

महिला ने चौंककर करण सक्सेना की तरफ देखा । उसने फिर अपना चश्मा दुरुस्त किया ।

"जी, कहिए ।"

"क्या आप रौनक शाह को जानती हैं ?"

"वहीं जो रूम नम्बर थर्टी फोर में रहते हैं ?"

"हाँ, हाँ, रौनक ! इंडियन मैन !"

"यस, यस ! खूब अच्छी तरह जानती हूँ । उसको इधर रहते टू इयर्स से ज्यादा हो गये ।"

"वह इंडियन मैन इस समय कहाँ है ?"

"यहाँ नहीं है ?" वह चौंकी ।

"नहीं, यहाँ तो ताला पड़ा है ।"

उस अधेड़ अफ्रीकन महिला ने भी अब रौनक शाह के रूम की तरफ देखा ।

वह भी हैरान हुई ।

"अगर यहाँ नहीं है, तो फिर मालूम नहीं कि किधर है । सुबह भी यहाँ ताला ही पड़ा हुआ था ।"

"ओह !"

"और... ।" कुछ बोलते-बोलते वह अफ्रीकन महिला ठिठकी ।

"और क्या ?"

"मुझे तो लगता है, वह इंडियन मैन पिछले दो-तीन दिन से इधर नहीं है ।"

करण सक्सेना के दिमाग से आतिशबाजी-सी छूटने लगी ।

यह एक नया रहस्योद्घाटन हो रहा था ।

"पिछले दो-तीन दिन से ?"

"हाँ ।"

"कैसे मालूम ?"

"अभी परसों की ही तो बात है ।" महिला बोली, "नहीं-नहीं, परले दिन की । एक आदमी तुम्हारी तरह ही उसे पूछता-पूछता यहाँ आया था, तब भी रौनक के फ्लैट पर ताला पड़ा था और इत्तफाक से वह वक्त भी यही था ।"

"क्या वह कोई अफ्रीकन था ?"

"नहीं । वह आप ही की तरह कोई था ।"

"इंडियन ?"

"शायद !"

"बड़ी अजीब बात है !"

करण सक्सेना के दिमाग में विचारों की चक्की-सी चलने लगी ।

उस शहर में और कौन इंडियन हो सकता था, जो रौनक शाह को ढूंढता फिर रहा था ? जहाँ तक करण सक्सेना को इन्फार्मेशन दी गई थी, कंपाला शहर में रौनक शाह के अलावा कोई दूसरा रॉ एजेंट नहीं था ।

फिर वह कौन था ?

"मैं आपसे एक और आखिरी सवाल पूछना चाहता हूँ ।" करण सक्सेना बोला ।

"पूछिये ।"

"दरअसल मेरा रौनक शाह से मिलना इंतहाई जरूरी है । क्या आप बता सकती हैं, मुझे रौनक शाह के बारे में कैसी भी कोई इन्फार्मेशन कहाँ से प्राप्त हो सकती है ?"

"आप एक काम करें ?"

"बोलिये ।"

"आप टैक्सी स्टैंड चले जायें । आपको तो मालूम ही होगा, रौनक शाह एक टैक्सी ड्राइवर है । टैक्सी स्टैंड से आपको रौनक शाह के बारे में जरूर पता चल जायेगा कि वह इन दिनों कहाँ है ।"

"थैंक्यू ।"

फिर वह अधेड़ औरत अपने ऊँची हील वाले सैंडल जोर-जोर से ठकठकाती हुई रूम की तरफ बढ़ गई । उसने अपने रूम का ताला खोला और अंदर समा गई । फिर भड़ाक से दरवाजे के दोनों पल्ले बंद होने की आवाज हुई ।

वह सचमुच काफी थकी-हारी थी ।

उसने एक बार भी करण सक्सेना की तरफ पलटकर देखना गंवारा नहीं किया था ।

कुल मिलाकर करण सक्सेना पुनः कॉरीडोर में अकेला खड़ा था ।

रौनक शाह के बारे में उसे एक और नई बात पता चली कि वह टैक्सी ड्राइवर था ।

जरूर वह काम वो आड़ के तौर पर करता था ।

कमांडर करण सक्सेना ने वहीं कॉरीडोर में खड़े-खड़े डनहिल सुलगा ली और सोचने लगा कि अब उसे क्या करना चाहिये ?

नई-नई मुश्किलें जन्म ले रही थीं ।

हालात खुशगवार नहीं थे ।

तभी उसके दिमाग में एक तरकीब सूझी । उसने सोचा कि वह जाने से पहले क्यों न रौनक शाह के रूम की तलाशी ले ।

आइडिया बुरा नहीं है ।

उसने एक चोर दृष्टि कॉरीडोर में दोनों तरफ दौड़ाई । उसे कहीं कोई नजर नहीं आया । वहाँ पूरी तरह सन्नाटा व्याप्त था ।

करण सक्सेना दबे पाँव रूम नम्बर थर्टी फोर के नजदीक पहुँचा और उसने एक तांबे के तार की सहायता से पलक झपकते ही उस रूम का ताला खोल डाला ।

फिर वह निःशब्द ढंग से रूम के अंदर दाखिल हुआ ।

अंदर घुप्प अंधेरा था ।

किसी तरह उसने टटोलकर जीरो वाट का बल्ब रौशन किया ।

हल्का प्रकाश चारों तरफ फैला गया ।

और उस प्रकाश में करण सक्सेना ने जो कुछ देखा, वह और भी अधिक विस्मयकारक था ।

रौनक शाह के रूम की बड़ी बुरी तरह तलाशी ली गयी थी । तकियों के गिलाफ फाड़ डाले गये थे । गद्दे फाड़ डाले गये थे । वार्डरोब का सारा सामान बाहर निकला पड़ा था । दो सन्दूक खुले हुए थे, बर्तन इधर-उधर पड़े हुए थे ।

करण सक्सेना का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा ।

रूम की हालत देखकर करण सक्सेना के मस्तिष्क में बस एक ही बात हथौड़े की तरह बजी कि जरूर रौनक शाह के साथ कुछ अनिष्ट हो चुका है । उसका दिल गवाही देने लगा, वह अब जहाँ भी था, सुरक्षित नहीं था ।

□□□

रात के ठीक ग्यारह बजे थे, जब कमांडर करण सक्सेना होटल वेस्ट एन्ड में दाखिल हुआ ।

वह उसी होटल में ठहरा था ।

होटल में पहुँचकर पहले कमांडर करण सक्सेना ने भरपेट भोजन किया तथा फिर अपने शानदार सुइट में जाकर बिस्तर के हवाले हो गया ।

लेकिन बिस्तर पर लेटने के बाद भी उसे काफी देर तक नींद न आई । दिमाग में तरह-तरह के विचार मंडराते रहे । जैसे रौनक शाह कहाँ गायब हो गया था ?

वह आदमी कौन था, जो रौनक को ढूंढ़ता कारपोरेशन बिल्डिंग में पहुँचा था ?

और उसके रूम की इतनी बेदर्दी के साथ तलाशी किसने ली थी ?

करण सक्सेना उन सवालों के बारे में जितना सोच रहा था, उसकी उतनी दिमागी उलझनें बढ़ती जा रही थीं । जबकि उन सवालों का जवाब कोई न था ।

तभी करण सक्सेना के दिमाग में एक और बड़े खौफनाक ख्याल ने जन्म लिया ।

कहीं ऐसा तो नहीं था कि पाकिस्तान की खुफिया संस्था आईएसआई को भी इस बात की भनक लग गयी थी कि फारूख अहमद मसूदी वहाँ है और उसने मसूदी के पीछे-पीछे अपने एजेंट भी वहाँ भेज दिये थे ।

अगर ऐसा था, तो वह सचमुच बड़ा खतरनाक मामला था ।

एकाएक करण सक्सेना को लगने लगा कि जरूर यही बात थी ।

जरूर आईएसआई एजेंटों को मसूदी के कंपाला में होने की भनक लग चुकी थी । इतना ही नहीं, जरूर उन्हें किसी प्रकार यह बात भी पता चल गई थी कि मसूदी अब अपना फॉर्मूला भारत सरकार के हवाले करना चाहता है ।

अगर ऐसा था, तो यह और खतरनाक था ।

और भी डेंजर था ।

इससे मिशन में और भी ज्यादा दुश्वारियाँ बढ़ जानी थीं ।

वह सब सोचते-सोचते करण सक्सेना को कब नींद आ गयी, उसे खुद पता न चला ।

□□□

सुबह कमांडर करण सक्सेना सबसे पहले टैक्सी स्टैंड पहुँचा । टैक्सी स्टैंड शहर के बहुत गहमा-गहमी वाली जगह में बना हुआ था । वहाँ एक बहुत बड़े शेड के नीचे सैकड़ों की तादाद में टैक्सियाँ खड़ी थीं । वहीं एक केबिन था, जहाँ से पर्ची कटती थीं और केबिन के पास ही एक रेस्ट हाउस था, जहाँ हमेशा भारी मात्रा में टैक्सी ड्राइवर जमा रहते थे । वे अलग-अलग ग्रुप बनाकर ताश खेलते या फिर आपस में गप्पे लड़ाते । कुल मिलाकर रेस्ट हाउस का माहौल हमेशा चिल्ल-पौं से भरा रहता था ।

करण सक्सेना सिगरेट सुलगाता हुआ रेस्ट हाउस में दाखिल हुआ । परन्तु वहाँ मौजूद ज्यादातर टैक्सी ड्राइवर काले हब्शी ही थे । सिर्फ कुछेक ही थे, जो गोरी चमड़ी वाले नजर आ रहे थे ।

सब अपने-अपने में मगन थे ।

किसी की निगाह भी उसकी तरफ न उठी ।

जबकि रेस्ट हाउस में दाखिल होते ही करण सक्सेना की निगाह एक-एक टैक्सी ड्राइवर के चेहरे पर पड़ने लगी ।

उसमें रौनक शाह कोई न था ।

चीफ ने उसे मिशन पर रवाना होने से पहले बाकायदा रौनक शाह की कई तस्वीरें दिखाई थीं । अब अगर वह रौनक शाह को कहीं भी देखता, तो फौरन गोली की तरह पहचानता ।

"कहीं जाने का है क्या ?" काफी देर बाद एक टैक्सी ड्राइवर की निगाह उसकी तरफ उठी, जो ताश खेल रहा था, "अगर जाने का है, तो बाजू वाले केबिन में जाओ । वहाँ से पर्ची कटेगी ।"

"नहीं, मुझे कहीं जाना नहीं है ।"

"फिर ?"

"मुझे रौनक शाह के बारे में पता करना है ।"

"रौनक शाह !"

रौनक शाह का नाम सुनकर ऐसा लगा, जैसे उस पूरे रेस्ट हाउस में धमाका-सा हुआ हो ।

जो ताश खेल रहे थे, वह ताश खेलना भूल गये ।

गप्पें बन्द ।

वहाँ सन्नाटा छा गया ।

गहरा सन्नाटा ।

"क्या बात है ?" करण सक्सेना बोला, "आप लोग इस तरह मेरा मुँह क्यों देख रहे हैं ? क्या रौनक शाह इस स्टैंड से टैक्सी नहीं चलाता ?"

"वह यहाँ से टैक्सी चलाया करता था साहब !" एक टैक्सी ड्राइवर ताश के पत्तों में फुरेरी लगाता हुआ बोला, "अब वह इधर नहीं आता ।"

"क्यों, अब वह इधर क्यों नहीं आता ?"

"क्या मालूम ?"

"उसका कोई पता-ठिकाना तो होगा ?"

"उसका पता-ठिकाना मालूम हो भी गया, तो उसी से क्या करोगे ?"

वह एक दूसरी आवाज थी ।

"मैं उससे मिलने वहाँ जाऊँगा ।"

सब हँस पड़े ।

करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़े ।

वह लोग हँस क्यों रहे थे ?

क्या माजरा था ?

"देखिए, मैं हिंदुस्तान से आया हूँ और उसका दोस्त हूँ ।" करण सक्सेना बोला, "मेरा रौनक शाह से मिलना बेहद जरूरी है ।"

"रौनक शाह का एड्रेस तो तुम्हें यहाँ बस एक आदमी बता सकता है ।"

"कौन ?"

"विली ।"

"यह विली कौन है ?"

तुरंत रेस्ट हाउस के तन्हा कोने में बैठे एक आदमी ने अपना सिर घुटनों से ऊपर उठाया तथा उसे बहुत गौर से देखा ।

□□□

वही विली था ।

विली अफ्रीकन था । वह बिल्कुल सिंगल सिलेंडर जैसी देहयष्टि वाला आदमी था । उसके बाल सिर से अपाचे इंडियन की तरह आधे गायब थे और उसमें चौड़ी-चौड़ी नालियाँ बनी थीं । वह अपने एक कान में कुंडल भी पहने हुए था ।

पहली नज़र में वह कोई टैक्सी ड्राइवर कम और किसी पॉप बैंड का मास्टर ज्यादा लगता था ।

"एक विली ही है ।" उसी क्षण एक टैक्सी ड्राइवर फुसफुसाया, "जिसकी रौनक शाह के साथ दोस्ती थी ।"

"लेकिन विली से थोड़ा सावधान रहना ।"

करण सक्सेना, विली की तरफ बढ़ा ।

विली उसे नशेड़ी-सा लग रहा था ।

करण सक्सेना को हैरानी हुई, रौनक शाह जैसे रॉ एजेंट की विली से दोस्ती थी ।

"हैलो विली !" करण सक्सेना विली के नजदीक पहुँचकर बोला ।

"हैलो ।"

विली उठकर खड़ा हुआ ।

वह बहुत लंबा था ।

करण सक्सेना ने उससे मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया, परंतु विली ने उसे कोई भाव नहीं दिया । उसने सिर्फ अपने कंधे उचकाए ।

वह से जरूरत से ज्यादा मूडी था ।

"ओके ।" करण सक्सेना ने हाथ पीछे खींच लिया, "इट डजंट मैटर ।"

"क्या तुम जानते हो, रौनक शाह इस समय कहाँ है ? "

"क्यों पूछ रहे हो ?"

"मैंने बताया न, मैं उसका दोस्त हूँ । हिंदुस्तान से आया हूँ और मेरा उससे फौरन मिलना बहुत जरूरी है ।"

"फौरन ?"

"हाँ ।"

"लेकिन ऐसा लगता तो नहीं कि तुम्हें उससे फौरन मिलना बहुत जरूरी है ।"

विली ने अपने कान में लगी सिगरेट निकालकर होंठों से चिपकाई तथा उसे सुलगाया।

विली के धुआँ उगलते ही करण सक्सेना को पता चला कि वह चरस की सिगरेट थी।

विली चरसी था।

"क्यों !" करण सक्सेना बोला, "तुम्हें ऐसा क्यों लगता है ?"

"क्योंकि अगर ऐसा होता, तो अब तक 500 शिलिंग निकलकर तुम्हारे हाथ में आ गये होते।"

"मतलब ?"

"मतलब भी समझाना पड़ेगा।" विली ने बेहद शांतिपूर्वक कहा, "भाइयों इस हिंदुस्तानी बाबू को जरा बताओ कि शिलिंग लिए बिना कभी कोई काम नहीं करता।"

पूरे रेस्ट हाउस में एक बार फिर हँसी का फव्वारा छूट पड़ा।

जबकि करण सक्सेना की तब समझ में आया कि वह उससे एड्रेस बताने की अपनी फीस मांग रहा था। करण सक्सेना ने कम से कम इस बाबत उससे कोई बहस करना मुनासिब नहीं समझा। उसने फौरन 500 शिलिंग निकालकर विली की तरफ़ बढ़ाये, जिन्हें विली ने फौरन ही अपने कब्जे में कर लिया।

"आदमी समझदार मालूम होते हो।" विली ने चरस का ढेर सारा धुआँ फिर करण सक्सेना के चेहरे की तरफ छोड़ा।

कमांडर करण सक्सेना ने हाथ से धुएँ को इधर-उधर किया।

"मेरे साथ आओ।"

करण सक्सेना विली के पीछे-पीछे रेस्ट हाउस से बाहर की तरफ चल पड़ा।

उन दोनों के बाहर निकलते ही रेस्ट हाउस में जिस तरह पहले चिल्ल पौं मची हुई थी, वैसे ही फिर मचने लगी।

□□□

वह एक काफी पुराने मॉडल की कई जगह से डेंट पेंट की हुई टैक्सी थी। रेस्ट हाउस से निकलने के बाद जिसकी तरफ विली बढ़ा।

विली उस टैक्सी की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा और उसने हाथ आगे बढ़ाकर करण सक्सेना के लिए साइड डोर खोल दिया।

"बैठो।"

करण सक्सेना उसके बराबर में जा बैठा।

तब तक कमांडर करण सक्सेना यह समझ रहा था कि विली उसे सीधे रौनक शाह के पास लेकर जा रहा है। मगर ऐसा नहीं था। विली तन्हाई की वजह से बाहर टैक्सी में

आकर बैठा था। उसने टैक्सी स्टार्ट नहीं की थी और उसका कहीं जाने का कोई प्रोग्राम भी मालूम नहीं होता था।

"नाम क्या है तुम्हारा ?" नशे में होने की वजह से विली का लहजा खोया खोया था।

"करण।"

"मिस्टर करण, रौनक शाह का पता मैं तुम्हें बता देता हूँ।" विली ने पूर्ववत लहजे में कहा, "परंतु एक बात समझ लो, तुम्हारा हिंदुस्तान से कंपाला तक आना फिलहाल बेकार गया है। क्योंकि रौनक शाह का पता जानने के बावजूद भी तुम उससे मिल नहीं पाओगे।"

करण सक्सेना के चेहरे पर आश्चर्य के भाव नमूदार हुए।

"क्यों, मैं उससे मिल क्यों नहीं पाऊँगा ?"

"क्योंकि तुम्हारा दोस्त रौनक शाह, वह रौनक शाह, जो एक टैक्सी ड्राइवर हुआ करता था, इस समय जेल में बंद है और एक लंबी सजा काट रहा है।"

"क... क्या ?" करण सक्सेना विस्मित रह गया, "जेल में बंद।"

उसके दिल दिमाग पर पत्थर से गड़गड़ाते हुए गिरे।

वह एक और नया रहस्य-उद्घाटन था।

"लेकिन वह जेल कैसे पहुँच गया ?" करण सक्सेना बोला, "अभी कुछ दिन पहले ही तो उसने मुझसे टेलीफोन पर बात की थी।" करण सक्सेना ने सफेद झूठ बोला, "और उसी ने मुझे आमंत्रण देकर यहाँ बुलाया था।"

विली भी अब चौंका।

उसका चरस की सिगरेट वाला हाथ होंठों तक पहुँचते-पहुँचते ठिठक गया।

"कितने दिन पहले टेलीफोन पर बात की थी ?"

"मुश्किल से 7-8 रोज पहले।"

"फिर ठीक है। फिर तो उसने तुमसे टेलीफोन पर बात की होगी।" विली ने अपनी गर्दन इधर-उधर हिलाई।

"यानी उसे हाल फिलहाल में ही जेल हुई है ?"

"हाँ, अभी चार रोज पहले की ही तो बात है।"

"हुआ क्या था ?" करण सक्सेना का लहजा बड़ा सस्पेंसफुल था।

"उसने बैंक में डकैती डाली थी।"

करण सक्सेना एक बार फिर यूँ चौंका, जैसे पूरी कार में जलजला आ गया हो।

"डकैती !" करण सक्सेना का अत्यंत विस्फारित स्वर, "रौनक शाह ने डकैती डाली थी ? बैंक में ?"

"हाँ।"

विली ने बड़े इत्मीनान के साथ सिगरेट का एक कश लगाया। जबकि करण सक्सेना को अभी अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। उसे लग रहा था कि वह जो सुन रहा है, वह गलत है। झूठ है। भला रौनक शाह बैंक में डकैती कैसे डाल सकता था ? एक रॉ एजेंट डकैत कैसे हो सकता था ? इंपॉसिबल ! इट कांट बी सो।"

जरूर वह आदमी झूठ बोल रहा था।

"क्या तुम सच कह रहे हो ?" करण सक्सेना अच्छी तरह तस्दीक करने के लिहाज से बोला।

"मुझे भला झूठ बोलकर क्या मिलेगा ?"

"यह तो वही जाने। मुझे तो उससे यह सब पूछने का मौका नहीं मिला।"

"क्या जब वह बैंक में डकैती डालने गया था, तो उसके साथ कोई और भी था ?"

"नहीं, वह अकेला था।"

"वह अकेला ही बैंक लूटने चला गया ?"

"हाँ।"

"हैरानी है।" करण सक्सेना का विस्मय बढ़ा।

"इसमें हैरानी जैसी कोई बात नहीं। इस दुनिया में एक से एक दिलेर आदमी पड़ा है। अगर अपना रौनक शाह भी ऐसा कर गया, तो क्या अजीब है ? और उसके पास तो रिवॉल्वर भी थी, जबकि इस दुनिया में तो ऐसे-ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो बिना हथियार के ही यह सब कर गुजरते हैं। हाँ, एक बात का मुझे मलाल जरूर है।"

"किस बात का ?"

"रौनक शाह बैंक लूट नहीं सका। उससे पहले ही वह पकड़ा गया।"

"यानी वह एक असफल बैंक डकैती थी ?"

"यस।"

विली ने चरस की सिगरेट का एक कश और खींचा।

करण सक्सेना के चेहरे पर व्यग्रता के भाव नमूदार हुए। मामला किसी भी एंगल से फिट नहीं बैठ रहा था। भला एक रॉ एजेंट इतना मूर्ख कैसे हो सकता था, जो वह अकेला ही बैंक डकैती जैसा कार्य अंजाम देने चला गया और बैंक डकैती की योजना भी इतनी लचर हो, इतनी नाकाबिले-बर्दाश्त हो, जो वह पहले पड़ाव पर ही ढेर हो जाये।

"वह जेल कौन-सी है, जहाँ इस वक्त रौनक शाह बंद है ?"

"कंपाला जेल।"

"क्या वह शहर के अंदर ही है ?"

"नहीं ।" विली ने बताया, "कंपाला जेल शहर से कोई 40 किलोमीटर आगे एक बहुत घनघोर बियाबान जंगल में बनी हुई है । वह जेल कई मायनों में दुनिया की सबसे अनोखी जेलों में से एक है ।"

"किन मायनों में ?"

"जैसे वह जेल एक बहुत बड़े पाइप की तरह है । पाइप, जो आसमान की तरह मुँह उठाए एकदम सीधा खड़ा है । उस पाइप की लंबाई 300 फुट है और सबसे बड़ी बात यह है कि उस कंपाला जेल के अंदर दाखिल होने का कोई दरवाजा नहीं है ।"

"दरवाजा नहीं है ।" करण सक्सेना बोला, "ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"ऐसा ही है ।"

"फिर उस जेल में कैदियों को लाया, ले जाया किस तरह जाता है ? उनका जीवन यापन कैसे चलता है ?"

"उसका भी बड़ा अनोखा तरीका है ।"

"क्या ?"

"जैसाकि मैंने पहले ही बताया कि वह जेल पाइप की तरह है, जो आसमान की तरफ मुँह उठाए खड़ा है । उसमें नीचे से घुसने का कोई दरवाजा नहीं है । अलबत्ता वह 300 फुट ऊँचा पाइप ऊपर आसमान की तरफ से पूरे का पूरा खुला है और उसका व्यास 5 एकड़ का है, जो किसी बड़े कंपाउंड का व्यास होता है । वही उस जेल का एंट्रेंस डोर है ।"

"यानी आसमान की तरफ से उस जेल के अंदर दाखिल होते हैं और बाहर निकलते हैं ?"

"बिलकुल ।"

"कैसे ?"

"एक हेलीकॉप्टर है, जो इस काम को अंजाम देता है । उसी हेलीकॉप्टर में बिठाकर ऊपर से कैदियों को कंपाला जेल के अंदर ले जाया जाता है और फिर उसी हेलीकॉप्टर में बिठाकर उन्हें निकाला जाता है ।"

"बड़ी अद्भुत जानकारी दे रहे हो ।"

करण सक्सेना ने वाकई उस तरह की जेल के बारे में पहले कभी नहीं सुना था ।

वह सोच भी नहीं सकता था कि दुनिया में इस तरह की भी जेल होगी ।

"लेकिन एक बात मेरी समझ नहीं आ रही ?" करण सक्सेना ने पूछा ।

"क्या ?"

"उस जेल में सीधे-साधे तौर पर ही एंट्रेंस डोर क्यों नहीं बनाया गया ? उसमें कैदियों को हेलीकॉप्टर के द्वारा ऊपर से ले जाये जाने का यह प्रपंच क्यों रचा गया ?"

"इसके पीछे दो वजह हैं ?"

"क्या ?"

"पहली वजह तो सिक्योरिटी ही है। उस जेल में चूंकि कोई खिड़की दरवाजा नहीं है, इसलिये वह पूरी तरह एक अभेद्य जेल है और उस जेल के किसी भी कैदी का भागना असंभव है। उसे जेल को बने हुए 50 साल से भी ज्यादा गुजर चुके हैं और उस जेल का आज तक का इतिहास गवाह है कि वहाँ से कभी कोई कैदी फरार नहीं हुआ। इसके अलावा उसे जेल का एंट्रेंस डोर न बनाने के पीछे एक वजह और भी है तथा शायद वही सबसे ज्यादा सॉलिड वजह है।"

"क्या ?"

"जैसाकि मैंने बताया, कंपाला जेल बहुत घनघोर जंगल के बीच बनी हुई है। वहाँ कदम-कदम पर आदमखोर जानवर हैं। मांसाहारी पेड़ पौधे हैं। इसके अलावा जंगल में ऐसा कोई रास्ता भी नहीं है, जो सीधे जेल तक पहुँचाता हो। वहाँ कदम-कदम पर मौत बिछी है। अगर कोई जंगल को पार करके कंपाला जेल तक पहुँचना चाहेगा, तो उसकी मौत निश्चित है। इसलिये उस जेल का कोई एंट्रेंस डोर नहीं बनाया गया। क्योंकि एंट्रेंस डोर बनाकर होता भी क्या ? सड़क के रास्ते जंगल को पार करते हुए किसी भी कैदी को वैसे ही जेल के अंदर नहीं ले जाया जा सकता था इसलिये उस जेल की इस तरह की संरचना की गई।"

"ओह !"

करण सक्सेना समझ गया, विली ठीक कह रहा था।

उसकी बात में दम था।

जरूर इसीलिए उस जेल के अंदर आने जाने का रास्ता ऊपर से रखा गया था।

"मेरे एक सवाल का जवाब और दो ?"

"वह भी पूछो। हालांकि 100-100 के 5 नोट से कहीं ज्यादा की जानकारी तुम ले चुके हो लेकिन चलेगा। बाकी कंसेशन। स्पेशल हॉलीडे ऑफर।"

करण सक्सेना के होंठों पर मुस्कुराहट दौड़ गई।

विली खुद को जितना खतरनाक शो कर रहा था, वास्तव में उतना था नहीं।

"अगर मैं अब जेल के अंदर ही रौनक शाह से एक बार मुलाकात करना चाहूँ, तो कैसे होगी ?"

"नहीं हो सकती।" विली ने सख्ती से बात काटी।

"क्यों ?"

"क्योंकि कंपाला जेल में मुलाकातियों को नहीं जाने दिया जाता। वहाँ तक पहुँचने का रास्ता ही इतना दुर्गम है कि मुलाकातियों को इस तरह की परमिशन नहीं दी जा

सकती । इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि रौनक शाह का मौजूदा एड्रेस मालूम होने के बावजूद भी तुम उससे मुलाकात नहीं कर पाओगे ।"

"ओह !"

करण सक्सेना के चेहरे पर निराशा के बादल तैर गये ।

वाकई जिस रौनक शाह के भरोसे वह हिंदुस्तान से कंपाला आया था, वही रौनक शाह इस समय उसकी पहुँच से दूर था ।

"ठीक है, मैं अब चलता हूँ ।" करण सक्सेना उठने का उपक्रम करता हुआ बोला, "तुमने मुझे रौनक शाह के बारे में जो जानकारी दी, उसके लिए वेरी-वेरी थैंक्स ।"

"नो, नो ।" विली की गर्दन इनकार में हिली, "मैं थैंक्स, सॉरी और एक्सक्यूज़ जैसे शब्दों में यकीन नहीं रखता । मैंने जो कुछ किया, मनी के लिए किया । शिलिंग के लिए किया । वेरी सिंपल ।"

"ओके, तब भी मैं थैंक्स कहूँगा ।"

करण सक्सेना टैक्सी से बाहर निकल आया ।

उसके पीछे पीछे लंबे क़द का विली भी बाहर निकला । उसकी चरस की सिगरेट अब खत्म हो चुकी थी ।

जाते-जाते करण सक्सेना ने उसकी तरफ फिर हाथ बढ़ाया ।

"मैं कोई भी काम बिना दाम लिए नहीं करता । अगर हाथ मिलाने की ज्यादा ही ख्वाहिश है तो 50 शिलिंग देने होंगे ।"

"कोई बात नहीं ।" करण सक्सेना अपनी जिंदगी में पहली बार उस तरह के आदमी से दो-चार हो रहा था, "मैं तुमसे हाथ मिलाने के लिए 50 शिलिंग भी दूँगा ।"

करण सक्सेना ने 50 शिलिंग का नोट उसकी जेब में ठूंसा और फिर उससे कसकर हाथ मिलाया ।

उसके बाद उसने विली से विदा ली ।

"सुनो ।"

करण सक्सेना थोड़ी ही दूर गया होगा कि तभी उस आवाज को सुनकर उसके कदम ठिठके ।

वह आवाज़ विली की थी ।

करण सक्सेना पलटा । विली अभी भी उसी टैक्सी के पास खड़ा उसे देख रहा था ।

"तुमने मुझे आवाज दी ?"

"यस मिस्टर करण । मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ ।"

"क्या ?"

करण सक्सेना वापस चलता हुआ विली के नजदीक पहुँचा ।

"जानते हो, मेरी जिंदगी में यह पहला चांस है ।" वह विली की आवाज में पहली बार नरमी देख रहा था, "जब किसी आदमी ने मुझसे हाथ मिलाने के लिए मुझे 50 शिलिंग दिये हैं । वरना मुझसे आज तक सिर्फ ऐसे ही लोग टकराते रहे, जिन्होंने मुझ में हाथ मिलाने की इच्छा तो जाहिर की, परंतु जब मेरे जैसे मनी माइंडेड आदमी ने उसके बदले में भी उनसे नोट मांगे, तो वह सिर्फ मुझसे अपना काम निकालकर आगे चले गये, लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया । सचमुच तुम ग्रेट हो । और तुम्हारी इस ग्रेटनेस को यह विली भी सलाम करता है । अब एक बात मैं भी तुम्हें अपनी तरफ से बताना चाहूँगा ।"

"क्या ?"

"मैं नहीं जानता वह बात तुम्हारे किसी मतलब की है या नहीं; परंतु अब एकाएक उस बात को मैं तुम्हें बताना अपना फर्ज समझता हूँ । दरअसल जिस तरह आज तुम रौनक शाह को पूछते-पूछते यहाँ आये हो, इसी तरह परसों भी दो आदमी उसे पूछते-पूछते यहाँ आये थे ।"

"दो आदमी ?"

"हाँ ।"

"कौन थे ?"

"नाम तो उन्होंने मुझे अपना नहीं बताया, लेकिन वह अपनी डिटेल तुम्हारी तरह ही दे रहे थे कि वह हिंदुस्तान से आये हैं और उसके कोई रिश्तेदार हैं तथा उसका रौनक शाह से फौरन मिलना बेहद जरूरी है ।"

"देखने में कैसे थे ?"

"वैसे तो पढ़े लिखे थे, परंतु फिर भी शरीफ नजर नहीं आ रहे थे ।"

"जानकारी देने के लिए शुक्रिया ।"

करण सक्सेना ने एक बार फिर विली से गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया ।

इस मर्तबा विली के लहजे में भी गर्मी थी ।

"थैंक्यू !" विली बोला ।

करण सक्सेना ने चौंककर विली की तरफ देखा । विली के होंठों पर मुस्कान थी ।

उसके बाद करण सक्सेना विदा हो गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना का रौनक शाह से मिलना जितना जरूरी था, उतना ही उसके और रौनक शाह के बीच फासला बढ़ रहा था ।

और अब तो हद से ज्यादा दूरी बढ़ चुकी थी ।

वह कंपाला जेल में बंद था ।

कंपाला जेल, जो अभेद्य जेल थी। जिसमें अंदर दाखिल होने के लिए कोई दरवाजा नहीं था।

करण सक्सेना उस मिशन के बारे में जितना सोच रहा था, उतना उसका दिमाग घूम रहा था।

चीफ की तरफ से उसे आदेश दिया गया था कि वह फारुख अहमद मसूदी तक जल्द से जल्द पहुँचे, परंतु अभी वह रौनक शाह तक ही नहीं पहुँच पा रहा था।

इसके अलावा उसका यह शक भी अब बहुत पुख्ता हो चुका था कि जरूर पाकिस्तान की खुफिया आईएसआई के एजेंट भी वहाँ मौजूद थे।

जो रौनक शाह के बारे में टैक्सी स्टैंड पर पूछताछ करने गये थे, वे वही थे।

और जो कॉरपोरेशन की बिल्डिंग में गये थे, वह भी वही थे। इसके अलावा उस पूरे घटनाक्रम में एक बात और साबित होती थी कि आईएसआई एजेंटों को यह तो इत्तला मिल चुकी थी कि फारुख अहमद मसूदी इन दिनों कंपाला में है, परंतु वह कंपाला में कहाँ था, इसकी भनक अभी तक उन्हें नहीं थी। इसीलिए वह भी रौनक शाह के पीछे हाथ धोकर पड़े थे।

जबकि उस ड्रामे का हीरो, उस खेल का असली मदारी रौनक शाह अब गायब था।

सबकी पहुँच से दूर।

कमांडर करण सक्सेना को रौनक शाह का बैंक डकैती वाला मामला भी कुछ समझ नहीं आ रहा था।

उलझन गहरी थी।

करण सक्सेना वापस अपने होटल पहुँच गया और सोचने लगा कि क्या करें ?

काफी देर सोच-विचार करने के बाद आखिरकार उसने एक निर्णय ले ही लिया।

□□□

कमांडर करण सक्सेना जिस होटल वेस्ट एंड मे ठहरा हुआ था, वह उसके रिसेप्शन पर पहुँचा।

रिसेप्शन पर उस समय एक अफ्रीकन लड़की बैठी थी। वह चूंकि अफ्रीकन थी इसलिये खूबसूरत किसी भी एंगल से नहीं थी। हाँ, सेक्स अपील उसमें जरूर भरपूर थी। जैसे उसकी वक्ष काफी भारी थे। नितंबों में कसावट थी। इसके अलावा पूरी देह मांसल थी।

"गुड आफ्टरनून सर !" वह करण सक्सेना को देखकर मुस्कुराई।

"गुड आफ्टरनून।"

"कैन आई हेल्प यू ?"

"क्या आपका होटल अपने ग्राहकों को व्हीकल भी अरेंज कराता है ?"

"जी हाँ।" लड़की ने विनम्रतापूर्वक कहा, "आपको क्या चाहिये ?"

"मुझे एक टैक्सी की जरूरत है।"

"विद ड्राइवर ?"

"जी नहीं, विदाउट ड्राइवर। टैक्सी मैं खुद चला लूँगा। मैं काफी अच्छा ड्राइवर हूँ।"

करण सक्सेना ने अपना ड्राइविंग लाइसेंस निकालकर दिखाया।

लड़की ने ड्राइविंग लाइसेंस बहुत सरसरी तौर से देखा तथा उसे वापस लौटा दिया।

ड्राइविंग लाइसेंस पर उसका नाम करण शर्मा लिखा हुआ था।

वह उसी नाम से युगांडा में दाखिल हुआ था।

होटल के रजिस्टर में भी उसका वही नाम दर्ज था।

"मिस्टर करण !" लड़की बोली, "लेकिन बिना ड्राइवर के टैक्सी लेने के लिए आपको अपना पासपोर्ट होटल में जमा कराना होगा।"

"नो प्रॉब्लम। मैं पासपोर्ट होटल में जमा कराने के लिए तैयार हूँ।"

"पासपोर्ट दिखाइए।"

करण सक्सेना ने अपना पासपोर्ट भी दिखाया।

उसे पहले ही मालूम था, उससे पासपोर्ट भी मांगा जायेगा, इसीलिए वह अपने सुइट में से पासपोर्ट लेकर आया था।

लड़की कुछ क्षण पासपोर्ट पर लगे वीजा तथा इमीग्रेशन की मुहर को ध्यान से देखती रही।

"वेट ए मिनट।" फिर वह कुर्सी छोड़कर खड़ी होती हुई बोली, "मैं अभी आती हूँ। बिना ड्राइवर के टैक्सी देने से पहले पासपोर्ट एक बार मैनेजर से चेक कराना जरूरी होता है।"

लड़की पासपोर्ट लेकर तुरंत अपने सैंडल ठकठकाती हुई रिसेप्शन डेस्क के पीछे से निकली और फिर मैनेजर के केबिन की तरफ बढ़ गई।

पासपोर्ट हालांकि जाली था, मगर कमांडर करण सक्सेना के माथे पर हल्की-सी शिकन तक नहीं उभरी। उसे मालूम था, मैनेजर के फरिश्ते भी उसे जाली पासपोर्ट के तौर पर आईडेंटिफाई नहीं कर पाएंगे।

वही हुआ।

थोड़ी देर बाद ही लड़की फिर वापस आई। पासपोर्ट तब भी उसके हाथ में था। वह आते ही अपनी सीट पर बैठ गई और फिर एक रजिस्टर निकालकर उसमें एंट्री करने लगी।

पासपोर्ट उसने अपने पास जमा कर लिया।

"यहाँ सिग्नेचर कर दीजिए।"

करण सक्सेना ने उसके बताए स्थान पर सिग्नेचर कर दिये ।

"ओके ।" फिर वह लड़की बोली, "अभी थोड़ी देर बाद टैक्सी की चाबी आपके पास पहुँच जायेगी ।"

"थैंक्यू ।"

करण सक्सेना वापस होटल की उन सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया, जो उसके सुइट की तरफ जाती थी ।

दो घंटे बाद ही एक बेलबॉय उसे टैक्सी की चाबी दे गया और टैक्सी का नंबर बता गया ।

वह रात; जो उसके लिए बहुत खास रात साबित होने वाली थी ।

□□□

रात का उस समय ठीक एक बज रहा था, जब कमांडर करण सक्सेना भली-भांति तैयार होकर अपने सुइट से बाहर निकला ।

बाहर गहरा सन्नाटा था ।

खामोशी ।

सड़कें वीरान पड़ी हुई थी ।

आधे से ज्यादा कंपाला शहर सो चुका था । सिर्फ नाइट क्लबों, होटलों और कुछेक बीयर बारों में ही लाइटें जलती नजर आ रही थीं ।

कमांडर करण सक्सेना को टैक्सी तलाश करने में कुछ परेशानी न हुई । वह होटल की मारकी में ही खड़ी थी ।

वह काले रंग की टैक्सी थी जिसकी छत पीली पुती हुई थी ।

उसका हुड भी काफी लंबा था ।

करण सक्सेना टैक्सी में सवार हुआ और फिर उस घनघोर बियाबान जंगल की तरफ चल पड़ा, जहाँ कंपाला जेल बनी थी ।

कंपाला जेल ।

करण सक्सेना ने निर्णय लिया था कि वह एक बार कंपाला जेल को नजदीक से जाकर जरूर देखेगा । हो सकता है कि कंपाला जेल को नजदीक से देखने के बाद उसे रौनक शाह से मुलाकात करने का कोई तरीका सूझ जाये । हालांकि विली ने जिस तरह से उस जेल का उसके सामने नक्शा खींचा था, उस लिहाज से जेल में दाखिल होना तो बहुत बड़ी बात है, जंगल की वजह से जेल तक पहुँचना ही असंभव था; परंतु कभी-कभी किसी चीज का विवरण सुनने में तथा फिर उसे प्रत्यक्ष देखने में काफी फर्क होता है ।

करण सक्सेना ने यही सोचकर वह रिस्क उठाने का फैसला किया था ।

एक कोल्ट रिवॉल्वर अभी भी करण सक्सेना के ओवरकोट की जेब में रखी थी, जबकि दूसरी क्लेंसी हैट की ग्लिप में थी।

दोनों लोडेड थीं।

इसके अलावा करण सक्सेना ने एक तीन सेल वाली टॉर्च और एक लंबे फल वाला चाकू भी अपने पास रख लिया था।

वह दोधारी चाकू था।

उसके फल के दोनों तरफ धार लगी हुई थी और काफी पैनी धार लगी थी। उस तरह का चाकू छोटे-मोटे जंगली जानवरों से निपटने के लिए काफी काम आता है।

कुल मिलाकर वह किसी भी तरह की मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार होकर जंगल की तरफ रवाना हुआ था।

अब कोई आसमानी कहर ही उसके ऊपर टूट पड़ता तो अलग बात थी।

टैक्सी दौड़ती रही।

वह कोई 70 की स्पीड से दौड़ रही थी। कंपाला शहर अब काफी पीछे छूट चुका था और फिलहाल टैक्सी हाईवे पर भागी जा रही थी।

थोड़ी देर टैक्सी हाईवे पर दौड़ती रही।

फिर करण सक्सेना ने हाईवे भी छोड़ दिया और टैक्सी को एक पतली-सी संकरी सड़क पर डाला।

वह पथरीली सड़क थी।

उबड़-खाबड़।

उस सड़क के दोनों तरफ घने ऊँचे पेड़ थे और झाड़ झंझाड़ थे।

टैक्सी हिचकोले खाती हुई अब उस सड़क पर आगे बढ़ने लगी।

एकाएक करण सक्सेना ने उस संकरी सड़क पर टैक्सी की गति भी काफी धीमी कर दी थी। क्योंकि उसे वहाँ तेज रफ्तार से भगाना असंभव था।

करण सक्सेना ने देखा, सड़क के दोनों तरफ यूकेलिप्टस और मेवथिली के दरख़्त थे।

इसके अलावा और भी कई तरह के पेड़ वहाँ थे, जो अफ्रीका में ही पाए जाते थे। करण सक्सेना ने एक बात और नोट की। उस जंगल में मुख्य तौर पर तीन तरह के पेड़ थे। बेहद ऊँचे, उससे नीचे और नीचे। यही वजह थी, जो चाँद की रोशनी भी छनकर नीचे तक नहीं पहुँच पा रही थी। वहाँ घनघोर अंधेरा था। कमांडर करण सक्सेना को बर्मा के उस खौफनाक जंगलों की याद आई, जहाँ उसकी अपने-अपने फन में महारथ 12 योद्धाओं से मुठभेड़ हुई थी।

(देखें- उपन्यास 'मेरे हाथ मेरे हथियार')

वर्मा के उस खौफनाक जंगल की विशेषता भी यही थी कि वहाँ तीन तरह के पेड़ पाए जाते थे, इसीलिए रोशनी पेड़ों के झुरमुटों के बीच में से होकर नीचे तक नहीं पहुँच पाती थी ।

करण सक्सेना को लगा, जैसे वह एक बार फिर बर्मा के उसी खौफनाक जंगल में दाखिल हो रहा है ।

जहाँ कदम-कदम पर मौत बिछी थी ।

कदम-कदम पर जान का खतरा था ।

सचमुच उस जंगल का पूरा वातावरण बड़ा रहस्यमयी था । दिल में दहशत पैदा करने वाला ।

दूर दराज से जंगली जानवरों के बोलने की आवाज भी आ रही थी । करण सक्सेना ने उनमें से कुछ आवाजों को पहचाना भी । वह चीते और लकड़बग्घे की आवाजें थी ।

फिलहाल उस घनघोर अंधेरे में टैक्सी की हेडलाइट करण सक्सेना की बहुत मददगार साबित हो रही थी । वह उन्हीं हेडलाइटों के प्रकाश में जंगल को देखता हुआ आगे बढ़ रहा था ।

टैक्सी दौड़ती रही ।

दौड़ती रही ।

तभी करण सक्सेना ने अनुभव किया कि वह सड़क आगे से और भी ज्यादा संकरी और तंग होती जा रही थी । इसके अलावा पेड़ भी अब घने होने लगे थे । इधर-उधर जो झुरमुट थे, टैक्सी अब उनसे रगड़ खाती हुई आगे बढ़ रही थी ।

उसी क्षण करण सक्सेना की निगाह सड़क के किनारे लगे एक होर्डिंग पर पड़ी, जो कंपाला गवर्नमेंट की तरफ से लगाया गया था ।

करण सक्सेना ने हेडलाइट की रोशनी में होर्डिंग पर लिखी इबारत पढ़ी ।

सावधान !

जंगल में और आगे न जायें, आगे जान को खतरा है ।

आदेशानुसार

कंपाला म्युनिसिपल कारपोरेशन ।

करण सक्सेना ने बोर्ड पर लिखे दिशा-निर्देशों को पूरी तरह नजरअंदाज किया और टैक्सी दौड़ाता रहा ।

घने पेड़ और घुप्प अंधेरे की वजह से अभी करण सक्सेना को कंपाला जेल की बाउंड्री वॉल नजर नहीं आ रही थी और इसीलिए वह अभी तक अपनी कोई दिशा भी निर्धारित नहीं कर पा रहा था ।

उसे फिलहाल यही मालूम नहीं था कि वह जंगल में सही दिशा में आगे बढ़ रहा है या फिर गलत दिशा में ।

फिलहाल तो उसका एक ही मकसद था कि वह जंगल में ज्यादा से ज्यादा अंदर घुस जाये और जब उसे जेल की बाउंड्री वॉल नजर आये, तब कहीं वह अपनी कोई दिशा निर्धारित करे ।

टैक्सी दौड़ती रही ।

करण सक्सेना अभी जंगल में 6-7 किलोमीटर ही अंदर घुसा होगा कि तभी उसे एकाएक ब्रेकअप अप्लाई करके टैक्सी रोकनी पड़ी ।

आगे एक बहुत गहरा गड्ढा था ।

इसके अलावा वह सड़क अब इतनी ज्यादा तंग हो चुकी थी कि टैक्सी को उस सड़क पर आगे बढ़ाते रहना असंभव था ।

करण सक्सेना ने इग्निशन ऑफ करके टैक्सी की चाबी अपनी जेब में डाल ली ।

हेडलाइट बंद होते ही आगे का सब कुछ दिखाई पड़ना बंद हो गया ।

अब वहाँ अंधेरा था ।

एकदम गहरा काजली अंधेरा, जो हाथ को हाथ भी न सुझाई दे ।

करण सक्सेना ने डैश बोर्ड पर रखी तीन सैलों वाली टॉर्च उठा ली तथा सिर दबे पाँव टैक्सी से नीचे उतरा ।

नीचे सूखे पत्तों का अंबार था । जैसे ही करण सक्सेना के पैर सूखे पत्तों पर पड़े, उनमें जोर से कड़कड़ाहट पैदा हुई ।

करण सक्सेना वहीं थमकर खड़ा हो गया ।

इतना ही नहीं, उसने साँस रोककर आसपास की आहट लेने की भी कोशिश की; कि वहाँ कोई जंगली जानवर तो मौजूद नहीं है ।

लेकिन आसपास गहरी खामोशी छाई थी ।

"एक-एक कदम संभालकर रखना होगा ।" करण सक्सेना मन ही मन बड़बड़ाया ।

लंबे फल वाला चाकू उसने अपने मोजे में खोंसा हुआ था, जिसे वह पलक झपकते ही एकदम से झुककर बाहर निकाल सकता था ।

थोड़ा रुककर करण सक्सेना ने टॉर्च जलाई ।

तुरंत उस हाई पावर वाली टॉर्च का प्रकाश एक निश्चित दायरे में चारों तरफ बिखर गया ।

फिर करण सक्सेना 'चीता चाल' से बहुत धीरे-धीरे जंगल में आगे की तरफ बढ़ने लगा ।

चीता चाल ।

वह एक खास तरह की चाल थी ।

उस समय करण सक्सेना के चलने से जो ध्वनि पैदा हो रही थी, वह ऐसी ध्वनि थी; जैसे कोई चीता झाड़ियों के बीच सरसराकर चल रहा हो ।

उन आवाजों को सुनकर कोई सोच भी नहीं सकता था कि वह किसी आदमी की पदचाप हैं ।

करण सक्सेना ने कभी जंगल वारफेयर (जंगल युद्धकला) की जो अति विशिष्ट ट्रेनिंग ली थी, वह पूरी ट्रेनिंग उसके दिमाग में ताजा हो उठी । जंगल वारफेयर के दौरान एक-एक कदम बहुत सोच-समझकर उठाया जाता है । अपने आँख, नाक, कान सब कुछ चौकन्ने रखने पड़ते हैं और इस समय करण सक्सेना वही सब कर रहा था ।

उसकी आँख, कान, नाक सब कुछ खुले थे ।

चौकन्ने ।

कभी जंगल वारफेयर की वही ट्रेनिंग उसके 12 योद्धाओं से मुठभेड़ करते समय भी काफी काम आई थी ।

और आज फिर काम आ रही थी ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना निरंतर उस खौफनाक जंगल की अनाम, अनजान राहों पर आगे बढ़ा जा रहा था ।

अभी उसने थोड़ा ही फासला तय किया होगा कि एकाएक उसके कदम ठिठक गये ।

वजह ?

वजह भी बहुत बड़ी थी ।

करण सक्सेना ने किसी जानवर के बहुत गहरे-गहरे साँस लेने की आवाज सुनी । वह ऐसी आवाज थी, जैसे कोई बहुत देवकाय शरीर वाला जानवर उसके आसपास हो ।

करण सक्सेना फौरन वही झाड़ियों में ही थमकर खड़ा हो गया ।

टॉर्च उसने बुझा दी ।

इस समय उसके शरीर का कोई अंग हरकत नहीं कर रहा था । अगर हरकत कर रही थी, तो सिर्फ आँखें । करण सक्सेना बड़ी चौकन्नी आँखों से इधर-उधर देखने लगा ।

आसपास उसे कोई नजर न आया ।

हालांकि वहाँ अंधेरा था ।

परंतु फिर भी करण सक्सेना अपनी आँखों से आसपास झाड़ियों में झांकने की पूरी कोशिश कर रहा था ।

करण सक्सेना खतरा भाँप चुका था ।

उसे पूरा-पूरा शक था, वहाँ आसपास जरूर कोई भयानक जीव है ।

जीव के साँस लेने की आवाजें भी अब नहीं आ रही थीं ।

करण सक्सेना ने जंगल वार फेयर की स्पेशल ट्रेनिंग के दौरान खतरनाक जंगली जानवरों के बारे में बहुत-सी बातें सुनी थी । जैसे उसने सुना था कि वह जंगली जानवर इंसान के ऊपर धोखे से हमला करते हैं तथा फिर सेकेंडों में उसे फाड़ डालते हैं ।

करण सक्सेना अपनी जगह स्तब्ध-सी मुद्रा में खड़ा रहा ।

क्योंकि जंगली जानवर के साँस लेने की आवाज भी अब उसे नहीं आ रही थी, इसलिये उस बात ने उसे शक में डाल दिया था ।

क्या माजरा था ?

क्या वह जानवर उसे देख चुका था ?

क्या अब वह उसके ऊपर हमला करने के लिए तैयार था ?

जब काफी देर तक भी कमांडर करण सक्सेना के ऊपर कोई हमला न हुआ, तो उसका मन डिगने लगा ।

"जरूर यह उसके दिल का वहम है ।" वह होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया, "वहाँ कोई जानवर नहीं है ।"

वह बात सोचने के बाद करण सक्सेना ने टॉर्च को वापस जला दिया तथा फिर आगे का रास्ता तय करने के लिए झाड़ियों के उस दायरे से बाहर निकला ।

और बाहर निकलते ही मानो गजब हुआ ।

करण सक्सेना के हलक से एक अत्यंत कष्टप्रद और हृदयविदारक चीख निकल पड़ी ।

वह गैंडे जैसे विशाल आकार का एक जंगली सूअर था । वह अफ्रीकन प्रजाति का था और उसकी थूथनी नीचे को लटकी हुई थी । करण सक्सेना को मालूम था कि जिन जंगली सूअरों की थूथनी नीचे को लटती होती है, वह आदमखोर होते हैं ।

कमांडर करण सक्सेना के झाड़ियों से बाहर निकलते ही वह जंगली सुअर उसके ऊपर झपट पड़ा ।

बहुत वहशी अंदाज में ।

गले से घर्र-घर्र की आवाज निकालते हुए ।

करण सक्सेना सम्भलता, उससे पहले ही जंगली सुअर, कमांडर करण सक्सेना को लिए नीचे जमीन पर ढेर हो गया ।

नीचे गिरते ही उस विशालकाय जंगली सुअर ने करण सक्सेना को अपने चारों पैरों की गिरफ्त में ले लिया । जंगली सुअर का मुँह करण सक्सेना के पैरों की तरफ था ।

अगर उस समय कमांडर करण सक्सेना की जगह कोई दूसरा नौजवान वहाँ होता, तो बिना शक दहशत से ही उसका हार्ट फेल हो जाता ।

लेकिन नहीं ।

वह करण सक्सेना था ।

कमांडर करण सक्सेना !

मार्शल आर्ट का कुशल योद्धा ।

अभी जंगली सुअर ने उसे अपनी गिरफ्त में लिया ही था कि तभी करण सक्सेना ने बेपनाह फुर्ती के साथ जंप ली और अपनी पूरी ताकत के साथ अतामी तोबागिरी नामक एक ऐसी भयानक किक जंगली सूअर पर जड़ी, जिसका प्रदर्शन मार्शल आर्ट में भी ताइक्वांडो के ग्रैंड मास्टर ही कर सकते हैं ।

अगर कमांडर करण सक्सेना ने कहीं वह किक किसी इंसान को जड़ दी होती, तो बिना शक वह सेकेंडों में दम तोड़ देता ।

लेकिन नहीं ।

वह भी जंगली सुअर था ।

अफ्रीकन नस्ल का आदमखोर जंगली सुअर ।

किक लगाते ही वह जोर से फुफकारा । उसकी फुफकार बता रही थी कि वह अब और खूनी बन गया है ।

और भी खतरनाक ।

करण सक्सेना उसके शिकंजे से आजाद होता, उससे पहले ही जंगली सुअर की लटकी हुई थूथनी करण सक्सेना के पीठ की तरफ झपटी और अगले ही पल जूते सहित करण सक्सेना का एक पूरा पैर उसके मुँह में था ।

करण सक्सेना छटपटाया ।

उसे लगा, वह जंगली सुअर आज उसे एक पैर से अपाहिज बनाकर छोड़ेगा ।

उसने अपना पैर उसके मुँह से आजाद कराने का यथासंभव प्रयास किया ।

लेकिन उसकी हर कोशिश विफल रही ।

जंगली सुअर की गिरफ्त वाकई बहुत मजबूत थी ।

एकाएक कमांडर करण सक्सेना उसके सामने खुद को असहाय अनुभव करने लगा ।

मगर इतनी जल्दी हथियार डालना भी उसने नहीं सीखा था ।

तभी उसे दोधारी चाकू का ख्याल आया ।

तत्काल करण सक्सेना का हाथ अपने उस मोजे पर पड़ा, जिसमें चाकू लगा हुआ था ।

करण सक्सेना ने झपटकर मोजे के अंदर से चाकू बाहर निकाल लिया तथा फिर उस लंबे फल वाले चाकू के भरपूर प्रहार जंगली सुअर के ऊपर किये ।

चाकू का फल कोई सात इंच लंबा था ।

वह लंबा फल पूरे का पूरा जंगली सुअर के शरीर में जाकर धँस गया ।

उसके बाद करण सक्सेना ने उस लम्बे फल वाले चाकू को अपनी पूरी ताकत से नीचे की तरफ खींचा।

जंगली सुअर का पेट फटता चला गया।

खून के फव्वारे छूट पड़े।

लेकिन बड़े ही गजब की हिम्मतवाला था जंगली सुअर भी।

पेट फटने के बावजूद उसने अपनी गिरफ्त नहीं छोड़ी बल्कि उसने करण सक्सेना का पैर काट डालने के लिए एकदम से बुक्का फाड़ा और इस प्रयास में उसका मुँह थोड़ा खुला।

करण सक्सेना ने उस मौके का पूरा-पूरा फायदा उठाया। उसने एक ही झटके में न सिर्फ अपना पैर जंगली सुअर के मुँह में से निकाला बल्कि वहीं पड़ा एक पत्थर अपनी पूरी शक्ति से उसके मुँह की तरफ फेंककर मारा।

निशाना अचूक था।

पत्थर सीधा जंगली सुअर के हलक में जा फँसा।

उसका मुँह खुला का खुला रह गया।

फिर तुरंत ही करण सक्सेना के हाथ में मौजूद लंबे फल वाला चाकू बिजली जैसी फुर्ती के साथ चला और वह बारी-बारी से जंगली सुअर की दोनों आँखें फोड़ता चला गया।

बिल्कुल भैंसे की तरह डकरा उठा वह जंगली सुअर।

वह अंधा हो चुका था।

अब वह बड़े वहशी अंदाज में अपना मुँह इधर से उधर मारने लगा।

वह शायद कमांडर करण सक्सेना को टटोल रहा था। उसके मुँह में पत्थर अभी भी फँसा था।

उसके बाद करण सक्सेना ने जंगली सुअर को एक सेकंड की भी और मोहलत देना बेवकूफी समझा।

एक बार फिर उसका वह लंबे फल वाला दो धारी चाकू चला और इस मर्तबा वह बड़ी बेदर्दी के साथ उसकी गर्दन काटता चला गया।

जंगली सुअर ने भयानक चीत्कार की।

दहशत से भरी चीत्कार।

उस दो धारी चाकू ने उसकी आधे से ज्यादा गर्दन काट डाली थी।

जंगली सुअर लहराकर नीचे गिरा।

उसका पूरा शरीर खून में लथपथ होता चला गया।

वह वहीं झाड़ियों में गिर पड़ा तथा फिर कुछ देर छटपटाने के बाद ठंडा पड़ गया।

□□□

कमांडर करण सक्सेना भी वही झाड़ियों में बैठ गया और धीरे-धीरे हाँफने लगा ।

सचमुच जंगली सुअर के साथ उसका द्वंद काफी खतरनाक रहा था ।

वह जिंदगी और मौत की लड़ाई बन गई थी ।

"थैंक गॉड ! आज बस बाल-बाल बचा हूँ ।"

करण सक्सेना कुछ देर वहीं बैठा हाँफता रहा ।

फिर उसने झाड़ियों में पड़ी टॉर्च उठाई तथा उसे ऑन करके उसका प्रकाश जंगली सुअर के ऊपर फेंका । वह जंगली सुअर झाड़ियों में उल्टा पड़ा था और उसके पैर आसमान की तरफ थे ।

इतना ही नहीं, उसके जिस्म से थुल-थुल करके खून अभी भी निकल रहा था और अब वहाँ खून का तालाब-सा बन गया था ।

बड़ा तालाब ।

मरने के बाद वह जंगली सुअर अब और भी ज्यादा फैला-फैला नजर आ रहा था ।

करण सक्सेना ने देखा, वह नर था ।

फिर कमांडर करण सक्सेना ने खड़े होकर खून से सने चाकू को झाड़ियों में रगड़कर साफ़ किया । उसके बाद वह वापस जंगल में पूर्व की भांति चीता चाल चलता हुआ आगे की तरफ बढ़ गया ।

कंपाला जेल के अभी भी दूर-दूर तक दर्शन नहीं थे ।

उसकी एक वजह यह भी थी, वहाँ चारों तरफ खूब अंधेरा फैला हुआ था और पेड़ों के घने झुरमुट थे, जिसकी वजह से कंपाला जेल या उसकी बाउंड्री वॉल नजर नहीं आ रही थी । हालांकि जेल की बाउंड्री वॉल काफी ऊँची थी । 300 फुट ऊँची । इसलिये वह उसे दूर से ही दिखाई पड़नी चाहिये थी, मगर अंधेरे की वजह से ऐसा नहीं हुआ था ।

करण सक्सेना ने अपनी रेडियम डायल वाली घड़ी में टाइम देखा ।

ढाई बज रहे थे ।

"मुझे अब थोड़ी देर आराम करके आगे बढ़ना चाहिये ।" करण सक्सेना ने सोचा, "इतने यहाँ थोड़ा उजाला भी फैल जायेगा ।"

उसे अपना वह तर्क उपयुक्त लगा, क्योंकि उस खतरनाक जंगल में इस प्रकार अंधे बनकर चलते रहने से कुछ फायदा नहीं था । उसे यह पता तो होना चाहिये था कि वह सही दिशा में भी आगे बढ़ रहा है या नहीं ।

करण सक्सेना ने आराम करने का फैसला कर लिया ।

वह जंगल में एक स्थान पर पहुँचकर ठिठका ।

वह थोड़ी खुली जगह थी।

वहाँ झाड़ियाँ भी कम थीं और पेड़ों के झुरमुट भी बहुत ज्यादा नहीं थे।

कमांडर करण सक्सेना को एक बार फिर जंगल वारफेयर की अपनी फौजी ट्रेनिंग याद आई।

उसने आसपास पड़ा हुआ ढेर सारा घास-फूस उठाकर एक पेड़ के नीचे जमा करना शुरू किया तथा फिर उस घास-फूस के ऊपर अपना ओवरकोट उतारकर डाल दिया।

वहीं ओवरकोट के नजदीक उसने अपने जूते भी रख दिये।

अब कोई भी उस जगह को देखता तो यही समझता, जैसे वहाँ कोई सो रहा है।

"दुश्मन और जंगली जानवरों को धोखा देने के लिए यह अच्छा तरीका है।" करण सक्सेना मुस्कुराया, "अब मुझे खुद पेड़ के ऊपर चढ़कर आराम करना चाहिये।"

फिर करण सक्सेना ने उस घने पेड़ का मोटा तना अपने दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और उसके बाद उसने बेहद सधे हुए अंदाज में धीरे-धीरे ऊपर की तरफ रेंगना शुरू किया।

वह बिल्कुल छिपकली की तरह रेंग रहा था।

निःशब्द अंदाज में।

तीन सेलों वाली टॉर्च अभी भी उसके हाथ में थी, जिसे उसने अब बुझा दिया था। वह नहीं चाहता था कि उसे पेड़ पर चढ़ते हुए कोई जंगली जानवर देखे।

शीघ्र ही करण सक्सेना पेड़ के घने पत्तों के बीच में पहुँच गया।

वह एक बहुत मोटा तना था, जो ऊपर की तरफ चला गया था।

करण सक्सेना उसी तने से पीठ लगाकर लेट गया।

अब वह बिल्कुल सुरक्षित था।

फिर लेटे-लेटे कब उसकी आँख लग गई, पता न चला।

□□□

काफी देर बाद कमांडर करण सक्सेना की आँख खुली।

हल्की-हल्की प्रकाश रश्मियाँ अब पेड़ के पत्तों से छनकर नीचे पहुँच रही थी। हालांकि पूरी तरह अभी दिन नहीं निकला था, परंतु ऐसा घनघोर अंधेरा भी अब नहीं था, जो हाथ को हाथ तक सुझाई न दे सके या फिर एक-एक कदम आगे बढ़ाने के लिए टॉर्च जलाने की आवश्यकता पड़े।

करण सक्सेना ने अपनी रिस्टवॉच देखी।

पाँच बज रहे थे।

फिर उसकी आसमान की तरफ निगाह उठी।

कंपाला जेल की बाउंड्री वॉल का अभी भी कुछ पता न था ।

न मालूम जेल की बाउंड्री अभी कितनी दूर थी ?

कहाँ थी ?

करण सक्सेना पेड़ से नीचे उतर आया ।

कठोर तने पर लेटे-लेटे उसकी पीठ अकड़ गई थी ।

उसने खड़े-खड़े दो-तीन आसन किये, तो मांसपेशियाँ थोड़ी दुरुस्त हुई ।

फिर उसने अपना ओवरकोट पहना, जूते पहने और उसके बाद जंगल में पहले की तरह ही आगे बढ़ाना शुरू किया ।

कमांडर करण सक्सेना एक बार फिर जंगल वारफेयर की उन्हीं पुरानी परंपराओं का पालन करता हुआ आगे बढ़ रहा था । कभी वह शेर की तरह दौड़ता, तो कभी चीते की तरह छलांग लगाता और कभी बिल्कुल सर्प की तरह झाड़ियों में जोर-जोर से सरसराकर रेंगता ।

करण सक्सेना ने अभी तक वह तमाम सावधानियाँ बरती थीं, जो जंगल वारफेयर के दौरान जरूरी होती हैं ।

इसीलिए वह अभी तक जिंदा था ।

चलते-चलते एकाएक करण सक्सेना की छठी इंद्री ने ऐसा आभास दिया, जैसे आगे कहीं खतरा है ।

वह तुरंत ठिठककर रुक गया ।

फिर वो वही जंगल में ध्यान की मुद्रा में खड़ा हो गया और साँस रोककर जंगल में आसपास होने वाली आवाजों को सुनने की कोशिश करने लगा ।

तरह-तरह की आवाजें उसके कानों में पड़ने लगी ।

जल्दी ही उसके कान में पेड़ के पत्तों के जोर से खड़खड़ाने की आवाज भी पड़ी । वह पत्तों के खड़खड़ाने की बड़ी अजीब-सी आवाज थी, जो कम से कम पक्षियों के पेड़ पर बैठने की वजह से पैदा नहीं होती ।

जरूर कोई पेड़ पर था ।

करण सक्सेना फौरन झाड़ियों में घुस गया ।

उसके बाद वह झाड़ियों में अंदर ही अंदर सरसराकर रेंगता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा ।

रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ चुकी थी ।

बेहद चौकन्नी निगाहें एक-एक पेड़ का बारीकी से अवलोकन कर रही थी ।

जल्द ही कमांडर करण सक्सेना को एक काफी घने पेड़ पर दो बहुत बड़े-बड़े कोबरा साँप दिखाई पड़े, जो कई मीटर लंबे थे और बड़े अजदाह थे ।

उन विशालकाय कोबराओं को देखकर एक क्षण के लिए तो करण सक्सेना के शरीर में भी सिहरन दौड़ गई ।

वह दोनों कोबरा पेड़ के तने के साथ चिपके थे और शाखों पर फैले थे । वह आपस में बुरी तरह गुंथे हुए थे । करण सक्सेना ने महसूस किया, वह नर और मादा थे तथा उस वक्त रतिक्रीड़ा में तल्लीन थे ।

सहवास करते समय जब वह ज्यादा उन्मादित होते हैं और अपने शरीर को इधर-उधर पटकते, तो वह पूरा पेड़ हिल जाता तथा उसी से पत्ते खड़खड़ाने की वह आवाज होती ।

करण सक्सेना ने उस तरफ से निगाह हटा ली ।

फिर वह झाड़ियों में बहुत निःशब्द ढंग से सरसराकर चलता हुआ आगे बढ़ गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे कंपाला जेल की बाउंड्री वॉल नजर आने लगी । आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई ।

वाकई ।

बाउंड्री वॉल बहुत ऊँची थी ।

आखिर तीन सौ फुट की ऊँचाई कम तो नहीं होती ।

वह बाउंड्री वॉल महज इसलिये इतनी देर में दिखाई पड़ी थी, क्योंकि वहाँ पेड़ काफी घने थे और आपस में सटे हुए थे ।

कंपाला जेल का दायरा भी बहुत बड़ा था ।

पाँच एकड़ में फैली वह जेल किसी अत्यंत विशाल किले की तरह मालूम हो रही थी, जो बीच जंगल में अपना मस्तक उठाए खड़ी थी और जिसमें कोई खिड़की या दरवाजा तक नहीं था । वह पीले रंग से पुती थी और उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'CAMPALA JAIL' लिखा था ।

जेल को देखकर करण सक्सेना के अंदर जोश पैदा हो गया ।

उसके कदम और भी ज्यादा तेजी के साथ उठने लगे ।

शीघ्र ही कमांडर करण सक्सेना कंपाला जेल के सामने खड़ा था ।

उस कंपाला जेल के सामने जिसमें रौनक शाह बंद था और जिसके अंदर अब किसी तरह कमांडर करण सक्सेना ने भी दाखिल होकर दिखाना था ।

करण सक्सेना की निगाह बाउंड्री वॉल के तीन सौ फुट ऊँचाई पर मौजूद परकोटे पर जाकर ठहर गई ।

परकोटे पर जगह-जगह भाले जैसी नोक बनाई गई थी और उन नोकों से भी ऊपर लोहे के तार कसे थे, जिनमें जरूर करंट प्रवाहित किया गया था ।

करण सक्सेना सोचने लगा, किस तरह उस जेल के अंदर दाखिल हुआ जाये।

सपाट दीवारें थीं।

तीन सौ फुट ऊँची दीवार पर कहीं कोई एक ऐसी जगह भी नहीं थी, जहाँ पैर टिकाकर ऊपर पहुँचा जा सके।

न दीवार के साथ लगा हुआ कोई वाटर पाइप था।

न कुछ और।

कमांडर करण सक्सेना ने एकदम डनहिल सुलगा ली और अपने दिमागी घोड़े दौड़ाने लगा।

जल्द ही उसे एक उपाय सूझा।

अगर एक बहुत लंबी रस्सी जिसके आगे एंकर बंधा हो, उसे बाउंड्री वॉल के परकोटे में कहीं अटका दी जाये, तो फिर उसके सहारे-सहारे ऊपर चढ़ा जा सकता था।

लेकिन शीघ्र ही करण सक्सेना को अपना वह उपाय भी बेकार दिखाई दिया।

ऐसा होना असंभव था।

क्योंकि तीन सौ फुट ऊँची दीवार पर पहले किसी रस्सी को उछालना तथा फिर उसके सिरे पर बंधे एंकर के परकोटे में फँसने की कल्पना करना; महज बेवकूफी थी।

ऐसा नहीं हो सकता था।

अगर उस बाउंड्री वॉल की ऊँचाई 50-60 फुट होती, तब भी वह उसके परकोटे में एंकर के फँसने के बारे में सोचता, मगर उस बाउंड्री वॉल की ऊँचाई ही इतनी ज्यादा थी कि रस्सी को ही इतना ऊपर नहीं उछाला जा सकता था।

करण सक्सेना ने डनहिल का ढेर सारा धुआँ नीले आकाश की तरफ छोड़ा।

कंपाला जेल के आसपास कोई सिक्योरिटी न थी।

सच तो यह है, वहाँ सिक्योरिटी की कुछ आवश्यकता ही नहीं थी।

करण सक्सेना कोई और उपाय सोचने लगा।

उसे एक उपाय और सूझा।

जेल की दीवार को बाहर से चोरी-छुपे थोड़ा तोड़कर भी अंदर घुसा जा सकता था।

मगर शीघ्र ही करण सक्सेना का मन पुनः अवसाद से भर उठा।

वह काम भी असंभव था।

इंपॉसिबल।

क्योंकि करण सक्सेना जब बाहर से दीवार तोड़कर अन्दर जेल में दाखिल होता, तो यह कहना मुश्किल था कि वह जेल में किस जगह जाकर निकलता। वह सीधा कैदियों की बैरक में भी पहुँच सकता था। वार्डन के कमरे में भी पहुँच सकता था या फिर यह

भी संभव था कि वह सीधा जेलर के ऑफिस में ही जाकर घुसता तथा एक बड़े जबरदस्त हंगामे को जन्म देता ।

"नहीं ।" करण सक्सेना की गर्दन खुद-ब-खुद पुनः इंकार की सूरत में हिली, "इस तरह भी जेल के अंदर दाखिल नहीं हुआ जा सकता, कतई नहीं ।"

करण सक्सेना ने डनहिल का एक कश और लगाया ।

"फिर ?"

एक नया सवाल ।

"फिर वह जेल के अंदर कैसे दाखिल हो ?"

कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में तरह-तरह के उपाय आने लगे, लेकिन उनमें ऐसा कोई उपाय नहीं था, जो सॉलिड होता । जो अमली जामा पहनाने के लायक होता ।

करण सक्सेना ने कंपाला जेल के इधर-उधर घूमकर उसका हर तरफ से खूब अच्छी तरह मुआयना किया, मगर जेल के अंदर दाखिल होने का कोई रास्ता उसे न सूझा ।

उसके चेहरे पर हताशा के बादल बुरी तरह घिर आये ।

आखिरकार वह थक-हारकर वह उसी दिशा में वापस लौट पड़ा, जिधर उसने अपनी टैक्सी खड़ी की थी ।

दिन अब खूब अच्छी तरह निकल आया था ।

□□□

फिर कमांडर करण सक्सेना का पूरा दिन अपने होटल में ही सोच-विचार करते हुए गुजरा ।

उसने एक कागज पर कंपाला जेल तथा उसके आसपास का पूरा नक्शा बनाकर अपने सामने रख लिया और फिर सोचने लगा कि किस तरह जेल के अंदर दाखिल हुआ जाये ।

वह सिगरेट पर सिगरेट फूँक रहा था ।

रह-रहकर कंपाला जेल का पूरा नजारा उसकी आँखों के सामने घूम जाता ।

शाम हो गई ।

करण सक्सेना को कोई तरीका न सूझा ।

सचमुच वह एक फुलप्रूफ जेल थी । सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि उसे जेल के अंदर दाखिल होने का रास्ता एक ही था और वह भी ऊपर से था ।

काफी देर सोच-विचार करने के बाद आखिरकार करण सक्सेना को एक आइडिया सूझा ।

आइडिया यह था, क्यों न जमीन के नीचे ही नीचे सुरंग खोदकर जेल के अंदर घुसा जाये।

करण सक्सेना सोचने लगा।

परंतु जल्दी ही वह आइडिया भी रेत के ढेर की मानिंद भरभराकर गिर पड़ा।

सबसे पहले तो जमीन के नीचे ही नीचे एक इतनी लंबी सुरंग खोदना ही बहुत कठिन कार्य था और अगर किसी तरह वह सुरंग खोद भी डालता, तो प्रॉब्लम फिर वही थी, सुरंग के अंदर न जाने किस जगह जाकर निकलती।

नहीं।

करण सक्सेना की गर्दन इनकार में हिली।

वह बेल भी मुंडेर चढ़ने वाली नहीं थी।

उसे कोई नया तरीका ही खोजना था।

कोई अद्भुत तरीका।

करण सक्सेना ने इधर-उधर टहलते हुए ही एक डनहिल और सुलगा ली।

जब सोचते-सोचते उसका दिमाग थक गया तथा कोई और आइडिया उसे न सूझा, तो उसने टीवी ऑन कर लिया तथा उससे कोई 8-10 फुट के फासले पर एक इजी चेयर पर पसरकर बैठ गया।

टीवी पर उस समय एक इंग्लिश फिल्म आ रही थी, जो एक्शन फिल्म थी और किसी डकैत की जिंदगी पर आधारित थी। फिलहाल उस फिल्म के इंटरवल के बाद की कहानी चल रही थी।

फिल्म देखते-देखते एकाएक करण सक्सेना चौंक उठा।

वह संभलकर बैठा।

दरअसल एक्शन फिल्म में भी जेल का ऐसा ही एक प्रसंग चल रहा था। वह अभेद्य जेल थी और उस फिल्म का हीरो जेल के अंदर घुसने की कोशिश में जुटा था। फर्क सिर्फ इतना था कि हीरो जेल के अंदर इसलिये घुसना चाहता था, क्योंकि एक खतरनाक ऑर्गेनाइजेशन उसके पीछे हाथ धोकर पड़ी थी। अगर ऐसी परिस्थिति में वह जेल के अंदर घुस जाता, तो उसकी जान बच जाती। वह वहाँ पहुँचकर महफूज हो जाता।

उन दृश्यों को देखकर करण सक्सेना की दिलचस्पी फिल्म में हद से ज्यादा बढ़ गई।

वह सब कुछ भूलकर फिल्म को बहुत ध्यान से देखने लगा।

और फिर हीरो जिस तरह जेल में दाखिल हुआ, वह चौंका देने वाला था।

विस्मयकारी।

कमांडर करण सक्सेना एकदम झटके से चेयर छोड़कर खड़ा हो गया।

उसे कंपाला जेल में दाखिल होने का आइडिया सूझ चुका था।

□□□

रात को उस समय आठ बज रहे थे, जब सुइट की कॉल बेल बजी ।

करण सक्सेना ने दरवाजा खोला ।

"यस ।"

सामने सफेद वर्दी में सजा-धजा वेटर खड़ा था ।

"आप डिनर यही लेंगे साहब या नीचे हॉल में ?"

"यहीं ले आओ ।"

"थैंक्यू साहब । क्या लेकर आऊँ ?"

वेटर ने अपने हाथ में पकड़ा मीनू करण सक्सेना की तरफ बढ़ाया ।

कमांडर करण सक्सेना ने मीनू ले लिया और फिर टहलता हुआ अंदर कमरे में आ गया । डनहिल के छोटे-छोटे कश वह अभी भी ले रहा था ।

करण सक्सेना के पीछे-पीछे वेटर ने भी अंदर कदम रखा ।

उस समय कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में कुछ चल रहा था ।

कोई विचार ।

करण सक्सेना मीनू देखता रहा, परंतु साफ लग रहा था कि वह मीनू देखने का सिर्फ बहाना कर रहा है ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" करण सक्सेना ने वेटर से पूछा ।

"मोमो है साहब ।"

वेटर दरवाजे से बस थोड़ा ही आगे खड़ा था ।

"मोमो ।"

"जी साहब ।"

"तुम इस कंपाला शहर में कब से हो मोमो ?"

मोमो नाम का वह वेटर हँसने लगा ।

उसकी हँसी बड़ी खिसियाई हुई-सी थी ।

"अपनी उम्र बत्तीस साल है साहब । बत्तीस साल छः महीने पाँच दिन; और अपन बत्तीस साल छः महीने पाँच दिन से इधर ही है साहब । कंपाला में । कंपाला अपन को छोड़ता ही नहीं साहब ।"

"यानी तुम्हारा इसी शहर में जन्म हुआ था ?"

"जी साहब ।"

"वेरी गुड । तब तो तुम इस शहर के बारे में काफी कुछ जानते होगे ?"

करण सक्सेना की आँखें चमकीं ।

उसने अपनी आँखें मीनू से हटा लीं।

"काफी कुछ क्या साहब, यह मोमो तो इस शहर के बारे में सब कुछ जानता है। एक-एक सड़क, एक-एक गली सब मोमो की छानी हुई है। इन बत्तीस सालों में ऐसा एक भी वेस्टिया कार्निवाल (युगांडा का मशहूर त्यौहार) नहीं गुजरा, जो इस कंपाला शहर में मैंने अपनी आँखों से न देखा हो। वेस्टिया कार्निवाल पर इधर कंपाला में क्या गज़ब हंगामा होता है साहब ! पूरे युगांडा में आपको ऐसा हंगामा देखने को नहीं मिलेगा।"

"ओह ! तब तो तुम कंपाला जेल के बारे में भी बहुत कुछ जानते होगे ?"

"बिल्कुल साहब।" मोमो बोला, "अपन कंपाला जेल के बारे में भी काफी कुछ जानता है।"

"जैसे क्या-क्या ?"

करण सक्सेना के कान खड़े हुए।

उसका ध्यान अब मीनू की तरफ बिल्कुल भी नहीं था।

"जैसे कंपाला जेल बहुत मशहूर जेल है साहब। पूरे युगांडा में ऐसी जेल कोई दूसरी जेल नहीं है, बल्कि लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि पूरी दुनिया में ही ऐसी कोई और जेल नहीं है। अब अपन क्या है कि बहुत छोटा आदमी है साहब। अपन दुनिया के बारे में तो कोई दावा नहीं कर सकता। हाँ, युगांडा के बारे में दावा जरूर कर सकता है कि युगांडा में ऐसी कोई दूसरी जेल नहीं है।"

"क्या कभी कोई कैदी कंपाला जेल से भाग निकलने में कामयाब हुआ ?"

"बिल्कुल नहीं साहब। कैसी बात करते हो ? कैदियों की तो कंपाला जेल में जाने के नाम से ही मां मर जाती है।"

"अच्छा, एक बात और बताओ।"

"पूछो साहब।"

"क्या इस कंपाला शहर के अंदर जितने भी अपराधी पकड़े जाते हैं, उन सभी को कंपाला जेल के अंदर शिफ्ट किया जाता है ?"

"नहीं साहब, बिल्कुल नहीं। इस शहर में और भी जेल हैं, जहाँ अपराधियों को बंद किया जाता है और वहाँ भी सिक्योरिटी के अच्छे इंतजाम हैं।"

"फिर कंपाला जेल में किस तरह के कैदियों को ले जाया जाता है ?"

"खतरनाक कैदियों को साहब।"

"खतरनाक कैदी !"

"हाँ, जिन पर कत्ल और डकैती के इल्जाम होते हैं या फिर जिनसे यह खतरा होता है कि वह जेल तोड़कर फरार हो सकते हैं। लेकिन...।"

बोलते-बोलते एकाएक मोमो कुछ हिचकिचाया।

उसके चेहरे पर संकोच के भाव उभरे ।

"लेकिन क्या ?"

"आप कंपाला जेल के बारे में यह सब क्यों पूछ रहे हैं साहब ?"

"यूँ ही !" करण सक्सेना ने सिगरेट का टोटा वहीं रखी एश ट्रे में रगड़कर बुझाया, "जनरल नॉलेज के लिए । आखिर कंपाला जेल का बहुत नाम है न, इसलिये उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करने की उत्सुकता पैदा हो गई थी । हिंदुस्तान में रहते हुए कंपाला जेल के बारे में काफी बातें सुनी थी ।"

"कंपाला जेल बिल्कुल वैसी ही है साहब; जैसा उसके बारे में सुना है ।" मोमो बोला ।

"तुम ठीक कहते हो ।"

"हे प्रभु !" एकाएक मोमो चौंका, "मैं तो बातों-बातों में वह काम ही भूल गया, जिस काम के लिए यहाँ आया था । आपके वास्ते डिनर में क्या लाना है साहब ?"

करण सक्सेना ने पुनः एक सरसरी-सी दृष्टि मीनू पर दौड़ाई तथा फिर उसे डिनर का आर्डर दिया, जिसे मोमो ने जल्दी-जल्दी एक पैड पर लिख लिया ।

"अब मैं चलता हूँ साहब ! मुझे अभी किचन के भी कई काम निपटाने हैं ।"

उसके बाद मोमो आँधी तूफान की तरह सुइट के बाहर निकल गया ।

कमांडर करण सक्सेना के होंठों पर उस समय मुस्कुराहट थी । वह मोमो से जो जानकारी हासिल करना चाहता था, वह जानकारी हासिल कर चुका था ।

□□□

फारूख अहमद मसूदी, न जाने क्या बात थी कि करण सक्सेना उस वैज्ञानिक के बारे में जितना सोच रहा था, उतना उसके दिल में घबराहट पैदा हो रही थी ।

उसे लग रहा था कि फारूख अहमद मसूदी अब जहाँ भी है, खतरे में है ।

यही एक बात और थी, जो उसे इस बात के लिए प्रेरित कर रही थी कि जल्द से जल्द उस तक पहुँचे । उसका पता लगाये ।

दरअसल करण सक्सेना को जब से यह एहसास हुआ था कि पाकिस्तान की खुफिया संस्था आईएसआई के एजेंट भी कंपाला में हैं, तबसे उसे फारूख अहमद मसूदी की और फिक्र हो गई थी ।

न मालूम कहाँ होगा वह इस वक्त ?

किस हालत में होगा ?

रात के उस समय 10:00 बज रहे थे, जब कमांडर करण सक्सेना ने कंपाला शहर के बड़े मशहूर एक कैसीनो में कदम रखा ।

कैसीनो का नाम था, रॉयल कैसीनो ।

करण सक्सेना वहाँ भी एक खास मकसद के तहत आया था ।

कंपाला शहर जहाँ अपनी पुरातन अफ्रीकन सभ्यता के लिए बड़ा मशहूर है, वहीं उसकी रातें भी कुछ कम मशहूर नहीं है । जहाँ जिस्मफरोशी का एक खुला कारोबार होता है, जैसा कारोबार दुनिया में कुछेक जगह ही देखने-सुनने को मिलता है । जिस्मफरोशी के धंधे के कारण ही कंपाला शहर की तुलना बैंकॉक तक से की जाती है । इसके अलावा नारकोटिक्स और जुए का कारोबार भी वहाँ बड़े पैमाने पर फैला हुआ है ।

कमांडर करण सक्सेना ने जब रॉयल कैसीनो में कदम रखा, तो वहाँ खूब भीड़ भड़क्का था ।

हर तरफ से शोर की आवाजें उमड़ रही थीं ।

सब अपनी-अपनी किस्मत आजमाने पर लगे थे ।

करण सक्सेना ने देखा, वहाँ रोलोट मशीनों से जहाँ अमेरिकन स्टाइल जुआ हो रहा था, वहीं टेबल पर ब्रिज और फ्लैश भी खूब धड़ल्ले से खेली जा रही थी ।

फिर करण सक्सेना की निगाह विनिंग काउंटर पर जाकर ठिठकी । वहाँ से जुआ खेलने के लिए टोकन सप्लाई हो रहे थे । करण सक्सेना ने नोट किया, उस कैसीनो का विनिंग काउंटर बिल्कुल उसी आकार-प्रकार का था, जैसा बैंक का कैश काउंटर होता है । वह छोटा-सा केबिन था जिसके आगे जाली लगी हुई थी और उसमें टोकन की ट्रे अंदर लाने, ले जाने के लिए कोई 9 इंच चौड़ा अर्धवृत्ताकार छेद था । उस समय विनिंग काउंटर पर कोई साठ साल का, डेढ़ पसली का बड़ा पतला-दुबला अफ्रीकन बैठा था । उसके जबड़े के आधे से ज्यादा दांत झड़ चुके थे और वह जरा भी खाँसता, तो उसके जिस्म की तमाम हड्डियाँ कीर्तन करती थीं । इसके अलावा उस कैसीनो में कोई दर्जनभर टोकन सप्लायर भी थे, जो हाथ में टोकन की ट्रे लेकर बैयरों की तरह इधर से उधर घूम रहे थे ।

करण सक्सेना पूरे कैसीनो की एक-एक चीज को मार्क करता हुआ सीधा विनिंग काउंटर पर पहुँचा ।

बूढ़ा उस समय खाली था । उसकी निगाह करण सक्सेना पर गड़ गई ।

"यस प्लीज ।"

करण सक्सेना ने एकाएक बड़ी अजीब हरकत की ।

उसने अपने ओवरकोट की जेब से एक छोटा-सा स्टेचलोन का काला थैला निकाला और उसे अर्धवृत्ताकार झरोखे में से बूढ़े की तरफ बढ़ाया ।

"यह क्या है ?" बूढ़ा बौखला उठा ।

"थैला है ।"

"फिर ?"

"इसे खोलो ।"

बूढ़े ने बेहद सस्पेंसफुल अंदाज में थैला खोलकर देखा । थैले में ऊपर की तरफ ही ऑलपीन से एक कागज के स्लिप टँकी थी ।

बूढ़े ने स्लिप पर लिखा मैटर पढ़ा और मैटर पढ़ते ही उसके नेत्र दहशत से उबल पड़े ।

"तुम्हारी जान खतरे में है । केबिन के अंदर जितना भी रोकड़ा है, वह सब इस थैली में भर दो । वरना अभी गोली तुम्हारी खोपड़ी के आर-पार निकल जायेगी ।"

बूढ़े की गर्दन एकदम झटके से ऊपर हुई और उसने चिल्लाने के लिए हलक फाड़ा ।

लेकिन फौरन ही उसकी आवाज गले में घुट गई तथा वह डरा-डरा नजर आने लगा । करण सक्सेना के हाथ में अब एक कोल्ट रिवॉल्वर नमूदार हो चुकी थी, जिसकी नाल सीधे उस बूढ़े की खोपड़ी को घूर रही थी ।

"खबरदार ।" करण सक्सेना उसे लाल-लाल आँखों से देखता हुआ गुर्राया, "खबरदार, अगर जरा भी कोई गलत हरकत दिखाई तो इस केबिन में तुम्हारी लाश पड़ी होगी ।"

डेढ़ पसली वाले बूढ़े के जिस्म की एक-एक हड्डी कीर्तन कर उठी ।

उसका रोआँ-रोआँ खड़ा हो गया ।

"तुम... तुम लुटेरे हो ?"

"हाँ ।"

कमांडर करण सक्सेना अपना रिवॉल्वर वाला हाथ उसके थोड़ा और करीब ले गया तथा उसने उसे धमकाने के उद्देश्य से रिवॉल्वर की नाल जोर से उसके कंधे पर मारी ।

बूढ़ा दर्द से बिलबिला उठा ।

वह कुर्सी से नीचे गिरता-गिरता बचा ।

"जल्दी करो ।" करण सक्सेना का हिंसक लहजा, "क्विक ।"

"मूर्ख आदमी, अगर तुम यह सोच रहे हो कि तुम यहाँ से रोकड़ा लूटकर ले जाओगे, तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है । इस कैसीनो में डकैती डालना आसान नहीं है ।"

"शटअप ।" करण सक्सेना ने उसे घुड़का, "फालतू बकवास मत करो । जो तुमसे कहा जा रहा है, वह करो ।"

बूढ़े ने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे असहाय भाव से कैसीनो में इधर-उधर निगाह दौड़ाई ।

पूरे कैसीनो में पहले की तरह हंगामे का माहौल बना हुआ था और सब कुछ सहज ढंग से चल रहा था ।

रोलोट मशीनों तथा टेबिलों पर पहले की तरह जुआ खेला जा रहा था । टोकन सप्लाई करने वाले आदमी ट्रे लेकर इधर से उधर भागे-भागे फिर रहे थे । बैकग्राउंड

म्यूजिक अपने पूरे शबाब पर बज रहा था। कुल मिलाकर किसी को इस बात की कानों-कान भनक तक नहीं थी कि वहाँ क्या हो रहा है।

सब कुछ पहले की तरह चालू था।

"लगता है, तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आई है।" करण सक्सेना ने गुस्से में दांत किटकिटाया, "तुम्हें समझाना पड़ेगा।"

कमांडर करण सक्सेना की उंगली एकाएक बड़ी तेजी के साथ ट्रिगर की तरफ झपटी।

"न... नहीं।" बूढ़े ने हाथ बढ़ाकर जल्दी से अपने दोनों हाथ खड़े किये, "नहीं, ट्रिगर मत दबाना।"

"तो फिर जल्दी से थैले में रोकड़ा भरो।"

"भ... भरता हूँ।"

"क्विक।"

बूढ़े ने झपटकर थैला उठाया और थोड़ा नीचे झुककर उसमें जल्दी-जल्दी नोट भरने लगा।

करण सक्सेना ने देखा, बूढ़े के बिल्कुल बराबर में ही टीन का एक काफी बड़ा संदूक रखा था, जो आधे से ज्यादा नोटों से भरा हुआ था।

इस समय वह डेढ़ पसली का बूढ़ा काले रंग के उस स्टेचलोन के थैले में ठूंस-ठूंसकर नोट भर रहा था।

करण सक्सेना की निगाह पुनः कैसीनो में फिरी।

तभी उसने टोकन सप्लाई करने वाले एक आदमी को खाली ट्रे लेकर उसी तरफ आते देखा।

जरूर वह और टोकन लेने के लिए वहाँ आ रहा था।

करण सक्सेना सचेत हो उठा। कैसीनो में हंगामा मचने का वक्त आ पहुँचा था।

□□□

उसी क्षण घटना ने एक बिल्कुल नई करवट बदली।

अभी टोकन सप्लाई करने वाला वह आदमी केबिन तक पहुँचा भी नहीं था कि एकाएक कैसीनो में बहुत तीक्ष्ण ध्वनि के साथ जोर-जोर से सायरन बज उठा। सायरन बजने की वह आवाज बिल्कुल ऐसी थी, जैसे एंबुलेंस का सायरन बज उठा हो।

करण सक्सेना ने तुरंत बूढ़े की तरफ देखा।

वह करतूत बूढ़े की ही थी। सिर्फ एक सेकेंड के लिए कमांडर करण सक्सेना की निगाह बूढ़े से हटी थी और उसी एक सेकंड में बूढ़ा अपना कमाल दिखा गया। जरूर विनिंग काउंटर में ही कहीं खतरे के इस सायरन का स्विच था, जिसे बूढ़े ने मौका देखते ही

दबा दिया था और फिर एकदम से नोटों से भरा थैला छोड़कर वहाँ से भागा । डेढ़ पसली का बूढ़ा कमांडर करण सक्सेना की उम्मीद से कहीं ज्यादा धूर्त साबित हुआ था ।

बूढ़ा केबिन का पिछला दरवाजा खोलकर बाहर निकल पाता, उससे पहले ही कमांडर करण सक्सेना के हाथ अर्धवृत्ताकार छेद में से चीते की तरह झपटकर बूढ़े की गर्दन दबोच ली और फिर उसे बड़ी बेदर्दी के साथ वापस एकदम काउंटर की जालियों के पास घसीट लिया ।

बूढ़े के हलक से गूँ-गूँ की आवाज निकलने लगी ।

उसकी आँखों में मौत नाच उठी ।

जबकि खतरे का सायरन बजते ही पूरे कैसीनो में ऐसा हड़कंप मचा था, जैसे वहाँ जलजला आ गया हो । जो लोग रोलोट मशीनों तथा सेंटर टेबल पर बैठे हुए खेल रहे थे, वह वहाँ से उठ-उठकर भागे । टेबिलें पलट गईं । रंग-बिरंगे टोकन उछलते नजर आये । टोकन सप्लाई करने वाले आदमी भी अपनी-अपनी ट्रे लेकर भागे । सबका लक्ष्य एक ही था, कैसीनो का मेन गेट ।

"डोंट मूव !" करण सक्सेना हलक फाड़कर दहाड़ा । उसकी रिवॉल्वर इधर-उधर घूमी, "जो जहाँ है, वहीं रुक जाये । अगर किसी ने भी मेन गेट की तरफ कदम बढ़ाये, तो उसे वहीं शूट कर दिया जायेगा ।"

करण सक्सेना की उस धमकी का तुरंत असर हुआ ।

सब अपनी-अपनी जगह थम गये ।

सब सन्न ।

"ऐ ।" करण सक्सेना ने बूढ़े से कठोर लहजे में कहा, "थैला इधर दो ।"

बूढ़ा, जो उस समय बुरी तरह खौफजदा नजर आ रहा था, उसने जल्दी से वहीं नीचे पड़ा स्टेचलोन का थैला उठाया और उसे उसी अर्धवृत्ताकार छेद में से देना चाहा ।

मगर अर्धवृत्ताकार छेद छोटा था, थैला बड़ा ।

करण सक्सेना की निगाह बाईं तरफ उठी । बाईं तरफ केबिन में एक साइड विंडो थी, जो केबिन में अंदर की तरफ से ही खुलती थी । उस साइड विंडो का साइज काफी बड़ा था ।

"थैला उधर दे दो ।" करण सक्सेना ने विंडो की तरफ इशारा किया ।

बूढ़े ने फौरन हुक्म की तामिल की ।

उसने अपने कंपकंपाते हाथों से साइड विंडो खोली और उसमें से नोटों से भरा थैला बाहर निकाला, जिसे करण सक्सेना ने फौरन अपने कब्जे में ले लिया ।

थैला हाथ में आते ही करण सक्सेना ने काम और किया। उसने बूढ़े की गर्दन छोड़ दी और बड़ी तेजी के साथ अपने नजदीक ही खड़े टोकन सप्लाई करने वाले एक लड़के को दबोच लिया तथा उसकी खोपड़ी पर रिवॉल्वर रख दी।

"न... नहीं।" लड़के के हाथ से दहशत के मारे टोकन की ट्रेन छूटकर नीचे गिर पड़ी। टोकन इधर-उधर बिखर गये, "मुझे छोड़ दो।"

"चुप रहो।" करण सक्सेना की आवाज में बेतहाशा हिंसक भाव थे, "वरना अभी खोपड़ी में गोली मार दूँगा।"

लड़के की फौरन बोलती बंद हो गई।

उसका चेहरा हल्दी की तरह पीला जर्द पड़ गया।

□□□

तभी कमांडर करण सक्सेना ने अनुभव किया कि एक-एक करके तीन आदमी उसी भीड़ में से निकलकर उसके इर्द-गिर्द आ खड़े हुए हैं।

वह बहुत लंबे-चौड़े पहलवान सरीखे आदमी थे। उन्होंने लेदर की काली चमकदार पैंट और लेदर की जैकेट पहनी हुई थी। सिर गंजे सफाचट थे और उन्होंने लोहे की बड़ी मजबूत बक्कल वाली बेल्ट बांध रखी थी, जिनमें नोक निकली थी। करण सक्सेना उन गार्डों को देखते ही पहचान गया। शक्ल से गुंडे-मवाली नजर आने वाले वह आदमी जरूर कैसीनो के सिक्योरिटी गार्ड थे।

"ऐ।" उनमें से एक बहुत उद्दंडतापूर्व करण सक्सेना से बोला, "कौन है तू ?"

"फिलहाल तो मेरी यही इडेंटिटिफिकेशन बहुत है कि मैं एक लुटेरा हूँ।" करण सक्सेना ने अत्यंत धैर्यपूर्वक कहा, "और कैसीनो लूटने आया हूँ।"

"कैसीनो !"

तीनों हँसे।

"हाँ, तुम्हें कोई शक है ?"

"अकेले हो ?" उनमें से एक ने पूछा।

"हाँ।"

"और तुम्हें लगता है, तुम इतने लोगों के बीच में से अकेले ही कैसीनो लूटकर ले जाओगे ?"

"बिल्कुल।"

करण सक्सेना के शब्दों में यकीन कूट-कूटकर भरा था।

"देखते हैं, कैसे बाहर निकलते हो !"

करण सक्सेना ने अब टोकन सप्लाई करने वाले लड़के को अपने साथ और भी ज्यादा कसकर जकड़ लिया। जिस हाथ से उसने लड़के को अपने साथ कब्जाया हुआ था, उसके उसी हाथ में नोटों से भरा एक थैला था, जबकि रिवॉल्वर अभी भी उसकी खोपड़ी के साथ चिपकी थी।

"आगे बढ़ो !" करण सक्सेना ने उसे निशाना बनाये-बनाये मेन गेट की तरफ धक्का दिया, "और खबरदार, अगर किसी ने मुझे रोकने की कोशिश की, तो सबसे पहले इस लड़के की लाश ही यहाँ पड़ी होगी। इसकी खोपड़ी में छेद होगा।"

लड़के के जिस्म का एक-एक रोआँ खड़ा हो गया।

मौत उसके बिल्कुल सिर पर मंडरा रही थी।

"चलो।"

लड़का धीरे-धीरे मेन गेट की तरफ बढ़ने लगा।

उसके साथ कमांडर करण सक्सेना था।

करण सक्सेना ने बेहद सावधानीपूर्वक पलटकर देखा। तीन गार्डों में से किसी ने भी करण सक्सेना के ऊपर झपटने की कोशिश नहीं की थी। वह अपने-अपने स्थान पर शांत खड़े थे।

चुप।

पूरे कैसीनो में बेचैनी जैसा आलम था।

हर कोई अपनी जगह स्तब्ध था।

कोई नहीं जानता था कि अगले ही लम्हा क्या होने वाला है।

तभी एक घटना घटी।

करण सक्सेना जैसे ही मैनेजर के केबिन के बराबर में से होकर गुजरा, उसी क्षण भड़ाक से मैनेजर के केबिन का दरवाजा खुला और एक गार्ड बिल्कुल आँधी-तूफान की तरह करण सक्सेना के ऊपर झपटा।

करण सक्सेना के हलक से चीख निकली।

रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे गिरी और वह खुद भी एक रोलोट मशीन से जाकर टकराया।

रोलोट मशीन से टकराते ही उसके हाथ से नोटों से भरा थैला भी छूट गया।

"पकड़ो साले को।" फौरन एक गार्ड की चिल्लाती हुई आवाज उसके कानों में पड़ी, "पकड़ो, जाने न पाए।"

तत्काल वही गार्ड जो उसके ऊपर आँधी-तूफान की तरह झपटा था, वह पुनः टूट पड़ा।

तब तक पीछे खड़े तीनों गार्ड भी वहाँ पहुँच गये और बुरी तरह करण सक्सेना पर पिल पड़े ।

फौरन ही करण सक्सेना अपने असली रुप में आ गया ।

एक जबरदस्त फाइटर के रुप में ।

उन चारों ने अब उसे अच्छी तरह घेरा हुआ था और पलक झपकते ही बड़े मजबूत बक्कल वाली बेल्ट निकलकर उनके हाथ में आ चुकी थी ।

इससे पहले कि वह बेल्ट कमांडर करण सक्सेना के शरीर पर पड़ पाती, करण सक्सेना ने कराटे की राउंड कीक का एक्शन दिखाया ।

वह फर्श पर पहले बिल्कुल बेजान वस्तु की तरह ढेर हो गया तथा फिर उसकी राउंड किक छत के पंखे की भांति बड़ी स्पीड के साथ घूमी ।

चारों गार्ड के हलक से दहशतनाक चीख निकल गई ।

करण सक्सेना की लात धड़ाधड़ उनके चेहरे पर पड़ी थी ।

वह चीखते हुए रोलोट मशीनों, सेंटर टेबलों तथा इर्द-गिर्द खड़े तमाशबीन लोगों के ऊपर जाकर गिरे ।

तमाशबीन भी चिल्लाते हुए एकदम पीछे हो गये ।

साक्षात नंगी आँखों से ऐसा पैना और तूफानी एक्शन उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था ।

एक गार्ड जिसे तमाशबीनों ने संभाल लिया था, वह सबसे पहले हरकत में आया । वह शायद बॉक्सिंग चैंपियन था । हरकत में आते ही वह अपने दोनों मुक्के करण सक्सेना की तरफ यूँ तानकर खड़ा हो गया, जैसे रिंग में अपने मुकाबलेबाज के सामने खड़ा हो और उछलने लगा । फिर एकाएक माइक टायसन की तरह अपने मुँह से फू-फा की आवाज निकालते हुए वह करण सक्सेना की तरफ झपटा तथा अपने बॉक्सिंग के राइट पंच और लेफ्ट पंच का हमला करना चाहा ।

उसी क्षण करण सक्सेना ने बेतहाशा फुर्ती के साथ घुटने का भीषण प्रहार उसके गुप्तांगों पर कर दिया ।

वह सुअर की तरह मिमियाता हुआ वहीं ढेर हो गया ।

वह हिजागिरी का एक्शन था, जो करण सक्सेना ने दिखाया था ।

सब कुछ सेकंड के सौवें हिस्से में हुआ ।

उसकी सारी बॉक्सिंग रखी की रखी रह गई ।

इस बीच बाकी तीनों गार्ड भी अलर्ट हो गये और वह करण सक्सेना के ऊपर एक साथ झपटे ।

करण सक्सेना ने फौरन एक के चेहरे पर जोर से उरेकान का ज़बरदस्त प्रहार किया ।

वह चीखा और बिलबिलाता हुआ नीचे गिरा ।

तभी दूसरे गार्ड ने अपनी पूरी शक्ति से करण सक्सेना की पीठ पर बेल्ट जड़ दी ।

करण सक्सेना को ऐसा लगा, जैसे लोहे के बक्कल ने उसके शरीर की चमड़ी उधेड़ डाली हो ।

वह लहराया ।

तभी भड़ाक से दूसरी बेल्ट भी उससे टकराई ।

इस बार बक्कल सीधा करण सक्सेना के चेहरे पर पड़ा ।

बिना शक वह हमला जबरदस्त था ।

करण सक्सेना जैसे आदमी को भी एक पल के लिए चक्कर आ गये ।

मगर शीघ्र ही उसने खुद को संभाला और सामने से झपटते एक गार्ड पर स्नेक हैंड का जबर्दस्त प्रहार किया तथा फिर एकदम फिरकनी की तरह घूमकर पीछे से हमला करने के लिए झपटते दूसरे गार्ड पर मंकी ब्लो का प्रहार किया ।

वह दोनों चीखते हुए नीचे गिरे ।

खासतौर पर करण सक्सेना ने जिसके चेहरे पर मंकी ब्लो का प्रहार किया था, वह तो कुछ ज्यादा ही जोर से बिलबिलाया । उसके चेहरे पर साफ-साफ नाखूनों के निशान दिखाई देने लगे ।

तीसरा गार्ड जो बॉक्सिंग चैंपियन था और जिसे थोड़ा होश आ गया था, वह फिर अपने मुँह से फू-फा की आवाज निकालता हुआ करण सक्सेना की तरफ झपटा । करण सक्सेना ने इस बार कुश्ती का एक बड़ा प्रमुख दाव आर्म अंडर डाइव का एक्शन दिखाया । गार्ड जैसे ही उसकी तरफ झपटा, वह भी बड़ी स्पीड के साथ गार्ड की तरफ झपटा ।

गार्ड के पास पहुँचते ही वह एकदम से नीचे झुक गया ।

एक हाथ तड़ाक से उसकी दोनों जांघों के बीच में घुसा ।

गार्ड कुछ समझ पाता, उससे पहले ही करण सक्सेना ने उसकी दोनों जांघों के बीच में हाथ देकर उसे अपने सिर से ऊपर उठा लिया तथा फिर अपनी पूरी शक्ति से एक रोलोट मशीन पर पटक मारा ।

गार्ड हाहाकर कर उठा ।

रोलोट मशीन की धज्जियाँ बिखर गईं ।

चौथा गार्ड एक बार फिर करण सक्सेना के ऊपर झपटने की तैयारी कर रहा था, वह उसके खौफनाक एक्शन देखकर ठिठक गया ।

उसके चेहरे पर आतंक की छाया दौड़ गई ।

वह चीखा और बिलबिलाता हुआ नीचे गिरा ।

तभी दूसरे गार्ड ने अपनी पूरी शक्ति से करण सक्सेना की पीठ पर बेल्ट जड़ दी ।

करण सक्सेना को ऐसा लगा, जैसे लोहे के बक्कल ने उसके शरीर की चमड़ी उधेड़ डाली हो ।

वह लहराया ।

तभी भड़ाक से दूसरी बेल्ट भी उससे टकराई ।

इस बार बक्कल सीधा करण सक्सेना के चेहरे पर पड़ा ।

बिना शक वह हमला जबरदस्त था ।

करण सक्सेना जैसे आदमी को भी एक पल के लिए चक्कर आ गये ।

मगर शीघ्र ही उसने खुद को संभाला और सामने से झपटते एक गार्ड पर स्नेक हैंड का जबर्दस्त प्रहार किया तथा फिर एकदम फिरकनी की तरह घूमकर पीछे से हमला करने के लिए झपटते दूसरे गार्ड पर मंकी ब्लो का प्रहार किया ।

वह दोनों चीखते हुए नीचे गिरे ।

खासतौर पर करण सक्सेना ने जिसके चेहरे पर मंकी ब्लो का प्रहार किया था, वह तो कुछ ज्यादा ही जोर से बिलबिलाया । उसके चेहरे पर साफ-साफ नाखूनों के निशान दिखाई देने लगे ।

तीसरा गार्ड जो बॉक्सिंग चैंपियन था और जिसे थोड़ा होश आ गया था, वह फिर अपने मुँह से फू-फा की आवाज निकालता हुआ करण सक्सेना की तरफ झपटा । करण सक्सेना ने इस बार कुश्ती का एक बड़ा प्रमुख दाव आर्म अंडर डाइव का एक्शन दिखाया । गार्ड जैसे ही उसकी तरफ झपटा, वह भी बड़ी स्पीड के साथ गार्ड की तरफ झपटा ।

गार्ड के पास पहुँचते ही वह एकदम से नीचे झुक गया ।

एक हाथ तड़ाक से उसकी दोनों जांघों के बीच में घुसा ।

गार्ड कुछ समझ पाता, उससे पहले ही करण सक्सेना ने उसकी दोनों जांघों के बीच में हाथ देकर उसे अपने सिर से ऊपर उठा लिया तथा फिर अपनी पूरी शक्ति से एक रोलोट मशीन पर पटक मारा ।

गार्ड हाहाकर कर उठा ।

रोलोट मशीन की धज्जियाँ बिखर गईं ।

चौथा गार्ड एक बार फिर करण सक्सेना के ऊपर झपटने की तैयारी कर रहा था, वह उसके खौफनाक एक्शन देखकर ठिठक गया ।

उसके चेहरे पर आतंक की छाया दौड़ गई ।

परंतु करण सक्सेना के पीछे गार्ड मौजूद था। उसने शायद उसके एक्शन से कोई सबक नहीं लिया।

वह फिर बेल्ट लेकर उसके ऊपर झपटा।

सामने ही एक शीशा लगा था, करण सक्सेना ने उसे अपने ऊपर झपटते देख लिया।

करण सक्सेना बड़ी तेजी के साथ फिरकनी की तरह घूमा और उसने सीधे गार्ड के ऊपर अटैक किया।

गार्ड जो उस वक्त सावधान था, करण सक्सेना के यूँ एकाएक अपने ऊपर चढ़ने से बौखला गया।

करण सक्सेना ने तत्काल उसके दोनों कानों पर अपने हाथों की खुली हथेलियों से कराटे का किंजा नामक प्रहार किया, जिससे उसके दिमाग तक में सीटी की आवाज गूँजती चली गई और फिर वह अपनी कोली भरे-भरे सीधा उस जगह गिरा, जहाँ कोल्ट रिवॉल्वर पड़ी थी।

करण सक्सेना ने झपटकर रिवॉल्वर उठा ली।

रिवॉल्वर ने हाथ में आते ही उंगलियों के चारों तरफ घूमकर जगलरी की और फिर वह गार्ड की खोपड़ी की तरफ तन गई।

पत्ते एक बार फिर करण सक्सेना के हाथ में थे।

वह फिर शेर था।

करण सक्सेना उठकर खड़ा हुआ।

जबकि गार्ड अभी भीगी बिल्ली बना नजर आ रहा था।

सबके हौसले पस्त हो चुके थे।

"खड़े होओ।" करण सक्सेना ने रिवॉल्वर से इशारा करके गार्ड को उठने के लिए कहा।

उसके स्वर में गुर्राहट थी।

गार्ड सूखे पत्ते की तरह कांपता हुआ उठा।

"बोलो, अब क्या कहते हो ?" करण सक्सेना जहरीले स्वर में बोला, "मैं अकेला ही इस कैसीनो को लूटकर ले जा सकता हूँ या नहीं ?"

गार्ड की आवाज सहमी-सहमी थी।

थप्पड़ों के निशान उसके गाल पर उभर आये थे।

"थैला उठाओ।"

गार्ड ने नीचे झुककर नोटों से भरा थैला उठा लिया।

कैसीनो में अब सन्नाटे का माहौल था। तमाम लोग मूकदर्शक बने हुए स्तब्ध-सी मुद्रा में खड़े थे।

किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी, जो करण सक्सेना को रोकने की हिम्मत दिखाता ।

"आगे बढ़ो ।" करण सक्सेना ने थैला उठाए गार्ड को रिवॉल्वर से टहोका ।

गार्ड मरे-मरे कदमों से कैसीनो के मेन गेट की तरफ बढ़ा ।

उसकी हवा खुश्क थी ।

चेहरा फक्क ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना पूरी तरह सावधान नजर आ रहा था और उसकी आँखें बड़ी चौकन्नी मुद्रा में चारों तरफ घूम रही थी ।

वह दोनों जैसे ही मेन गेट के नजदीक पहुँचे तभी फिर घटना घटी ।

एकाएक डार्क ब्लैक ग्लास वाला मेन गेट भड़ाक से अंदर की तरफ खुला । वह इतनी जोर से खुला था कि उसका पल्ला दन से करण सक्सेना के चेहरे से टकराया और करण सक्सेना के साथ-साथ नोटों से भरा थैला उठाए गार्ड भी चिपका हुआ नीचे गिरा ।

तत्काल 8-10 अफ्रीकन पुलिसकर्मी धड़धड़ाते हुए अंदर आ गये और अंदर आते ही उन्होंने अपनी अपनी सेल्फ लोडिंग राइफल करण सक्सेना के ऊपर तान दी ।

"यू डर्टी रास्कल ।" उनमें से एक कठोर लहजे में चिल्लाया, "तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है ।"

करण सक्सेना के होंठों पर हल्की-सी मुस्कुराहट दौड़ गई ।

वह बेवकूफ कहाँ जानता था कि उसका खेल तो अब शुरू हुआ है ।

करण सक्सेना ने जानबूझकर अपने हाथ की गिरफ्त से रिवॉल्वर निकल जाने दी और अपने शरीर को ढीला छोड़ दिया ।

जरूर उस कैसीनो में जो खतरे का सायरन बजा था, उसका कनेक्शन निकटवर्ती पुलिस स्टेशन में भी था, जो पुलिस यूँ दनदनाती हुई वहाँ आ पहुँची थी ।

बहरहाल जो कुछ हो रहा था, कमांडर करण सक्सेना की योजना अनुसार हो रहा था ।

अच्छा हो रहा था ।

अब वह पुलिस के हवाले था ।

□□□

वह सारी रात कमांडर करण सक्सेना की हवालात में गुजरी । वह मुश्किल से आठ बाई आठ का छोटा-सा कमरा था, जहाँ करण सक्सेना को बंद किया गया था । वह सीलन भरा कमरा था और वहाँ खटमल तथा मच्छर इतनी बुरी तरह भरे हुए थे, जो आदमी एक सेकंड के लिये भी न सो सके ।

उसी कमरे में लेटने के वास्ते एक फटी पुरानी दरी पड़ी हुई थी और एक चादर थी ।

दोनों में से बदबू के भभकारे उठ रहे थे ।

करण सक्सेना उस दरी पर नहीं लेटा, वह सारी रात लोहे के जालीदार दरवाजे के पास खड़ा होकर डनहिल के छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

करण सक्सेना ने देखा, हवालात के बस थोड़े ही फासले पर कंपाउंड में टिन का एक पतली-पतली नालियों वाला सायबान था, जिसके नीचे तीन कॉन्स्टेबल बैठे हुए ताश खेल रहे थे । वह नाइट ड्यूटी पर तैनात थे और तीनों ही अफ्रीकन जाति के थे । सायबान के अंदर ग्लोब में एक बल्ब लटक रहा था, जिसका प्रकाश वहाँ चारों तरफ फैला था ।

"देखो तो साले को ।" एक कॉन्स्टेबल वहीं सायबान के नीचे बैठा-बैठा करण सक्सेना को देखकर गुर्राया, "डनहिल पी रहा है । डकैतों का स्टैंडर्ड भी अब हाई होने लगा है । एक हम पुलिस वाले ही हैं, जो अभी भी वहीं के वहीं अटके हैं ।"

"यह तो है ।"

"यार !" तीसरे कॉन्स्टेबल ने अपने शुष्क अधरों पर जबान फिराई, "मुझे तो एकाएक तलब उठने लगी है ।"

"कैसी तलब ?"

"सिगरेट की ।"

दूसरे दोनों कॉन्स्टेबल जोर से हँसे ।

"मादरजात, नदीदा ! हर चीज देखते ही लार घुटनों-घुटनों तक टपकाने लगता है ।"

"चाहे लौंडियाँ ही क्यों न हो ।"

"लौंडियाँ को तो भुगता जाये । यहाँ तो ये सिगरेट जैसी चीज के लिये ही अपनी नीयत खराब कर रहा है ।"

"देखो, ऐसी कोई बात नहीं है ।" तीसरे कॉन्स्टेबल ने कहा, "क्या है न कि मैंने आज तक विदेशी सिगरेट कभी नहीं पी, इसलिये एकाएक इच्छा जाग उठी । रोज-रोज वही बासी-खुसी सिगरेट पीनी पड़ती है, जिसके तम्बाकू की गंध हलक तक को सड़ा देती है । मैं तो तुम दोनों को भी एक सलाह दूँगा ।"

"क्या ?"

"तुम्हें भी आज रात इस सिगरेट को ट्राई करना चाहिये । बोलो, गलत कह रहा हूँ ?"

उन दोनों की निगाहें अब एक-दूसरे से टकराई ।

वह ताश खेलना पूरी तरह भूल चुके थे ।

"बात में तो दम है ।"

"लगता है, कुछ करना पड़ेगा ।" पहले वाला बोला ।

"करना क्या है ! चल, तू उससे सिगरेट का पैकेट लेकर आ; फिर तीनों मिलकर पीयेंगे ।"

"नहीं, तू ला ।"

"खामखाहह नाटक कर रहे हो भाई लोगों ! मैं ही माँगता हूँ ।" तीसरा कॉन्स्टेबल बोला और फिर वहीं बैठे-बैठे करण सक्सेना को आवाज लगाई, "ओय, तुरुप का चौके, अपना जरा सिगरेट का पैकेट इधर दिखा ! हमने भी सुट्टे लगाने हैं ।"

"क्यों, पूरी तरह कड़के हो चुके हो ।" करण सक्सेना ने मखौल उड़ाया, "जो माँगकर काम चला रहे हो ?"

"साले, तेरी तो... ।" कॉन्स्टेबल ने उसे बड़ी मोटी भद्दी-सी गाली बकी ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना ने हँसते हुए सिगरेट का पैकेट वहीं से उनकी तरफ उछाल दिया ।

वह दन से सीधा सायबान के नीचे उनकी टेबल पर आकर गिरा ।

"अबे साले, भिखारी समझता है हमें । भिखारी समझता है क्या ?"

पहले वाला कांस्टेबल एकदम झट से खड़ा हुआ और करण सक्सेना को मारने के लिए तेजी से उसकी तरफ झपटा ।

लेकिन वह सायबान से बाहर निकल पाता, उससे पहले ही उसे तीसरे कॉन्स्टेबल ने रोका ।

"क्यों खाली-पीली अपना मजा खराब करता है यार । मरने दे साले को । कल अदालत में इसकी सारी एंठ मरोड़ निकल जायेगी ।"

वह कॉन्स्टेबल फुफकारता हुआ वापस अपनी कुर्सी पर बैठा ।

उसकी आँखें आग उगल रही थीं ।

"लो, सिगरेट पीओ ।"

तीसरे कॉन्स्टेबल ने डनहिल का पैकेट उठा लिया और उसमें से एक-एक सिगरेट निकालकर उनकी तरफ बढ़ाई ।

"मैंने नहीं पीनी ।"

"अब गुस्सा थूक भी दे ।"

उसने ज़बरदस्ती उसे सिगरेट पकड़ा दी ।

फिर उन तीनों ने अपनी अपनी डनहिल सुलगाई और उसके बाद मजे ले-लेकर सिगरेट पीने लगे ।

सिगरेट का पैकेट पूरा भरा हुआ था ।

एक सिगरेट खत्म होती तो वह दूसरी सुलगा लेते ।

सिगरेट पीते-पीते रात के 2:00 बज गये ।

बाकी दोनों कांस्टेबल को भी अब सिगरेट पीने में आनंद आने लगा था ।

वाकई ऐसा जायका उन्हें पहले कभी नहीं आया था ।

तभी उनकी निगाह फिर कमांडर करण सक्सेना की तरफ उठी । वह अभी भी जालीदार दरवाजे के पास खड़ा था और उन्हीं तीनों की तरफ देख रहा था ।

"क्या बात है भाई ।" दूसरा कॉन्स्टेबल चिल्लाकर बोला, "आज रात सोना नहीं है । सारी रात रतजगा करेगा ?"

"नहीं ।" करण सक्सेना बोला, "मुझे नींद नहीं आ रही ।"

कांस्टेबल हँसा ।

"नींद नहीं आ रही या बिस्तर खराब है, इसलिये उस पर नहीं लेट रहा ?"

उसकी उस बात पर बाकी दोनों कांस्टेबल भी हँसे ।

"साले, हम तेरे वास्ते अभी एक मोटे गद्दे का इंतजाम करते हैं । एक डनलप प्लु के गद्दे का फिर तू उस पर आराम से सोना ।"

वह सब फिर खिलखिलाए ।

कमांडर करण सक्सेना ने उनकी बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया । वह लोहे के जालीदार दरवाजे के पास से हट गया और हवालात में थोड़ा पीछे जाकर दीवार से कमर लगाकर बैठ गया ।

फिर बैठे-बैठे करण सक्सेना को कब नींद आ गई, उसे खुद पता न चला ।

□□□

सुबह कमांडर करण सक्सेना की थोड़ी लेट आँख खुली और उसे एक कॉन्स्टेबल ने झंझोड़कर जगाया ।

"ऐ, जल्दी उठो ।" उसके स्वर में कोड़े जैसी फटकार थी, "कोर्ट चलना है ।"

करण सक्सेना ने आँख खोली ।

नौ बजे रहे थे और धूप चारों तरफ छिटकनी शुरू हो गयी थी ।

वह इस बात को लेकर अभी तक सस्पेंस में था कि उसे कंपाला जेल ले जाया जायेगा या नहीं ।

कंपाला जेल !

जो उसका उद्देश्य था ।

करण सक्सेना हवालात में ही सभी नित्यकर्मों से निवृत हुआ और फिर उसे एक कप चाय पीने के लिये दी गयी । चाय बिल्कुल पानी जैसी थी ।

उसके बाद थाने का इंस्पेक्टर और तीन कॉन्स्टेबल उसे लेकर कोर्ट की तरफ रवाना हुए ।

कोर्ट में सबसे पहले वह चार्ज शीट पढ़कर सुनाई गई, जो करण सक्सेना के खिलाफ तैयार की गई थी ।

उस पर दिन-दहाड़े डकैती डालने का जुर्म आयद किया गया था। उसके बाद कोर्ट में वह कुछ चश्मदीद गवाह भी पेश किये गये, जिन्होंने रॉयल कैसीनो में उसे अपनी आँखों से डकैती डालते देखा था। उन चश्मदीद गवाहों में कैसीनो का मैनेजर, गार्ड्स, टोकन सप्लायर और कुछ ग्राहक थे, जो वहाँ जुआ खेलने के लिए आये हुए थे।

इतनी पुख्ता गवाहों के बाद शक-शुबहे की कहीं कोई गुंजाइश ही न रही।

"मिस्टर करण।" जज ने अपना ऐनक दुरुस्त करते हुए करण सक्सेना की तरफ देखा, "क्या तुमने अपने डिफेंस के लिए कोई वकील किया है ?"

"नहीं मीलॉर्ड।"

"क्या तुम अपने डिफेंस में खुद कुछ कहना चाहते हो ?"

"नहीं मीलॉर्ड।"

जज ने अब ध्यानपूर्वक कमांडर करण सक्सेना के चेहरे की तरफ देखा। शायद ऐसा अपराधी उसकी जिंदगी में पहले कभी नहीं आया था, जो इतना जघन्य अपराध करते हुए पकड़ा गया था और जब उसे कोर्ट में सजा होने वाली थी तब भी वह इतना शांत था।

इतना खामोश।

"क्या तुम्हें मालूम है।" जज पुरजोर लहजे में बोला, "कि तुम्हारी यह खामोशी तुम्हारे अपराध का इकबालिया बयान है ?"

करण सक्सेना ने कुछ न कहा।

जबकि करण सक्सेना का वह व्यवहार जज को बेचैन करने लगा।

वह पहले से भी ज्यादा तेज स्वर में बोला, "क्या तुम कबूल करते हो कि तुम्हारे ऊपर यह जो इल्जाम लगाया जा रहा है, वह सच है ? तुमने डकैती डालने की कोशिश की ?"

"यस मीलॉर्ड, मैं कबूल करता हूँ कि मैंने कैसीनो में डकैती डालने की कोशिश की।"

पूरी कोर्ट में हड़कंप मच गया।

हंगामा।

हर कोई आश्चर्य चकित रह गया।

यहाँ तक कि उसके खिलाफ जो चश्मदीद गवाह वहाँ जुटे थे, उनके नेत्र भी फटे के फटे रह गये। किसी ने भी नहीं सोचा था कि कटघरे में खड़ा हुआ व्यक्ति इतनी दिलेरी के साथ अपना अपराध कबूल करेगा।

बहरहाल फिर कोर्ट उठ गई और जज ने लंच के बाद अपना फैसला सुनाने के लिए कहा।

लंच के बाद फैसला सुनाया गया। कमांडर करण सक्सेना को दो साल बामशक्कत कैद की सजा हुई। सजा में नरमी भी इसलिये बरती गई, क्योंकि कमांडर करण सक्सेना एक विदेशी व्यक्ति था और युगांडा मूल का निवासी नहीं था। अगर कहीं वह युगांडा

मूल का निवासी होता, तो उसे कम से कम 10 साल की सजा होती। अलबत्ता उसका पासपोर्ट जब्त कर लिया गया।

कमांडर करण सक्सेना को सजा होने का इतना दुख नहीं हुआ, जितना दुख पासपोर्ट जब्त होने का हुआ।

पासपोर्ट जब्त होने से उसके हाथ कट गये थे।

अब वह अपनी मर्जी से युगांडा से बाहर नहीं जा सकता था।

□□□

फिर वह क्षण भी आया, जब करण सक्सेना को जेल के लिए रवाना किया गया।

बिना शक वह जबरदस्त सस्पेंस के क्षण थे।

करण सक्सेना यह सोच-सोचकर विचलित हो रहा था कि अगर कहीं कंपाला जेल की जगह उसे किसी और जेल में शिफ्ट कर दिया गया, तो उसकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाना था। फिर रौनक शाह तथा उसके बीच का फासला और भी ज्यादा बढ़ जाता।

पाकिस्तानी वैज्ञानिक फारुख अहमद मसूदी का ख्याल भी उसे बार-बार सता रहा था।

वह चारों तरफ से बंद एक स्टेशन वैगन थी, जिसमें कमांडर करण सक्सेना को लाकर बिठा दिया गया। फिर उसके बाद तीन कैदी और उस स्टेशन वैगन के अंदर लाए गये।

वह भी काफी खतरनाक किस्म के अपराधी थे।

खासतौर पर उनमें से एक अपराधी तो ज्यादा ही दुर्दांत मालूम हो रहा था, क्योंकि उसके हाथ-पैरों में बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं। बाल बिखरे थे और दाढ़ी-मूंछ किसी रीछ की तरह बढ़ी थी। वह चल भी यूँ लहरा-लहराकर रहा था, जैसे कोई मदमस्त हाथी चल रहा हो।

करण सक्सेना को पता चला, उसका नाम का कारास था और वह एक पेशेवर खूनी था।

उसने अपनी जिंदगी में 50 से ज्यादा मर्डर किये थे।

कारास वैगन में कमांडर करण सक्सेना के बिल्कुल सामने आकर बैठ गया, जबकि बाकी दोनों अपराधी कारास के दाएं-बाएँ बैठ गये। उसके बाद वैगन का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया गया और उस पर ताला भी डाल दिया गया।

फिर वह स्टेशन वैगन तूफानी गति से अपने गंतव्य की तरफ रवाना हुई।

एक-एक सेकंड सस्पेंस से भरा था।

वैगन उस समय एक डिब्बे की तरह थी, जिसमें चार व्यक्ति बैठे थे।

वैगन कहाँ जा रही थी ?

किधर जा रही थी ?

किसी को कुछ मालूम न था ।

स्टेशन वैगन काफी देर तक सड़क पर दौड़ती रही । इस बीच उनमें से कोई कुछ न बोला ।

अलबत्ता करण सक्सेना की निगाहें जरूर कारास पर ही टिकी थीं ।

उसकी आँखों में सुर्ख-सुर्ख डोरे तैर रहे थे, जिन्होंने उसकी शख्सियत को और भी ज्यादा खौफनाक बना डाला था ।

लगभग आधे घंटे बाद स्टेशन वैगन किसी जगह पहुँचकर रुकी । करण सक्सेना के दिल की रफ्तार अब और भी ज्यादा तेज हो गई ।

फिर स्टेशन वैगन के ड्राइविंग पोर्शन में से पुलिसकर्मियों के नीचे कूदने की आवाज सुनाई पड़ी तथा फिर वह जोर-जोर से अपने अम्युनेशन ब्लैक बूट बजाते हुए वैगन के पिछले दरवाजे की तरफ बढ़े । उनकी संख्या छः थी ।

फिर ताला खुलने की आवाज हुई ।

और उसके बाद वैगन का स्टील जैसा मजबूत दरवाजा लहराकर खुलता चला गया ।

करण सक्सेना ने देखा वह कंपाला पुलिस का हेडक्वार्टर था, जहाँ इस वक्त वह स्टेशन वैगन खड़ी थी । सामने ही एक विशाल कंपाउंड था और उस विशाल कंपाउंड में नीले रंग का एक हेलीकॉप्टर खड़ा नजर आ रहा था ।

हेलीकॉप्टर ।

न जाने क्यों हेलीकॉप्टर देखते ही करण सक्सेना की बांछें खिल उठे । तभी उसने हेलीकॉप्टर पर कंपाला जेल भी लिखा हुआ देखा । कंपाला जेल लिखा देखकर तो अब शक-शुबहे की कहीं कोई गुंजाइश ही न रही ।

मंजिल करीब थी ।

□□□

उसके बाद उन चारों को उस हेलीकॉप्टर में बिठाया गया ।

हेलीकॉप्टर काफी बड़ा था और थोड़े अलग किस्म का था । जैसे हेलीकॉप्टर के अंदर कैदियों के बैठने के लिए जो कुर्सियाँ थीं, उनमें लोहे के क्लिप लगे थे । कैदियों को उन कुर्सियों पर बिठाने के बाद उनके हाथ-पैर क्लिप से जकड़ दिये जाते, ताकि वह उड़ते हुए हेलीकॉप्टर के अंदर से भाग न सकें तथा ऊपर से नीचे छलांग न लगा सकें ।

उन चारों के हाथ-पैर भी क्लिप से अच्छी तरह जकड़ दिये गये ।

अब वह टस से मस भी नहीं हो सकते थे ।

तीन हथियारबंद गार्ड भी उनके साथ हेलीकॉप्टर में बैठ गये और फिर हेलीकॉप्टर ने कंपाला जेल की तरफ उड़ान भरी ।

आखिरकार कमांडर करण सक्सेना ने उस अभेद्य कंपाला जेल में दाखिल होने का रास्ता खोज लिया था ।

करण सक्सेना ने देखा, कारास के साथ जो दो अन्य अपराधी थे वह उस समय बहुत डरे-डरे नजर आ रहे थे । शायद कंपाला जेल में ले जाये जाने की दहशत उनके दिल-दिमाग पर बुरी तरह सवार थी और कारास का दबदबा भी उनके ऊपर था ।

दस मिनट तक हेलीकॉप्टर में गहन शांति रही ।

कोई कुछ न बोला ।

अब घना जंगल शुरू हो गया ।

"क्या बात है ?" कारास ने दोनों कैदियों की तरफ देखते हुए अपनी भारी-भरकम आवाज से खामोशी थोड़ी, "तुम्हारे चेहरे पीले जर्द क्यों पड़े हुए हैं ?"

"उस्ताद ।" उनमें से एक हिम्मत करके बोला "हमें डर लग रहा है ।"

"डर ।"

कारास ने एकाएक वहशी जंगलियों की भांति अपनी गर्दन उठाकर जोर से अट्ठहास लगाया । उसकी हँसी ऐसी थी, जैसे रात के सन्नाटे में कोई देव हँस रहा हो ।

"डर, कंपाला जेल में जाने के अहसास से डर लग रहा है ?"

"हाँ उस्ताद !" वह कैदी सहमी-सहमी आवाज में बोला, "मैंने आज तक कंपाला जेल का सिर्फ नाम सुना है, उसे देखा नहीं ।"

"लेकिन मैंने उस जेल को देखा भी है ।" कारास डकराता हुआ बोला, "खूब अच्छी तरह देखा है ।"

"देखा है !

दोनों के चेहरे पर हैरानी के भाव नमूदार हुए ।

"हाँ, देखा है । पिछली बार मैं वहाँ एक लंबी सजा काटकर आया था । तीन साल की सजा । जब मैं एक कत्ल करते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया गया था ।"

"उस्ताद !" वह फटे-फटे नेत्रों से बोला, "आपको दोबारा कंपाला जेल जाते हुए डर नहीं लग रहा ?"

कारास पुनः जंगलियों की तरह जोर से ठठाकर हँसा ।

"कारास ने डरना नहीं सीखा । कभी नहीं । वैसे भी उस जेल में ऐसा कुछ नहीं है, जो डरा जाये । बस उस जेल में एक ही खास बात है कि वहाँ जो एक बार जाता है, फिर अपनी पूरी सजा काटकर ही बाहर निकलता है ।"

"क्या कोई भी वहाँ से बीच में फरार नहीं हो सकता ?"

"नहीं, कोई नहीं ।"

"लेकिन किसी ने उस जेल से फरार होने की कोशिश तो जरूर की होगी उस्ताद ?" अब वह दोनों कैदी कारास से काफी खुलते जा रहे थे ।

एकाएक कारास के चेहरे पर बड़ी गंभीरता के भाव तैर गये । अपने दाएं-बाएँ देखा तथा फिर बड़ी रहस्यमय मुद्रा में उनकी तरफ झुक गया ।

"किसी और ने क्यों ।" वह धीमी आवाज में फुसफुसाया, "खुद मैंने ही पिछली बार कंपाला जेल से फरार होने की कोशिश की थी ।"

"क्या कह रहे हैं आप ?"

दोनों चौंके ।

जबकि कारास बड़े विद्रूपतापूर्ण ढंग से मुस्कुराया ।

कमांडर करण सक्सेना भी अब उनकी बातें बहुत ध्यानपूर्वक सुनने लगा था ।

"फिर क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ । तभी मुझे यह अंदाजा हुआ कि वाकई उस जेल से कोई पूरी सजा काटे बिना बाहर नहीं निकल सकता ।"

"ओह !"

"लेकिन आपने कंपाला जेल से भाग निकलने के लिये क्या किया था ?" दूसरा अपराधी बोला ।

"इसी बात का तो अफसोस है कि कुछ कर नहीं सका । ऐसी कोई योजना ही दिमाग में नहीं आई, जो उस जेल से फरार हुआ जा सके । वह बिल्कुल किलेबंद है, जैसे किसी को बहुत गहरे कुएँ में धकेल दिया गया हो और बाहर निकलने का कोई रास्ता न हो ।"

दोनों अपराधी चुप हो गये ।

कमांडर करण सक्सेना पहले ही खामोश था । वह सिर्फ उनकी बातें सुन रहा था ।

"यह कौन है ?" तभी कारास ने करण सक्सेना की तरफ इशारा करके पूछा ।

वह उस समय अफ्रीकन भाषा में बात कर रहे थे और ऐसा समझ रहे थे कि वह विदेशी मूल का व्यक्ति उनकी बातें भला क्या समझेगा ?

"पता नहीं । इतना मालूम है कि इसे एक साल की सजा हुई है ।"

"किस जुर्म में ?"

"यह मालूम नहीं ।"

"क्या हमारी बातें इसके समझ आ रही होगी ?" कारास का सशंकित लहजा ।

"शायद नहीं ।"

"यह आप लोगों की गलतफहमी है ।" तभी करण सक्सेना अपनी खामोशी भंग करता हुआ बोला, "मुझे न सिर्फ आपकी सभी बातें समझ आ रही हैं बल्कि मैं आपकी भाषा बोल भी सकता हूँ ।" करण सक्सेना ने वह शब्द विशुद्ध अफ्रीकन भाषा में कहे ।

और ।

एक भारतीय को इतनी साफ-सुथरी अफ्रीकन बोलते देख न सिर्फ कारास बल्कि दोनों अपराधी भी बुरी तरह चौंक पड़े ।

उनके चेहरे पर गहन अचंभे के भाव उभर आये ।

"तुम... तुम हमारी भाषा बोल सकते हो ?"

"जी हाँ ।"

"हे प्रभु ! हम तो यह समझ रहे थे कि तुम हमारी भाषा बोल ही नहीं सकते ।"

करण सक्सेना मुस्कुराया ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"करण !"

"तुम्हें किस जुर्म में एक साल की सजा हुई है ?"

"मैं कैसीनो को लूटकर भाग रहा था ।" करण सक्सेना ने बताया, "तभी एकाएक पुलिस के आ जाने से पकड़ा गया ।"

"अकेले ही कैसीनो लूटकर भाग रहे थे ?"

"हाँ ।"

"माई गॉड !"

कारास उसे यूँ देखने लगा, जैसे किसी अजूबे को देख रहा हो । दोनों अपराधी भी अब बड़ी प्रभावित निगाहों उसे देखने लगे ।

"तुम्हें अकेले कैसीनो लूटते हुए डर नहीं लगा ?"

"नहीं, मैं हर काम अकेले करना पसंद करता हूँ ।"

"क्या तुमने पहले भी कोई अपराध किया है ?"

"हाँ ।" करण सक्सेना उन तीनों के ऊपर बुरी तरह हावी होता हुआ बोला, "मैं पेशे से खूनी हूँ । इस बार मुझसे गलती यह हुई कि मैंने अपनी लीक से हटकर एक नया काम करने की कोशिश की और पकड़ा गया ।"

"ओह, तो तुम खूनी हो ।" कारास की उसमें बेतहाशा दिलचस्पी जागी, "तुमने आज तक कुल कितने खून किये हैं ?"

"सही गिनती तो मुझे मालूम नहीं; परंतु जहाँ तक मैं समझता हूँ दुनिया के अलग-अलग देशों में जाकर मैं सौ से ज्यादा खून कर चुका हूँ ।"

"स... सौ खून !" कारास के नेत्र हैरत से फैल गये ।

"क्यों, मैंने कुछ कम कहे ? वैसे यह संख्या डेढ़ सौ तक भी हो सकती है । मैंने तो सिर्फ अंदाजे से यह सब बताये हैं ।"

वह तीनों अपनी-अपनी जगह सन्न बैठे रह गये ।

स्तब्ध ।

पुलिस का वह नीला हेलीकॉप्टर अब घनघोर जंगल के ऊपर उड़ान भर रहा था और फिर कंपाला जेल की बाउंड्री वॉल भी नजर आने लगी ।

कमांडर करण सक्सेना ने उड़ते हुए हेलीकॉप्टर में से देखा, कंपाला जेल के अंदर का नजारा बेहद विहंगमकारी और कौतूहलता पैदा करने वाला था ।

सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक तो कंपाला जेल की दीवार ही थी । वह तकरीबन एक मीटर चौड़ी थी और विशुद्ध कंक्रीट से बनी हुई थी । उस दीवार में गड्ढा करके बाहर निकलने की बात सोचना भी मूर्खता थी ।

हेलीकॉप्टर उड़ता हुआ जैसे ही कंपाला जेल के ऊपर पहुँचा, तो अंदर का सारा दृश्य बहुत साफ-साफ दिखाई पड़ने लगा ।

वहाँ अलग-अलग बनी हुई कई इमारतें नजर आ रही थीं । एक काफी बड़ा प्लेग्राउंड नजर आ रहा था । एक पार्क था और एक हेलीपैड भी कमांडर करण सक्सेना को दिखाई पड़ा, जहाँ जाकर उस हेलीकॉप्टर ने लैंड होना था । कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था, जैसे पाँच एकड़ में फैली उस बाउंड्री वॉल के अंदर कोई छोटा-मोटा शहर बसा हो, जहाँ सड़कें वगैरह सब कुछ थीं ।

दोनों अपराधी भी बहुत कौतूहलतापूर्वक हेलीकॉप्टर के बड़े-बड़े पोर्ट होलों में से कंपाला जेल के अंदर का वह दृश्य देखने लगे ।

"वह जो सामने दो-दो मंजिली इमारत देख रहे हो ।" कारास ने बताया, "वह बैरकें हैं और उन्हीं बैरकों में तमाम कैदियों को बंद किया जाता है ।"

"और वह जो एक बड़ी-सी पीली इमारत है ।" करण सक्सेना ने पूछा, "वह क्या है ?"

"वह एक इंटरमीडिएट स्कूल है ।" कारास गोला ।

"स्कूल ?"

करण सक्सेना के चेहरे पर अचरज के भाव उभरे ।

"हाँ, जेल के जो सुरक्षा कर्मचारी हैं, वह अपने भरे-पूरे परिवार के साथ जेल के अंदर ही रहते हैं और उनके बच्चे इसी स्कूल में पढ़ने जाते हैं । नर्सरी से इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की पूरी व्यवस्था इसी स्कूल में है ।"

"और स्कूल टीचर वगैरह ?"

"वह सब यहीं हैं । स्कूल में लगी हुई जो एक बड़ी-सी कॉलोनी देख रहे हो, वहीं सुरक्षाकर्मियों के परिवार तथा स्कूल टीचर वगैरह रहते हैं । उसी कालोनी में एक काफी बड़ा क्लब भी है, जहाँ खेलने का सारा सामान है । उनमें टेनिस कोर्ट, बैडमिंटन कोर्ट से लेकर कैरम रुम और कार्ड रुम इत्यादि सब हैं ।"

"यानी कंपाला जेल के अंदर ही सारे इंतजाम किये गये हैं ?"

"हाँ, गवर्नमेंट की तरफ से इंतजाम तो सारे किये गये हैं ।" कारास बोला, "मगर फिर भी जब किसी सुरक्षाकर्मी की ड्यूटी इस जेल में लगाई जाती है, तो उसका दम निकल जाता है । खासतौर पर उस सुरक्षाकर्मी के परिवार को तो ऐसा लगता है, जैसे कोई कहर टूट पड़ा हो । या फिर जैसे किसी जुर्म में उन्हें ही सजा हो गई हो । आखिर उन सबकी जिंदगी सिर्फ जेल की चारदीवारी में ही सिमटकर रह जाती है । सिर्फ सप्ताह में एक बार सुरक्षाकर्मियों के परिवार को बाहर शहर में घुमाने ले जाया जाता है । उसके बाद वह पूरे सप्ताह यहीं बंद रहते हैं । इसी जेल के अंदर । सब कैदियों के साथ ।"

"यह तो सचमुच सुरक्षाकर्मियों के ऊपर अन्याय ही है ।" करण सक्सेना के लहजे में हमदर्दी के भाव थे ।

"हाँ, अन्याय तो है । जब किसी सुरक्षाकर्मी को गवर्नमेंट ने पनिशमेंट देना होता है, तो उसकी ड्यूटी यहाँ लगा दी जाती है ।"

"और वह क्या है ?" उसी क्षण एक अपराधी पोर्ट होल में से ही एक दिशा में इशारा करता हुआ बोला, जहाँ बड़ा-सा टावर नजर आ रहा था ।

"वह पावर हाउस है ।" कारास ने बताया, "कंपाला जेल के अंदर सारी बिजली उसी एक पावर हाउस के द्वारा सप्लाई होती है ।"

करण सक्सेना अब साफ-साफ प्रभावित नजर आने लगा ।

उस जेल के अंदर जैसे इंतजाम किये गये थे, उनसे साबित होता था कि युगांडा गवर्नमेंट सचमुच एक बहुत सक्षम गवर्नमेंट है ।

वह वैसी गवर्नमेंट तो हरगिज़ भी नहीं थी, जैसी ऊपरी तौर पर नजर आती थी ।

तभी नीले रंग का वह हेलीकॉप्टर नीचे की तरफ झुकता चला गया और भयानक गर्जना करता हुआ हेलीपैड की तरफ बढ़ा ।

□□□

कुर्सियों के साथ लगे क्लिप खोलकर उन चारों को हेलीकॉप्टर से नीचे उतारा गया ।

कमांडर करण सक्सेना ने हेलीकॉप्टर से उतरकर बाउंड्री वॉल की प्राचीर की तरफ गर्दन उठाई । उसे ऐसा लगा, जैसे वह किसी अत्यंत विशाल ड्रम की तलहटी में खड़ा हो और उसका व्यक्तित्व सिकुड़कर किसी चींटी जैसा हो गया हो ।

हेलीपैड के नजदीक ही हथियारबंद सुरक्षाकर्मी की एक पूरी कारद खड़ी थी और वहीं एक जीप भी मौजूद थी ।

जीप बंद थी और उसके दोनों तरफ जाली लगी थी ।

"चलो ।" उनमें से एक सुरक्षाकर्मी ने चिल्लाकर कहा, "जीप में बैठो ।"

फिर एक-एक करके उन चारों को जीप के अंदर बिठाया गया ।

जीप में भी सबसे पहले कारास को ही बिठाया गया था ।

जिस तरह का कारास के साथ बर्ताव किया जा रहा था, उससे साबित होता था कि कारास उन सबकी निगाह में एक दुर्दांत मुजरिम है । अभेद्य जेल में पहुँचने के बाद भी उसके हाथ-पैरों की बेड़ियाँ खोली नहीं गई थीं और वह कोई तीस किलो वजनी लोहे से जकड़ा था ।

हेलीकॉप्टर में उनके साथ जो सुरक्षाकर्मी आये थे, वह भी अब हेलीकॉप्टर के अग्रिम भाग से नीचे उतर चुके थे ।

"क्या अभी बाहर से और कैदी भी लाए जाएंगे ?" गारद में खड़े एक सुरक्षाकर्मी ने उनसे पूछा ।

"नहीं, कैदियों का बस आखिरी लॉट है । आज और कैदी आने वाले नहीं हैं ।"

"शुक्र है, ड्यूटी खत्म हुई ।"

हैलीपेड के नजदीक खड़ी पूरी गारद ने राहत की साँस ली ।

इसी बीच जीप का इंजन घरघराकर जाग उठा ।

"हम जायें ?" ड्राइवर ने बाहर खड़े सुरक्षाकर्मियों से पूछा ।

"हाँ, जाओ ।"

जीप द्रुतगति के साथ सड़क पर दौड़ पड़ी ।

कमांडर करण सक्सेना अपने शरीर में रोमांच अनुभव कर रहा था । वह सचमुच अपने आप में एक अलग तरह की दुनिया थी ।

एक इतने गहरे कुएँ में सड़कों तथा बिल्डिंगों का वह जाल विस्मित कर देने वाला था और सबसे बड़ी बात यह है कि बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था ।

एक मेन गेट तक नहीं ।

खिड़की, रोशनदान भी नहीं ।

□□□

जीप दौड़ती रही और फिर शीघ्र ही हुआ एक दो मंजिली इमारत के सामने पहुँचकर रुकी ।

वह बैरक थी ।

इसके अलावा उस इमारत के आगे ऐसी ही और भी कई सारी इमारतें बनी हुई थीं। वह बैरक का एक पूरा समूह था।

"नीचे उतरो।"

वहाँ पहुँचकर उन चारों को जीप से नीचे उतारा गया।

तीन सुरक्षाकर्मी उनके साथ-साथ जीप में बैठकर वहाँ तक आये थे। कारास अपनी बेड़ियों को बजाता हुआ नीचे उतरा।

दोनों अपराधी अभी भी पूरी तरह भयभीत नजर आ रहे थे। वह आँखें फाड़-फाड़कर कभी जेल की गगनचुंबी प्राचीर को देखने लगते और कभी आसपास के वातावरण को। यह बात ही उनके अंदर खौफ पैदा कर रही थी कि वह कंपाला जेल में आ चुके हैं।

फिर उन्हें सीढ़ियाँ चढ़ाते हुए इमारत में ऊपर ले जाया गया।

वहाँ ऊपर नीचे दोनों मंजिलों पर बैरक बनी थीं। इसके अलावा हर बैरक को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट दिया गया था, जहाँ सात-आठ कैदियों से ज्यादा कैदी नहीं रखे जाते थे। ऐसी ही एक बैरक में उन चारों को भी ले जाकर बंद कर दिया गया।

करण सक्सेना ने देखा, उस बैरक में घुप्प अंधेरा फैला था और जगह-जगह पत्थर के चबूतरे बने थे जो कैदियों के आराम करने के लिए थे। उन्हीं चबूतरों पर एक-एक ऊनी कंबल भी रखा था। फिलहाल उस बैरक में रोशनी का कोई इंतजाम न था। सिर्फ एक खिड़की थी, जो बाहर की तरफ खुलती थी। मगर उस पर भी लोहे की मजबूत ग्रिल चढ़ी थी।

करण सक्सेना की निगाह पूरी बैरक में घूम गई।

उनसे पहले वहाँ दो कैदी और थे।

लेकिन यह देखकर करण सक्सेना को घोर निराशा हुई कि उनमें रौनक शाह कोई न था।

रौनक शाह!

जिस तक पहुँचने में उसे कदम-कदम पर दुश्वारियाँ आ रही थीं।

"इस जेल में एक खूबी तो है।" कारास बहुत फैलकर पत्थर के एक चबूतरे पर बैठता हुआ बोला।

उसका अंदाज ऐसा था, जैसे वह अपने घर आ गया हो।

"क्या खूबी है?"

"यहाँ की बैरकों में खटमल और मच्छर देखने को भी नहीं मिलेंगे तथा कंबल भी बहुत साफ-सुथरे रहते हैं जबकि दूसरी जेलों में यह खूबी देखने को नहीं मिलती।" कारास ने बेड़ियों में जकड़ा अपना भारी-भरकम पैर जमीन पर पटका, "मैं कहता हूँ लोग खामखाह

इस जेल में आने से डरते हैं। जब हमें अपनी सजा काटनी ही है, तो फिर क्यों न उसे किसी आलीशान जेल के अंदर काटी जाये !"

"सही बात है।"

"तुम इस जेल के अंदर पहली बार आये हो।" कारास ने कहा, "तुम्हें डर नहीं लग रहा ?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं।"

"वेरी गुड, तुम सचमुच कोई मर्द हो। मुझे तुम्हारे जैसे लोग बहुत पसंद आते हैं। बैठो।"

करण सक्सेना भी उसके सामने वाले चबूतरे पर बैठ गया।

जबकि कारास के साथ जो दो और अपराधी आये थे, वह अभी उसके आसपास बैठने की हिम्मत नहीं जुटा सके थे।

"क्या अब हम लोग अपनी सजा पूरी होने तक यही रहेंगे, इसी बैरक में ?" करण सक्सेना, रौनक शाह तक पहुँचने के लिए कलप रहा था।

"हाँ, अब यही हमारा घर है।"

"ओह !"

करण सक्सेना के चेहरे पर निराशा पुत गई।

"क्यों, क्या हुआ ? तुम एकाएक उदास क्यों हो गये इंडियन मैन ? "

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"अगर कोई बात है तो मुझे बेहिचक बताओ। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

"नहीं, कोई बात नहीं है।" करण सक्सेना ने तुरंत कहा, "बस मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो।"

"क्या इस जेल के अंदर रहते हुए कभी ऐसा भी कोई मौका आता है, जब सारे कैदी अपनी-अपनी बैरकों से निकलकर एक जगह जमा होते हैं ?"

कमांडर करण सक्सेना की बात सुनकर एकाएक कारास अपने चिर-परिचित अंदाज में बहुत जोर से ठठाकर हँसा।

उसकी हँसी बड़ी खिलखिलाती हुई थी।

तेज हँसी।

"खलीफा, ऐसा मौका कभी-कभी क्यों, यहाँ तो रोज ही आता है।" कारास ने बताया।

"रोज ?"

"हाँ।" कारास रहस्य-उद्घाटन करता हुआ बोला, "इंटरमीडिएट स्कूल के पास तुमने लाल खपरैल वाली जो एक बड़ी-सी छत देखी होगी, वह दरअसल मेस है और वहाँ कैदियों को खाना खिलाया जाता है। तीनों टाइम कैदी खाना खाने के लिए वही एकजुट होते हैं।"

करण सक्सेना की आँखें चमक उठीं।

"य... यानी आज शाम का खाना खाने के लिए हम लोग भी वही ले जाये जाएंगे ?"

"हाँ।"

"और बाकि तमाम कैदी भी वहाँ मौजूद होंगे ?"

"बिल्कुल।"

करण सक्सेना प्रफुल्लित नजर आने लगा।

उसके चेहरे पर जो उदासी के बादल आये थे, वह एकदम से छँट गये।

वह सचमुच खुशखबरी थी।

"लेकिन क्या बात है ?" एकाएक कारास, कमांडर करण सक्सेना की तरफ झुक गया तथा फुसफुसाया, "इस विषय में इतना खोद-खोदकर क्यों पूछ रहे हो ? कहीं जेल से फरार होने की कोई योजना तो दिमाग में नहीं मंडरा रही ?"

"न... नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।" करण सक्सेना हड़बड़ा उठा।

जबकि कमांडर करण सक्सेना की बात सुनते ही कारास पुनः बहुत जोर से ठठाकर हँसा।

"मेरे भाई, तुम तो एकदम इस तरह हड़बड़ा उठे जैसे मैं कोई सच बात कर रहा होऊँ।"

करण सक्सेना हैरानी से कारास को देखता रह गया।

वह इतना मजाकिया भी हो सकता है, करण सक्सेना ने सोचा न था।

फिर करण सक्सेना ने शाम होने का बड़ी बेसब्री के साथ इंतजार किया। हालांकि शाम होने में कोई बहुत ज्यादा देर नहीं थी लेकिन फिर भी करण सक्सेना का एक-एक लम्हा पहाड़ की तरह गुजरा।

□□□

ठीक आठ बज रहे थे, जब फिर कुछ सुरक्षाकर्मी वहाँ आये और उन सब कैदियों को वहाँ से निकालकर ले गये।

करण सक्सेना ने देखा, उन बैरकों से मेस कोई बहुत ज्यादा फासले पर नहीं था।

मेस में पहुँचते ही करण सक्सेना की बेचैन निगाहें चारों तरफ घूमनी शुरु हो गई। वहाँ उस वक्त बड़ी संख्या में कैदी मौजूद थे। उनकी संख्या हजार-बारह सौ से कम नहीं थी।

करण सक्सेना ने वहाँ शीघ्र ही रौनक शाह को खोज निकाला ।

रौनक शाह उस वक्त एक कोने में खड़ा था और चुप-चुप था ।

उसकी आँखें कंजी थी जिस कारण वह एकदम से पहचाना जाता था । रौनक शाह को देखते ही करण सक्सेना लपककर उसके पास पहुँचा ।

"रौनक शाह !" फिर भी उसने तस्दीक करने के लिहाज से पूछा ।

उस खतरनाक जेल में किसी को अपना नाम लेकर पुकारते देख रौनक शाह चौंका और उसने बड़ी हैरत के साथ करण सक्सेना को देखा ।

करण सक्सेना को भी वह देखते ही पहचाना ।

"कमांडर !" वह झटके के साथ बोला ।

"यस ।"

"थैंक गॉड, आप ही यहाँ ?" वह करण सक्सेना से भावावेश में एकदम से कसकर चिपट गया ।

करण सक्सेना ने भी उसे अपनी बाहों में समेट लिया । रौनक शाह से मिलना उसे ऐसा लगा, जैसे अपने बचपन के बिछड़े भाई से मिला हो । आखिर उस तक पहुँचने में उसे अच्छे-खासे पापड़ बेलने पड़ गये थे ।

"आप यहाँ क्या कर रहे हो कमांडर ?"

"पहले यह बताओ, तुम यहाँ कैसे पहुँचे ? और तुम्हें बैंक में डकैती डालने की क्या जरूरत थी ? क्या तुम बिल्कुल भूल गये थे कि तुमने मुझसे टिप-टॉप क्लब में जाकर मिलना भी था और मैं कंपाला पहुँचने वाला था ?"

"मैं कुछ भी नहीं भूला था कमांडर, कुछ भी नहीं ।" रौनक शाह जज्बाती होकर बोला ।

"फिर ?"

"आप इधर आओ, फिर मैं आपको सब कुछ बताता हूँ ।"

रौनक शाह, करण सक्सेना को लेकर उस कोने में थोड़ा और आगे की तरफ गया, जहाँ कोई न था ।

"दरअसल बैंक लूटना मेरा ड्रामा था कमांडर !" रौनक शाह बोला, "हाँ ड्रामा । बात यह है कि पाकिस्तान की खुफिया संस्था आईएसआई के एजेंट, फारूख अहमद मसूदी के पीछे-पीछे कंपाला तक आ पहुँचे थे और अब वह मेरे पीछे पड़े थे । क्योंकि फारूख अहमद मसूदी के बारे में तो उन्हें कुछ पता न था कि वह कहाँ है, किस जगह हैं, अलबत्ता उन्हें बड़े करिश्माई तरीके से यह जरूर पता चल गया था कि फारूख अहमद मसूदी तक पहुँचने का जरिया मुझे मालूम है ।"

"ओह !"

करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़े ।

इसका मतलब उसका अनुमान ठीक ही था कि आईएसआई एजेंट कंपाला पहुँच चुके थे । जो दो आदमी कॉरपोरेशन बिल्डिंग पहुँचे थे, वो वही थे । और जो टैक्सी स्टैंड पहुँचे थे, वह भी वही थे ।

"दरअसल आईएसआई एजेंटों के कंपाला पहुँचने की वजह से हालात बहुत खतरनाक बन चुके थे ।" रौनक शाह पूरी कहानी बयाँ करता हुआ बोला, "वह मेरी जान के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए थे और मेरे ऊपर एक-एक सेकंड निगाह रखे थे । स्थिति ऐसी बन गई थी कि अगर मैं यहाँ के हालातों के बारे में ट्रांसमीटर पर चीफ से भी बात करता, तब भी उन्हें पता लग जाता । मेरे सामने दो ही रास्ते बचे थे, या तो मैं उनकी गोलियों का निशाना बन जाऊँ या फिर उन्हें फारूख अहमद मसूदी तक पहुँचने का जरिया बता दूँ । तब मैंने बीच का रास्ता चुना ।"

"क्या ?"

"मैंने बैंक में जाकर बैंक लूटने का ड्रामा किया और फिर जानते-बुझते खुद को यहाँ पुलिस के हवाले कर दिया । अलबत्ता खुद को पुलिस के हवाले करना भी मुझे बाद में बहुत भारी पड़ा । मैंने कंपाला पुलिस की रिश्वतखोरी के किस्से बहुत सुन रहे थे । मैंने सोचा था, गिरफ्तार होने के बाद दो-तीन दिन में जेल के अंदर ही गुजारूँगा और फिर रिश्वत देकर न सिर्फ मैं बाहर निकल जाऊँगा बल्कि चुपचाप किसी दूसरे शहर में भी खिसक जाऊँगा । जबकि आईएसआई एजेंट यही सोचते रहेंगे कि मैं बैंक लूटने के अपराध में गिरफ्तार हो गया हूँ । मगर हुआ बिल्कुल उल्टा । मुझे कंपाला पुलिस ने न सिर्फ गिरफ्तार किया बल्कि इस किलेबंद जेल के अंदर भी लाकर डाल दिया, जहाँ से अपनी पूरी सजा काटे बिना अब बाहर निकलना नामुमकिन है । यह तो मुझे गिरफ्तार होने के बाद पता चला कि डकैती और हत्या के मुजरिमों को यहाँ इसी जेल के अंदर लाकर बंद किया जाता है । अगर मुझे यह बात पहले से पता होती कमांडर; तो मैं ऐसा कदम कभी नहीं उठाता । किसी हालत में नहीं ।"

बोलते-बोलते एकाएक रौनक शाह को बड़ी जोर से खांसी का धसका उठा ।

फिर उसकी साँसें बुरी तरह उल्टी-सीधी चलने लगी । वह बिल्कुल यूँ हाँफने लगा, जैसे कोई कुत्ता हाँफ रहा हो ।

जोर-जोर से ।

"क्या हुआ ?" करण सक्सेना ने उसे झिंझोड़ा, "क्या हुआ ?"

"क... कुछ नहीं । कुछ नहीं कमांडर ।"

रौनक शाह ने हाँफते हुए ही जल्दी से टटोलकर अपनी जेब से एक इनहेलर बाहर निकाला और फिर दवाई अपने मुँह में स्प्रे की ।

दवाई मुँह में स्प्रे करने के बाद भी वह काफी देर तक हाँफता रहा तथा फिर धीरे-धीरे उसकी साँस संतुलित हुई ।

"क्या तुम अस्थमा के पेशेंट हो ?" करण सक्सेना ने उसे गौर से देखते हुए पूछा ।

"हाँ, मुझे अस्थमा है ।" रौनक शाह की साँस अभी भी उल्टी-सीधी चल रही थी ।

"ओह !"

अस्थमा सचमुच एक भयंकर रोग था ।

"तुमने इस बीमारी का इलाज नहीं कराया ?"

"कराया कमांडर, काफी कराया । परंतु अब तो लगता है कि मेरी यह बीमारी मेरी जान के साथ ही छूटेगी ।"

रौनक शाह के माथे पर पसीने की हल्की-हल्की बूंदे भी चुहचुहा आई थीं ।

"फारुख अहमद मसूदी अब कहाँ है ?" करण सक्सेना ने थोड़ा रुककर पूछा ।

"वह एक लंबी कहानी है ।" रौनक शाह हाथ से ही अपने चेहरे का पसीना पोंछता हुआ बोला ।

"मैं पूरी कहानी सुनने को तैयार हूँ ।"

"परंतु हम दोनों का ज्यादा देर तक एक दूसरे के पास खड़े रहना मुनासिब नहीं है कमांडर । इससे हम शक के दायरे में भी आ सकते हैं । कल जब आप मिलोगे, तब मैं आपको वह पूरा किस्सा बताऊँगा । एक बात आप मुझे जरूर बताकर जाओ ।"

"क्या ?"

"आप यहाँ कैसे आये ?"

"मैं तुम्हारी तुम्हारी वजह से आया हूँ ।" करण सक्सेना ने धैर्य के साथ जवाब दिया, "मुझे जब तुम्हारे इस जेल में होने का पता चला, तो मुझे तुमसे मुलाकात करने का यही एक रास्ता सुझा ।"

"हे भगवान, आपने सिर्फ मेरे कारण इतना बड़ा कदम उठाया ?"

"हाँ ।"

"लेकिन आपने यहाँ आकर ठीक नहीं किया कमांडर ।" रौनक शाह बोला ।

"क्यों ?"

"क्योंकि आप यहाँ आये तो अपनी इच्छा से हैं, मगर बाहर तभी जाएंगे जब आपकी सजा पूरी होगी ।"

करण सक्सेना मुस्कुराया ।

उसकी मुस्कुराहट में कॉन्फिडेंस था ।

"यह समय बताएगा रौनक शाह, मैं कब बाहर निकलता हूँ ।"

वह कुछ और बात करते तभी दूर खड़े दो सुरक्षाकर्मी हलक फाड़कर चिल्लाते हुए कैदियों को लाइन लगाने के लिए कहने लगे ।

वहाँ दो लाइन लगकर खाना मिलना था ।

जब लाइन लगनी शुरु हुई, तो कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह भी उन्हीं में से एक लाइन में जा लगे ।

□□□

करण सक्सेना की वह रात सोचते हुए गुजरी ।

बार-बार उसे फारूख अहमद मसूदी का ख्याल आ रहा था ।

क्या लंबी चौड़ी कहानी हो सकती थी मसूदी की ?

उसकी दोनों बेटियाँ अब कहाँ थीं ?

बीवी कहाँ थी ?

करण सक्सेना, फारूख अहमद मसूदी के बारे में जितना सोच रहा था, उतनी उसकी उलझन बढ़ रही थी ।

रौनक शाह यह क्यों कह रहा था कि वह मसूदी तक पहुँचने का जरिया जानता है ? क्या मतलब था इस बात का ? क्या अभी रौनक शाह खुद भी मसूदी से नहीं मिला था ?

कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में सवाल दर सवाल जन्म ले रहे थे ।

मगर उसके पास उन सवालों का कोई जवाब न था । उन सवालों का तो बस एक ही आदमी जवाब दे सकता था, खुद रौनक शाह !

□□□

सुबह एक वाकया और पेश आया ।

करण सक्सेना जब बड़ी उत्सुकतावश अगले दिन सुबह नाश्ते के लिए मेस में पहुँचा, तो वहाँ रौनक शाह का कहीं कुछ पता न था ।

करण सक्सेना समझ न सका, रौनक शाह नाश्ते के लिए क्यों नहीं आया था ।

फिर रौनक शाह से उसकी दोपहर में लंच के दौरान मुलाकात हुई ।

करण सक्सेना, रौनक शाह को देखकर चौंका । क्योंकि उस वक्त उसका पूरा जिस्म ही निचुड़ा हुआ नजर आ रहा था और शक्ल से भी ऐसा लगता था, जैसे वह बेहद बीमार हो । जैसे किसी ने उसके पूरे शरीर का खून मिक्सी में डालकर निचोड़ लिया हो ।

वह दोनों खाने की अपनी-अपनी प्लेटें लेकर एक जगह खड़े हुए ।

"यह तुम्हें क्या हुआ ?" करण सक्सेना, रौनक शाह पर पहली नजर पड़ते ही चौंका ।

क्योंकि रात तो वह उसे अच्छा-भला छोड़कर गया था ।

"क... कुछ नहीं ।" रौनक शाह अपने मुँह पर हथेली रखकर खाँसा ।

"रात दरअसल मुझे अस्थमा का दौरा पड़ गया था। दौरा भी इतना जबरदस्त पड़ा था, जो पहले कभी नहीं पड़ा।"

"ओह, तुम्हारी तो बहुत बुरी हालत हो गई है।" करण सक्सेना के चेहरे पर चिंता के भाव उभरे।

"यह दौरा आदमी को अंदर-बाहर सब जगह से खोखला बना डालता है कमांडर ! रात तो मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मेरी अब जान निकली। अब निकली। फौरन ही सुरक्षाकर्मियों ने मुझे रात के 2:00 बजे जेल के हॉस्पिटल में पहुँचाया और फिर मुझे ऑक्सीजन दी गई। तब कहीं जाकर मेरी जान बची। इसीलिए मैं सुबह नाश्ते के दौरान नहीं आया था। अब भी मैं सिर्फ आपकी वजह से आया हूँ।"

रौनक शाह खाँसता हुआ वही पड़ी एक बेंच पर बैठ गया।

फिर उसने इनहेलर निकालकर उसकी दवाई अपने मुँह में भी स्प्रे की। इनहेलर से उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ।

"हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।" रौनक शाह धीरे-धीरे खाना खाता हुआ बोला, "फिलहाल मैं आपको फारूख अहमद मसूदी के बारे में कुछ बातें बताना चाहता हूँ, जो कल नहीं बता सकता था।"

कमांडर करण सक्सेना भी उसके बराबर में ही बेंच पर बैठ गया और उसी की तरह खाना खाने लगा।

"सबसे पहले तो यह समझ लो कि मेरी फारूख अहमद मसूदी से आज तक मुलाकात नहीं हुई है।"

"क्या कर रहे हो तुम ?" करण सक्सेना चिहुँका।

उसके नेत्र विस्मय से फैले।

"यह सच है कमांडर।"

"अगर यह सच है।" करण सक्सेना खाना खाते-खाते ठिठका, "तो फिर तुमसे यह किसने कहा कि फारूख अहमद मसूदी अपना इतना महत्वपूर्ण फॉर्मूला भारत सरकार के हवाले करना चाहता है ? उसकी इच्छा है कि भारत सरकार उसे अपने यहाँ राजनैतिक शरण (पॉलटिकल असायलम) दे ?"

"मुझे यह बातें यासीन कड़ावाला से मालूम हुई।"

यासीन कड़ावाला !

एक नया नाम उजागर हुआ।

"यासीन कड़ावाला कौन है ?" करण सक्सेना ने पूछा।

"यूँ तो यासीन कड़ावाला भी एक वैज्ञानिक ही है, परंतु उसकी बेहतर आइडेंटिफिकेशन यह है कि वह फारूख अहमद मसूदी का असिस्टेंट है और असिस्टेंट भी

ऐसा है, जो अपने गुरु के वास्ते सब कुछ करने को तैयार रहता है । आज अगर फारूख अहमद मसूदी पाकिस्तान की सरहद लांघकर कंपाला तक पहुँचा है, तो सिर्फ यासीन कड़ावाला की बदौलत । इतना ही नहीं, पाकिस्तान गवर्नमेंट ने फारूख अहमद मसूदी को जिस प्रयोगशाला में कैद कर दिया था, वहाँ से भी वह कमोबेश यासीन कड़ावाला की बदौलत ही भागने में कामयाब हुआ । क्योंकि एक यासीन कड़ावाला ही था, जो असिस्टेंट होने के नाते उस वक्त भी उसके साथ था । यासीन कड़ावाला ने मुझे बताया कि प्रोफेसर साहब की चूंकि दोनों बेटियाँ पाकिस्तान गवर्नमेंट ने अपने कब्जे में कर ली थी, इसलिये वह पानी से पेट्रोल बनाने वाली रिसर्च तो सिर्फ दिखावे के लिए कर रहे थे । क्योंकि सच तो यह है उनकी वह रिसर्च तो पहले ही कंप्लीट हो चुकी थी । वह तो बस उस मुनासिब मौके की तलाश में थे, जब वह अपना वह फॉर्मूला दुनिया के सामने जग जाहिर करते ।"

"फारूख अहमद मसूदी और यासीन कड़ावाला उस प्रयोगशाला से भागे कैसे ? क्योंकि वहाँ तो अच्छा-खासा पहरा होगा ।" करण सक्सेना ने पुनः खाना, खाना शुरु किया ।

"इसमें कोई शक नहीं कि वहाँ अच्छा-खासा पहरा था कमांडर । परंतु जब इंसान किसी काम को कर गुजरने की एक बार ठान ले, तो वह काम देर-सवेर हो ही जाता है । जबकि वह दोनों तो बेहद जहीन और काबिल इंसान थे । उन्होंने प्रयोगशाला से भाग निकलने की भी एक बेहतरीन योजना बनाई ।"

"क्या ?"

"फारूख अहमद मसूदी का दिमाग जो पानी से पेट्रोल बनाने जैसा आश्चर्यजनक कार्य कर सकता था ।" रौनक शाह धीरे-धीरे बोल रहा था, "वह मस्तिष्क अब ट्राई नाइट्रो टोलीन (TRY NITRO TULEEN) तैयार करने में जुट गया । टीएनटी तैयार करने में यासीन कड़ावाला ने भी उसकी भरपूर हेल्प की । कुल मिलाकर जब लगभग 5 किलोग्राम टीएनटी तैयार हो गया, तो उसने वह अति विध्वंसकारी पदार्थ वहीं प्रयोगशाला में एक जगह छुपा दिया और उसे इलेक्ट्रॉनिक संचार सुविधा से संबंधित कर दिया । सुरक्षाकर्मियों ने फारूख अहमद मसूदी को प्रयोगशाला में गार्डन तक घूमने की छूट दे रखी थी । वह रोजाना यासीन कड़ावाला के साथ थोड़ी देर के लिए उस गार्डन में घूमने जाता था । 2 महीने बड़े इत्मीनान के साथ गुजर गये । इस बीच फारूख अहमद मसूदी ने अपने खौफनाक इरादों की हल्की-सी भनक भी पाकिस्तान गवर्नमेंट को नहीं लगने दी । और जब पाकिस्तान गवर्नमेंट का अधिकारी वर्ग इस प्रतीक्षा में था कि बस सप्ताह-दस दिन में उनके हाथ मसूदी की विस्मयकारक खोज लगने वाली है, तो एक दिन फारूख अहमद मसूदी ने अपने यंत्र को विध्वंस का संकेत कर दिया । जैसे ही उस 5 किलोग्राम टीएनटी में विस्फोट हुआ, तो संपूर्ण इमारत की धज्जियाँ बिखरती दिखाई दी । भयानक विस्फोट के

साथ मलबा आकाश की बुलंदियों को छू गया । वह प्रयोगशाला क्योंकि परमाणु संयंत्रों से सुसज्जित था, अतः भयानक तबाही सामने आई ।"

"और फारूख अहमद मसूदी तथा यासीन कड़ावाला इतने भयानक विस्फोट के दौरान कैसे बचे ?" करण सक्सेना ने कौतुहलतापूर्वक पूछा ।

"दरअसल वह दोनों पहले ही दौड़कर गार्डन में जा पहुँचे थे ।" रौनक शाह फिर आहिस्ता से बोला, "जिस समय विस्फोट हुआ तो सिक्योरिटी गार्ड की तंद्राए भी भंग हो गई, जिसका फायदा उठाकर वह वहाँ से निकल भागे । अलबत्ता तब सुरक्षाकर्मियों ने यही समझा था कि वह दोनों उस भयानक विस्फोट में मारे गये हैं, लेकिन बाद में उन्हें मालूम हुआ कि वह दोनों जिंदा थे ।"

"कैसे मालूम हुआ ?"

"फारूख अहमद मसूदी की जो दोनों बेटियाँ पाकिस्तान गवर्नमेंट के कब्जे में थीं, उनकी वजह से मालूम हुआ ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह एकाएक गायब हो गई थीं । उनके गायब होने से गवर्नमेंट को शक हुआ और फिर मलबे में से उन दोनों के शव भी बरामद नहीं हुए थे ।" रौनक शाह खाना खाते-खाते ठिठका और उसने गिलास उठाकर पानी पीया ।

"गवर्नमेंट के कब्जे में से मसूदी की बेटियाँ कैसे गायब हुईं ?" करण सक्सेना ने पूछा ।

"वह सब भी यासीन कड़ावाला की बदौलत हुआ ।" रौनक शाह रहस्य की एक-एक परत खोलता चला गया, "दरअसल जिस जगह फारूख अहमद मसूदी की दोनों बेटियों को बंदी बनाकर रखा गया था, वहीं यासीन कड़ावाला की पहचान के कुछ लोग थे । उन्हीं से उन्हें इनसाइड हेल्प हासिल हुई और उन्हीं की बदौलत मसूदी की दोनों बेटियों को बाहर निकाला गया ।"

"वह दोनों अब कहाँ है ?"

रौनक शाह ने बड़े साँकेतिक अंदाज में आसमान की तरफ उंगली उठा दी ।

"क... क्या मतलब ?" करण सक्सेना हड़बड़ा उठा ।

"वह खुदा के पास हैं कमांडर । वह दोनों भगवान को प्यारी हो चुकी हैं ।"

"मगर कैसे ?"

"दरअसल गवर्नमेंट के जल्लादों ने उन्हें बहुत बुरी तरह प्रताड़ित किया था । उसके फूल जैसे बदन को कई मर्तबा रौंदा गया था । जब उन्हें कैद खाने से बाहर निकाला गया, तो वह अधमरी हालत में थीं । वह दो कदम चल नहीं पाती थीं कि लड़खड़ाकर गिर पड़ती थीं । अपनी बच्चियों की वह दशा देखकर फारूख अहमद मसूदी का दिल और भी ज्यादा हाहाकार कर उठा । बहरहाल उसके बाद वह दोनों लड़कियाँ ज्यादा दिन जिंदा नहीं रही ।

जब फारूख अहमद मसूदी, वह दोनों लड़कियाँ और यासीन कड़ावाला पाकिस्तान का बॉर्डर क्रॉस कर रहे थे और वे वहाँ एक बेहद ठंडे इलाके से गुजरे, तभी उन दोनों लड़कियों की ठंड बर्दाश्त न करने के कारण मौत हो गई ।" बोलते-बोलते रौनक शाह को पुनः खासी का बड़ा तेज धसका उठा ।

उसका चेहरा सुर्ख हो गया ।

रौनक शाह ने फिर इनहेलर की दवाई अपने मुँह में स्प्रे की ।

उसकी तबीयत दुरुस्त हुई ।

"और फारूख अहमद मसूदी की बीवी का क्या हुआ ?"

"बीवी के बारे में आपको नहीं मालूम ?" रौनक शाह के स्वर में उत्कंठा के भाव थे ।

"नहीं ।"

"बीवी को तो पाकिस्तानी जल्लादों ने फारूख अहमद मसूदी के सामने ही मार डाला था । उसी हादसे के बाद तो फारूख अहमद मसूदी की हालत अर्द्धविक्षिप्तों जैसी हो गई थी । अगर कहीं यासीन कड़ावाला उसके साथ न होता, तो वह तभी पागल हो जाता ।"

"ओह, सचमुच बहुत दहला देने वाला किस्सा है ।" कमांडर करण सक्सेना जैसे आदमी के शरीर में भी सिहरन दौड़ गई ।

वाकई फारूख अहमद मसूदी के ऊपर बड़े जुल्म ढाए गये थे ।

जिस आदमी को पाकिस्तान गवर्नमेंट ने कभी अपने सिर-आँखों पर बिठाया था, जिसे निशान-ए-पाकिस्तान जैसे अज़ीम तमगे से नवाज़ा था, उसी के साथ ऐसा दरिंदगीपूर्ण व्यवहार किया गया था, जो किसी दुश्मन के साथ भी न किया जाये ।

"और मसूदी अब कंपाला में कहाँ है ?" करण सक्सेना बोला ।

"मसूदी, कंपाला में कहाँ है, यह बात सिर्फ एक आदमी जानता है ।" रौनक शाह ने बताया ।

"कौन ?"

"यासीन कड़ावाला ! फारूख अहमद मसूदी को आज की तारीख में सिर्फ यासीन कड़ावाला पर भरोसा है । यासीन कड़ावाला ने मुझसे संपर्क स्थापित किया था और सामने यह प्रपोजल रखा था कि मिस्टर मसूदी अपना विस्मयकारक फॉर्मूला भारत सरकार के हवाले करना चाहते हैं और वहाँ राजनैतिक शरण के भी इच्छुक हैं । इसके लिए कमांडर करण सक्सेना को वहाँ बुलाकर बात कराई जाये । मैंने यासीन कड़ावाला का वह संदेश चीफ तक पहुँचा दिया था और वहाँ से मुझे आपके कंपाला आने का सकारात्मक जवाब भी मिला था, परंतु फिर एकाएक आईएसआई एजेंटों के बीच में सक्रिय हो उठने से सारा मामला गुड़गोबर हो गया और अब जबकि हम दोनों ही इस अभेद्य कंपाला जेल में आकर बंद हो गये हैं, तो आशा की थोड़ी-बहुत जो किरण थी, वह भी खत्म हो गई हैं ।"

"हूँ ।" करण सक्सेना ने गहरी हुंकार भरी, "हूँ ।"

वह दोनों अब खाना खा चुके थे और बेंच पर खामोश बैठे थे ।

चुप ।

"रौनक शाह !" करण सक्सेना पुनः बोला, "ऐसा सिर्फ तुम सोच रहे हो कि आशा की थोड़ी-बहुत जो किरणें थीं, वह भी खत्म हो चुकी हैं । मेरी निगाह में ऐसा नहीं है ।"

रौनक शाह के चेहरे पर उत्सुकता के भाव पैदा हुए ।

कौतूहलता के भाव ।

"यानी आप ऐसा मानते हो कि हम इस जेल के अंदर से बाहर निकल सकते हैं ?"

"बिल्कुल मानता हूँ ।"

"कैसे ?"

"मुझे थोड़ा सोचने का मौका दो । बहुत जल्द मैं तुम्हारे सामने अपनी योजना रखूंगा । यह बताओ अगर तुम अब यासीन कड़ावाला से मुलाकात करना चाहो, तो उससे तुम्हारी मुलाकात कैसे होगी ?"

"यासीन कड़ावाला ने मुलाकात करने के लिए मुझे एक जगह के बारे में बताया था ।"

"गुड ।" करण सक्सेना की आँखें चमक उठीं ।

यानी अभी खेल पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था ।

अभी कुछ पत्ते शो होने बाकी थे ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में अब बस एक ही बात मंडरा रही थी कि किसी तरह जल्द से जल्द रौनक शाह को लेकर उस जेल से फरार हुआ जाये ।

क्योंकि अगर यासीन कड़ावाला से मिलना था, तो ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं था ।

फिर हो सकता था कि यासीन कड़ावाला, फारुख अहमद मसूदी को लेकर कहीं और चला जाये ।

करण सक्सेना ने कंपाला जेल से भाग निकलने की योजना के बारे में सोचना शुरू किया । इस बार उसने जेल के अंदरूनी हिस्से को अपने सामने रखकर सोचा कि किस तरह अंदर से फरार हुआ जा सकता था ।

करण सक्सेना को जेल से भागने की योजना के बारे में सोचते-सोचते दो दिन गुजर गये, मगर उसे ऐसी कोई तरकीब न सूझी जो उस जेल से भागा जा सकता ।

इस बीच रौनक शाह से उसकी मुलाकातें निरंतर होती रहीं ।

उसकी तबीयत फिलहाल ठीक थी ।

तीसरे दिन जब कमांडर करण सक्सेना रात के समय पत्थर के चबूतरे पर लेटा हुआ था और जेल से बाहर निकलने की योजना के बारे में ही सोच रहा था, तभी बेड़ियों में जकड़ा कारास बहुत धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ उसके पास आया ।

उस वक्त बैठक में मौजूद अन्य सभी कैदी गहरी नींद सोए पड़े थे और वहाँ घुप्प अंधेरा फैला था ।

"हैलो मिस्टर करण ।" वह वहीं करण सक्सेना के नजदीक बैठ गया ।

उसकी आवाज धीमी थी ।

"हैलो ।"

करण सक्सेना भी शीघ्रता से चबूतरे पर उठकर बैठा ।

"कैसे हो ?"

"अच्छा हूँ ।"

करण सक्सेना की आँखों में उस समय दूर-दूर तक नींद नहीं थी ।

यही हालत कारास की थी । वह भी बहुत चाक-चौबंद नजर आ रहा था और जागते हुए शायद उसी पल का इंतजार कर रहा था, जब बैरक में मौजूद सभी कैदी सो जायें और वह कमांडर करण सक्सेना के पास आकर उससे बात करें ।

"मिस्टर करण, मैं पिछले 2 दिन से तुम्हारे अंदर कुछ परिवर्तन देख रहा हूँ ।" कारास गहरी साँस लेकर धीमी जबान में बोला ।

"कैसा परिवर्तन ?"

करण सक्सेना सचेत हो उठा ।

वह जानता था कि कारास जरूरत से ज्यादा चालाक आदमी है ।

"मैं देख रहा हूँ मिस्टर करण ।" कारास ने कहा, "तुम कुछ खामोश-खामोश रहते हो । इन दो दिनों में मैंने हमेशा तुम्हें कुछ न कुछ सोचते हुए पाया है ।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है ।" करण सक्सेना के कान में खतरे की घंटियाँ बज उठी, "मेरे अंदर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है ।"

"नहीं ।" कारास के स्वर में दृढ़ता थी, "कोई बात तो है, जो तुम मुझसे छुपा रहे हो । और वह आदमी कौन है, जिससे तुम मेस में बहुत घुट-घुटकर बात करते हो ? जहाँ तक मैं समझता हूँ, उससे मिलने के बाद से ही तुम्हारे अंदर यह परिवर्तन आया है ।"

"अच्छा वह !" करण सक्सेना ने चौंकने का अभिनय किया, "वह मेरा एक पुराना हिंदुस्तानी दोस्त है । मुझे इस जेल के अंदर मिला, तो बहुत अच्छा लगा । इसीलिए हम दोनों काफी घुट-घुटकर बात करते हैं ।"

"सिर्फ दोस्त हो ?"

"क्यों, और भला हम क्या हो सकते हैं ?"

"नहीं, ऐसे ही पूछ रहा हूँ । दरअसल तुम दोनों के रख-रखाव में, पोज़ीशन में काफी फर्क नजर आता है ।"

"अगर तुम ऐसा सोचते हो, तो यह तुम्हारे मन का वहम हैं कारास ।"

"फिर भी न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि तुम किसी चक्कर में हो ।"

"कैसा चक्कर ?"

"यही तो मैं जानना चाहता हूँ तथा अब एक और बात मेरे मन में संदेह जगा रही है ।"

"क्या ?"

"जेल में आते ही तुमने मुझसे यह पूछा था कि क्या यहाँ ऐसा भी कोई मौका आता है, जब तमाम कैदी अपनी-अपनी बैरक में से निकलकर एक जगह जमा होते हैं । मालूम है, उस बात का क्या अर्थ निकलता है ?"

"क... क्या अर्थ निकलता है ?"

करण सक्सेना को एकाएक कारास बहुत खतरनाक लगने लगा ।

"मिस्टर करण, उस बात का सीधा-सीधा यह अर्थ निकलता है कि जरूर तुम्हें यह बात पहले से ही मालूम थी कि तुम्हारा दोस्त इस जेल के अंदर है ।"

माय गॉड !

करण सक्सेना सकते में रह गया ।

कारास तो उसकी उम्मीद से भी ज्यादा चालाक निकला था ।

"मैं सोच भी नहीं सकता था कारास, तुम इस तरह के अंदाजे लगाते हो ।"

"लेकिन मेरे अंदाजे हमेशा सच होते हैं ।" कारास मुस्कुराया ।

"इस बार सच नहीं है ।"

"हो सकता है ।" कारास ने बड़ी बेफिक्री के साथ कंधे उचकाए, "फिर भी मैं तुमसे एक बात जरूर कहना चाहूँगा ।"

"क्या ?"

"मिस्टर करण, मैं नहीं जानता कि तुम किस चक्कर में हो । लेकिन अगर कभी भी तुम्हें मेरी किसी मदद की जरूरत पड़े, तो मुझे बेहिचक बताना । इसके अलावा एक बात और ध्यान रहे ।"

"क्या ?"

"मैं इस जेल से तुमसे ज्यादा वाकिफ हूँ । आखिर पिछली बार मैंने पूरे 3 साल यहाँ गुजारे हैं । इसलिये किसी उल्टे-सीधे हथकंडे को जितने बढ़िया ढंग से मैं अंजाम दे सकता हूँ, उतना कोई और अंजाम नहीं दे सकता ।"

"उल्टे-सीधे हथकंडे।" करण सक्सेना की आँखों में सवालिया निशान उभरे, "इससे क्या मतलब है तुम्हारा ?"

कारास मुस्कुराया।

"तुम खुद बहुत समझदार हो मिस्टर करण। तुम खुद अंदाजा लगा सकते हो कि मैं किस उल्टे-सीधे हथकंडे की बात कर रहा हूँ।"

फिर कारास मुस्कुराता हुआ ही चबूतरे से उठा और बेड़ियाँ खनकाता हुआ आगे की तरफ बढ़ गया।

जबकि कमांडर करण सक्सेना अपनी जगह सन्न बैठा रह गया था।

उसे न जाने क्यों ऐसा लगा, कारास उसके राज से वाकिफ है।

□□□

अगला पूरा दिन भी कमांडर करण सक्सेना का योजना सोचते हुए गुजरा, मगर योजना की कोई डोर परवान न चढ़ी।

वह खुद ही योजना सोचता था और फिर खुद ही उसमें कमी-बेशी निकालकर उसे कैंसिल कर देता था।

शीघ्र ही कमांडर करण सक्सेना को भी यह लगने लगा कि कारास जेल से फरार होने में उसकी हेल्प कर सकता है।

आखिर इसमें कोई शक नहीं था कि वह जेल उसने उससे ज्यादा देखी थी।

तीन साल का अरसा कोई कम तो नहीं होता।

मगर कारास को अपनी इस योजना में शामिल करने में रिस्क भी काफी था। न मालूम वह किस मूड का आदमी था। वह उसे सहयोग भी दे सकता था और यह भी मुमकिन था, वह उसके वास्ते और भी ज्यादा बड़ा गड्ढा खोद डालता।

कुल मिलाकर कमांडर करण सक्सेना ने रिस्क उठाने का फैसला कर लिया।

अगले दिन आधी रात को जब बैठक में तमाम कैदी गहरी नींद सोए पड़े थे, कमांडर करण सक्सेना अपने चबूतरे से दबे पाँव उठा और कारास के चबूतरे की तरफ बढ़ा।

कारास की पीठ उस समय कमांडर करण सक्सेना की तरफ थी और ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे वह गहरी नींद सोया हो। लेकिन कमांडर करण सक्सेना जैसे ही उसके नजदीक पहुँचा, वह एक जबरदस्त अंगड़ाई लेकर चबूतरे पर सीधा बैठ गया।

करण सक्सेना चौंका।

उसने सोचा भी नहीं था, कारास इतनी रात को जाग रहा होगा।

"आओ मिस्टर करण, बैठो।"

"क्या तुम सो नहीं रहे थे ?" करण सक्सेना का विस्फारित स्वर।

"नहीं।"

"क्यों ?"

"बस तुम्हारी ही राह देख रहा था कि कब तुम चलकर मेरे पास आओगे।"

"य... यानी तुम्हें उम्मीद थी कि मैं तुम्हारे पास आऊँगा ?" करण सक्सेना का आश्चर्य बढ़ा।

"बिल्कुल, पूरी उम्मीद थी।"

उसका कॉन्फिडेंस देखकर कमांडर करण सक्सेना का उसे दाद देने को दिल चाहा।

"अब तुम्हारे जो भी उल्टे सीधे हथकंडे हैं, वह मुझे बताओ।"

"नहीं, मेरा कोई उल्टा सीधा हथकंडा नहीं है।"

"फिर भी कुछ तो है, जो तुम मुझसे छुपा रहे हो।"

करण सक्सेना ने अपने शुष्क अधरों पर जबान फिराई।

सच तो यह है, वह अभी भी कारास को नाप-तोल रहा था।

वह उसे काफी हद तक विश्वसनीय लगा।

"सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं किस चक्कर में हूँ। मैं दरअसल इस अभेद्य जेल से भाग निकलने के बारे में सोच रहा हूँ।"

करण सक्सेना की बात सुनते ही कारास अपने चिर-परिचित अंदाज में ठठाकर हँस पड़ा।

लेकिन जल्द ही उसने अपनी हँसी संतुलित की।

यह सोचकर संतुलित की कि कहीं किसी कैदी की आँख न खुल जाये।

उसने इधर-उधर देखा, सब कैदी पूर्ववत गहरी नींद सोए पड़े थे।

"मैं जानता था।" कारास ने कहा, "तुम्हारा उल्टा सीधा हथकंडा यही होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि माय डियर, आखिर इस कंपाला जेल में आने के बाद कोई आदमी और कुछ बात सोच भी क्या सकता है। लेकिन तुम्हें मालूम है, यहाँ से फरार होना कोई आसान बात नहीं। मैं खुद पिछली मर्तबा बहुत कोशिश करके देख चुका हूँ। और सिर्फ मैं ही क्यों, यहाँ बहुत लोगों ने ऐसी कोशिशें की हैं। लेकिन किसी की भी कोई कोशिश परवान नहीं चढ़ सकी।"

"मुझे उन तमाम कोशिशों के बारे में बताओ, जो और लोगों ने कीं ?"

"ठीक है।"

कमांडर करण सक्सेना के चेहरे पर उस समय बेचैनी साफ-साफ झलक रही थी।

"जैसे एक कैदी ने सुरंग खोदकर कंपाला जेल से भाग निकलने का प्रयास किया।" कारास उसे सब कुछ विस्तारपूर्वक बताता हुआ बोला, "लेकिन उसने अभी सुरंग खोदनी

शुरू ही की थी कि उसके सुरंग खोदने की बात किसी तरह पूरी जेल में फैल गई और वह पकड़ लिया गया।"

"बात कैसे फैली ?"

"मालूम नहीं।"

"और जेल के अंदर हथियार कहाँ से आये उसके पास ?"

"हथियार कौन-सा उसके पास लम्बे-चौड़े थे।" कारास बोला, "सिर्फ उसके पास एक सरिया था और वह सरिया उसने किसी तरह मेस में से हासिल किया था। उस सरिये के अगले हिस्से को पीटकर उसने छेनी जैसा बना दिया था और फिर उस सरिये की मार्फत वह बाउंड्री वॉल के नीचे सुरंग खोदने की कोशिश कर रहा था, जब वह पकड़ लिया गया।"

कारास की आवाज उस समय इतनी धीमी थी कि अगर कोई कैदी जाग भी रहा हो, तो उसकी बातचीत न सुन सके।

"इसके अलावा एक कैदी ने तो कुछ ज्यादा ही बड़ा दिलेरी का काम किया।" कारास बोला।

"क्या ?"

"वह किसी तरह अपनी बैरक से निकलकर भागता हुआ हेलीपैड तक जा पहुँचा था और फिर उसने हेलीकॉप्टर के नीचे रस्सी अटकाकर वहाँ से भागने की कोशिश की।"

"फिर क्या हुआ ?" करण सक्सेना का सस्पेंसफुल स्वर।

"कुछ नहीं हुआ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह एक निहायत बेवकूफी से भरा कदम था। पुलिस ने उसे तत्काल ऑन द स्पॉट शूट कर दिया। वह उड़ते हुए हेलीकॉप्टर में अभी मुश्किल से थोड़ा बहुत ही ऊपर गया होगा कि वह धड़ाम से लाश की सूरत में वापस नीचे आ गिरा।"

"ओह !"

"इसके अलावा और भी कई किस्से हैं मिस्टर करण, लेकिन नाकामियों से भरे किस्से हैं। बेवकूफियों से भरे किस्से हैं। उन लोगों ने किसी न किसी तौर पर इस जेल से भागने का प्रयत्न करके बस आत्महत्या ही की। खुद को जबरन मौत के मुँह में धकेला। जबकि अगर वह थोड़ा समझदारी से काम लेते, तो शायद खुद को बचा भी सकते थे।"

"हूँ।" करण सक्सेना ने भरी हुंकार भरी।

उसके चेहरे पर सोचनीय भाव उभर आये।

"देखो कारास !" करण सक्सेना संजीदगी के साथ बोला, "मैं एक बात मानता हूँ।"

"क्या ?"

"मेरा मानना है कि हर समस्या का कोई न कोई हल जरूर होता है । कोई न कोई निदान जरूर होता है । यह बात अलग है कि हम खुद उस समस्या का कोई हल न सोच पा रहे हों । "

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"मैं यह कहना चाहता हूँ ।" करण सक्सेना आगे बोला, "कि इस जेल से भागने का भी कोई न कोई रास्ता जरूर होगा, लेकिन हमें वह रास्ता सूझ नहीं रहा है । समझ नहीं आ रहा है । तुमने चूंकि मुझसे कहीं ज्यादा समय इस जेल के अंदर गुजारा है, इसलिये मैं समझता हूँ कि तुम इस बारे में मुझसे ज्यादा बढ़िया राय तजवीज कर सकते हो ।"

कारास के नेत्र सिकुड़ गये ।

वह समझ गया कि सामने मौजूद शख्स उससे क्या चाहता है ।

"ठीक है ।" कारास बोला, "मुझे थोड़ा सोचने का मौका दो । हालांकि मुझे लगता नहीं कि यह काम बहुत आसान है । क्योंकि अगर हम लोग कंपाला जेल तोड़कर फरार हुए, तो यह इस जेल के इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय ही होगा । एक ऐसा अविस्मरणीय अध्याय जो पहले कभी किसी ने नहीं रचा । "

"तो फिर यह समझो ।" करण सक्सेना के स्वर में दृढ़ता उभरी, "हम एक अविस्मरणीय अध्याय ही रचने जा रहे हैं ।"

"क्या वाकई ?"

"बिल्कुल ।"

करण सक्सेना के उस यकीन ने कारास के अंदर भी एक नया हौसला पैदा कर दिया ।

□□□

कारास की तथा कमांडर की उसी दिन दो मुलाकातें और हुईं ।

कारास के अंदर अब एक बड़ा भीषण परिवर्तन देखने को मिला । कारास, जो अभी तक यह कहता था कि उस जेल से भागना नामुमकिन है, वह भी अब करण सक्सेना के भरोसे उस जेल से फरार होने के बारे में सोचने लगा था ।

रात को कमांडर करण सक्सेना और कारास की एक बार फिर बातचीत हुई ।

कारास उस समय बहुत उत्साहित दिखाई दे रहा था और उससे बात करने के लिए व्यग्र था ।

"क्या बात है ?" करण सक्सेना उसकी आँखों की चमक देखकर बोला, "क्या कोई तरकीब सूझ गई है ?"

"हाँ, काफी सोच-विचार के बाद एक तरीका सूझा तो है ।"

"क्या ?"

"लेकिन वह बड़ा हंगामे वाला तरीका है ।" कारास थोड़ा संकोच बरतते हुए फुसफुसाये स्वर में बोला, "और उस तरीके को अंजाम देने के लिए बहुत दिलेरी की जरूरत है ।"

"तुम बस रास्ता बताओ ।" करण सक्सेना बोला, "दिलेरी की चिंता मत करो ।"

"ठीक है, तो सुनो ।"

करण सक्सेना संभलकर बैठा ।

"दरअसल जब मैं इस जेल में बंद था ।" कारास ने कहा, "तो उन्हीं दिनों एक अपराधी ने इस जेल से भाग निकलने की कोशिश की थी और मैं समझता हूँ, वह उस कैदी की बड़ी कारआमद कोशिश थी । अलबत्ता उसकी वह कोशिश नाकाम हुई, लेकिन मेरा आज भी मानना है कि उस कोशिश के नाकाम होने के पीछे वजह यही थी कि उस योजना को सही तरह से क्रियान्वित नहीं किया गया था । अगर कहीं उसने अपनी इस योजना को सही ढंग से क्रियान्वित किया होता, तो उसे कंपाला जेल से भाग निकलने से कोई नहीं रोक सकता था । तब उसका नाम इस अभेद्य जेल से भाग निकलने वाले कैदी के तौर पर दर्ज होता ।"

करण सक्सेना की उत्सुकता बढ़ी ।

"ऐसी क्या योजना थी उसकी ?"

"दरअसल उसने सीधे नीले रंग के उस हेलीकॉप्टर को ही कब्जा कर भागने का प्रयास किया था ।" कारास बोला, "जिसके द्वारा कैदियों को जेल में लाया, ले जाया जाता है । इसके लिए वह छुपता-छुपाता किसी तरह पहले हेलीकॉप्टर तक पहुँचा तथा फिर उसने चालक को कब्जा कर हेलीकॉप्टर से भाग निकलने की कोशिश की । मगर यहीं उसकी किस्मत उसे दगा दे गई ।"

"कैसे ?"

"वह चालक देखने में तो पतला-दुबला था, लेकिन वास्तव में जूडो-कराटे एक्सपर्ट था और उसके शरीर में बेपनाह फुर्ती समाई हुई थी । वह बिना हथियार के ही एकदम उस कैदी से भिड़ गया और उसने उसे सेकेंडों में धूल चटा दी । तभी सुरक्षाकर्मी भी धड़धड़ाते हुए वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने उसे बंदी बना लिया । इस तरह उसकी सारी योजना धरी की धरी रह गई ।"

"हूँ ।"

"अब जरा इस पूरे प्रकरण के एक दूसरे पहलू पर भी गौर करो मिस्टर करण ।" कारास बोला ।

"कौन से पहलू पर ?"

"अगर हम इस जेल की संपूर्ण सिक्योरिटी का सूक्ष्मता से अवलोकन करें, तो हम पाएंगे कि बिना शक इस जेल से फरार होने का हेलीकॉप्टर एकमात्र रास्ता है । अगर किसी के हाथ हेलीकॉप्टर लग जाये, तो वह बड़ी आसानी के साथ इस जेल से फरार हो सकता है ।"

"ह... हेलीकॉप्टर !"

करण सक्सेना के दिमाग में सनसनी-सी मचती गई ।

उसे भी लगा, कारास की बात में दम था । वह काफी हद तक ठीक बोल रहा था ।

"लेकिन हेलीकॉप्टर हाथ आना भी इतना आसान नहीं है मिस्टर करण ।" कारास ने आगे कहा, "उस तक पहुँचने में भी हजार मुश्किलें हैं । हजार झंझट है । सबसे पहले तो इस बैरक से निकलकर हेलीपैड तक पहुँचना ही काफी कठिन है । क्योंकि जेल के अंदर कदम-कदम पर पहरा है । हाँ, एक बात जरूर है । अगर हमने किसी तरह हेलीकॉप्टर अपने काबू में कर लिया, तो फिर हमें इस जेल से भाग निकलने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती ।"

"हूँ ।" करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़ गये ।

वाकई कारास ने उसे जेल से फरार होने की योजना सोचने के लिए एक अच्छी लाइन दे दी थी ।

"देखो ।" करण सक्सेना काफी सोच-विचारकर बोला, "उस हेलीकॉप्टर को अपने काबू में करने का एक तरीका है ।"

"क्या ?"

"अगर हम यहाँ किसी को बंधक बना लें, किसी को अपने कब्जे में कर लें तो फिर हम न सिर्फ हेलीपैड तक बड़ी सहूलियत के साथ पहुँच सकते हैं बल्कि हेलीकॉप्टर को भी अपने काबू में कर सकते हैं । बस शर्त सिर्फ एक है ।"

"क्या ?"

"हम जिस आदमी को बंधक बनाए, वह इस जेल का बहुत मुअजिज आदमी होना चाहिये । ऐसा मुअजिज आदमी जिसकी जान का कोई भी रिस्क न उठा सके ।"

कारास के चेहरे पर एकाएक बहुत व्यग्रता के भाव झलकने लगे ।

"ऐसा एक आदमी तो मेरी निगाह में है ।" कारास ने फौरन कहा ।

"कौन ?"

"जेल के अंदर जो इंटरमीडिएट स्कूल है, उस का प्रिंसिपल एक ऐसा ही मुअजिज आदमी है । जिसका इस जेल से लेकर मामूली कॉन्स्टेबल तक तहे-दिल से सम्मान करता है । अगर किसी तरह वह प्रिंसिपल हमारे कब्जे में आ जाये, तो बात बन सकती है, बल्कि मैं तो यह कहता हूँ कि अब यह काम हो ही जायेगा ।"

"क्यों ? यह बात इतने विश्वास के साथ कैसे कह रहे हो तुम ?"

"क्योंकि इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल को अपने काबू में करना कोई बहुत ज्यादा कठिन काम नहीं है मिस्टर करण ! वह बहुत आसानी से हमारे शिकंजे में फँस जायेगा ।"

"कैसे ?"

"यह भी बताता हूँ कि कैसे । मेरे साथ आओ ।"

कारास बहुत आहिस्ता से चबूतरा छोड़कर खड़ा हुआ तथा फिर बेहद धीरे-धीरे निःशब्द ढंग से चलता हुआ उस बैरक में बनी एक खिड़की के नजदीक पहुँचा ।

कमांडर करण सक्सेना भी उसके साथ-साथ खिड़की के नजदीक गया ।

वह कोई चार बाई तीन की एक अच्छी-खासी बड़ी खिड़की थी, जिसके पल्ले बाहर की तरफ खुलते थे । इसके अलावा उन पल्लों से और आगे को निकलकर एक ग्रिल कसी हुई थी ।

वह बड़ी मजबूत ग्रिल थी और उसकी छोटी-छोटी जालियाँ थी । उस समय खिड़की के पास कंपाला जेल में कहीं-कहीं लाइटें जलती हुई नजर आ रही थीं और कुछेक जगह सुरक्षाकर्मी भी पहरा देते दिखाई पड़ रहे थे ।

"वो सामने जहाँ काफी ज्यादा लाइटें जलती हुई दिखाई दे रही हैं ।" कारास खिड़की के सामने खड़ा होकर बोला, "वह रिहायशी कॉलोनी है और उस रिहायशी कॉलोनी में जो इलेक्ट्रिक पोल नजर आ रहा है, उस इलेक्ट्रिक पोल के ऐन बराबर वाला फ्लैट कॉलेज के प्रिंसिपल का फ्लैट है ।"

"वह, जिसके अंदर रोशनी हो रही है ?" करण सक्सेना उंगली से इशारा करके बोला, "और जिसकी खिड़की में उसका पूरा बैडरूम झाँकता हुआ मालूम हो रहा है ?"

"हाँ, वही फ्लैट !"

करण सक्सेना बैडरूम के अंदर का नजारा बेहद गौर से देखने लगा ।

वह काफी साफ-सुथरा कमरा था ।

"क्या उस फ्लैट में प्रिंसिपल का पूरा परिवार रहता है ?"

"नहीं, प्रिंसिपल अकेला है । अभी उसकी शादी नहीं हुई है ।"

"ओह ! उम्र कितनी है प्रिंसिपल की ?"

"फोर्टी के आसपास तो होगी ही होगी ।" कारास ने बताया ।

"और उसने अभी तक शादी नहीं की ?" करण सक्सेना बोला ।

"नहीं, और लगता तो यह है कि वह अब शादी करेगा भी नहीं ।"

करण सक्सेना खिड़की के नजदीक खड़ा रहा ।

"जब प्रिंसिपल फ्लैट में अकेला है ।" करण सक्सेना पुनः बोला, "तो वह इतनी रात तक जागकर क्या कर रहा है ?"

"दरअसल उसे बिस्तर पर बैठकर देर रात तक पढ़ने की आदत है । वह अभी फ्लैट में इधर उधर कहीं होगा लेकिन थोड़ी देर बाद वह अपने बिस्तर पर बैठा हुआ किताब पढ़ता ही नजर आयेगा ।"

वह दोनों अभी प्रिंसिपल के बारे में वह बातें कर ही रहे थे कि तभी उन्हें बेडरूम में प्रिंसिपल नजर आया ।

प्रिंसिपल ने उस वक्त सफेद कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था । किताब हाथ में थी और आँखों पर चश्मा चढ़ा था । वह बहुत पतला-दुबला-सा आदमी था । कमांडर करण सक्सेना को यही देखकर हैरानी हुई कि ऐसा सिंगल सिलेंडर-सा आदमी उस जेल का इतना मुअजिज व्यक्ति भी है ।

इतना रसूख वाला व्यक्ति भी है ।

फिर उनके देखते-देखते स्कूल का प्रिंसिपल वहीं अपने बेड पर अधलेटी-सी मुद्रा में बैठ गया और किताब पढ़ने लगा । वह शायद कोई नावेल पढ़ रहा था ।

"यह तो बिल्कुल सिंकड़ी पहलवान है ।" करण सक्सेना विस्मित लहजे में बोला ।

"सिंकड़ी पहलवान ।" वह संबोधन सुनकर कारास के होंठों पर दबी-दबी-सी मुस्कुराहट पैदा हुई, "तुमने सच कहा, वह सिंकड़ी पहलवान ही है । मगर अपनी व्यवहार कुशलता के कारण जेल के अंदर इसकी इज्जत बहुत है । यह हर किसी के सुख-दुख में काम आता है । यहाँ तक कि यह कैदियों से भी बहुत घुला-मिला है ।"

"क्या यह मुनासिब होगा ।" करण सक्सेना वह बात सुनकर बोला, "कि जो आदमी इतना व्यवहार कुशल हो, हम उसे अपना बंधक बनायें ?"

"क्यों, इसमें हर्ज ही क्या है ? और फिर हम उसे शूट तो नहीं करने जा रहे हैं । उसे तो सिर्फ अपने काबू में करके दूसरे लोगों को धमकाना है ।"

"शायद तुम ठीक कहते हो । कॉलेज प्रिंसिपल को बंधक बनाना हमारे लिए बेहतर रहेगा ।"

"गुड । यानी आज कम से कम हमारे बीच यह फाइनल हो गया कि हम कॉलेज प्रिंसिपल को अपना बंधक बनाएंगे ।"

"बिल्कुल डन !"

"लेकिन एक बात और है ।" कारास ने कहा ।

"क्या ?"

"सिर्फ यह फाइनल करने से ही बात नहीं बनेगी । क्योंकि प्रिंसिपल को बंधक बनाना जहाँ आसान है, वहीं इस बैरक से बाहर निकलना मुश्किल है और फिर हेलीकॉप्टर तक पहुँचने में भी हमारे सामने ढ़ेरों दुश्वारियाँ आयेंगी । इसके लिये हमें एक पूरी योजना बनानी

होगी । एक फुलप्रूफ योजना, जिसमें कहीं जरा-सा भी झोल न हो । क्योंकि अगर कहीं जरा-सा भी झोल हुआ, तो उसी पल हमारी तमाम मेहनत ढेर हो जायेगी ।"

"फुलप्रूफ योजना की तुम चिंता मत करो ।" करण सक्सेना ने कहा, "मैं आज ही इस ताने-बाने को लेकर एक योजना बुनता हूँ । इस योजना को अंजाम देते समय क्या-क्या मुश्किलें हमारे सामने आ सकती हैं, उन सबको अपने दिमाग में घुमाता हूँ ।"

"ओके, जितनी बढ़िया योजना तुम बना लोगे, उतनी ही हमारी सफलता की गारंटी ज्यादा होगी ।"

"ठीक है ।" करण सक्सेना ने कहा, "कल रात को इसी वक्त हम फिर बात करेंगे ।"

उसके बाद वह दोनों अपने-अपने चबूतरे की तरफ बढ़ गये ।

□□□

अगले दिन सुबह कमांडर करण सक्सेना की मेस में रौनक शाह से पुनः मुलाकात हुई ।

रौनक शाह अब पहले से काफी बेहतर नजर आ रहा था । लेकिन खांसी का धसका अभी भी उसे कभी-कभार उठता था ।

"क्या चल रहा है ?" रौनक शाह ने पूछा ।

करण सक्सेना ने उसे बताया, क्या चल रहा था ।

रौनक शाह चौंका ।

"य... यानी हम इस जेल से भाग निकलने के लिये हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल करेंगे ?"

"हाँ ।"

"लेकिन हेलीकॉप्टर हमारे हाथ कैसे आयेगा ?"

कमांडर करण सक्सेना ने उसे चुपचाप यह भी बताया कि हेलीकॉप्टर हाथ कैसे आयेगा ।

"यानी इसके लिये हमें इंटर कॉलेज के जो प्रिंसिपल हैं, उन्हें बंधक बनाना होगा ।"

"हाँ ।"

रौनक शाह एकाएक बहुत व्यग्र दिखाई पड़ने लगा ।

"नहीं ।" उसने कहा, "यह मुनासिब नहीं ।"

"क्यों ?"

'आप नहीं जानते कमांडर, वह प्रिंसिपल निहायत शरीफ आदमी है । आपके आने से सिर्फ एक रोज पहले, मुझे जेल में अस्थमा का बहुत भयानक दौरा पड़ा था । उस समय मैं टॉयलेट में था और मेरे आसपास कोई न था । तभी प्रिंसिपल की निगाह मेरे ऊपर पड़

गयी । उसने फौरन आगे बढ़कर मेरी मदद की । अगर वह उस वक्त मेरी मदद करने में जरा भी कोताही बरत लेता, तो फिर मुझे मरने से कोई नहीं बचा सकता था । नहीं !" रौनक शाह की गर्दन इनकार की सूरत में हिलने लगी, "ऐसे भले आदमी को बंधक बनाना मुनासिब नहीं रहेगा । जेल में और भी ढ़ेरों लोग हैं, जिन्हें हम बंधक बना सकते हैं ।"

करण सक्सेना को कॉलेज प्रिंसीपल का किरदार सचमुच बहुत ऊँचा लगा ।

हर जगह से उसकी प्रशंसा सुनने को मिल रही थी ।

"लेकिन कारास का कहना है ।" करण सक्सेना बोला, "वही आदमी हमारे लिये सबसे मुनासिब है ।"

"मगर... ।"

"सुनो, मेरी बात सुनो ।" करण सक्सेना ने रौनक शाह को बीच में ही टोका, "अब मैं भी यही समझता हूँ कि वह आदमी हमारे लिये सबसे बेहतर रहेगा ।"

"क्यों ?"

रौनक शाह के चेहरे पर अचरज के भाव नमूदार हुए ।

"क्योंकि जिस आदमी के पक्ष में इतने लोग हैं, जिसके इतने रहनुमा हैं, उससे बढ़िया बंधक और भला क्या हो सकता है ! तुम्हारी बात सुनने के बाद मैं अब गारंटी से कह सकता हूँ कि उसकी जान पर कोई हर्फ नहीं आने देना चाहेगा । और बंधक हमेशा वही बढ़िया होता है, जिसकी जान पर कोई हर्फ न आने देना चाहे । क्योंकि ऐसे आदमी को काबू में करने से ही कुछ बात बनती है । इसके अलावा एक बात और है ।"

"क्या ?"

"आखिर हम भी तो उसे कोई जानी नुकसान पहुँचाने वाले नहीं हैं । हमने तो उसे सिर्फ कवर के तौर पर इस्तेमाल करना है । सेफ्टी के तौर पर इस्तेमाल करना है । उसे काबू में करके बस ऐसा माहौल क्रिएट करना है, जैसे हम उसे शूट कर देंगे । जबकि हम वास्तव में उसे थोड़े ही शूट करेंगे ।"

रौनक शाह चुप रहा ।

"बोलो, क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?"

"जैसा आप मुनासिब समझें, व... वैसा करें कमांडर !" बोलते-बोलते रौनक शाह की साँसें फिर उखड़ गईं ।

उसने जल्दी से इनहेलर निकालकर उसकी दवाई मुँह में स्प्रे की, तो उसकी तबीयत थोड़ी संभली ।

"यानी तुम्हें उसे बंधक बनाने से कोई एतराज नहीं ?"

"नहीं, एतराज तो है कमांडर ।" रौनक शाह बोला, लेकिन अगर आप ऐसी दलील देते हैं, तो नहीं है ।"

"ठीक है, मैं बस यही चाहता हूँ ।"

करण सक्सेना एक-एक कदम फूँक-फूँककर रख रहा था ।

□□□

उसके बाद कमांडर करण सक्सेना का सारा दिन यही सोचते हुए गुजरा कि उसके कंपाला जेल से फरार होते समय क्या-क्या मुश्किलें पेश आ सकती हैं ?

उन्हें इस दौरान किस-किस चीज की जरूरत पड़ेगी ?

शाम तक उसने अपने दिमाग में एक पूरा खाका तैयार कर लिया ।

कारास की भी जेल से फरार होने में दिलचस्पी बहुत बढ़ चुकी थी ।

शायद इसीलिए रात के वक्त कमांडर करण सक्सेना को कारास के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ी । बल्कि जैसे ही उनके साथी कैदी गहरी नींद में सोए, तो वह खुद चलकर उसके पास आया ।

"कैसे हो मिस्टर करण ?" उसका लहजा बड़ा दोस्ताना था ।

"अच्छा हूँ ।"

"आज तो सारा दिन काफी सोच-विचार किया है ।" कारास मुस्कुराता हुआ बोला, "योजना बनाने में काफी मेहनत कर रहे हो ।"

"तुम तो जानते हो, यह अभेद्य जेल है ।" करण सक्सेना गहरी साँस लेकर बोला, "इस जेल से फरार होना कोई हँसी खेल नहीं । इसलिये मेहनत करनी ही पड़ेगी । क्योंकि सब कुछ हमारी योजना पर मुनहसर है ।"

"ठीक कहते हो । अब तो मुझे भी कुछ-कुछ लगने लगा है कि इस जेल से फरार हुआ जा सकता है । क्या कुछ तैयारियाँ कीं ?"

"हाँ ।" करण सक्सेना बोला, "तैयारियाँ की हैं कारास ! काफी सोच-विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इस कार्य को अंजाम देते समय हमारे सामने एक नहीं, बल्कि कई मुश्किलें पेश आएंगी ।"

"जैसे ?"

कारास के नेत्र सिकुड़े ।

"जैसे सबसे बड़ी मुश्किल तो इस बैरक से बाहर निकलना ही है ।" कमांडर करण सक्सेना ने उसे मुश्किलें गिनानी शुरू कीं, "जरा सोचो, आखिर हम इस बैरक से बाहर किस तरह निकलेंगे ? और अगर हमें कॉलेज के प्रिंसिपल को बंधक बनाना है, तो हम उसे भी यूँ ही तो बंधक नहीं बना लेंगे । उसे भी बंधक बनाने के लिए हमें कोई न कोई हथियार चाहिये होगा । जैसे रिवॉल्वर या राइफल । क्योंकि बिना हथियार के न हम प्रिंसिपल को रौब में ले सकते हैं और न ऐसी हालत में जेल के सुरक्षाकर्मियों को रौब में लेने का

प्रश्न उठता है । इसके अलावा अपने साथ-साथ रौनक शाह को भी हमें उसकी बैरक से बाहर निकालना होगा । तब कहीं जाकर हम हेलीपैड की तरफ बढ़ेंगे और इस दौरान अगर कोई आकस्मिक मुसीबत हमारे सामने आ खड़ी हुई, तो वह अलग है । उससे हमें अलग जूझना होगा ।"

"एक बात तुम और भूल रहे हो मिस्टर करण ।"

"क्या ?"

"मेरी यह बेड़ियाँ खुलना भी अपने आप में एक समस्या है ।" कारास बोला ।

"सही कहा तुमने, वाकई यह भी एक समस्या है ।" करण सक्सेना ने कहा, "लेकिन तुम्हें यह सुनकर प्रसन्नता होगी मिस्टर कारास; कि मैंने इन सब समस्याओं के हल खोज लिए हैं ।"

"क्या कह रहे हो तुम ।" कारास भौंचक्का रह गया, "हल खोज लिए हैं ?"

"हाँ ।"

"यानी हम बैरक से बाहर किस तरह निकलेंगे, हथियार हमारे पास कैसे आएंगे, मेरी बेड़ियाँ कैसे खुलेंगी और रौनक शाह भी अपनी बैरक से बाहर किस तरह निकलेगा, इन तमाम सवालों का जवाब इस समय तुम्हारे पास है ?"

"यस ।" करण सक्सेना बोला, "इन सभी सवालों के जवाब इस समय मेरे पास हैं । न सिर्फ इन सवालों के जवाब मेरे पास हैं बल्कि इस जेल से भाग निकलने की एक सुदृढ़ सिलसिलेवार योजना भी मेरे पास है ।"

"क्या योजना है ?"

कमांडर करण सक्सेना ने उसे दबी जबान में योजना बतानी शुरु की ।

कारास ने जैसे-जैसे योजना सुनी, ठीक उसी अनुपात में उसका आश्चर्य बढ़ता चला गया ।

योजना वाकई हैरतअंगेज थी ।

विस्मयकारक ।

उसमें कहीं भी उंगली टच करने के लिए जगह न थी ।

उसी रात वो योजना फाइनल हो गई ।

□□□

अगले दिन सुबह-सुबह एक बार फिर कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह की मुलाकात हुई ।

करण सक्सेना ने उसे भी पूरी योजना से अवगत कराया ।

"य... यानी कि बहुत जल्द अब हम इस जेल से फरार होने वाले हैं ?"

"हाँ, शायद आज रात ही।"

"हे भगवान, आज रात।"

"यस।"

"लेकिन हथियार हमारे पास कहाँ से आयेगा ?"

"उसका इंतजाम हमें सबसे पहले करना होगा।" बोलते-बोलते एकाएक कमांडर करण सक्सेना ठिठक गया, "लो, लगता है कि हथियार का इंतजाम भी हो गया।"

"कैसे ?"

"सामने देखो।"

रौनक शाह ने फौरन करण सक्सेना की निगाहों का अनुसरण किया। उसने देखा, वह एक सुरक्षाकर्मी था, जो मेस से थोड़ा आगे अकेला ही एक निर्जन से क्षेत्र की तरफ बढ़ा चला जा रहा था। एक सेल्फ लोडिंग राइफल (एस एल आर) उसके कंधे पर टंगी थी।

कमांडर करण सक्सेना को मालूम था, उस निर्जन क्षेत्र की तरफ एक टॉयलेट था, जहाँ वह जरूर लघुशंका वगैरा के लिए जा रहा था।

करण सक्सेना ने रौनक शाह को आँखों ही आँखों में कुछ इशारा किया।

"मैं समझता हूँ, यह हमारे लिए बेहतरीन मौका है।" करण सक्सेना फुसफुसाया, "वैसे भी अभी नाश्ता बटने में थोड़ी देर है।"

रौनक शाह समझ गया, कमांडर करण सक्सेना क्या चाहता था।

"चलें ?" करण सक्सेना बोला।

"चलो। ल... लेकिन अगर किसी ने हमें देख लिया तो ?"

रौनक शाह की आवाज में भय था।

"कोई नहीं देखेगा। वैसे भी खाने-पीने के दौरान मेस में आये कैदी उस टॉयलेट का इस्तेमाल करते हैं।"

"ठीक है।" रौनक शाह ने हिम्मत करके कहा, "तो फिर चलते हैं।"

वह दोनों एक-दूसरे से थोड़ा फासला बनाकर टॉयलेट की तरफ बढ़े।

□□□

वह टॉयलेट मेस के बिल्कुल पीछे था। घनी झाड़ियों के बीच था और उस टॉयलेट के बराबर में ही एक काफी बड़ा कचरा घर भी था, जहाँ कंपाला जेल का सारा कचरा लाकर डाला जाता था।

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह जब टॉयलेट के नजदीक पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि सुरक्षाकर्मी उस वक्त टॉयलेट के अंदर था। उसकी पीठ उन दोनों की तरफ थी

और वह यूरिनल स्टॉल के सामने खड़ा बड़े इत्मीनान के साथ लघुशंका से निवृत हो रहा था।

एस एल आर अभी उसके कंधे पर टंगी थी।

वह दोनों उसके पीछे बस थोड़ा फासले पर जाकर खड़े हो गये।

न जाने कैसे वह सुरक्षाकर्मी खतरा भांप गया। लघुशंका करते हुए ही उसने पलटकर देखा। अपने पीछे दो कैदियों को खड़े देखकर वह कुछ अनईजी हुआ।

"ऐ।" वह थोड़ा अकड़कर बोला, "क्या बात है, तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"हमें भी पेशाब करना है।" करण सक्सेना ने स्थिर लहजे में कहा।

"तो फिर दूसरे स्टॉल पर जाकर खड़े क्यों नहीं हो जाते ?"

"नहीं, पहले तुम कर लो।"

"तुम, साले तुम बोलता है मुझे।"

वह जो इंस्पेक्टर की रैंक का सुरक्षाकर्मी था, उसने झटके के साथ अपनी पैंट की जिप बंद की और फिर तेजी से उन दोनों के ऊपर झपट पड़ा।

सुरक्षाकर्मी ने लपककर अपनी राइफल उतारनी चाही, मगर कमांडर करण सक्सेना ने उसे इतना अवसर नहीं दिया।

करण सक्सेना अद्वितीय फुर्ती के साथ कराटे की खौफनाक एक्शन में आ चुका था। उसने उरेकान (कोहनी) का भीषण प्रहार सुरक्षाकर्मी के उस कंधे पर कर दिया, जहाँ उसने राइफल टांगी हुई थी।

सुरक्षाकर्मी हलकाये कुत्ते की तरह डकरा उठा।

वह चीखता हुआ धड़ाम से नीचे गिरा और उसका सिर यूरिनल स्टॉल से टकराया।

वह फिर चीखता, उससे पहले ही रौनक शाह ने लपककर उसका मुँह दबोच लिया। जबकि कमांडर करण सक्सेना ने उसकी टांग पकड़कर टॉयलेट से बाहर खींचा।

उन्हें डर था, कहीं कोई उधर न आ जाये।

इस मर्तबा सुरक्षाकर्मी का सिर धड़ाम से नीचे फर्श से टकराया।

लेकिन वह चीख न सका।

रौनक शाह ने उसके मुँह को अच्छी तरह कब्जाया हुआ था।

"क... क्या कर रहे हो ?" उसके मुँह से घुटा-घुटा-सा बेहद आतंकित स्वर निकला, "क्या... ?"

"रौनक शाह !" करण सक्सेना गुर्राया, "इसका मुँह कसकर पकड़ो।"

रौनक शाह ने उसका मुँह और भी सख्ती के साथ पकड़ा।

सुरक्षाकर्मी की अब बिल्कुल बोलती बंद हो गई।

अलबत्ता दहशत के कारण उसके जिस्म का एक-एक रोआँ खड़ा था।

उसका पूरा शरीर सूखे पत्ते की भांति कांप रहा था और मुँह से गूँ-गूँ की आवाज निकल रही थी ।

राइफल अभी भी उसके कंधे पर झूल रही थी ।

करण सक्सेना ने झपटकर सबसे पहले राइफल उसके कंधे से उतारी । इसी बीच न जाने कैसे सुरक्षाकर्मी को मौका मिल गया और उसने अपने सिर की प्रचंड टक्कर रौनक शाह के मुँह पर जड़ दी ।

रौनक शाह बिलबिला उठा ।

लेकिन फिर भी उसने उसे छोड़ा नहीं ।

करण सक्सेना ने जब देखा, वह सुरक्षाकर्मी आक्रमक रुख अख्तियार कर चुका है, तो उसने फौरन हिजागिरी का एक अत्यंत खूंखार एक्शन दिखा दिया और अपने घुटने का एक बेहद शक्तिशाली प्रहार भड़ाक से उसके पेट में किया ।

सुरक्षाकर्मी को एकदम ऐसा लगा, जैसे किसी ने अपनी पूरी शक्ति से लोहे का कोई चक्का उठाकर उसके पेट में पटक मारा हो ।

रौनक शाह के मुँह दबोचा होने के बावजूद वह बुक्का फाड़कर चिल्ला उठा । उसकी आँखें फट गईं और उसे खून की बड़ी जबरदस्त उल्टी हुई ।

भड़ाक ।

तत्काल करण सक्सेना का लेफ्ट पंच और उसके मुँह पर पड़ा ।

वह फिर छटपटाया ।

उसके बाद वह शांत हो गया, बिल्कुल शांत ।

□□□

सुरक्षाकर्मी अभी भी रौनक शाह की गोद में था और रौनक शाह का हाथ पहले की तरह उसके मुँह पर रखा था ।

जबकि सुरक्षाकर्मी के नेत्र अब फटे हुए थे । उसके होंठों की कोरों से धीरे-धीरे खून जा रहा था और उसका संपूर्ण शरीर स्पंदन रहित था ।

रौनक शाह ने उसे धीरे से झंझोड़ा ।

उसमें कोई हरकत न हुई ।

रौनक शाह की साँस, जो इस धमाचौकड़ी के दौरान थोड़ी फूलने लगी थी, वह उसे संतुलित करता हुआ बोला, "इ... इसे क्या हुआ कमांडर ?"

"कुछ नहीं हुआ ।" करण सक्सेना ने सहज मुद्रा में कहा, "यह मर चुका है ।"

"म... मर गया ।"

"यस ।"

"माय गॉड ।"

रौनक शाह भयभीत दिखाई पड़ने लगा ।

उसने जल्दी सुरक्षाकर्मी के मुँह से हाथ हटाया और उसे अपने से अलग किया ।

"अ... अब क्या होगा कमांडर ?" रौनक शाह इस समय साफ-साफ भयभीत नजर आ रहा था, "जैसे ही जेल में इसके मर्डर की खबर फैलेगी, तो हमारी आफत आ जायेगी । क्योंकि कई लोगों ने हमें इस टॉयलेट की तरफ आते देखा है ।"

"लेकिन... ।"

"देखते जाओ, मैं क्या करता हूँ ।"

कमांडर करण सक्सेना के स्वर में अभी भी विश्वास कूट-कूटकर भरा था । इस समय उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसने अभी-अभी कोई हत्या की है ।

करण सक्सेना अपने हाथ झाड़ता हुआ उठा ।

फिर उसने सुरक्षाकर्मी के दोनों पैर पकड़े और उसे घसीटता हुआ कचरा घर की तरफ ले जाने लगा । शुक्र था, सुरक्षाकर्मी के मुँह से जो खून निकला था, वह जमीन पर नहीं गिरा था, बल्कि वह उसके मुँह से निकलकर ठुड्डी पर बहता हुआ नीचे गर्दन तक पहुँच गया था ।

"तुम मेस की तरफ निगाह रखो ।" करण सक्सेना उसे घसीटकर ले जाता हुआ बोला, "अगर कोई उधर से आता दिखाई पड़े, तो तुरंत मुझे बताना ।"

"ठीक है कमांडर ।"

करण सक्सेना तब तक उस शव को लेकर कचरा घर तक पहुँच चुका था ।

फिर उसने वह शव कचरा घर में अंदर की तरफ उछाल दिया । शव लुढ़कता हुआ कचरे के ढेर के पीछे जा गिरा और लोप हो गया ।

अब किसी को कानों-कान भनक भी नहीं लगनी थी कि वहाँ कोई मर्डर भी हुआ है ।

रौनक शाह अभी भी फटे-फटे नेत्रों से कमांडर करण सक्सेना को देख रहा था ।

जैसे किसी अजूबे को देख रहा हो ।

हालांकि वह भी एक रॉ एजेंट था, लेकिन जितनी सहजता से करण सक्सेना ने वह मर्डर किया था, उतनी सहजता से वह कभी कोई मर्डर नहीं कर पाया था ।

"क्यों ?" करण सक्सेना मुस्कुराता हुआ बोला, "सब कुछ ठीक-ठाक ढंग से चल रहा है या नहीं ?"

"सचमुच आप ग्रेट हैं कमांडर, ग्रेट ! जैसा आपके बारे में सुना था, बिल्कुल वैसा ही पाया ।"

"ऐसी कोई बात नहीं है ।"

करण सक्सेना ने अब सेल्फ लोडिंग राइफल उठा ली और उसकी मैगजीन चेक की ।

"इसकी क्या कंडीशन है ?"

"यह पूरी तरह लोड है ।"

"व्हाट ! यानी किस्मत पूरी तरह हमारा साथ दे रही है ।" रौनक शाह खुश होकर बोला, "अब यही राइफल इस जेल से भाग निकलने में हमारी मदद करेगी ।"

"बिल्कुल ।"

"लेकिन फिलहाल इसे कहाँ रखोगे ?" रौनक शाह की आवाज में सवालिया निशान उभरे ।

"इसे रखने के लिए कचरा घर से ज्यादा बढ़िया जगह कोई और नहीं है । जब जरूरत होगी, तो इसी कचरे के ढेर में से हम यह राइफल निकाल लेंगे ।"

कमांडर करण सक्सेना सेल्फ लोडिंग राइफल लेकर पुनः कचरा घर की तरफ बढ़ गया और उसने वह राइफल उसी कचरे के ढेर में आगे की तरफ छुपा दी ।

"चलो, अब जल्दी से वापस मेस में चलें । हमें वहाँ से आये हुए काफी देर हो चुकी है ।"

वह दोनों पुनः मेस की तरफ बढ़ गये ।

□□□

कमांडर ने वहाँ पहुँचकर देखा, सब कुछ सामान्य ढंग से चल रहा था ।

नाश्ते के लिए कैदियों की लाइन लग चुकी थी और अब उनमें नाश्ता बांटा जा रहा था ।

करण सक्सेना और रौनक शाह भी अलग-अलग लाइन में जाकर लग गये । उन्होंने देखा, कारास की बेचैन निगाहें उन्हीं को देख रही थीं ।

करण सक्सेना अपना नाश्ता लेकर जैसे ही एक कोने में पहुँचा, तो कारास उसके नजदीक आ खड़ा हुआ ।

"क्या बात है ।" वह व्यग्रतापूर्वक बोला, "टॉयलेट में बड़ी देर लगाई ?"

"वहाँ हम एक जरूरी काम से गये थे ।"

कमांडर करण सक्सेना ने उसे पूरी बात बताई ।

"य... यानी राइफल का इंतजाम हो गया ?" कारास का विस्फारित स्वर ।

"हाँ ।"

कारास की आँखों में अविश्वास के भाव उभरे ।

वह यकीन नहीं कर पा रहा था, उस आदमी ने इतनी जल्दी इतना महत्वपूर्ण कार्य कर डाला है ।

तभी रौनक शाह भी अपना नाश्ता लेकर उन दोनों के पास आ खड़ा हुआ ।

"अब आगे क्या करोगे ?" कारास उस समय कमांडर करण सक्सेना से हद से ज्यादा इंप्रेस था ।

"मैं समझता हूँ ।" करण सक्सेना ने कहा, "आगे का प्रोग्राम अब खुद ब खुद ही तय हो गया है । आज की रात हमारे लिए कुछ कर गुजरने की रात होगी । आज इस कंपाला जेल में वह होगा, जो पहले कभी नहीं हुआ ।"

"यानी... ।"

कारास के चेहरे पर व्यग्रता के उभरे ।

"तुम बिल्कुल सही अंदाजा लगा रहे हो कारास ।" करण सक्सेना उसे बीच में ही टोकता हुआ बोला, "आज की रात हम तीनों यह जेल तोड़कर फरार हो जाएंगे ।"

"लेकिन मैं अपनी बैरक से बाहर किस तरह निकलूँगा ?" रौनक शाह ने तुरंत पूछा ।

करण सक्सेना ने उसे बैरक से बाहर निकलने का तरीका भी बताया ।

वह बात करते जा रहे थे और साथ-साथ नाश्ता भी कर रहे थे ।

वह पतले टिन की प्लेटें थीं, जिनमें उन्हें नाश्ता दिया जाता था । कमांडर करण सक्सेना ने नाश्ता करने के बाद टिन की प्लेट को अपने दोनों हाथों से पकड़ा और फिर उसे चुपचाप बीच में से फाड़ डाला ।

प्लेट क्योंकि पतले टिन की थी, इसलिये वह बिल्कुल कागज की तरह फट गई ।

कमांडर करण सक्सेना ने आधी प्लेट खामोशी से अपने कपड़ों में छुपा ली और दूसरी आधी प्लेट चोरी-छुपे रौनक शाह की तरफ बढ़ाई ।

"लो, इसे अपने पास रख लो । यह रात को बैरक से बाहर निकलने में तुम्हारी हेल्प करेगी ।"

रौनक शाह ने भी तुरंत वह आधी प्लेट अपने कपड़ों में छुपा ली ।

"याद रहे ।" करण सक्सेना बोला, "आज रात ठीक 2:00 बजे हम दोनों तुम्हारा कचरा घर के पास इंतजार करेंगे ।"

"ठीक है, मैं 2:00 बजे वहाँ पहुँच जाऊँगा ।"

फिर वह तीनों अलग-अलग हो गये ।

टिन की प्लेट भी उनकी योजना में अजीबोगरीब गुल खिलाने वाली थी ।

□□□

वह रात सचमुच बहुत हंगामे से भरी थी ।

उस रात कमांडर करण सक्सेना, रौनक शाह और कारास, किसी की आँखों में भी नींद नहीं थी ।

उस दिन भी कमांडर करण सक्सेना तथा कारास अपने-अपने चबूतरे पर लेटे थे और बस सोने का अभिनय कर रहे थे।

बारह बजे तक वह अपने चबूतरे पर लेटे रहे।

ठीक बारह बजे जब उन्हें यह अच्छी तरह यकीन हो गया कि उनके सभी साथी कैदी गहरी नींद सो गये हैं, तो वह सचमुच अपना-अपना चबूतरा छोड़कर उठे।

कारास ने करण सक्सेना की तरफ आने की कोशिश की, तो करण सक्सेना ने उसे हाथ के इशारों से वहीं अपने चबूतरे के पास रुकने के लिए कहा। वह नहीं चाहता था कि उसकी बेड़ियों की खनक से किसी कैदी की नींद में व्यवधान पड़े और वह उठे।

करण सक्सेना खुद उसके पास पहुँचा।

"अब सबसे पहले मेरी बेड़ियाँ खोलो।" कारास ने कहा।

"चिंता मत करो, अभी खोलता हूँ।"

कमांडर करण सक्सेना ने अपनी जेब से पतला-सा लोहे का तार निकाला।

वह तार उसने आज ही मेस में से हासिल किया था, जो एक बेंच के साथ बंधा था।

फिलहाल वह तार अपना काम करने के लिए तैयार था। कमांडर करण सक्सेना ने तार को आगे से मोड़कर घुंडी बना ली थी।

"इस तार से क्या होगा ?" कारास ने चौंककर पूछा।

"इसी तार से तुम्हारी यह मजबूत बेड़ियाँ खुलेंगी।"

"तार से।" कारास का विस्फारित स्वर।

"हाँ।"

"किस तरह ?"

"देखते जाओ।"

करण सक्सेना ने अब उन बेड़ियों का वह हिस्सा पकड़ लिया, जहाँ उनका लॉक लगा था और जिस लॉक के खुलने से वह बेड़ियाँ भी अपने आप खुल जानी थी।

उसने लोहे का वह घुंडी नुमा तार उस लॉक के की-होल में डाला और फिर उसे दो-तीन मर्तबा इधर-उधर घुमाया।

पलक झपकते ही लॉक खुल गया।

वह दृश्य देखकर कारास के नेत्र और भी ज्यादा विस्फारित अंदाज में फैल गये।

"तुम तो हर मामले में एक्सपर्ट मालूम होते हो।"

"ऐसी कोई बात नहीं है।"

इस बीच कारास ने आनन-फानन अपनी सारी बेड़ियाँ उतार डाली और उन्हें वहीं चबूतरे पर रख दिया।

अब वह आजाद था।

उसके लंबे-चौड़े शरीर ने एक भरपूर अंगड़ाई ली ।

"चलो, अब जल्दी इस बैरक से बाहर निकलो ।"

वह दोनों तेजी के साथ बैरक की उस खिड़की की तरफ बढ़ गये, जो बाहर की तरफ खुलती थी और जिस पर बेहद मजबूत लोहे की ग्रिल चढ़ी थी ।

उस समय रात्रि के साढ़े ग्यारह बज रहे थे ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना एक-एक कदम योजनाबद्ध अंदाज में उठा रहा था ।

बैरक से निकलने के लिए उसने खिड़की को चुना था ।

हालांकि खिड़की से बाहर निकलना कोई आसान काम नहीं था, क्योंकि उस पर पहले ही बहुत मजबूत ग्रील चढ़ी थी ।

खिड़की के पास पहुँचकर करण सक्सेना ने अपने कपड़ों के अंदर छुपी टिन की वह आधी प्लेट बाहर निकाली, जिसे वह मेस में से फाड़कर लाया था ।

"अब इस प्लेट का क्या होगा ?" कारास की आँखों में सवालिया निशान थे ।

"इस प्लेट से खिड़की की यह मजबूत ग्रिल हटेगी ।"

"कैसे ?"

"वह भी देखते जाओ ।"

कारास बड़ी प्रभावित निगाहों से कमांडर करण सक्सेना की एक-एक हरकत को देख रहा था ।

उसने अपनी जिंदगी में एक से एक बुद्धिमान और कारीगर आदमी देखा था, लेकिन ऐसा सर्वगुण संपन्न व्यक्ति उनमें कोई न था ।

करण सक्सेना ने उस टिन की प्लेट को पहले की तरह फिर फाड़ा और उसमें से आधा इंच चौड़ी एक पतली-सी पट्टी उतार ली ।

अब बाकी प्लेट करण सक्सेना के लिए बेकार थी ।

उसने उसे वहीं फेंक दी ।

उसके बाद करण सक्सेना ने एक काम और किया । करण सक्सेना ने उस आधा इंच चौड़ी पट्टी को लंबोतरे अंदाज में फोल्ड करके उसके दोनों सिरे एक-दूसरे से मिला दिये ।

आधा इंच चौड़ी पट्टी अब आधी रह गई, लेकिन दोहरा होने के कारण वह मोटी पट्टी बन चुकी थी ।

फिर करण सक्सेना ने उस पट्टी के एक सिरे को खुरदुरे फर्श पर धीरे-धीरे घिसना शुरू किया ।

फिर कोई बीस मिनट उसने उस पट्टी के सिरे को खुरदुरे फर्श पर घिसा, जिससे उस पट्टी में पेचकस जैसी नोंक बन गई ।

कुल मिलाकर अब एक पेचकस तैयार था ।

"रियली एक्सीलेंट !" कारास का मंत्रमुग्ध स्वर, "अब क्या करोगे ?"

"अब इस पट्टी से ग्रिल के जितने भी पेंच हैं, मैं वह खोलूँगा ।"

"गुड !"

फिर करण सक्सेना खिड़की के नजदीक जा खड़ा हुआ और उसने एक-एक करके ग्रिल के पेंच खोलने शुरू किये ।

ग्रिल में काफी पेंच लगे हुए थे ।

लेकिन फिर पेंच खोलने में कमांडर करण सक्सेना को कोई मुश्किल पेश न आई ।

आधा घंटे बाद ही पूरी ग्रिल उतरकर उसके हाथ में आ चुकी थी ।

उसने वह ग्रील अंदर बैरक में खींच ली तथा फिर उसे निःशब्द ढंग से नीचे फर्श पर रख दिया ।

रास्ता साफ था ।

उसी क्षण एक घटना घटी ।

एकाएक कमांडर और कारास को ऐसा लगा, जैसे उनके पीछे कोई आकर खड़ा हो गया है ।

वह दोनों झटके से पलटे ।

और ।

तुरंत मानो उनके दिल-दिमाग पर बिजली-सी कड़कड़ाई ।

उनके सामने एक कैदी खड़ा था । वह लंबी-लंबी बाँह वाला हृष्ट-पुष्ट खूंखार कैदी था, जो उन लोगों के कंपाला में आने से पहले ही उस बैरक में बंद था ।

"तुम !"

करण सक्सेना चिहुँका ।

"क्यों !" उस कैदी ने अपना मुँह इस तरह चलाया, जैसे भैंसा जुगाली कर रहा हो । यह उसकी आदत थी, "मुझे देखकर हैरानी हो रही है । लेकिन तुम्हें इस जेल से फरार होते देख कम से कम मुझे कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है ।"

"क्या मतलब ?"

वह हँसा ।

उसकी हँसी बड़ी डेंजर थी ।

"मतलब बहुत साफ है दोस्तों, पिछले कुछ रातों में तुम दोनों ने मिलकर जितनी भी दबी जबान में वार्ताएँ की हैं, मैं उन सबसे वाकिफ हूँ । जब तुम दोनों यह सोचते थे कि

सभी कैदी सो रहे हैं, तब कम से कम यहाँ एक कैदी ऐसा जरूर था, जो जाग रहा होता था और वह मैं था ।"

"यानी तुम हमारी पूरी योजना से वाकिफ हो ?"

"बिल्कुल ।" उसके चेहरे पर कमीनापन बरस रहा था, "मैं यह भी जानता हूँ कि एक सेल्फ लोडिंग राइफल कचराघर में रखी हुई है, जिसे तुम इस समय जाकर निकालोगे और फिर कंपाला जेल से फरार होने का तुम्हारा लक्ष्य वह नीले रंग का हेलीकॉप्टर होगा, जिससे कैदियों को लाया ले जाया जाता है ।"

"हूँ ।" करण सक्सेना तुरंत पूरी परिस्थिति भाँप गया, सचमुच वह बहुत चतुर व्यक्ति था, "अब तुम क्या चाहते हो ?"

करण सक्सेना की नजरें उसके चेहरे पर टिकी थीं ।

"मैं क्या चाह सकता हूँ ।" उसने फिर मुस्कुराते हुए अपने मुँह से भैंसे जैसी जुगाली की, "दोस्तों, मेरी सिर्फ इतनी इच्छा है कि मैं भी आप लोगों के साथ-साथ इस जेल से फरार हो जाऊँ ।"

"लेकिन यह असंभव है ।" करण सक्सेना के स्वर में अपार धैर्य और संतुलन था ।

उसने एकदम स्पष्ट रूप से वह जवाब दिया ।

"क्यों ?" उसके नेत्र पहली मर्तबा सिकुड़े ।

"क्योंकि भागने वाले कैदियों की संख्या जितनी ज्यादा होगी, उतनी हमें भागने में परेशानी होगी ।"

"ओह, सॉरी !" एकाएक उसका स्वर बेहद नाटकीय हो उठा, "अब तो तुम्हारे लिए एक बुरी खबर है दोस्तों ! फिर तो तुम भी इस जेल से फरार नहीं हो पाओगे । क्योंकि जैसे ही तुम इस खिड़की से बाहर निकलोगे, मैं गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगूँगा । और इससे पहले कि तुम कचरा घर तक पहुँचो, जेल के सुरक्षाकर्मी तुम दोनों को पकड़ लेंगे ।"

"यह सब तुम करोगे ?"

"हाँ ।" उसने पूरी दिलेरी के साथ अपने मुँह की जुगाली करते हुए कहा, "यह सब मैं करूँगा और अगर यकीन न हो, तो मुझे आजमाकर देख लो ।"

करण सक्सेना खामोश हो गया ।

एक क्षण के लिए कमांडर करण सक्सेना और कारास की निगाहें एक-दूसरे से टकराईं ।

दोनों की आँखों में बेचैनी थी ।

"ठीक है ।" करण सक्सेना बोला, "इस समय हम कोई रिस्क नहीं उठाना चाहेंगे । अगर तुम हमारे साथ इस जेल से फरार होना चाहते हो, तो चलो ।"

"वेरी गुड ।" उसकी आँखों में विजयी चमक आ गई, "मैं जानता था, तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो और यही फैसला करोगे । अब हमें और ज्यादा समय नष्ट नहीं करना चाहिये, जल्दी चलो ।"

वह तीनों फौरन खिड़की की तरफ बढ़े ।

सबसे पहले कमांडर करण सक्सेना खिड़की के नजदीक पहुँचा और खिड़की के नजदीक पहुँचते ही वह अकस्मात बेपनाह फुर्ती के साथ पलटकर उस कैदी की तरफ झपटा तथा उसने तड़ाक से अपनी भरपूर शक्ति के साथ एक कराटे चेप उसकी खोपड़ी पर जड़ दी ।

सब कुछ बिल्कुल इस तरह हुआ, जैसे आसमान में जोर से बिजली कड़कड़ाई हो ।

कैदी के मुँह से भी भिंची-भिंची-सी सिसकारी छूटी और वो वहीं फर्श पर ढेर हो गया ।

उसकी नाक से हल्का-हल्का खून जाने लगा ।

"इ... इसे क्या हुआ ?" कारास भौंचक्के लहजे में बोला ।

"कुछ नहीं हुआ । सिर्फ बेहोश हुआ है । तीन-चार घंटे में होश आ जायेगा । तब तक हम निकलते हैं ।"

कारास एक बार फिर बड़ी प्रभावित निगाहों से करण सक्सेना को देखने लगा ।

वाकई वह हैरतअंगेज व्यक्तित्व का मालिक था ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना अब खिड़की पर चढ़ चुका था और फिर दीवार के सहारे-सहारे से नीचे तक चले गये वाटर पाइप को पकड़कर हवा में झूल गया ।

□□□

कंपाला जेल में चारों तरफ रात्रि का गहन सन्नाटा फैला था ।

सुरक्षाकर्मी अपने-अपने हथियार लेकर इधर से उधर घूम रहे थे । तब तक किसी को इस बात की कानों कान भनक न थी कि वहाँ क्या हंगामा होने वाला है ।

वह दो साये थे, जो रात्रि के उस अंधकार में बहुत दबे पाँव कचरा घर की तरफ बढ़े चले जा रहे थे ।

दोनों चौकन्ने थे ।

पूरी तरह चौकस ।

कहीं से जरा-सी भी आहट होती, तो वह ठिठक जाते ।

वह कमांडर करण सक्सेना और कारास थे ।

"टाइम क्या हुआ है ?" कारास ने फुसफुसाये स्वर में पूछा ।

"बस 2:00 बजने ही वाले हैं ।"

"चलो, शुक्र है । अभी तक सारा काम सही-सलामत निपट रहा है । वरना उस भैंसे की तरह जुगाली करने वाले के बीच में आने की वजह से मुझे तो सारा मामला ही गुड़-गोबर होता दिखाई दे रहा था ।" बोलता-बोलता कारास ठिठक गया ।

वजह, उसके कानों में कुछ पदचापों का स्वर पड़ा ।

करण सक्सेना ठिठका ।

वह दो सुरक्षाकर्मी थे, जो उसी तरफ चले आ रहे थे ।

वह दोनों फौरन एक दीवार की आड़ में छुप गये ।

कुछ देर के बाद ही दोनों सुरक्षाकर्मी चहलकदमी-सी करते हुए उसके बिल्कुल सामने से गुजरे । वह दोनों अम्युनेशन ब्लैक बूट पहने हुए थे, जिससे उनकी पदचापों का स्वर दूर-दूर तक गूँज रहा था । अंधेरे की वजह से उनकी निगाह उन पर न पड़ी ।

"चलें ?" कारास ने थोड़ा रुककर पूछा ।

"चलो ।"

वह दोनों सिर्फ निःशब्द ढंग से कचरा घर की तरफ बढ़े ।

जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि रौनक शाह वहाँ पहले से ही मौजूद था और वह कचरे के ढेर में से सेल्फ लोडेड राइफल निकाल चुका था ।

"तुम यहाँ कब आये ?" करण सक्सेना, रौनक शाह को देखकर बोला ।

"मुझे यहाँ आये हुए कोई आधा घण्टा हो चुका है ।"

"यानी टाइम से पहले ही आ गये थे ?"

"हाँ, काफी पहले ।"

"वेरी गुड ! मैं समझता हूँ कि बैरक से बाहर निकलने में भी कोई परेशानी नहीं आयी होगी ?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं कमांडर ! टिन की पट्टी का आपने जिस तरह से इस्तेमाल करने को बताया था, मैंने वैसा ही किया । उसके बाद सब कुछ खुद-ब-खुद होता चला गया ।"

वह तीनों अभी बातचीत कर ही रहे थे कि तभी उन्हें फिर अम्युनेशन ब्लैक बूटों की आवाज सुनाई पड़ी ।

"लगता है, कोई इसी तरफ आ रहा है ।" कारास जल्दी से बोला ।

"शायद ।"

तीनों पदचाप की आवाज गौर से सुनने लगे ।

संभवतः वह एक आदमी था ।

"अब क्या करें ?"

उन तीनों की नजरें एक-दूसरे से टकराईं ।

वहाँ आसपास छिपने की कोई जगह भी न थी ।

उन्हें आनन-फानन बस एक ही स्थान दिखाई पड़ा, कचरा घर !

तीनों तत्काल कचरा घर में ही छुप गये ।

□□□

वह लंबा-तड़ंगा सुरक्षाकर्मी था, जो रिहायशी कॉलोनी के पास तैनात था । लेकिन एकाएक पहरेदारी करते करते उसे पेशाब लगा था और इसीलिए वह उस तरफ आया था । राइफल उसके भी कंधे पर टंगी थी और वह बड़ी रंगीन तबीयत का आदमी मालूम हो रहा था ।

वह जोर-जोर से कोई पॉप गीत गा रहा था, जिसकी लाइनें बड़ी रूमानी थीं ।

वह तीनों कचरा घर के दरवाजे के पास ही खड़े उसे देखते रहे । वह सुरक्षाकर्मी चहलकदमी करता हुआ टॉयलेट में चला गया । तभी एकाएक करण सक्सेना के सीने पर जोरदार घूंसा-सा पड़ा ।

उसने देखा, रौनक शाह के चेहरे की तमाम नसें फूली हुई थीं । वह अपने एक हाथ से अपना गला भींच रहा था और दूसरे हाथ से अपना मुँह दबा रहा था ।

"रौनक शाह !" करण सक्सेना ने उसे बुरी तरह झंझोड़ा, "रौनक शाह !"

रौनक शाह कुछ न बोला ।

उसकी और भी ज्यादा बुरी हालत हो गई ।

चेहरे की नसें पहले से भी ज्यादा फूल गईं ।

"क्या हो रहा है तुम्हें ?" करण सक्सेना घुटे-घुटे स्वर में चीखा ।

"क... कुछ नहीं ।" रौनक शाह बामुश्किल बोला ।

करण सक्सेना फौरन भाँप गया । उसे अस्थमा का दौरा उठ रहा है, जिसे वह बड़ी मुश्किल से रोके हुए था ।

उसी क्षण रौनक शाह को जोर से खांसी का धसका उठा और मुँह के ऊपर से उसकी पकड़ छूट गई ।

वह बुरी तरह खांस उठा । लेकिन जल्द ही उसने अपना मुँह वापस पकड़ लिया, लेकिन इतनी देर में ही तीर कमान से निकल चुका था ।

"माई गॉड ।" करण सक्सेना के हाथ फौरन राइफल की बट पर कस गये, "लगता है कि अब गड़बड़ होकर रहेगी ।"

कारास जैसा दुर्दांत अपराधी भी भयमीत नजर आने लगा ।

और फिर वही हुआ ।

सुरक्षाकर्मी, जो अभी तक बड़े मनोयोग से कोई पॉप गीत गुनगुना रहा था, एकाएक उसकी गुनगुनाहट बंद हो गई ।

उसने अपने पैंट की ज़िप खींची और बहुत निःशब्द ढंग से टॉयलेट से बाहर निकला । उसकी आँखें चौकन्नी थीं और सेल्फ लोडिंग राइफल उसके कंधे से उतरकर हाथ में आ चुकी थी ।

"क... कौन है ?" वह इस तरह फुसफुसाया, जैसे किसी चींटी की गुनगुनाहट हो ।

आसपास चूंकि निर्जन क्षेत्र था इसलिये भय उसे भी था ।

वह तीनों दम साधे अपनी-अपनी जगह खड़े रहे ।

फिर अम्युनेशन ब्लैक बूटों की आवाज उभरी । वह धीरे-धीरे कचरा घर की तरफ बढ़ रहा था ।

"कौन है ?" इस मर्तबा उसने थोड़ी तेज आवाज में पूछा ।

खामोशी ।

सन्नाटा ।

तभी वह एक एसएलआर अपने हाथ में मजबूती के साथ पकड़े-पकड़े कचराघर के सामने आ गया ।

और ।

कमांडर करण सक्सेना मानो उसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था ।

सुरक्षाकर्मी की निगाह अंधेरे में दुबके खड़े उन तीनों पर पड़ पाती, उससे पहले ही करण सक्सेना हरकत में आ गया ।

वह एकदम टाइगर क्रैक की तरह विद्युत गति से उसके ऊपर झपट पड़ा और उसकी फ्लाइंग किक धड़ाधड़ उसके चेहरे पर पड़ी ।

हमला अप्रत्याशित था ।

सुरक्षाकर्मी की चीख निकल गई और वह लड़का जाकर पीछे गिरा, लेकिन उसने राइफल अपने हाथ में कसकर पकड़े रखी ।

फौरन ही कारास और रौनक शाह भी कचरा घर से बाहर निकल आये ।

रौनक शाह की हालत उस वक्त कुछ ठीक नहीं थी । वह जेब से इनहेलर निकालकर जल्दी-जल्दी उसकी दवाई अपने मुँह में स्प्रे कर रहा था और गहरी साँस ले रहा था ।

उधर वह सुरक्षाकर्मी भी काफी फुर्तीला साबित हुआ ।

गिरते ही वह एकदम उछलकर सीधा खड़ा हो गया ।

ऐसा मालूम हो रहा था, वह भी मार्शल आर्ट का कोई कुशल योद्धा था ।

फिर एस एल आर उसके हाथ में बड़ी तेजी के साथ तनी और उंगली ट्रिगर की तरफ झपटी ।

तत्काल भड़ाक से करण सक्सेना की एक और फ्लाइंग किक उसके चेहरे पर पड़ी।

वह फिर चीखा।

इस बार राइफल उसके हाथ से छूट गई। जबकि कमांडर करण सक्सेना के हाथ में अभी भी राइफल थी, लेकिन उसने इसका कोई इस्तेमाल नहीं किया था।

सुरक्षाकर्मी के हाथ से जैसे ही राइफल छूटी, कारास ने दौड़कर वह राइफल उठा ली। फिर उसने सुरक्षाकर्मी की खोपड़ी को निशाना बनाकर गोली चलानी चाही।

"नहीं।" करण सक्सेना चीखा, "गोली मत चलाना, गोली नहीं। गोली चलाओगे, तो उसकी आवाज पूरी जेल में गूँज उठेगी।"

कारास ठिठक गया।

लेकिन इस बीच सुरक्षाकर्मी को मौका मिल चुका था।

वह एकदम टाइगर क्लान के खौफनाक एक्शन में आ गया और उसने मंकी ब्लो का दुर्दांत प्रहार करण सक्सेना के ऊपर किया।

करण सक्सेना जैसे योद्धा की भी एक क्षण के लिए चीख निकल गई।

वह लड़खड़ाकर नीचे गिरता-गिरता बचा।

करण सक्सेना संभलता, उससे पहले ही वह अफ्रीकन तेंदुए की तरह करण सक्सेना के ऊपर झपटा और उसे लिए-लिए नीचे ढेर हो गया।

सचमुच उन्हें खतरनाक ट्रेनिंग दी गई थी।

एक पल के लिए तो ऐसा लगा, जैसे वह करण सक्सेना के ऊपर भारी पड़ रहा है।

कमांडर करण सक्सेना कोई हरकत दिखाता, तभी कारास इस मर्तबा अपना कमाल दिखा गया। उसने अपनी राइफल से गोली तो नहीं चलाई, अलबत्ता राइफल को नाल की तरफ से लाठी की तरह जरूर कसकर पकड़ लिया और फिर अपनी भरपूर शक्ति से उसकी बट का प्रचंड प्रहार सुरक्षाकर्मी की खोपड़ी पर किया।

सुरक्षाकर्मी ने बुक्का फाड़ा, जैसे उसकी खोपड़ी पर बम फटा हो।

उसने फौरन दोनों हाथों से अपना सिर कसकर पकड़ लिया। तुरंत ही कारास ने एक और भीषण प्रहार उसकी खोपड़ी पर किया।

वह प्रहार सबसे ज्यादा भयानक था।

उसकी खोपड़ी तरबूज की तरह फट पड़ी और उसके हलक से गगनभेदी चीख निकल गई।

वह हाथ-पैर फैलाकर वहीं ढेर हो गया।

करण सक्सेना ने उसे अपने ऊपर से हटाया और धीरे-धीरे हाँफता हुआ उठा।

कारास ने इतनी शक्ति के साथ प्रहार किये थे कि उसकी साँस भी फूल गई थी।

उधर रौनक शाह भी इनहेलर की दवाई अपने मुँह में स्प्रे कर रहा था, लेकिन उसकी तबीयत अब सम्भली हुई थी ।

"मर गया ?" रौनक शाह चारों खाने चित पड़े सुरक्षाकर्मी की तरफ देखता हुआ बोला ।

"हाँ, मर गया ।"

रौनक शाह ने अपना चेहरा झुका लिया । जबकि कारास की आँखों में उस वक्त थोड़ी नागवारी के चिह्न थे ।

"मिस्टर करण !" वह रायफल हाथ में पकड़े-पकड़े करण सक्सेना की तरफ बढ़ा ।

"बोलो ।"

"मैं नहीं जानता था, तुम्हारा यह दोस्त इस कदर बीमार है । इसके कारण तो हम कहीं भी फँस सकते हैं ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" करण सक्सेना की भृकुटी तनी ।

"साफ बात यह है कि अगर यह हमारे साथ रहेगा, तो हमारी योजना फेल होनी निश्चित है ।"

"लेकिन तुम शायद एक बात नहीं जानते कारास !"

"क्या ?"

"मैं न सिर्फ अपने इस दोस्त को निकालने के लिए ही इस जेल में दाखिल हुआ हूँ, बल्कि इसी के लिए यह सारी योजना रची गई है । मेरे से ज्यादा इस आदमी का कंपाला जेल से बाहर निकलना जरूरी है ।"

"क्यों ?"

"इस सवाल का जवाब मैं तुम्हें नहीं दे सकता ।"

कारास अब लाजवाब हो गया ।

अनुत्तरित ।

लेकिन उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव नहीं थे ।

"मैं समझता हूँ ।" तभी रौनक शाह बोला,"हमारा ज्यादा देर इस जगह खड़े रहना मुनासिब नहीं है । क्योंकि अगर सुरक्षाकर्मी के चीखने की आवाज किसी ने सुन ली होगी, तो इसके साथ ही वहाँ पहुँचने ही वाले होंगे ।"

"करेक्ट, हमें यहाँ से चलना चाहिये ।" करण सक्सेना बोला ।

फिर आनन-फानन उन तीनों ने मिलकर उस सुरक्षाकर्मी की भी लाश उठाकर कचरा घर के अंदर फेंकी और उसके बाद सावधानीपूर्वक अपने अगले पड़ाव की तरफ बढ़े ।

इस समय उनके पास दो राइफलें थीं ।

□□□

थोड़ी देर बाद ही वह तीनों रिहायशी कॉलोनी में कॉलेज प्रिंसिपल के फ्लैट के सामने खड़े थे ।

फ्लैट के अंदर उस वक्त अंधेरा था ।

ढाई बज रहे थे और जरूर प्रिंसिपल अपने पढ़ने-लिखने के कार्य से निवृत्त होकर अब बिस्तर के हवाले हो गया था ।

"रौनक !" करण सक्सेना ने रौनक शाह की तरफ देखा, "तुम कॉल बेल बजाओ ।"

रौनक शाह ने आगे बढ़कर कॉल बेल का बटन पुश किया ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना और कारास तुरंत दरवाजे के दाएं-बाएँ चौखट से चिपककर खड़े हो गये । सेल्फ लोडिंग राइफलें अभी भी उनके हाथ में थीं ।

"कौन है ?" कॉलबेल की आवाज गूँजते ही फौरन अंदर से प्रिंसिपल की आवाज सुनाई पड़ी ।

जरूर वह थोड़ी-बहुत देर पहले ही बिस्तर पर लेटा था और अभी उसकी आँख नहीं लगी थी ।

रौनक शाह ने फिर कॉलबेल बजाई ।

"कौन है भाई ?"

"दरवाजा खोलो, मैं सिक्योरिटी इंचार्ज गोबसे !"

"गोबसे !"

"हाँ ।"

"रुको-रुको, खोलता हूँ ।"

रौनक शाह जानता था कि कंपाला जेल का सिक्योरिटी इंचार्ज गोबसे था और उसकी प्रिंसिपल से अच्छी-खासी छनती थी ।

फिर किसी के जल्दी-जल्दी स्लीपर पहनने और दरवाजे की तरफ बढ़ने की आवाज हुई ।

उसके बाद सिटकनी गिरी और दरवाजे के दोनों पट खुले ।

दरवाजा खोलते ही प्रिंसिपल की निगाह जैसे ही रौनक शाह पर पड़ी, वह जोर से चिहुंका ।

"त... तुम... गोबसे कहाँ है ?"

प्रिंसिपल ने इधर-उधर देखा । तभी उसे किसी जल्लाद की तरह खड़े कमांडर करण सक्सेना और कारास भी नजर आये ।

"न... नहीं ।" वह हड़बड़ा उठा, "तुम लोग तो कैदी हो !"

उसने भड़ाक से दरवाजे के दोनों पल्ले बन्द करने चाहे ।

लेकिन रौनक शाह ने फौरन झपटकर अपना शरीर दोनों पल्लों के बीच में अड़ा दिया और प्रिंसिपल को जोर से पीछे की तरफ धक्का दिया ।

वह सिंकड़ी पहलवान तो वैसे ही था, धक्का देते ही वह उछलकर पीछे गिरा ।

तुरंत रौनक शाह, करण सक्सेना और कारास दनदनाते हुए फ्लैट में दाखिल हो गये ।

प्रिंसिपल खड़ा होता, उससे पहले ही कारास ने दौड़कर उसके सीने पर राइफल तान दी ।

"कोई हरकत न करना ।" कारास उसके सीने पर राइफल रखे-रखे गुर्राया, "कोई हरकत नहीं । अगर कोई हरकत की, तो उसी पल तुम्हारा पूरा शरीर गोलियों से छलनी कर दिया जायेगा ।"

प्रिंसिपल के पूरे शरीर में चींटियाँ दौड़ गई ।

वह सूखे पत्ते की तरह कँपकँपाया ।

"आखिर क्या चाहते हो तुम लोग ? क्या बिगाड़ा है मैंने तुम्हारा ?"

"तुमने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा ।" करण सक्सेना भी राइफल हाथ में लिए-लिए उसके सामने आता हुआ बोला, "हमें तुमसे बस एक छोटा-सा काम है ।"

"क्या ?"

"हम जेल से फरार होना चाहते हैं और उसके लिये हमें तुम्हारी जरूरत है ।"

जेल से फरार होने के नाम पर प्रिंसिपल के चेहरे पर आश्चर्य के भाव पैदा हुए ।

"तुम... तुम लोग इस जेल से फरार होना चाहते हो । कंपाला जेल से ?"

"हाँ ।"

उसके चेहरे पर आश्चर्य की जगह एकाएक व्यंग्य के भाव उभर आये ।

"लगता है, तुम लोग पागल हो गये हो, जो ऐसा ख्याल भी तुम्हारे दिमाग में आया है ।"

तत्काल कारास ने राइफल बहुत जोर से खींचकर प्रिंसिपल के कंधे पर मारी ।

प्रिंसिपल जोर से बिलबिला उठा ।

"सिंकड़ी पहलवान, पागल हम नहीं हुए हैं, बल्कि आज पागल तुम सब लोग होओगे । जब हमें यहाँ से फरार होते देखोगे ।"

"लेकिन इस जेल से फरार होना आसान नहीं है ।"

"वह हम भी जानते हैं, लेकिन आज इस जेल में वह काम होगा, जो आज से पहले कभी नहीं हुआ । आज हम इस जेल से फरार होंगे ।"

"य... यह तुम्हारा वहम है ।"

"यह वहम आज हकीकत में बदलेगा और इसे हकीकत में बदलने में तुम हमारी मदद करोगे ।"

"मैं !"

"हाँ, तुम ।"

"कैसे ?"

कमांडर करण सक्सेना ने उसे बताया कि कैसे । उसकी कैसे सुनकर कॉलेज प्रिंसिपल का दिमाग और भी ज्यादा घूम गया ।

"यानी... यानी तुम मुझे बंधक बनाओगे ?"

"यस ।"

"और बंधक बनाएंगे क्या बाप !" रौनक शाह हिंदुस्तानी मवालियों जैसी ट्यून में बोला, "बंधक तो हम तुम्हें बना चुके हैं । अब तो अगर तुम अपनी जान की खैर चाहते हो, तो बस वैसा ही करो, जैसा हम कहें । चलो, बाहर निकलो ।"

"लेकिन... ।"

फौरन तड़ाक से कारास ने राइफल की नाल एक बार फिर प्रिंसिपल के कंधे पर जड़ी ।

प्रिंसिपल इस मर्तबा यूँ चिल्लाया, जैसे किसी ने खंजर उसके कंधे में पैवस्त कर दिया हो ।

"आहिस्ता-आहिस्ता मेरे भाई !" कमांडर करण सक्सेना ने कारास के रौद्र रूप पर थोड़ा अंकुश लगाने का प्रयास किया, " सिंकड़ी पहलवान है, अगर कहीं चोट-वोट ज्यादा जोर से लग गई, तो अभी टें बोल जायेगा ।"

उन तीनों के दिल में उस प्रिंसिपल के प्रति सम्मान था । मगर उस वक्त उन तीनों में से कोई भी अपना वह सम्मान उसके ऊपर जाहिर नहीं कर रहा था ।

तीनों दुर्दांत रुख अख्तियार किये हुए थे ।

"चलो ।" करण सक्सेना ने भी गुर्राकर कहा, "बाहर निकलो ।"

"त... तुम लोग यह ठीक नहीं कर रहे हो ।" प्रिंसिपल बोला, "तुम खुद अपनी मौत को दावत दे रहे हो ।"

"बाहर निकलो ।" करण सक्सेना दहाड़ा ।

कॉलेज प्रिंसिपल थर-थर कांपता हुआ बाहर की तरफ बढ़ा ।

हालांकि प्रिंसिपल पतला-दुबला था और किताबी कीड़ा था, लेकिन दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते उसके अंदर न जाने कहाँ से इतनी हिम्मत आ गई कि वह दो-दो राइफलों के साये में होने के बावजूद एकाएक बड़े अप्रत्याशित ढंग से कमांडर करण सक्सेना के ऊपर झपट पड़ा ।

उसी पल कारास ने बौखलाहट में गोली चला दी ।

धायं !

गोली चलने की आवाज रात के सन्नाटे में कंपाला जेल के अंदर इस तरह गूँजी, जैसे कोई बम फट पड़ा हो ।

हालांकि वह गोली प्रिंसिपल की खोपड़ी के ऊपर से गुजर गई, लेकिन उस गोली की ध्वनि ने जेल के अंदर वह हंगामा बरपा कर दिया, जो फिलहाल वह तीनों नहीं चाहते थे ।

□□□

गोली की ध्वनि गूँजते ही पूरी रिहायशी कॉलोनी में जाग हो गई और वहाँ जितने भी सुरक्षाकर्मी थे, वह अपनी-अपनी गनें लेकर बाहर निकल आये । पहरेदार अलर्ट हो उठे । जेल के अधिकारी भी चौकन्ने हुए ।

और सबसे खतरनाक काम यह हुआ कि गोली की आवाज गूँजते ही खतरे का अलार्म बज उठा, जिसने रही-सही कसर भी पूरी कर दी ।

खतरे के अलार्म के जोर-जोर से भीषण क्रंदन करने से कारास और रौनक शाह भी विचलित हुए । उन्होंने सोचा भी न था, जेल से फरार होते समय इतने बड़े हंगामे का सामना भी उन्हें करना पड़ेगा । वह तो यह सोच रहे थे कि अगर बंधक उनके हाथ लग गया, तो फिर सब कुछ आसानी से हो जायेगा ।

उन परिस्थितियों में सिर्फ एक ही आदमी था, जो विचलित नहीं था, करण सक्सेना ।

कमांडर करोड़ सक्सेना !

क्योंकि उस तरह के हालात का वह न जाने कितनी मर्तबा सामना कर चुका था ।

"अब क्या होगा ?" कारास का विचलित स्वर ।

"चिंता मत करो ।" करण सक्सेना पूरे यकीन के साथ बोला, "कुछ नहीं होने वाला है । वी विल बी सक्सेसफुल, वी विल बी सक्सेसफुल इन एवरी कंडीशन !"

ऐसे खतरनाक माहौल में कमांडर करण सक्सेना का वह विश्वास देखकर रौनक शाह और कारास का भी साहस बढ़ा ।

जबकि कॉलेज प्रिंसिपल को उसके अदम्य साहस पर आश्चर्य हुआ ।

उसे फौरन ही अंदाजा हो गया, वह कोई साधारण आदमी नहीं था ।

वह तीनों अब कॉलेज प्रिंसिपल को राइफलों के साये में लेकर बेहिचक बाहर निकल आये थे और फिर नीचे खुले मैदान में पहुँचे ।

वहाँ सुरक्षाकर्मियों का विशाल जमघट लगा हुआ था ।

गोली की आवाज सुनकर उन्हें अंदाजा हो गया था कि फायर उस जगह किया गया है ।

उन तीनों के नीचे आते ही जेलर बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ बढ़ा ।

"यह सब क्या हरकत है ?" जेलर चीखकर बोला, "क्या गोली तुम्हीं ने चलाई थी ?"

"हाँ ।" उस जमघट का रौब खाए बिना जवाब करण सक्सेना ने दिया, "गोली हमीं ने चलाई थी ।"

"लेकिन क्यों ?"

"क्योंकि हम यहाँ से फरार हो रहे हैं और हम नहीं चाहते कि कोई हमारे रास्ते की रुकावट बने । अगर किसी ने भी हमारे रास्ते की रुकावट बनने की कोशिश की, तो हम तुम्हारे इस प्रिंसिपल को शूट कर देंगे ।"

"लगता है कि तुम लोग बेवकूफ हो । सिर्फ प्रिंसिपल को बंधक बनाने से ही तुम इस जेल से बाहर नहीं निकल पाओगे । शायद तुम जानते नहीं हो, इस जेल से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है ।"

"इस जेल से बाहर किस तरह निकला जायेगा ।" करण सक्सेना बोला, "वह हमें मालूम है ।"

"लेकिन इस जेल से आज तक कोई भी बाहर नहीं निकल सका ।"

"जेलर, तुम सचमुच मूर्खों जैसी बात कर रहे हो ।" करण सक्सेना के स्वर में उपहास का पुट था, "तुमने शायद एक कहावत नहीं सुनी, एवरी एक्शन हैज स्टार्टेड पॉइंट ऑलवेज । हर काम की कभी न कभी शुरुआत होती है । और आज वह दिन आ पहुँचा है, जब कंपाला जेल से फरार होने की शुरुआत होगी । आज के बाद इस जेल को कोई भी अभेद्य जेल नहीं कहेगा ।"

"लगता है ।" जेलर दहाड़ा, "तुम नशे में हो ।"

"सामने से हटो ।" करण सक्सेना ने भी गुर्राकर कहा, "थोड़ी देर बाद खुद ब खुद पता चल जायेगा कि कौन नशे में है । और एक बार फिर बता दूँ, कोई हमें रोकने की चेष्टा न करें । हमें तभी रोका जाये, जब आप लोग प्रिंसिपल की जान देने के लिए तैयार हो ।"

वातावरण में एकाएक सन्नाटा छा गया ।

"आगे बढ़ो दोस्तों !" करण सक्सेना ने चीखकर कहा ।

कारास ने राइफल की नाल से प्रिंसिपल को आगे की तरफ धक्का दिया ।

"जेलर साहब !" उसी क्षण प्रिंसिपल चिल्ला उठा, "आप मेरी जान की परवाह न करें, आप इन्हें भागने से रोकें ।"

तड़ाक !

फौरन कारास ने राइफल की नाल का प्रचंड प्रहार एक बार फिर प्रिंसिपल के ऊपर किया ।

वह उसके द्वारा किया गया अब तक का सबसे शक्तिशाली प्रहार था ।

प्रिंसिपल चीखता हुआ मुँह के बल आगे गिरा ।

"सिंकड़ी पहलवान !" कारास ने आगे बढ़कर दरिंदे की तरह उसके सिर के बाल पकड़े तथा फिर झटके के साथ उसे वापस खड़ा किया, "अभी तक तूने सिर्फ किताबों में मौत का जिक्र पढ़ा होगा, लेकिन हकीकत में अभी तू शायद वाकिफ नहीं है कि मौत किस बला का नाम है । मौत जब आती है, तो अच्छे-अच्छे महारथियों की रुह कांप उठती है । आगे बढ़ो ।"

कारास ने प्रिंसिपल के ऊपर वह प्रहार इतने शक्तिशाली ढंग से किया था कि फिर प्रिंसिपल की कुछ बोलने की हिम्मत न हुई । वह धीरे-धीरे कदमों से आगे की तरफ चल पड़ा ।

वह तीनों प्रिंसिपल के साथ वहीं खड़ी एक जीप की तरफ बढ़ गये थे, तभी एक सुरक्षाकर्मी ने हरकत दिखाई और बड़े आकस्मिक ढंग से दिखाई ।

वह चारों अभी जीप के पास पहुँच भी न पाए थे, एकाएक वह पीछे से उनके ऊपर झपट पड़ा । उसका लक्ष्य प्रिंसिपल था । वह किसी तरह उसे उन तीनों के शिकंजे से मुक्त करा लेना चाहता था ।

मगर वह प्रिंसिपल को छू भी पाता, उससे पहले ही करण सक्सेना के हाथ में मौजूद राइफल गरज उठी ।

धायं धायं धायं ।

एक साथ असंख्य गोलियाँ उसके शरीर में पैवस्त होती चली गईं । वह दहाड़ता हुआ खून से लथपथ हालत में वहीं ढेर हो गया । उसकी मौत से वातावरण में और भी जबरदस्त दहशत फैल गई । और सच तो यह है, उसका मरना कम से कम उन तीनों के लिए बहुत फायदेमंद रहा । क्योंकि उससे बाकी सुरक्षाकर्मियों पर जो मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा, उसने उन्हें बाकी योजना को क्रियान्वित करने में बहुत मदद की ।

□□□

फिर वह तमाम भीड़-भड़क्के के बीच जीप में सवार हो गये ।

रौनक शाह ने ड्राइविंग सीट संभाली, जबकि कमांडर करण सक्सेना और कारास, कॉलेज प्रिंसिपल को लेकर पिछली सीट पर बैठे । वह कंपाला जेल के जेलर की जीप थी और उसकी चाबी फिलहाल उसी के पास थी ।

"चाबी ।" रौनक शाह ने उससे जीप की चाबी मांगी ।

जेलर ने मजबूरन आगे बढ़कर उसे चाबी पकड़ाई ।

"देखो ।" फिर भी जेलर उन्हें समझाता हुआ बोला, "तुम यह ठीक नहीं कर रहे हो । मैं फिर कहता हूँ, तुम लोग यहाँ से भाग नहीं सकोगे । आज तक इस कंपाला जेल से फरार

होने की बहुत लोगों ने कोशिश की । वह या तो मार दिये गये और अगर उन्हें पकड़ा गया, तो फिर उनकी सजा में लंबी-लंबी बढ़ोतरी की गयी ।"

"रौनक !" कमांडर करण सक्सेना का स्वर एकाएक आदेशात्मक हो उठा, "जीप आगे बढ़ाओ ।"

करण सक्सेना के आदेश देने की देर थी, फौरन जीप का इंजन घरघराकर जाग उठा और फिर जीप द्रुतगति के साथ सड़क पर आगे की तरफ भागी ।

□□□

वह बेहद रोमांचक और कौतूहलता से भरे पड़े थे । आखिर वह कंपाला जेल के इतिहास में एक नया अध्याय लिखने जा रहे थे । एक ऐसा अध्याय जिसे सदियों तक याद रखा जाना था ।

उनका लक्ष्य हेलीपैड था, जहाँ नीले रंग का हेलीकॉप्टर खड़ा था ।

कंपाला जेल में जगह-जगह सुरक्षाकर्मियों की भीड़ उमड़ी हुई थी और वह सब आश्चर्य मिश्रित निगाहों से उन्हें अपनी आँखों के सामने से भागते देख रहे थे ।

कॉलेज प्रिंसिपल भी उनकी हैरतअंगेज योजना से बहुत प्रभावित दिखाई पड़ने लगा ।

वाकई सब कुछ हैरतअंगेज था । एक ऐसा दिलेराना कदम, जो उस कंपाला जेल में पहले कभी किसी ने नहीं उठाया था ।

"मैं एक बात कहूँ ।" प्रिंसिपल, कमांडर करण सक्सेना की तरफ देखकर बोला ।

"कहो ।"

"न जाने क्यों तुम्हें देखकर ऐसा लग रहा है, तुम कोई चोर-डाकू नहीं हो ।"

"क्या मतलब ?"

करण सक्सेना चौंका ।

उसे महसूस हुआ, जैसे उसकी असलियत खुलने वाली हो ।

"दरअसल जहाँ तक मेरा अनुभव कहता है ।" प्रिंसिपल दार्शनिक की भांति बोला, "इतना दिलेराना कदम, इतने विश्वास के साथ कोई चोर-डाकू नहीं उठा सकता । वह एक पापी होता है । उसकी अंतरात्मा उसे हमेशा कचोटती रहती है । यही कारण है कि अगर वह कोई फुलप्रूफ योजना बना भी लेता है, तो मामूली-सा संकट आते ही वह अपना विश्वास खो बैठता है और उसकी पूरी योजना ताश के पत्तों की तरह ढेर हो जाती है । जबकि तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है । मैंने संकट के समय भी तुम्हारी आवाज में ओज देखा है, जो कम से कम किसी चोर-डाकू की आवाज में नहीं हो सकता ।"

करण सक्सेना की आँखों में प्रिंसिपल के प्रति बेहद प्रशंसनीय भाव उभर आये ।

वह सिंकड़ी पहलवान जरूर था, लेकिन वाकई विद्वान था ।

"बताओ ।" प्रिंसिपल पुनः बोला, "तुम कौन हो ?"

"महोदय ।" करण सक्सेना ने सफेद झूठ बोला, "कम से कम इस मामले में तुम्हारी फिलासफी तुम्हें गलत साबित कर रही है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं वास्तव में ही एक डकैत हूँ, एक अपराधी हूँ ।"

प्रिंसिपल ने उससे ज्यादा बहस नहीं की ।

लेकिन उसकी आँखें बता रही थी कि वह कमांडर करण सक्सेना के जवाब से संतुष्ट नहीं था ।

थोड़ी देर पश्चात ही वह जीप हेलीपैड के नजदीक पहुँचकर रुकी ।

रात के अब साढ़े तीन बज रहे थे और चारों तरफ गहन अंधकार अभी भी फैला था ।

हेलीपैड के नजदीक कुछेक ही सुरक्षाकर्मी मौजूद थे, लेकिन खतरे के सायरन ने उन सबको अलर्ट कर दिया था और अब जबकि जीप वहाँ पहुँचकर रुकी, तो वह सब भाँप गये कि वह तीनों किस तरह फरार होने वाले हैं ।

"नीचे उतरो ।" करण सक्सेना ने एस एल आर हाथ में पकड़े-पकड़े प्रिंसिपल को नीचे की तरफ धक्का दिया ।

प्रिंसिपल लड़खड़ाता हुआ जीप से नीचे उतरा ।

उसके पीछे-पीछे कारास और रौनक शाह भी उतरे ।

कारास भी उस योजना की कामयाबी से काफी अभिभूत दिखाई पड़ रहा था ।

"सिंकड़ी पहलवान !" कारास अपने सामने हेलीकॉप्टर खड़ा देखकर ठठाकर हँसा, "बोल, अब क्या कहता है ? क्या अब भी यही कहेगा कि इस कंपाला जेल से फरार होना नामुमकिन है ?"

"जब तक तुम लोग यहाँ से पूरी तरह नहीं निकल जाते ।" प्रिंसिपल ने कहा, "तब तक मैं यही कहूँगा कि कंपाला जेल से भाग निकलना कोई आसान बात नहीं ।"

"लेकिन अब यहाँ से फरार होने में देर ही कितनी है ।"

"यह समय बताएगा ।"

और प्रिंसिपल ने वह बात काफी हद तक ठीक कही थी ।

हालांकि करण सक्सेना ने भी उसकी उन बातों को उतनी गंभीरता से नहीं लिया, जितनी गंभीरता से लेना चाहिये था ।

जोकि उसकी गलती थी ।

बड़ी गलती थी ।

दरअसल खतरे का अलार्म बजते ही पूरी कंपाला जेल में सिक्योरिटी सख्त हो जाती थी । हर आदमी अपना-अपना मोर्चा संभाल लेता था । वह तो इस समय उन सभी की

मोर्चाबंदी यूँ विफल हो रही थी, क्योंकि उन तीनों के कब्जे में प्रिंसिपल जैसा मुअजिज आदमी था; जिसकी वह सब खुले दिल से इज्जत करते थे ।

मगर उन तीनों से चूक हुई और इसका उन्हें अच्छा-खासा खामियाजा भी भुगतना पड़ा । हुआ यूँ कि खतरे का अलार्म बजते ही हेलीकॉप्टर चालक ने भी सावधानी के तौर पर हेलीकॉप्टर के अंदर घुसकर अपनी मोर्चाबंदी कर ली थी । हालांकि तब तक यह बात उसके ख्वाब में भी न थी कि कैदी फरार होने के लिए उसी हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल करेंगे ।

उसने तो अपना वह कदम रूटीन के तौर पर उठाया था ।

वह तीनों प्रिंसिपल के साथ जैसे ही हेलीकॉप्टर की तरफ बढ़े और उन्होंने हेलीकॉप्टर का दरवाजा खोला, तभी बिल्कुल गोरिल्ला छापामारों की तरह हेलीकॉप्टर चालक उन तीनों के ऊपर झपट पड़ा ।

उसका अंदाज ऐसा था, जैसे वनमानुष उनके ऊपर झपटा हो ।

झपटते ही उसने अपनी प्रचंड हथेलियों से स्नेक हैंड का भीषण प्रहार करण सक्सेना और कारास के कंधे पर कर दिया ।

कारास के हाथ से फौरन राइफल छूटकर नीचे गिर पड़ी और वह चीखा ।

जबकि उस हेलीकॉप्टर चालक के शरीर में मानो अभूतपूर्व फुर्ती समाई हुई थी । छापामार युद्धकला का तो जैसे वह महारथी था ।

वह मानो पहली नजर में ही भांप गया था कि उन तीनों में सबसे खतरनाक कमांडर करण सक्सेना है ।

बिना सेकंड गवाएँ उसने छापामार युद्धकला का एक और एक्शन दिखाया ।

उसने जंगली तेंदुए की भांति झपटकर कारास के सीने पर जहाँ एक बड़ी जोरदार लात जड़ी, वहीं उसने शुगी का एक और बड़ा तगड़ा प्रहार करण सक्सेना के उस हाथ पर भी करना चाहा, जिसमें उसने अभी भी राइफल पकड़ी हुई थी ।

लेकिन इस बार रौनक शाह ने करण सक्सेना की मदद की । उसने करण सक्सेना को अपनी तरफ खींच लिया ।

चालक का प्रहार सर्राटे के साथ खाली गया ।

लेकिन तुरंत ही उसने अगला एक्शन दिखाया । वह उस राइफल की तरफ झपट पड़ा, जो कारास के हाथ से छूट गई थी । पलक झपकते ही वह सेल्फ लोडिंग राइफल उसके हाथ में आ गई ।

फुर्ती तो उसकी रग-रग में पहले ही समाई हुई थी । राइफल हाथ में आते ही वह और भी ज्यादा शेर हो गया ।

उधर खतरा वह तीनों भी भाँप गये कि अगर जल्दी उन्होंने उसे काबू में न किया, तो अन्य सुरक्षाकर्मी भी उनके ऊपर अटैक कर देंगे।

उसी बौखलाहट में कारास निहत्था होने के बावजूद चालक के ऊपर झपट पड़ा।

बिना शक अगर कारास एक बार उसे दबोच लेता, तो फिर चालक के लिए खुद को छुड़ाना भारी होता। क्योंकि कारास अगर कुछ भी नहीं था, तो चालक से कम से कम दोगुने डील-डौल का मालिक तो जरूर था।

लेकिन हेलीकॉप्टर चालक भी मानो बहुत हरफनमौला व्यक्ति था।

कारास उसे छू भी पाता, उससे पहले ही उसने राइफल का बर्स्ट फायर खोल दिया।

धायं, धायं, धायं !

एक साथ कई गोलियाँ राइफल से बाहर निकलीं और वह कारास के सीने में समाती चली गई।

कारास हृदयविदारक ढंग से चीखा।

बिल्कुल ऐसा लगा, जैसे उसके सीने में कई जगह से खून के फव्वारे छूट पड़े हों।

वह सचमुच बहुत दहला देने वाला मंजर था।

"कारास !" करण सक्सेना चीखता हुआ कारास की तरफ झपटा।

मगर उससे पहले ही कारास वहीं नीचे गिरकर ढेर हो गया।

तत्काल हेलीकॉप्टर चालक की राइफल फिर आग उगलने के लिए कमांडर करण सक्सेना की तरफ घूमी।

लेकिन इस मर्तबा कमांडर करण सक्सेना भी तैयार था। चालक शायद भूल गया था कि राइफल करण सक्सेना के हाथ में भी थी। चालक फायर करता, उससे पहले ही करण सक्सेना ने ट्रिगर दबा दिया।

गोली सनसनाती हुई सीधे चालक की राइफल में जाकर लगी।

हेलीकॉप्टर चालक का पूरा हाथ बिल्कुल इस तरह झनझना उठा, जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करंट उसे छू गया हो।

राइफल उसके हाथ से छूट गई।

फिर करण सक्सेना ने उसे संभलने का अवसर नहीं दिया। उसने राइफल रौनक शाह के हाथ में पकड़ा दी, जिससे उसने कॉलेज प्रिंसिपल को कवर करके रखा और फिर उसने बॉक्सिंग के राइट पंच और लेफ्ट पंच से हेलीकॉप्टर चालक को बुरी तरह धुन डाला।

हेलीकॉप्टर चालक ने उसके ऊपर हावी होने की कोशिश की, लेकिन फिर करण सक्सेना ने उसे कोई अवसर नहीं दिया।

कारास की मौत ने उसके ऊपर जुनून तारी कर दिया था।

□□□

उसी हंगामे के दौरान एकाएक हेलीकॉप्टर चालक ने एक ऐसा कदम उठाया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी ।

हेलीकॉप्टर चालक को जब यह लगा कि उसका बस नहीं चल रहा है और वह कमांडर करण सक्सेना से जीत नहीं पाएगा, तो उसने झटके के साथ अपनी बेल्ट में खोंसा चाकू बाहर निकाल लिया ।

करण सक्सेना और रौनक शाह एक पल के लिए तो समझ नहीं पाए, वह क्या करने वाला है ।

जबकि चाकू हाथ में आते ही उसका हाथ हवा में बिजली की तरह लपलपाया और फिर अपने ही पेट को फाड़ता चला गया ।

करण सक्सेना और रौनक शाह, दोनों हतप्रभ रह गये ।

हक्के-बक्के ।

उन्होंने सोचा भी न था कि वह आदमी खुद ही अपने आपको चाकू घोंप लेगा । कॉलेज प्रिंसिपल भी उसकी इस हरकत पर विस्मित रह गया ।

जबकि हेलीकॉप्टर चालक ने अपने पेट में पूरी निर्दयता के साथ एक मर्तबा और चाकू घोंपा तथा फिर वहीं हेलीपैड के नजदीक ढेर हो गया ।

उसके शरीर से थुल-थुल करके खून बहने लगा, जबकि जीवन के अंतिम क्षणों में भी वह मुस्कुराया ।

उसकी वह मुस्कुराहट विजय से भरी थी ।

"तुम अब भाग नहीं पाओगे ।" वह करण सक्सेना की तरफ देखता हुआ बोला, "मैंने तुम्हारे इस जेल से फरार होने के तमाम रास्ते बंद कर दिये हैं ।"

"कैसे ?" करण सक्सेना चौंका ।

"इस कंपाला जेल के अंदर सिर्फ एक ही आदमी ऐसा है, जो हेलीकॉप्टर चलाना जानता है और वह मैं हूँ, सिर्फ मैं । लेकिन अब मेरी मौत के साथ ही तुम्हारा वह रास्ता भी बंद हो गया है ।"

हेलीकॉप्टर चालक की वह बात सुनकर रौनक शाह ने कुछ कहना चाहा, लेकिन कमांडर करण सक्सेना ने उसे कुछ भी बोलने से रोका ।

उसी क्षण अपने चेहरे पर विजयी मुस्कुराहट लिए वह हेलीकॉप्टर चालक इस दुनिया से विदा हो गया ।

"कमांडर !" उसके मरते ही रौनक शाह तुरंत बोला, "तुमने यह बात मुझे इसे बताने क्यों नहीं दी कि आप भी हेलीकॉप्टर चलाना जानते हो ?"

"क्योंकि मेरे दोस्त, यह हमारा दुश्मन जरूर था ।" करण सक्सेना ने धैर्य के साथ कहा, "लेकिन बहादुर दुश्मन था । जो अपने फर्ज के लिए, अपने कर्तव्य के लिए कुर्बानी देना जानता था । मैं नहीं चाहता था कि इतनी बड़ी कुर्बानी देते समय इसके चेहरे पर हताशा के चिह्न आये ।"

कॉलेज प्रिंसिपल ने पुनः बेहद प्रभावित निगाहों से करण सक्सेना की तरफ देखा । अब उसका यह विचार और भी ज्यादा पुख्ता हो गया कि वह कोई चोर-डाकू नहीं था ।

"चलो प्रिंसिपल, तुम्हें अभी हमारा थोड़े समय तक और साथ देना है ।"

वह तीनों अब नीले रंग के हेलीकॉप्टर की तरफ बढ़ गये ।

अगले ही पल वह हेलीकॉप्टर अभेद्य कंपाला जेल की बाउंड्री वॉल की तरफ उड़ा जा रहा था और फिर उससे दूर होता चला गया ।

जिस कंपाला जेल से आज तक कोई फरार नहीं हो सका था, उसी कंपाला जेल से आज कमांडर करण सक्सेना, रौनक शाह को लेकर निकल भागा था ।

□□□

सूर्य अपनी हल्की-हल्की पीली ज्योत्सना बिखेरकर उदय हुआ ।

कंपाला की वह सुबह बड़ी खामोश सुबह थी ।

आसमान में हल्के हल्के बादल घिरे हुए थे और ऐसा लगता था, जैसे आज बारिश होगी ।

वह एक फाइव स्टार डीलक्स इंटरकॉन्टिनेंटल होटल था, जिसके बेड पर कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह पड़े हुए गहरी नींद सो रहे थे । उस वक्त उनके चेहरे पर हल्का-सा मेकअप था, जिससे उन्हें फौरन पहचानना मुश्किल था । दरअसल रात जेल से फरार होने के बाद उन्होंने कॉलेज प्रिंसिपल को हेलीकॉप्टर के साथ ही साथ घने जंगल में ही छोड़ दिया था और फिर वहाँ से निकल भागे थे ।

सुबह के उस समय 4:00 बज रहे थे, जब उन्होंने उस फाइव स्टार होटल में सुइट किराये पर लिया और सुइट में आते ही बिस्तर के हवाले हो गये ।

हाँ, होटल में दाखिल होने से पहले उन्होंने एक बहुत अच्छा काम किया । उन्होंने अपने चेहरे पर हल्का-हल्का मेकअप पोत लिया था । मेकअप का सामान उन्हें एक डिपार्टमेंटल स्टोर से मिल गया, जो चौबीसों घंटे खुलता था ।

ग्यारह बजे उन दोनों की आँख खुली । तभी सुइट की कॉलबेल भी चीख उठी ।

"यहाँ कौन आ गया ?" करण सक्सेना ने रौनक शाह की तरफ गर्दन घुमाई ।

"मैं देखता हूँ कि कौन है !"

रौनक शाह बिस्तर छोड़कर खड़ा हुआ और दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

आगंतुक होटल का वेटर था ।

"गुड़ मॉर्निंग साहब !"

कमांडर करण सक्सेना अभी भी बेड पर लेटा था और सावधान था ।

"मैं सुबह से तीन मर्तबा आपके सुइट की कॉलबेल बजा चुका हूँ ।" वेटर अंदर आकर बोला, "लेकिन आप लोग थे कि बड़ी गहरी नींद सोये हुए थे ।"

"हम दरअसल थोड़े थके-हारे थे ।" करण सक्सेना ने डनहिल सुलगाते हुए जवाब दिया, "इसलिये बिस्तर पर पड़ने के बाद कुछ पता न रहा ।"

"ओह ! क्या आप बेड टी लेंगे ?"

"अब बेड टी का टाइम नहीं रहा ।" करण सक्सेना बोला, "तुम सीधे नाश्ता ही ले आओ ।"

"थैंक्यू साहब ! मैं बस यही पूछने आया था ।"

वेटर चला गया ।

जब तक वेटर नाश्ता लेकर आया, तब तक वह दोनों सभी नित्यकर्मों से निवृत होकर फ्रेश हो चुके थे ।

होटल का वेटर नाश्ते के साथ-साथ उस दिन का अखबार भी अपने साथ ले आया ।

कमांडर करण सक्सेना ने अखबार खोलकर अपने सामने फैला लिया और अखबार के फ्रंट पेज पर निगाह पड़ते ही वह बुरी तरह चौंका । फ्रंट पेज पर उसकी तथा रौनक शाह की काफी बड़ी-बड़ी तस्वीर छपी हुई थी, जो उसी की तरफ झांकती महसूस हो रही थी ।

उसके बराबर में बैठे रौनक शाह की निगाह भी उन तस्वीरों पर पड़ी ।

"आप लोगों को शायद मालूम नहीं साहब !" वेटर नाश्ते के सामान सेंटर टेबल लगाता हुआ बोला, "आज पूरे शहर में बस एक ही बात की चर्चा है, कंपाला जैसी अभेद्य जेल से दो कैदियों के फरार होने की चर्चा तमाम टीवी चैनल, तमाम रेडियो स्टेशन, सभी समाचार पत्र, चीख-चीखकर बस एक ही बात कह रहे हैं कि कंपाला जैसी अभेद्य जेल को तोड़ डाला गया । जिस जेल से आज तक कोई फरार नहीं हो सका था, उसी जेल से दो कैदी निकल भागे ।"

"क्या कह रहे हो !" करण सक्सेना का चौंकता स्वर, "कंपाला जेल से दो कैदी निकल भागे !"

"जी साहब ! यह देखो, इस अखबार के कवर पेज पर भी उन्हीं दोनों की तस्वीर छपी है ।"

करण सक्सेना ने नाटकीय अंदाज में अखबार के फ्रंट पेज पर निगाह दौड़ाई ।

"रियली सरप्राइज !" करण सक्सेना का विस्मयकारक लहजा, "मैं यकीन नहीं कर पा रहा हूँ कि कंपाला जैसी अभेद्य जेल को भी तोड़ डाला गया ।"

"सिर्फ आप ही नहीं, बल्कि शहर में कोई भी इस बात पर यकीन नहीं कर पा रहा है। लेकिन यह सच है।"

वेटर तब तक सेंटर टेबल पर नाश्ता लगा चुका था।

उसके बाद वो वहाँ से चला गया।

शुक्र था जो उसने उन्हें पहचाना नहीं था।

"कमांडर।" वेटर के जाते ही रौनक शाह ने लपककर सुइट का दरवाजा अंदर से बंद किया और दौड़कर उसके पास आया, "यह तो भारी गड़बड़ हो गई है। जिस तरह से हमारे फोटोग्राफ में पब्लिसिटी की जा रही है, उससे तो हमारे लि ए इस शहर में कदम-कदम पर खतरा पैदा हो जायेगा।"

"चिंता मत करो।" करण सक्सेना बोला, "ऐसा कुछ नहीं होने वाला है।"

"लेकिन...।"

"रौनक शाह, तुम भूल रहे हो कि हमारे चेहरे पर मेकअप है। और अगर मेकअप के बावजूद हमें पहचानना आसान होता, तो यह वेटर ही हमें पहचान लेता। जबकि ऐसा नहीं हुआ है। वेटर को हमारे ऊपर हल्का-सा भी शक नहीं हुआ। तुम सारी परेशानियाँ अपने दिमाग से झटको और नाश्ता करो। अब अगर तुम्हारे सामने कहीं कोई मुश्किल आती है, तो मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

रौनक शाह उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया और उसने नाश्ता करना शुरु किया।

"यह बताओ।" करण सक्सेना भी नाश्ता करता हुआ बोला, "हनीफ कड़ावाला से अब हमारी मुलाकात कहाँ होगी?"

"उससे मिलने की बस एक ही जगह है।"

"कौन-सी?"

"यहाँ कंपाला में अवन्ते कार्डे एरेना नामक एक स्थान है, जो हिप्पियों का अड्डा है। उसी हिप्पियों के अड्डे पर हनीफ कड़ावाला ने मुझसे मिलने के लिए कहा था। दरअसल हनीफ कड़ावाला ने आईएसआई एजेंटों से छिपने के लिए हिप्पी का रूप धारण किया हुआ है और वह उन्हीं के ग्रुप के साथ रहता है। लेकिन अब एक मुश्किल है।"

"क्या?"

"फिलहाल यह कहना मुहाल होगा कि हनीफ कड़ावाला अभी भी अवन्ते कार्डे एरेना में हिप्पियों के साथ मौजूद है या नहीं। क्योंकि मेरी उससे मुलाकात हुए कई दिन गुजर चुके हैं।"

"क्या तुम्हें अवन्ते कार्डे एरेना के अलावा हनीफ कड़ावाला का और कोई पता-ठिकाना मालूम है?"

"नहीं ।" रौनक शाह की गर्दन इनकार की सूरत में हिली, "मुझे उसका कोई और पता-ठिकाना मालूम नहीं ।"

"उसने तुम्हें हिप्पियों के उस अड्डे पर किस टाइम आने के लिये बोला था ?"

"रात के आठ बजे ।"

"ठीक है ।" करण सक्सेना अपना नाश्ता खत्म करता हुआ बोला, "तो फिर आज रात को ठीक आठ बजे हम हिप्पियों के उस अड्डे पर जायेंगे ।"

"और अगर वहाँ हनीफ कड़ावाला से हमारी मुलाकात न हुई तो ?"

"तब की तब देखेंगे रौनक शाह ! फिलहाल पहले से तमाम आइडिया लगाना सही नहीं है ।"

□□□

शाम के अभी 7:30 ही बजे थे, जब कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह अवन्ते कार्डे एरेना में पहुँच गये ।

वाकई पूरे शहर में आज कंपाला जेल से भाग निकलने वाले दोनों कैदियों की चर्चा थी । हर कोई कंपाला जेल के टूटने से हैरान था । स्तब्ध था । उस घटना की इस तरह से चर्चा हो रही थी, जैसे हिरोशिमा-नागासाकी के ऊपर बम गिर पड़ा हो या अमेरिका-इराक का युद्ध छिड़ गया हो । कंपाला जेल की अभेद्य जेल के तौर पर इतनी लोकप्रियता थी, यह उस चर्चा से ही जाहिर था ।

बहरहाल हंगामा अवन्ते कार्डे एरेना में भी कुछ कम नहीं था ।

हिप्पी लड़के-लड़कियों का एक बड़ा जमघट था, जो वहाँ पॉप धुन पर पूरी मस्ती के साथ नृत्य कर रहा था । सब हिप्पियों ने रंग-बिरंगी और बड़ी अजीबो-गरीब-सी ड्रेस पहनी हुई थी ।

वह सब वे लोग थे, जो आज के समाज से विद्रोह करके अपनी-अपनी गति व प्यार का अंदाज बदलते जा रहे थे ।

सब नशे में धुत थे ।

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह भी उस समय हिप्पियों जैसे कपड़े पहने थे ।

करण सक्सेना ने हिप-हग्गर पैंट और गौरीसन बेल्ट पहन रखी थी । इसके अलावा क्लेंसी हैट की जगह लंबे बालों वाला विग था, जिसके रेशमी सुनहरे बाल उसके कंधों तक बढ़े हुए थे । कुछ ऐसी ही ड्रेस रौनक शाह ने भी पहनी हुई थी । सिर्फ उसके चेहरे पर सुनहरे फ्रेम का एक चश्मा एक्स्ट्रा था ।

"अगर इस भीड़-भड़क्के में तुम्हें हनीफ कड़ावाला दिखाई देगा ।" करण सक्सेना चारों तरफ निगाह दौड़ाता हुआ बोला, "तो क्या तुम उसे पहचान लोगे ?"

"एकदम ! गोली की तरह !" रौनक शाह ने बे-हिचक कहा, "जब मैं उससे पहली मर्तबा मिला था, तब भी वह हिप्पी वेशभूषा में ही था ।"

"और तुम ?"

"मैं भी कुछ-कुछ ऐसी ही ड्रेस पहनकर यहाँ आया था ।"

"फिर ठीक है ।"

उन दोनों के पैर पॉप धुन पर धीरे-धीरे थिरक रहे थे ।

उस जैसी जगह पर वह सारा नाटक करना जरूरी था ।

तभी धुन और तेज हो गई तथा वहाँ का वातावरण पहले से भी ज्यादा मस्ती भरा नजर आने लगा ।

उन दोनों की दृष्टि बार-बार अवन्ते कार्डे एरेना के मोटे-मोटे जलते-बुझते अक्षरों में उलझी जा रही थी ।

वहाँ की अधिकांश लड़कियों ने माइक्रो मिनी स्कर्ट और बड़े-बड़े प्रिंट वाले ब्लाउज पहने हुए थे । उनकी जांघे और पिंडलियाँ शीशे की तरह चमक रहे थे और उन लड़कियों ने ब्रैजियर्स का प्रयोग नहीं किया था । इसी कारण उनकी भारी-भरकम ब्रेस्ट हिलती हुई प्रतीत हो रही थी ।

रौनक शाह की आँखें हनीफ कड़ावाला को देखने के लिए व्यग्र थी । हालांकि अभी तक उसके वहाँ दूर-दूर तक दर्शन नहीं हुए थे ।

वक्त धीरे-धीरे गुजरने लगा ।

तभी रौनक शाह को जोर से अस्थमा का धसका उठा । एक बार धसका उठा, तो फिर उसकी साँस उखड़ गई ।

"रौनक शाह !" करण सक्सेना ने उसे कसकर पकड़ा ।

"क... कुछ नहीं हुआ कमांडर, क... कुछ नहीं ।"

रौनक शाह ने जल्दी में अपनी जेब से इनहेलर निकाला और फिर उसकी दवाई अपने मुँह में स्प्रे की ।

थोड़ी देर रौनक शाह बुरी तरह हाँफता रहा ।

जब उसकी साँस उखड़ती थी, तो उसका पूरा चेहरा लाल-भभूका हो जाता था और आँखों में सुर्ख-सुर्ख डोरे उभर आते थे ।

"तुम्हें अपनी इस बीमारी का कोई परमानेंट इलाज कराना चाहिये रौनक शाह !" करण सक्सेना उसे सख्ती से ताकीद करता हुआ बोला, "वरना किसी दिन इस बीमारी की वजह से तुम्हारा कोई बड़ा नुकसान हो सकता है ।"

"अ... आप ठीक कह रहे हैं कमांडर, मैं एक बार फिर डॉक्टरों को दिखाना शुरु करूँगा ।"

रौनक शाह कुछ देर हाँफता रहा । उसके बाद उसकी साँसें संतुलित हो गईं और फिर वह पहले की तरह ही व्यग्रतापूर्वक हनीफ कड़ावाला को तलाश करने लगा ।

करण सक्सेना की बैचेन निगाहें भी अब चारों तरफ फिर रही थीं ।

वहाँ ज़्यादातर अफ्रीकन लड़के-लड़कियाँ ही थे । ऐसी परिस्थिति में उस जगह करण सक्सेना के लिए भी हनीफ कड़ावाला को पहचानना कुछ मुश्किल काम न था । आखिर वह पाकिस्तानी था और पाकिस्तानी तथा अफ्रीकन में जमीन-आसमान का फर्क होता है ।

अवन्ते कार्डे एरेना में उन्हें हनीफ कड़ावाला को ढूंढते हुए रात के 10:00 बज गये, लेकिन इस बीच हनीफ कड़ावाला की एक हल्की-सी झलक भी उन्हें देखने को न मिली ।

"कमांडर !" रौनक शाह धीमे स्वर में फुसफुसाकर बोला, "मुझे तो लगता है कि हम लोग यहाँ खामखाह अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं । हनीफ कड़ावाला अब यहाँ नहीं आयेगा ।"

"फिर भी उसका यहाँ इंतजार करना हमारी मजबूरी है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि हनीफ कड़ावाला का सिर्फ एक ही एड्रेस हमें मालूम है और वो है, यह जगह ।"

"आपकी बात ठीक है कमांडर, लेकिन हम किसी और तरह से भी तो हनीफ कड़ावाला तक पहुँचने की कोशिश कर सकते हैं ।"

"किस तरह से ?"

रौनक शाह अनुत्तरित हो गया ।

उस सवाल का उसके पास कोई जवाब न था ।

"सच तो यह है रौनक शाह !" करण सक्सेना बोला, "अगर हमने हनीफ कड़ावाला तक पहुँचना है, तो उस तक पहुँचने का सिर्फ अवन्ते कार्डे एरेना ही एकमात्र जरिया है ।"

"लेकिन वह यहाँ आये तभी तो कुछ बात बने कमांडर ।"

"मेरा दिल कहता है, वो यहाँ आयेगा ।"

"अच्छी बात है ।"

समय फिर बहुत धीमी गति से आगे सरकने लगा ।

जैसे-जैसे रात बढ़ रही थी, ठीक उसी अनुपात में वहाँ की रंगीनी भी बढ़ती जा रही थी ।

इस समय वहाँ सेक्स का खुला प्रदर्शन हो रहा था ।

आहें-कराहें छूट रही थीं ।

साढ़े दस बज गये ।

करण सक्सेना भी अब हनीफ कड़ावाला का इंतजार करते-करते थक चुका था और वह दोनों वहाँ से जाने का मन बना ही रहे थे कि तभी रौनक शाह की नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी ।

उसकी रंगत साँवली थी और वह लंबे-चौड़े कद-काठी वाला था । उसने हिप हग्गर पैंट और फुलदार प्रिंट टी शर्ट पहन रखी थी और वह धीरे-धीरे उन्हीं दोनों की तरफ बढ़ रहा था ।

रौनक शाह ने देखा, उसके बाल भी काफी बढ़े हुए थे और उसने अपनी शेव भी बहुत बढ़ा रखी थी ।

रौनक शाह की आँखें जैसे ही उसकी आँखों से मिली, तो उसके चेहरे पर चमक आ गई ।

रौनक शाह भी चौंका ।

"हनीफ !" बस यही एक शब्द उसके मुँह से निकला ।

और उस एक शब्द को सुनकर चौंका कमांडर करण सक्सेना भी था । उसकी निगाहें भी फौरन उस व्यक्ति पर पड़ गई ।

लेकिन करण सक्सेना के देखते ही देखते हनीफ कड़ावाला के चेहरे पर एकाएक भय के चिन्ह उजागर हुए । उसने दाएं-बाएँ देखा । ऐसा लगा, जैसे वह आतंकित हो उठा हो । उसके बाद वह तेजी से रौनक शाह की तरफ बढ़ा और बिल्कुल तूफान की तरह उसके बराबर में से गुजर गया ।

"हनीफ ।" रौनक शाह तेज सरसराये स्वर में बोला ।

लेकिन हनीफ कड़ावाला के कान पर जूं तक न रेंगी । रौनक शाह के बराबर में से गुजरते ही वह हिप्पियों की भीड़ में कहीं लोप हो गया ।

रौनक शाह उसके पीछे-पीछे झपटा और उसने हनीफ कड़ावाला को देखने की कोशिश की ।

मगर अपनी एक झलक दिखाने के बाद ही हनीफ कड़ावाला किसी जिन्न की भांति गायब हो चुका था । वह फिर कहाँ गया, किधर गया, किसी को कुछ पता न चला ।

करण सक्सेना और रौनक शाह ने मिलकर पूरा अवन्ते कार्डे एरेना छान मारा, लेकिन हनीफ कड़ावाला का कहीं कुछ पता न चला ।

करण सक्सेना भी उसके इस तरह गायब होने से हैरान था ।

"कमाल है ।" रौनक शाह बोला, "यह आदमी है या भूत है ।"

"उससे भी ज्यादा अहम सवाल यह है । "करण सक्सेना ने कहा, "कि वह सिर्फ एक झलक दिखाने के बाद इस तरह गायब क्यों हो गया ? क्या उसने तुम्हें कोई इशारा किया था ?"

"नहीं, कोई इशारा नहीं किया ।"

"लेकिन न जाने क्यों मुझे ऐसा लगा था ।" करण सक्सेना ने कहा, "कि तुम्हारे बराबर में गुजरते हुए उसका हाथ तुम्हारी जेब के अंदर गया था ।"

"क्या कह रहे हैं आप !" रौनक शाह चौंका, "म... मेरी जेब के अंदर !"

"हाँ, मुझे ऐसा लगा था ।"

रौनक शाह ने फौरन अपनी जेब के अंदर हाथ डालकर देखा और जेब में हाथ डालते ही वह चौंका । उसकी जेब में एक कागज का पुर्जा रखा था ।

रौनक शाह ने आनन-फानन वह कागज का पुर्जा निकाला और उसे खोलकर पढ़ा । उस पर लाल पेन से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था -

कल रात को ठीक दस बजे पनामा बार में मिलो ।

-हनीफ कड़ावाला

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह आश्चर्यचकित रह गये ।

□□□

पनामा बार कंपाला शहर के बिल्कुल आखिरी हिस्से में बना एक काफी बड़ा बार था । वह तीन मंजिली इमारत थी, जिसके अंदर वह पूरा बार चलता था । अलबत्ता तीसरी और आखिरी मंजिल पर छोटे-छोटे कमरे बने हुए थे । जो प्राइवेट केबिन थे और जो युवा जोड़ों के लिए मौज-मस्ती करने तथा शराबखोरी करने के लिए बनाए गये थे ।

पनामा बार के आसपास गांव-देहात ज्यादा लगता था, इसीलिए वहाँ इसी तरह के लोग भी ज्यादा आते थे । कुल मिलाकर वहाँ खूब भीड़-भड़क्का रहता था और वह बार अच्छी-खासी आमदनी का जरिया था ।

"हैरानी है ।" रौनक शाह बोला, "हनीफ कड़ावाला ने हमें इतने घटिया बार में बुलाया है, जहाँ सिर्फ निम्न श्रेणी के लोग ही जाना पसंद करते हैं ।"

"जहाँ तक मेरी बुद्धि कहती है, इसके पीछे भी एक खास वजह है ।" करण सक्सेना विचारपूर्ण लहजे में बोला ।

"क्या ?"

"हनीफ कड़ावाला के पीछे क्योंकि आईएसआई के एजेंट पड़े हुए हैं, इसीलिए जरूर उसने अपने छिपने के वास्ते एक ऐसी जगह का चुनाव किया है, जहाँ किसी का उसके ऊपर आसानी से शक न जा सके ।"

"शायद आप ठीक कह रहे हैं कमांडर ।"

रौनक शाह को करण सक्सेना की बात में दम लगा ।

बहरहाल अगले दिन रात को ठीक 10:00 बजे वह पनामा बार में पहुँच गये ।

वाकई उस बार की हालत मछली मार्केट जैसी थी । जहाँ फुटपाथिये लोग भरे पड़े थे और देसी दारू चढ़ाने के बाद वहाँ गाली-गलौज तथा शोर-शराबे का माहौल गर्म था । अंदर कहीं फुल वॉल्यूम पर गानों का एक टेपरिकॉर्डर भी बज रहा था, लेकिन शोर-शराबे में उसकी आवाज भी कहीं दबकर रह गई थी ।

वह दोनों पनामा बार के सेंट्रल हॉल में पहुँचे । वहाँ लकड़ी की पतली-पतली मेजें और टिपाइयाँ भरी पड़ी थी, जिन पर बड़ी संख्या में अफ्रीकन मौजूद थे । उसी सेंट्रल हॉल में एक जीना ऊपर चला गया था । करण सक्सेना और रौनक शाह ने ऊपर की तरफ निगाह उठाकर देखा, तो उन्हें ऊपर तीनों मंजिलों के टेरेस नजर आये । वह गोल-गोल टेरेस थे और किसी बाबा आदम की लकड़ी के बने मालूम होते थे ।

"ऊपर चले ?" रौनक शाह बोला ।

"चलो ।"

कमांडर करण सक्सेना उस समय अपनी चिर-परिचित ड्रेस में था । काला लंबा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट । एक रिवॉल्वर उसके ओवरकोट की जेब में थी और दूसरी क्लेंसी हैट की ग्लिप में ।

करण सक्सेना ने उस वक्त अपने दोनों हाथ ओवरकोट की जेब में ठूंसे हुए थे और उसके दाएँ हाथ की उंगलियाँ रिवॉल्वर के बैरल पर सख्ती के साथ जकड़ी थी और एक उंगली ट्रिगर पर थी । किसी भी क्षण वह गोली चलाने के लिए तत्पर था ।

रौनक शाह की जेब में भी एक पॉइंट 32 का रिवॉल्वर था ।

वह दोनों पनामा बार की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए तीसरी मंजिल पर पहुँचे । वहाँ हर मंजिल पर हंगामे का माहौल था । सिर्फ तीसरी मंजिल पर थोड़ी शांति थी । तीसरी मंजिल पर जितने भी कमरे बने हुए थे, उनमें से तकरीबन सभी के दरवाजे अंदर से बंद थे और दरवाजों के पीछे से स्त्री-पुरुषों की मादक सिसकारियाँ या फिर उनके खिलखिलाकर हँसने की आवाजें गूँज रही थीं ।

वह दोनों रुम नंबर 34 के सामने जाकर खड़े हो गये ।

उस रुम का दरवाजा भी अंदर से बंद था ।

"मैं दरवाजा खटखटाता हूँ कमांडर !"

"नहीं, अभी रुको ।"

करण सक्सेना ने बहुत सावधानीपूर्वक दाएं-बाएँ देखा । तीसरी मंजिल पर कमरों से बाहर कोई न था । उसने तुरंत रुमाल से ढककर अपनी जेब से कोल्ट रिवॉल्वर बाहर निकाल ली और फिर रुमाल से ढके-ढके रिवॉल्वर दरवाजे की तरफ तानी ।

"अब दरवाजा खटखटाओ ।" फिर करण सक्सेना बोला ।

रौनक शाह ने धीरे से दरवाजा खटखटाया ।

"कौन ?" तुरंत अंदर से एक भारी आवाज उभरी ।

"मैं !" रौनक शाह का तेज स्वर, "रौनक ।"

"अकेले हो ?"

"नहीं, कमांडर भी मेरे साथ हैं ।"

"दरवाजा खुला है, अंदर आ जाओ ।"

रौनक शाह की दृष्टि करण सक्सेना से टकराई और उसने दरवाजा अंदर की तरफ धकेलकर देखा । दरवाजा वाकई खुला था ।

वह दोनों अंदर कमरे में दाखिल हो गये ।

सारा वातावरण बड़ा ही रहस्यमयी नजर आ रहा था । कमरे में ट्यूब लाइट जल रही थी, लेकिन वहाँ कोई न था । अलबत्ता कमरे को दो भागों में विभक्त करता सामने दीवार के पास एक पर्दा पड़ा हुआ था और ऐसा लगता था, जो भी व्यक्ति था, उस पर्दे के पीछे था ।

"दरवाजे की अंदर से सिटकनी चढ़ा दो ।" फिर वही भारी-भरकम आवाज गूँजी ।

रौनक शाह ने अब करण सक्सेना की तरफ देखा ।

करण सक्सेना ने उसे आँखों ही आँखों में कुछ इशारा किया । रौनक शाह ने आगे बढ़कर दरवाजे की सिटकनी चढ़ा दी ।

"बैठो ।"

वहीं दो कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं, कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह उन कुर्सियों पर बैठ गये ।

तभी पर्दे के पीछे से एक साया बाहर निकल आया । उसे साया कहना इसलिये मुनासिब होगा, क्योंकि उसने काली पैंट तथा काली शर्ट पहनी हुई थी और आँखों पर ब्लैक ग्लासेज का चश्मा भी चढ़ा था ।

दोनों ने उसे देखते ही पहचाना । वह हनीफ कड़ावाला ही था और उसके हाथ में भी लोडेड रिवॉल्वर थी ।

"क्या बात है ?" रौनक शाह बोला, "बड़ी सावधानी से पेश आ रहे हो ?"

"तुम नहीं जानते मेरे दोस्त, आईएसआई के एजेंट किस कदर मेरी जान के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हैं । अगर मैं कंपाला आने के बाद हर एक कदम फूंक-फूंककर न रखता, तो अब तक वह लोग सैकड़ों मर्तबा मुझे मार चुके होते ।"

हनीफ कड़ावाला ने अपनी रिवॉल्वर वापस अपनी जेब में रख ली ।

करण सक्सेना ने भी रुमाल हटाकर रिवॉल्वर को अपनी ओवरकोट की जेब में सरकाया ।

"यानी आप लोग भी पूरी सावधानी के साथ अंदर दाखिल हुए थे ?"

"यस, यह सब जरूरी था ।" करण सक्सेना ने शांतिपूर्वक कहा ।

"वेरी गुड, मुझे आपकी यह अदा पसंद आई कमांडर !"

"लेकिन मैं एक बात नहीं समझ पा रहा हूँ ।" करण सक्सेना बोला ।

"क्या ?"

"क्या तुम हिप्पी का वेश धारण करके रोजाना रात को 8:00 बजे अवन्ते कार्डे एरेना में रौनक शाह से मिलने जाते थे या फिर रात ही गये थे ?"

"नहीं कमांडर, मैं रात ही गया था । मैं इतना बेवकूफ नहीं हूँ, जो रोजाना वहाँ जाकर अपनी जान जोखिम में डालता ।"

"इसका मतलब तुम्हें मालूम था ।" करण सक्सेना का कौतूहलतापूर्ण स्वर, "कि रात रौनक शाह एरेना में आने वाला है ?"

"गारंटी तो नहीं थी; लेकिन हाँ, शक जरूर था कि रात रौनक शाह वहाँ आ सकता है ।"

"शक कैसे था ?" करण सक्सेना की उत्सुकता बढ़ी ।

रौनक शाह के चेहरे पर भी सस्पेंस के भाव थे ।

"बहुत साधारण-सी बात है कमांडर ।" हनीफ कड़ावाला बोला, "दरअसल अखबारों और टीवी चैनलों की मार्फत मुझे यह पता चल गया था कि आप और रौनक शाह कंपाला जेल से भाग निकले हो । उसके बाद मेरे लिए यह अंदाजा लगाना बहुत सहज था कि अब आप लोग सबसे पहले मुझसे ही मिलने की कोशिश करोगे और मेरा सिर्फ एक एड्रेस आपको मालूम है, अवन्ते कार्डे एरेना । इसीलिए देर सवेर आप मुझसे मुलाकात करने की चाह में वहाँ जरूर पहुँचेंगे । इसलिये मैं रात वहाँ गया था और इसे मैं अपनी खुशकिस्मती कहूँगा कि पहली विजिट में ही मेरी आप लोगों से मुलाकात हो गई ।"

करण सक्सेना की आँखों में हनीफ कड़ावाला के प्रति प्रशंसा के भाव उभर आये ।

सचमुच वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था, वरना यह बात कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह के दिमाग में भी नहीं आई थी कि उनके जेल से भागने की खबर तमाम लोगों के साथ-साथ हनीफ कड़ावाला के कानों तक भी पहुँची होगी । इस दृष्टि से देखा जाये, तो न्यूज़ मीडिया का वह हंगामा उनके लिए फायदेमंद ही रहा था ।

"लेकिन एक बड़ा प्रमुख सवाल और है ।" वह शब्द रौनक शाह ने कहे ।

"क्या ?"

"जब तुम हमसे मिलने के लिए अवन्ते कार्डे एरेना में गये थे, तो फिर तुम एकाएक वहाँ से भागे क्यों ?"

"दरअसल वहाँ हिप्पियों में घुले-मिले पहले से ही आईएसआई के एजेंट भी मौजूद थे और वहाँ पहुँचने के चंद सेकंड बाद ही मेरी निगाह उन पर पड़ गई थी । इसलिये मैं बड़ी ही खामोशी के साथ अपना मैसेज तुम्हारी जेब में रखकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ ।"

"ओह !"

रौनक शाह खामोश हो गया ।

कमरे में रहस्यमयी माहौल अभी भी व्याप्त था ।

"एनीवे जो हुआ, हुआ ।" करण सक्सेना ने अपनी जेब से डनहिल का पैकेट निकाला और उसमें से एक सिगरेट सुलगाता हुआ बोला, "तुमने मुझे कंपाला बुलाया था और मैं कंपाला आ चुका हूँ । अब तुम मुझे यह बताओ कि फारुख अहमद मसूदी कहाँ हैं और उनके लिए मुझे क्या करना है ?"

हनीफ कड़ावाला ने कुर्सी पर बैठे-बैठे बड़ी बेचैनी के साथ पहलू बदला ।

"मुझे एक सिगरेट मिलेगी ?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं ।"

कमांडर करण सक्सेना ने सेंटर टेबल पर रखा सिगरेट का पैकेट और लाइटर हनीफ कड़ावाला की तरफ बढ़ाया ।

हनीफ कड़ावाला के व्यक्तित्व में ऐसा कुछ था, जो करण सक्सेना को प्रभावित कर रहा था । उसकी आँखें बता रही थीं कि वह दृढ़ इरादों वाला इंसान है और यकीन करने के काबिल है ।

हनीफ कड़ावाला ने भी पहलू बदलते हुए सिगरेट सुलगायी और फिर धुएँ के ढेर सारे गोल-गोल छल्ले बनाकर छत की तरफ उछाले ।

"कमांडर, सबसे पहले तो एक बात समझ लें ।" हनीफ कड़ावाला बोला ।

"क्या ?"

"फारुख अहमद मसूदी इस वक्त भी जहाँ भी है, खतरे में है ।" उसका लहजा खोया-खोया था, "वह बड़ी भारी मुश्किल में फँसा हुआ है । दरअसल फारुख अहमद मसूदी नाम का वह जो इंसान है, उसने अपनी जिंदगी में बस दुख ही दुख देखे हैं । उसकी जिंदगी एक तपता हुआ रेगिस्तान है, जिसमें कभी कोई बाहर आई ही नहीं । जिसमें ऐसी कभी कोई कोपल फूटी ही नहीं, जिससे उसे सुकून हासिल हो, राहत हासिल हो । अलबत्ता उसने अपने मुल्क और कौम के लिए कब क्या नहीं किया ! वह सोते-जागते, उठते-बैठते हमेशा अपने मुल्क की बेहतराई की बातें करता था । लेकिन पाकिस्तान में उसे हमेशा मुहाजिर (शरणार्थी) समझा गया । जबकि फारुख अहमद मसूदी के स्वर्गवासी पिता मुस्लिम लीग के उन आलातरीन लीडरों में शामिल थे, जिन्होंने पाकिस्तान की बुनियाद रखी थी । जिन्होंने हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे की तंजीम चलाई थी । वह कायदे आजम जिन्ना

के साथी थे। लेकिन जानते हो, पाकिस्तान के बंटवारे के बाद फारुख अहमद मसूदी के उन्हीं पिता का क्या हश्र हुआ?"

"क्या हश्र हुआ?"

करण सक्सेना और रौनक शाह स्तब्ध भाव से बैठे हुए हनीफ कड़ावाला की बातें सुन रहे थे।

"उन्हें भी मुहाजिर ही करार दिया गया और पाकिस्तान बनने के बाद कराची में हुए सिंधी-मुहाजिर दंगों में वह बीच-बचाव करते हुए मारे गये। लेकिन सच तो यह है, फारुख अहमद मसूदी के दिल में पाकिस्तान के प्रति तब भी कोई कड़वाहट न आई। वह पूरे दिलोजान से मुल्क की बेहतरी के लिए काम करता रहा। लेकिन उसकी बीवी और दोनों बेटियों के साथ जो कुछ हुआ, उसे फारुख अहमद मसूदी बर्दाश्त न कर सका। उस घटना ने उसे बुरी तरह झकझोर डाला और वह अंदर ही अंदर टूट गया। जब मसूदी की दोनों बेटियों का अपहरण कर लिया गया था और वह प्रयोगशाला में कैद था तो मैंने खुद देखा है कमांडर, वह रातों को उठ-उठकर बैठ जाया करता था। वह हमेशा बस एक ही बात कहता, यह मुल्क मेरे साथ ठीक नहीं कर रहा है। यह जुल्म है, गुनाह है। यह बात मेरे पाक परवरदिगार को भी नागवार गुजरेगी। मसूदी की जबान से उन दिनों मैंने यह बात अक्सर सुनी कि मुझे अब महसूस होता है, इस मुल्क की बुनियाद पड़नी ही नहीं चाहिये थी। हिंदुस्तान का विभाजन ही सबसे गलत कदम था, जिसका खामियाजा पाकिस्तान के आम शहरी को भुगतना पड़ रहा है और वह रहती दुनिया तक भुगतेगा।"

"यानी फारुख अहमद मसूदी की सोच विस्तृत हो गयी थी?"

"नहीं कमांडर, सोच तो उस आदमी की पहले से ही विस्तृत थी।" हनीफ कड़ावाला सिगरेट का एक कश और लगाता हुआ बोला, "वह हमेशा पूरे यूनिवर्स बारे में सोचता था, पूरे ब्रह्मांड के बारे में। और यही बात उसकी पाकिस्तान से दुश्मनी की असली वजह भी बनी। वरना वह झगड़ा ही न होता, जो हुआ।"

"ठीक बात है।"

करण सक्सेना भी डनहिल के छोटे-छोटे कश लगाता रहा।

"अब मैं आपको फारुख अहमद मसूदी के बारे में एक ऐसा रहस्य और बताता हूँ कमांडर, जिसे सुनकर आप गारंटी से चौंकेंगे।"

"क्या रहस्य है?"

करण सक्सेना और रौनक शाह के चेहरे पर व्यग्रता के भाव झलके।

"दरअसल मसूदी की दोनों बेटियां, जिनकी हालत नाजुक थी और जो पाकिस्तान का बॉर्डर क्रॉस करते समय मारी गई, वह खुद नहीं मरी थीं।"

"फ... फिर?"

"कमांडर !" हनीफ कड़ावाला थोड़ा आगे को झुक गया और वह बड़े सनसनीखेज अंदाज में फुसफुसाया, "उन दोनों की हत्या हुई थी और आपको यह सुनकर झटका लगेगा कि उन दोनों की हत्या खुद फारूख अहमद मसूदी ने की थी ।"

करण सक्सेना के नेत्र हैरत से उबल पड़े ।

"क... क्या कह रहे हो तुम ?"

"दिस इज क्वाइट राइट कमांडर !"

"रियली ?"

"ऑफकोर्स रियली !"

करण सक्सेना और रौनक शाह अपनी-अपनी जगह सन्न बैठे रह गये ।

"क्या फारूख अहमद मसूदी ने उन दोनों की हत्या तुम्हारे सामने की थी ?"

"नहीं ।"

"फिर तुम यह बात इतने विश्वास के साथ कैसे कह सकते हो कि उन्हें मसूदी ने ही मारा ?" करण सक्सेना की आवाज में संशय के भाव थे ।

"अच्छा सवाल है । दरअसल जिस समय हम चारों बॉर्डर क्रॉस करते समय उस ठंडे प्रदेश से गुजर रहे थे, तो मैं टॉयलेट जाने के लिए कोई 15 मिनट के वास्ते उन तीनों से अलग हुआ था और जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि मसूदी के पास उसकी दोनों बेटियों की लाश पड़ी थी और वह रो रहा था । उनके शव देखते ही मैं भाँप गया कि वह अपनी मौत नहीं मरी थी, बल्कि गला घोटकर उन दोनों की हत्या की गई थी । क्योंकि उनकी गर्दन लंबी हो गई थी, आँखें उबली हुई थी और गला घोंटने की वजह से उनकी जबान भी बाहर थी ।"

"ओह !"

"दरअसल जैसा पैशाचिक कृत्य फारूख अहमद मसूदी की दोनों बेटियों के साथ गुजरा था, उसकी वजह से मसूदी विक्षिप्त हो गया था । वह यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था और इसीलिए पस्ती के आलम में उसने उन्हें मार डाला । अलबत्ता उसने मुझसे यही कहा कि वह खुद मर गई । मैं भी खामोश रहा । जरा सोचो कमांडर, एक बाप ने हालातों के सामने विवश होकर खुद अपनी बेटियों का अपने हाथों से गला घोंट डाला । उसने यह काम कितनी मजबूरी में किया होगा, कितनी हिम्मत जुटाकर किया होगा । खासतौर पर बाप भी ऐसा जो एक फरमाबरदार बाप था । जो अपनी लाडली बेटियों के आँसू के लिए अपनी जान लुटा सकता था । मगर उसी बाप के अपनी लाडली बेटियों की जान लेते हुए जर्रा बराबर भी हाथ नहीं कांपे ।"

उस कहानी को सुनकर करण सक्सेना और रौनक शाह के शरीर का एक-एक रोआँ खड़ा हो गया ।

वह थर्रा उठे ।

सचमुच फारूख अहमद मसूदी की वह रोंगटे खड़े कर देने वाली हृदयविदारक दास्तान थी ।

"मसूदी इस समय कहाँ है ?" रौनक शाह बोला ।

"मसूदी जिस जगह है, उसकी पूरी डिटेल मेरे सीने पर गुदी हुई है ।" हनीफ कड़ावाला एक नया रहस्योद्घाटन करता हुआ बोला ।

"सीने पर !"

दोनों बुरी तरह चौंके ।

"हाँ ।"

"जरा दिखाओ !"

हनीफ कड़ावाला ने फौरन सीने के ऊपर से अपनी काली शर्ट के बटन खोल दिये । तुरंत उसकी बालों रहित चेस्ट चमक उठी, जो उस वक्त शीशे की भांति चमचमा रही थी । लेकिन करण सक्सेना और रौनक शाह को उसके सीने पर ऐसा कुछ भी नजर न आया, जिसे गोदना कहा जा सकता । वह एकदम प्लेन थी ।

"यहाँ तो कुछ भी नहीं है ।" करण सक्सेना ने तुरंत कहा ।

हनीफ कड़ावाला मुस्कुराया ।

उसकी मुस्कुराहट बड़ी वेधक थी ।

"यहाँ तुम्हें तब तक कुछ नजर आयेगा भी नहीं कमांडर !" हनीफ कड़ावाला बोला," जब तक तुम इंफ्रारेड रेन का प्रयोग नहीं करोगे । दरअसल फारूख अहमद मसूदी कहाँ है, उसी से संबंधित यहाँ कुछ चित्र बने हुए हैं और कुछ सूत्र भी लिखे हैं ।"

"इंफ्रारेड रेन ।" करण सक्सेना चौंक पड़ा ।

"हाँ ।"

"वाकई मसूदी की मौजूदगी को गुप्त रखने का बड़ा अद्भुत तरीका खोजा है तुमने । यानी अगर मैं इंफ्रारेड कैमरे से तुम्हारी चेस्ट को देखूंगा, तो मुझे सब कुछ नजर आयेगा ?"

"बिल्कुल, लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता दूँ ।"

"क्या ?"

"मसूदी की मौजूदगी को गुप्त रखने का यह अद्भुत तरीका मेरी मजबूरी है । अगर मैं चाहता तो फारूख अहमद मसूदी इस समय जहाँ है, उस जगह का एड्रेस मैं तुम्हें अपनी जबान से भी बता सकता था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया । और ऐसा इसलिये नहीं किया क्योंकि आज की तारीख में मैं खुद नहीं जानता हूँ कि फारूख अहमद मसूदी कहाँ है ।"

"क्या कह रहे हो, तुम्हें खुद यह नहीं मालूम कि मसूदी कहाँ है ?"

"नहीं ।"

"फिर मसूदी तक पहुँचने का यह नक्शा तुमने कैसे तैयार किया ?"

"यह नक्शा भी मैंने तैयार नहीं किया बल्कि किसी की मार्फत मुझे यह नशा मिला । अलबत्ता नक्शे को मैं भी नहीं समझ पाया । हाँ, यह हो सकता है कि आप लोग शायद इस नक्शे को समझ ले ।"

"लेकिन जब फारुख अहमद मसूदी और तुम साथ-साथ कंपाला में आये थे, तो फिर वह एकाएक कहाँ गायब हो गये ?"

"इसके पीछे एक लंबी कहानी है ।" हनीफ कड़ावाला ने सिगरेट की राख वहीं नीचे फर्श पर झाड़ते हुए कहा, "लेकिन फिलहाल सिर्फ इतना समझ लो कि जिस जगह हम ठहरे हुए थे, वहाँ रात को कुछ संदिग्ध लोगों ने आक्रमण कर दिया और वह फारुख अहमद मसूदी का अपहरण करके ले गये जबकि उन्होंने मुझे बेहोश कर डाला ।"

"क्या वह आईएसआई के एजेंट थे ?" करण सक्सेना ने पूछा ।

"नहीं, वह आईएसआई के एजेंट नहीं थे ।" हनीफ कड़ावाला ने बताया, "और न ही उनका पाकिस्तान से कोई नाता था ।"

"फिर ?"

"वह कुछ जंगली लोग थे और अफ्रीकन मूल के थे ।"

"जंगली लोग !" करण सक्सेना चौंका, "लेकिन उन्होंने फारुख अहमद मसूदी का अपहरण क्यों किया ?"

"यह मुझे भी मालूम नहीं । बहरहाल उसी दिन से मसूदी कहाँ है, मैं नहीं जानता । यह नक्शा भी मैंने उसी जंगली ग्रुप के एक आदमी से बड़ी मुश्किल के साथ हासिल किया था । अलबत्ता मुझे यह नक्शा बताने के तुरंत बाद ही उसे उसके साथियों ने मार डाला । अगर वह आदमी थोड़ी देर और जिंदा रहता, तो शायद मैं उससे कुछ जानकारी और हासिल करने में कामयाब हो जाता, लेकिन ऐसी नौबत ही नहीं आई ।"

वह तीनों अभी उस बंद कमरे में बैठे बातचीत कर ही रहे थे, तभी वह एकाएक बुरी तरह चौंक उठे ।

नीचे से उन्हें किसी धमाके की आवाज सुनाई पड़ी ।

"यह कैसी आवाज थी ?" रौनक शाह का विस्मित स्वर ।

"इस तरह के धमाके होना इस बार में आम बात है ।" हनीफ कड़ावाला बोला, "जरूर नीचे सेंट्रल हॉल में कोई पटाखा वगैरह छूटा होगा ।"

"नहीं ।" करण सक्सेना तुरंत झटके के साथ अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और उसने रिवॉल्वर बाहर निकाली, "यह पटाखे की आवाज नहीं थी, यह गोली चलने की आवाज थी ।"

"क्या कह रहे हैं आप कमांडर !"

रौनक शाह और हनीफ कड़ावाला भी फुर्ती के साथ अपनी-अपनी जगह से उठे ।

उसी पल उस कमरे की जो खिड़की थी, उस पर हथौड़े जैसी भयंकर चोट पड़ी और वह अपनी चौखट सहित उखड़कर अंदर आ गिरी । फिर हनीफ कड़ावाला को निशाना बनाकर बाहर से धुआँधार गोलियाँ चलाई गई ।

कमांडर करण सक्सेना, जो उस संभावित खतरे से उलझने के लिए पूरी तरह तैयार था, एकदम से हनीफ कड़ावाला के ऊपर छलांग लगा दी और वह उसे लिए-लिए टेबल की आड़ में नीचे गिरा ।

करण सक्सेना उस वक्त हनीफ कड़ावाला की पूरी तरह रक्षा करना चाहता था । वह यहाँ तक सोच चुका था कि अगर कोई गोली चले, तो उसे वह खुद झेल जाये; लेकिन हनीफ कड़ावाला को बचाए ।

"रौनक !" करण सक्सेना चिल्लाया, "फायर करो ।"

रौनक शाह, जिसके हाथ में भी तब तक रिवॉल्वर आ चुकी थी, उसने भी फौरन एक कुर्सी के पीछे पोजीशन संभालकर खिड़की की तरफ फायर किया ।

उधर करण सक्सेना ने भी तब तक गोली चलाई और फिर वह हनीफ कड़ावाला को लिए-लिए दरवाजे की तरह बढ़ा ।

बाहर दो आईएसआई एजेंट थे ।

तभी एक की खोपड़ी में गोली लगी और वह चीखता हुआ वहीं खिड़की के पास ढेर हो गया ।

नीचे बार में भी अब जबरदस्त अफरा-तफरी की आवाजें आ रही थी और लोगों की चीख-पुकार गूँज रही थी । ऐसा मालूम होता था, आईएसआई एजेंटों की संख्या काफी ज्यादा थी, जिन्होंने पनामा बार पर हमला बोल दिया था ।

"ए... ऐसा लगता है कमांडर !" हनीफ कड़ावाला भयभीत मुद्रा में बोला, "आप लोगों से गलती हो चुकी है । जरूर वह दोनों आप लोगों का ही पीछा करते-करते यहाँ तक आये हैं ।"

"ऐसा ही मालूम होता है ।"

रौनक शाह भी अब धीरे-धीरे कुर्सी की आड़ में दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था ।

"रौनक !" करण सक्सेना ने फिर चिल्लाकर कहा, "जितना जल्द से जल्द हो सके, यहाँ से निकलकर भागो ।"

"ओके कमांडर !"

तभी दूसरे आईएसआई एजेंट की खोपड़ी भी खिड़की में चमकी और इस बार करण सक्सेना चूका नहीं । उसने तुरंत उसकी खोपड़ी का निशाना बनाकर गोली चला दी ।

निशाना अचूक था ।

आईएसआई एजेंट चीखता हुआ वहीं ढेर हो गया ।

वह तीनों अब झटके के साथ दरवाजा खोलकर बाहर निकल आये ।

तीसरी मंजिल पर जहाँ थोड़ी देर पहले शांति थी, वहाँ अब जबरदस्त हंगामे का माहौल दिखाई पड़ रहा था । तमाम युवक-युवतियाँ कमरों से बाहर आ चुके थे और उनके कपड़े अभी भी अस्त-व्यस्त थे । सब उन्हीं की तरफ देख रहे थे ।

वह तीनों नीचे जाने वाली सीढ़ियों की तरफ लपके ।

वह सेंट्रल हॉल, जो थोड़ी देर पहले तक मछली मार्केट नजर आ रहा था, वह अब पूरी तरह पागलों की बस्ती बन चुका था ।

हर कोई इधर से उधर भागता नजर आ रहा था ।

गोलियों की आवाजें गूँज रही थीं ।

जिस समय वह तूफानी गति से सीढ़ियाँ उतरते हुए दूसरी मंजिल पर पहुँचे, तभी उन्हें नीचे से बड़ी तेजी के साथ सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ एक आदमी ऊपर आता दिखाई दिया ।

उसके हाथ में एक पिस्टल थी, जिसकी नाल सामने की तरफ थी ।

उस आदमी ने कपड़े भी अफ्रीकनों जैसे पहने हुए थे और चेहरा भी कुछ-कुछ अफ्रीकनों जैसा था, लेकिन कमांडर करण सक्सेना उसे देखते ही पहचान गया । वह अफ्रीकन नहीं था । उसने खुद को अफ्रीकन दर्शाने के लिए अपने चेहरे पर काली स्याही पोती हुई थी और बाल भी उन्हीं की स्टाइल में काढ़े हुए थे । लेकिन वह अपनी उंगलियों पर स्याही पोतनी भूल गया था ।

वह वास्तव में आईएसआई का ही कोई एजेंट था ।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसकी निगाहें एकाएक हनीफ कड़ावाला पर आकर ठहर गई ।

करण सक्सेना ने देखा, हनीफ कड़ावाला पर दृष्टि पड़ते ही उसकी अपनी पिस्टल पर पकड़ मजबूत हो गई थी ।

मगर इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, कोल्ट रिवॉल्वर कमांडर करण सक्सेना की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और उसने ट्रिगर दबा दिया ।

तुरंत उसके मुँह से सुअर जैसी घिघियाने वाली आवाज उभरी ।

उसका शरीर एक क्षण को भागते-भागते वहीं सीढ़ियों पर स्थिर होकर रह गया ।

उसकी आँखों में आश्चर्य के भाव उभर आये और फिर वह धड़ाम से पीछे की तरफ गिरा ।

"रुको मत, भागते रहो ।"

करण सक्सेना ने रौनक शाह और हनीफ कड़ावाला को फिर आदेश दिया ।

वह तीनों पुनः नीचे की तरफ दौड़ पड़े ।

वह तीनों भागते-भागते अब उन सीढ़ियों के पास पहुँच चुके थे, जो नीचे सेंट्रल हॉल तक जाती थी ।

तभी नीचे सेंट्रल हॉल से किसी ने गोली चलाई, जो सीधे हनीफ कड़ावाला की दायीं जांघ में आकर लगी ।

हनीफ कड़ावाला की मर्मभेदी चीख निकल गई ।

वह जैसे ही सीढ़ियों पर गिरने को हुआ, करण सक्सेना ने उसकी पीठ में हाथ डालकर उसे सहारा दिया ।

"खुद को सम्भालो हनीफ, सम्भालो !"

हनीफ कड़ावाला ने सीढ़ियों की रेलिंग पकड़कर खुद को सहारा दिया ।

करण सक्सेना ने सेंट्रल हॉल में दृष्टि दौड़ाई ।

लेकिन उसे गोली चलाने वाला कहीं नजर न आया ।

बस सेंट्रल हॉल में लोग चीख रहे थे, चिल्ला रहे थे और ऊपर की तरफ भाग रहे थे ।

जल्द ही उनके ऊपर की तरफ भागने की वजह भी समझ में आई ।

दरअसल आईएसआई एजेंटों ने पनामा बार का दरवाजा अंदर से लॉक कर दिया था और अब वह किसी को भी वहाँ से बाहर निकलने नहीं दे रहे थे ।

ऐसी परिस्थिति में गोलियों से बचने का एक ही तरीका था, ऊपर की तरफ भागा जाये ।

□□□

तभी एक घटना और घटी ।

हृदयविदारक घटना ।

न जाने कैसे पनामा बार के सेंट्रल हॉल में आग लग गई । जरूर वह हरकत भी आईएसआई एजेंटों ने ही की थी ।

आग की लपटें अब बेंच और टेबलों को धू-धू करके अपने घेरे में ले रही थीं । जितने भी पोस्टर दीवार पर लगे हुए थे, वह भी उन लपटों की भेंट चढ़ने लगे थे ।

अब लपटें किसी लाल जीभ की तरह लपलपाती हुई सीढ़ियों की तरफ बढ़ रही थीं ।

सेंट्रल हॉल में मौजूद तमाम व्यक्ति इधर से उधर भाग दौड़ रहे थे ।

सच तो यह है, अब नीचे से भाग निकलने का कोई उचित रास्ता नहीं रह गया था । नीचे आग का सागर लहरा रहा था ।

तीनों ने नीचे की तरफ देखा । वहाँ कुछ आदमियों के हाथ में पिस्तौल थी और वही धुआँधार फायरिंग कर रहे थे ।

पुलिस किसी भी समय वहाँ पर पहुँच सकती थी ।

कमांडर करण सक्सेना ने हनीफ कड़ावाला की बांह कसकर पकड़ ली ।

"नीचे से भागने का कोई रास्ता नहीं है ।" करण सक्सेना तेजी के साथ बोला, "आईएसआई एजेंट दरवाजे पर डटे हुए हैं और नीचे आग का दरिया लहरा रहा है ।"

"फिर क्या किया जाये ?"

"एक ही तरीका है, हम लोग वापस तीसरी मंजिल पर पहुँचे और वहीं से भागने की कोशिश करें ।"

"लेकिन तीसरी मंजिल से हम कैसे भाग सकते हैं कमांडर ?" हनीफ कड़ावाला के चेहरे पर दहशत के भाव थे ।

"पहले हम तीसरी मंजिल पर पहुँचे, फिर वहाँ से भाग निकलने का भी कुछ न कुछ रास्ता सूझेगा ।"

तभी कुछ गोलियाँ उनके पास से और गुजरीं ।

"जल्दी चलो ।" करण सक्सेना चीखा ।

वह तीनों अब सीढ़ियों पर ऊपर की तरफ दौड़े ।

हालांकि हनीफ कड़ावाला की दाईं जांघ में गोली लगी हुई थी, लेकिन फिर भी वह पूरी हिम्मत जुटाकर ऊपर की तरफ भाग रहा था ।

वातावरण में पूरी तरह से भयानक आग व्याप्त थी । हर तरफ चीख-पुकार, भागने, गोली चलने और आग में गिरकर तड़पने की आवाज उभरने लगी थी । मौत के तांडव ने वातावरण को पूरी तरह अपने घेरे में ले लिया था ।

उधर रौनक शाह भागते-भागते गहरी-गहरी साँस लेने लगा था ।

"रौनक !" करण सक्सेना फिर चीखा, "अपनी तबीयत का पूरी तरह ख्याल रखो ।"

"म... मुझे ख्याल है ।" रौनक शाह ने दौड़ते-दौड़ते अपनी जेब से इन्हेलर निकाला और उसकी दवाई मुँह में स्प्रे की ।

वहाँ चूंकि चारों तरफ शराब ही शराब थी, इसलिये आग फैलाने में वह शराब पेट्रोल जैसा कार्य कर रही थी ।

फिर भी एक बात का शुक्र था, अभी शायद किसी और आईएसआई एजेंट की निगाह उनके ऊपर नहीं पड़ी थी, वरना वह लपककर उनके पीछे आता ।

तभी करण सक्सेना ने अपने पीछे किसी के गिरने की आवाज सुनी । उसने फौरन पीछे की तरफ पलटकर देखा ।

एक गोली हनीफ कड़ावाला के शरीर के बाएँ भाग को अपना निशाना बनाने में सफल हो गई थी ।

वह गिर पड़ा था ।

उसकी काली शर्ट पर लाल खून का बड़ा-सा धब्बा उभर आया था ।

उसने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला, लेकिन वह कुछ कह न सका।

करण सक्सेना लपककर उसके पास पहुँच गया।

उसने अपनी दायीं बाँह के सहारे उसकी पीठ पकड़कर उठाया। हनीफ कड़ावाला का बायाँ हाथ अब करण सक्सेना अपने कंधे पर रख चुका था।

फिर वह उसे लेकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

रौनक शाह उससे आगे-आगे था।

उसके सीढ़ियाँ चढ़ने की रफ्तार थोड़ी सुस्त हो गई थी और वह बार-बार इनहेलर की दवाई अपने मुँह में स्प्रे कर रहा था।

ऐसा लग रहा था, जैसे चारों तरफ से उनके ऊपर आफत टूट रही थी।

"कम ऑन। हरी अप।" करण सक्सेना ने दो गोली खा चुके हनीफ कड़ावाला में जोश पैदा करने की कोशिश की, "उठो और मेरे सहारे से ऊपर की तरफ सीढ़ियाँ चढ़ो जवान!"

हनीफ कड़ावाला की आँख धीरे से खुली।

वह करण सक्सेना के कंधे से उतर गया और फिर पहले की तरह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

सचमुच वह बहुत हिम्मती जवान था।

फायर अभी भी हो रहे थे।

आईएसआई के एजेंट अब खासतौर पर नीचे से उन तीनों को अपना निशाना बना रहे थे।

ऐसा लगता था, वह शायद समझ चुके थे कि जिनकी उन्हें तलाश है, वह वहीं थे।

करण सक्सेना ने देखा, उन आईएसआई एजेंटों की संख्या लगभग 6 थी और अब वह उनके पीछे-पीछे ऊपर इसलिये नहीं आ पा रहे थे, क्योंकि पहली मंजिल की सीढ़ियाँ आग में बुरी तरह झुलस चुकी थीं।

गोलियाँ उन्हें अपने सिर के ऊपर से गुजरती महसूस हो रही थी और वह रेलिंग की लकड़ी में धँसती जा रही थी।

लकड़ी की रेलिंग के टुकड़े उछल-उछलकर उनके सामने गिर रहे थे।

रौनक शाह को भागते हुए सीढ़ियाँ चढ़ने में जरूरत से कुछ ज्यादा ही परेशानी हो रही थी। वह बार-बार उखड़ते हुए साँस के कारण पीड़ाजनक चेहरा बना लेता था और उसके जबड़े कस जाते थे।

उधर हनीफ कड़ावाला की हालत भी कुछ कम खराब न थी।

वह बार-बार गिरने को होता, लेकिन करण सक्सेना उसे संभालता।

करण सक्सेना को ऐसा लग रहा था, जैसे वह मोर्चा हारने जा रहे हो।

कमांडर करण सक्सेना किसी भी हालत में हनीफ कड़ावाला की जिंदगी बचाना चाहता था। आखिर उसके सीने पर गुदे नक्शे की उसे बेइंतहा सख्त जरूरत थी।

वही नक्शा फारूख अमहद मसूदी तक पहुँचने का इकलौता जरिया था।

वह तीनों किसी तरह तीसरी मंजिल तक पहुँचे।

तीसरी मंजिल पर कुछ सीढ़ियाँ और थीं, जो ऊपर छत की तरफ जाती थीं। वह उन सीढ़ियों पर चढ़ते हुए किसी तरह एक दरवाजे तक पहुँचने में कामयाब हो गये और फिर दरवाजा खोलकर छत पर जा पहुँचे।

□□□

वह तीनों अब पनामा बार की छत पर थे।

नीचे पूरे बार में धू-धू करके आग लगी हुई थी।

सचमुच आईएसआई एजेंटों ने हनीफ कड़ावाला को मार डालने के लिए एक बड़े हंगामे को जन्म दे डाला था।

आग तीसरी मंजिल तक पहुँच चुकी थी।

तभी आग का दरिया लपलपाता हुआ उन सीढ़ियों तक भी आ पहुँचा, जो छत तक जाती थी।

उसी क्षण हनीफ कड़ावाला का पैर फिसल गया और उसके मुँह से चीख निकल गई। वह पीछे सीढ़ियों की तरफ लुढ़क गया था और आग लपलपाती हुई उसकी तरफ बढ़ रही थी।

करण सक्सेना, जो उसके नजदीक ही था, उसने फौरन एक कदम आगे बढ़ाकर किसी तरह अपना बचाव किया।

नीचे आग का प्रकोप इस कदर फैल चुका था कि दीवार का प्लास्टर टूट-टूटकर नीचे गिरने लगा था।

दीवारें गिरने लगी थीं।

करण सक्सेना को लगा, वो वहाँ की आग के मुकाबले अपना मोर्चा हार चुका है।

तभी हनीफ कड़ावाला फिर चीखा। वह जिस सीढ़ी पर पड़ा हुआ था, उससे नीचे वाली सीढ़ी जलकर दीवार के सहारे लटक गई थी।

"क... कमांडर !" हनीफ कड़ावाला के मुँह से बस वही एक शब्द निकला।

वह बिलबिला उठा था और अब उसके कपड़ों ने आग पकड़ ली थी।

करण सक्सेना फौरन उसकी तरफ झुक गया तथा उसने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया।

"हरीअप !" वह चिल्लाया, "लाओ, जल्दी से अपना हाथ मेरे हाथ में दो। जल्दी।"

हनीफ कड़ावाला की उंगलियाँ धीरे से कंपकँपायी और उसने अपना हाथ करण सक्सेना की तरफ बढ़ाने की कोशिश की।

लेकिन वह हाथ एक इंच भी आगे सरकाने में असमर्थ था।

"हनीफ, हिम्मत करो। मत भूलो कि तुम एक बहादुर आदमी हो।" करण सक्सेना उसे हर संभव उत्साहित करने की कोशिश कर रहा था, "अगर तुम्हें कुछ हो गया तो फारूख अहमद मसूदी तक पहुँचने का हमारा सपना, सपना ही रह जायेगा।"

लेकिन हनीफ कड़ावाला के शरीर में अब कोई हरकत न थी।

उसकी आँखें फैल गई थीं और उसने जिस तरह की दयनीय आँखों से उसे देखा, वैसी आँखों से उसे पहले कभी न देखा था।

उसकी जलती हुई शर्ट के चिथड़े-चिथड़े हो गये थे।

वह जलती हुई सीढ़ी पर संभलने की हर मुमकिन कोशिश कर रहा था।

"हनीफ !" करण सक्सेना फिर चिल्लाया, "अपना हाथ आगे बढ़ाओ, हिम्मत करो।"

करण सक्सेना ने कुछ और सरककर अपना हाथ आगे किया।

हनीफ कड़ावाला का शरीर कंपकँपाया और वह बड़ी हिम्मत करके सिर्फ एक सीढ़ी ऊपर चढ़ सका।

उसी क्षण, जिसे सीढ़ी पर हनीफ कड़ावाला पहले था, वह सीढ़ी टूटकर बेहद खतरनाक तरीके से नीचे लहरा गई। बिना शक अगर हनीफ कड़ावाला उस पर होता, तो वह नीचे आग के खोलते दरिया में जा गिरता।

तभी हनीफ कड़ावाला हिम्मत करके ऊपर की तरफ उछल गया और उसी लम्हा करण सक्सेना ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

हनीफ कड़ावाला के शरीर का वजन बहुत बढ़ चुका था।

कमांडर करण सक्सेना ने उसको संभालने के लिए अपने जिस्म की पूर्ण शक्ति लगा दी थी।

तभी हनीफ कड़ावाला के पैर जिस सीढ़ी पर टिके हुए थे, वह भी टूट गई।

"क... कमांडर !"

हनीफ कड़ावाला चीख उठा।

करण सक्सेना ने उसके दोनों हाथ और कसकर पकड़े।

"डरो मत !" करण सक्सेना चीखकर बोला, "मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूँगा हनीफ !"

हनीफ कड़ावाला उस समय करण सक्सेना के हाथों के सहारे हवा में लहरा रहा था।

करण सक्सेना ने धीरे-धीरे उसे ऊपर की तरफ खींचना शुरू किया।

हनीफ कड़ावाला के कपड़े राख में बदल चुके थे और उसके शरीर की खाल झुलस गई थी।

करण सक्सेना हर हालत में हनीफ कड़ावाला को बचाना चाहता था।

अब वहाँ की हर एक दीवार जल रही थी।

तमाम सीढ़ियाँ स्वाहा हो चुकी थीं और इस समय जो जहाँ फँसा था, वही फँसा रह गया।

अलबत्ता उस भीषण अग्निकांड से घबराकर अब आईएसआई एजेंट भी वहाँ से भाग चुके थे और उन्होंने पनामा बार का दरवाजा खोल दिया था।

लोग अब वहाँ से निकल-निकलकर भाग रहे थे।

कुछ ऊपर की मंजिलों से नीचे कूद पड़े थे और अपने हाथ-पाँव तुड़वा बैठे थे।

करण सक्सेना को उस समय लगा, अगर वह तीनों नीचे सेंट्रल हॉल में होते, तो ज्यादा आसानी से अपनी जान बचा सकते थे।

मगर अब क्या हो सकता था!

वह ऊपर थे।

ऊपर भी सबसे ऊपर।

करण सक्सेना ने अब हनीफ कड़ावाला को सीढ़ियों से ऊपर छत पर खींच लिया था।

रौनक शाह उस समय छत पर ही था और उन दोनों से थोड़ा फासले पर नीचे बैठा हुआ अपनी साँसें संतुलित कर रहा था।

भागते हुए सीढ़ियाँ चढ़ने की वजह से उसकी साँसें उखड़ गई थी, जिन्हें अब वह काफी हद तक संतुलित कर चुका था। शुक्र था, जो उसे अस्थमा का दौरा नहीं उठा था।

फिलहाल करण सक्सेना का सारा ध्यान हनीफ कड़ावाला पर था।

उसे सीढ़ियों से छत पर ले जाते ही उसने सबसे पहले उसके शरीर की आग बुझाई। फिर उसका शरीर उसने वहीं छोड़ दिया और घूमकर वह दरवाजा बंद किया, जो तीसरी मंजिल से छत तक आता था।

वैसे उस दरवाजे के स्थिर रहने की कोई निश्चित अवधि न थी। किसी भी समय वह दरवाजा भी जलकर गिर सकता था। छत पर किसी भी वक्त आग अपने कदम बढ़ा सकती थी या उसके प्रभाव से छत गिर सकती थी। इन तमाम बातों को सोचते हुए कमांडर करण सक्सेना पुनः हनीफ कड़ावाला को घसीटने के कार्य में व्यस्त हो गया।

वह उसे घसीटता हुआ छत के किनारे तक ले गया।

वह उसे वहाँ पर इस विचार से लाया था कि अगर छत गिर पड़ी, तो वो वहाँ की दीवार के सहारे संभल सके।

कुल मिलाकर तीनों धीरे-धीरे अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रहे थे। उनके पैर नीचे छत की आग की गर्मी के कारण तप रहे थे।

रौनक शाह भी चलता हुआ वहीं छत के किनारे आ गया।

"अब क्या करोगे कमांडर ?" रौनक शाह के स्वर में सस्पेंस था।

"हमें किसी तरह नीचे उतरना है।"

"लेकिन कैसे ?" रौनक शाह बोला, "हम इतनी ऊँचाई से नीचे कैसे उतरेंगे ?"

"उसका भी कोई न कोई तरीका खोजता हूँ।"

करण सक्सेना ने अब हनीफ कड़ावाला का हाथ छोड़ दिया और उसने दीवार के सहारे नीचे झांककर देखा।

दीवार के सहारे उसे एक सीढ़ी नजर आयी, जो नीचे की तरफ चली गयी थी।

"लगता है।" करण सक्सेना ने तुरंत कहा, "यहाँ से बच निकलने का रास्ता हमें मिल गया।"

रौनक शाह ने भी नीचे की तरफ झांककर देखा और सीढ़ी देखकर उसकी आँखों में भी चमक आयी।

"क्या तुम इस सीढ़ी से नीचे उतर जाओगे ?" करण सक्सेना ने रौनक शाह की तरफ देखा।

"ह... हाँ, मैं उतर जाऊँगा।" रौनक शाह की आवाज थोड़ी विचलित थी, "लेकिन हनीफ कड़ावाला... ।"

"हनीफ कड़ावाला की तुम चिंता मत करो।" करण सक्सेना बोला, "उसे मैं लेकर उतरूँगा।"

"फिर ठीक है।"

करण सक्सेना फैसला कर चुका था कि वह हनीफ कड़ावाला को अपने कंधे पर डालकर नीचे उतरेगा।

रौनक शाह और वह अभी बातें ही कर रहे थे कि तभी उन्हें कुछ जोरदार चीखें सुनाई पड़ी।

फिर वह चीखें बार-बार गगनभेदी स्वर में गूँजने लगी।

करण सक्सेना तेजी के साथ घूमा और अगले ही पल वह जड़वत खड़ा रह गया।

वह छत गिरती जा रही थी। छत के बीच में एक बड़ा-सा घेरा बन गया था और वहाँ बीच में से आग की तेज लपटें निकलने लगी थी।

छत लगातार गिरती, टूटती जा रही थी।

वह बराबर कमजोर पड़ रही थी। उस छत पर नीचे हॉल से उठने वाली आग की लपटें अपना प्रभाव डाल रही थी।

हनीफ कड़ावाला कोई हरकत किये बिना तपती हुई छत के फर्श पर पड़ा था । वह आग की लपटें उसके साथ भयानक तबाही और बर्बादी की आशंका से करण सक्सेना को दहलाती जा रही थी ।

करण सक्सेना धीरे-धीरे हनीफ कड़ावाला की तरफ बढ़ा ।

फारुख अहमद मसूदी के बारे में जो जानकारी करण सक्सेना चाहता था, वह हनीफ कड़ावाला के सीने पर अंकित थी । यदि वह उसे बचा नहीं पाता, तो हनीफ कड़ावाला के साथ-साथ वह जानकारी भी नष्ट हो जानी थी । फिर कभी किसी को पता नहीं चल पाता कि फारुख अहमद मसूदी इस समय कहाँ है ।

वह कौन जंगली लोग हैं, जिन्होंने मसूदी का अपहरण किया ?

इसलिये अगर मसूदी तक पहुँचना था, तो हनीफ कड़ावाला को बचाना करण सक्सेना की जिम्मेदारी थी ।

करण सक्सेना ने हनीफ कड़ावाला के पास पहुँचकर उसकी बगलों में अपने हाथ डाल दिये और फिर वह उसे घसीटता हुआ इंच-इंच करके सीढ़ियों की तरफ बढ़ने लगा ।

नीचे से सुर्ख सागर का लहराता, धधकता ज्वार-सा उठता नजर आ रहा था । यह आग जंगल की आग का नक्शा पेश कर रही थी ।

करण सक्सेना ने गहरी साँस ली और अपनी कोशिश तेज कर दी ।

आग बराबर बढ़ती जा रही थी और अब तो लपटें रह-रहकर उनके जिस्म को भी छू जाती थीं ।

हनीफ कड़ावाला में उस समय जरा भी हरकत न थी । करण सक्सेना को ऐसा लग रहा था, जैसे वह मर चुका है तथा अब वह बस एक लाश को ढो रहा है ।

करण सक्सेना जैसे ही हनीफ कड़ावाला को लेकर सीढ़ियों के नजदीक पहुँचा, तभी एक घटना और घटी । उन सीढ़ियों ने भी आग पकड़ ली और वह भरभराकर नीचे की तरफ गिरीं ।

"हे भगवान ।" रौनक शाह के मुँह से आतंकित सर निकला, "एक यही रास्ता था, यह भी खत्म हो गया । अब क्या करें कमांडर ?"

करण सक्सेना की निगाह तुरंत एक दूसरी इमारत की छत पर पहुँची । वह छत पनामा बार की छत से जुड़ी हुई थी ।

"रौनक शाह !" करण सक्सेना ने चिल्लाकर कहा, "फौरन उस दूसरी इमारत की छत पर पहुँचो ।"

आदेश देने की देर थी, रौनक शाह तुरंत उसकी तरफ दौड़ पड़ा और छोटी-सी बाउंड्री लांघकर वहाँ पहुँच भी गया ।

उधर करण सक्सेना ने भी अब हनीफ कड़ावाला को उठाकर अपने कंधे पर डाल लिया था और फिर रौनक शाह के पीछे-पीछे वह भी वहाँ पहुँचा ।

तब उन्होंने देखा, वह कई छतें थीं, जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं । उसके बाद वह एक के बाद दूसरी तथा दूसरी के बाद तीसरी छत लांघते हुए आगे बढ़ते रहे ।

पाँचवी छत तक पहुँचते-पहुँचते रौनक शाह की हालत बिगड़ गई । वह वहीं छत पर गिर पड़ा और बुरी तरह हाँफने लगा ।

"क... कमांडर !" वह हाँफते हुए बोला, "कमांडर, मुझसे अब और नहीं दौड़ा जाता !"

करण सक्सेना भी ठिठक गया और उसने हनीफ कड़ावाला को भी अपने कंधे से उतारकर उसे छत पर लिटाया ।

करण सक्सेना को लगा, हनीफ कड़ावाला का शरीर उस समय बिल्कुल ठंडा पड़ा हुआ था और उसमें कहीं कोई हरकत न थी ।

करण सक्सेना ने जल्दी से उसकी नब्ज टटोली ।

उसकी हार्टबीट चेक की ।

अगले ही क्षण उसे एक बड़ा जबरदस्त झटका लगा ।

हनीफ कड़ावाला का देहाँत हो चुका था ।

उस हनीफ कड़ावाला का देहाँत हो गया था, जिसे बचाने के लिये इतनी जद्दोजहद की गई थी ।

□□□

समय मानो ठहरा हुआ था । चारों तरफ शांति थी, गहरी शांति । जैसे कोई बड़ा तूफान आया हो और सब कुछ तहस-नहस करके चला गया हो । कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह उस समय उन्हीं खंडहरों में मौजूद थे । रोशनी के लिए उन्होंने अलाव जलाया हुआ था, जिसका तांबे जैसा प्रकाश वहाँ चारों तरफ फैला था और सारे माहौल को बड़ा तिलिस्मी-सा बना रहा था ।

करण सक्सेना और रौनक शाह किसी तरह ढोकर हनीफ कड़ावाला की लाश उसी खंडहर में ले आये थे । दरअसल करण सक्सेना, हनीफ कड़ावाला की लाश इमारत की छत से अपनी गोद में उठाकर इमारत के टॉप फ्लोर पर लाया था और फिर लिफ्ट द्वारा उसे नीचे ले आया था ।

तब नीचे पनामा बार के आसपास जबरदस्त हंगामा मचा हुआ था ।

लोगों की भारी भीड़ सड़क पर जमा थी। फायर ब्रिगेड आ चुकी थी और अब बड़े तूफानी अंदाज में आग बुझाने का काम हो रहा था। फायर ब्रिगेड कर्मचारी बड़े-बड़े पाइप लेकर सड़क पर इधर से उधर भागते नजर आ रहे थे।

चारों तरफ चीख-पुकार मची थी।

तभी उन लोगों के देखते ही देखते चार-पाँच एंबुलेंस भी जोर-जोर से सायरन बजाती हुई पनामा बार के सामने आकर रुकीं और उनमें जख्मियों को भर-भरकर ले जाया जाने लगा। हालांकि एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड पहुँचने का सारा काम बड़ी फुर्ती के साथ हुआ था, मगर कमांडर करण सक्सेना को फिर भी उम्मीद थी कि काफी लोग मारे गये थे।

इमारत से नीचे पहुँचते ही करण सक्सेना और रौनक शाह, हनीफ कड़ावाला की लाश लेकर एक कार में सवार हो गये।

कार का इग्निशन लॉक खोलना करण सक्सेना के बाएँ हाथ का खेल था।

इग्निशन लॉक खोलते ही वह दोनों वहाँ से भागे। क्योंकि वैसे भी आईएसआई एजेंटों की वजह से उनका ज्यादा देर वहाँ ठहरना मुनासिब नहीं था।

उसके बाद करण सक्सेना ने रात गुजारने के लिए जंगल के बीचो-बीच बने वह खंडहर चुने थे। हालांकि वहाँ जंगली जानवर वगैरह का काफी खतरा था, लेकिन फिर भी करण सक्सेना को वही जगह सबसे ज्यादा सुरक्षित लगी।

वह खंडहर का एक काफी बड़ा हॉल कमरा था और उसमें एक जर्जर-सा दरवाजा भी लगा हुआ था, जिसके अंदर वह बंद हो गये और उन्होंने वह दरवाजा भी लगा लिया।

हनीफ कड़ावाला का शव उन्होंने वहीं फर्श पर लिटा दिया था।

जबकि रौनक शाह ने आगे बढ़कर कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी करके अलाव जलाया।

सारा माहौल बड़ा रहस्यमयी था।

लेकिन खामोश, खामोश।

चुप-चुप।

एक लाश की मौजूदगी का पूरा-पूरा असर वहाँ था।

खासतौर पर जब से हनीफ कड़ावाला की मौत हुई थी, तब से रौनक शाह तो काफी कम बोल रहा था।

"एक बात मेरी समझ नहीं आ रही कमांडर !" रौनक शाह अलाव जलाने के बाद करण सक्सेना के नजदीक आकर खोए-खोए स्वर में बोला।

उसके चेहरे पर संजीदगी के भाव थे।

"क्या ?" कमांडर ने रौनक शाह की तरफ देखा।

"आपने रात गुजारने के लिए जंगल को ही क्यों चुना ?"

"क्योंकि हमारे पास यही एक रास्ता था ।" करण सक्सेना ने बताया, "मत भूलो रौनक शाह, हनीफ कड़ावाला की लाश हमारे साथ थी और कम से कम हम इस लाश को लेकर किसी भी होटल में नहीं जा सकते थे । क्योंकि इसके सीने पर वह राज मौजूद है, जिसकी मार्फत हमने फारूख अहमद मसूदी तक पहुँचना है ।"

रौनक शाह खामोश हो गया ।

वह समझ गया, करण सक्सेना का वह कदम सही था ।

बियाबान जंगल में आने के अलावा उनके पास दूसरा कोई चारा नहीं था ।

जबकि करण सक्सेना अब हनीफ कड़ावाला के पास पहुँचा और उसने उसका सीना अलाव की रोशनी में बहुत ध्यान से देखा । जहाँ उसकी काली शर्ट पूरी तरह जल गई थी, वहीं उसके सीने पर बाल के बराबर एक खरोच तक नहीं थी और वह अभी भी शीशे की तरह चमचमा रहा था ।

"शायद ईश्वर भी हमारा साथ दे रहा है ।" करण सक्सेना बोला, "जो इसके सीने को कुछ नहीं हुआ । अगर इसके सीने की खाल जल जाती, तो हमारा यह पूरा मिशन इसी क्षण फ्लॉप हो जाना था । अब हमारा काम जल्द से जल्द इंफ्रारेड कैमरा लाकर इस नक्शे को देखना है ।"

"इसके लिए हमें बस सुबह होने का इंतजार करना होगा कमांडर !"

"सुबह होने का !"

"हाँ ।"

"सुबह होने के बाद हमारे पास इंफ्रारेड कैमरा कहाँ से आयेगा ?" करण सक्सेना ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

"वह कुछ मुश्किल नहीं ।" रौनक शाह बोला, "मेरा एक दोस्त है और उसे बड़े-बड़े अजीबोगरीब कैमरे अपने पास जमा करने का शौक है । मैंने एक बार उसके पास इंफ्रारेड कैमरा भी देखा था । मैं उसी से वह इंफ्रारेड कैमरा ले आऊँगा ।"

"वह तुमसे पूछेगा नहीं ।" करण सक्सेना की आवाज सशंकित थी, "कि तुम इस कैमरे का क्या करोगे ?"

"नहीं, वह मुझसे पूछेगा नहीं ।" रौनक साहब बोला, "और अगर पूछेगा भी तो मैं कोई भी बहाना बना दूँगा ।"

"सोच लो, किसी मुश्किल में न फँस जाओ ।" करण सक्सेना उसे सावधान करता हुआ बोला, "क्योंकि तुम्हारे उस दोस्त को तो मैं जानता नहीं हूँ । कभी-कभी ऐसे दोस्त ही आस्तीन के साँप निकलते हैं ।"

"उसकी तरफ से आप बेफिक्र रहे कमांडर, उसकी तरफ से कोई दगाबाजी नहीं होने वाली है ।"

"ओके । अगर तुम ऐसा सोचते हो तो ठीक है । लेकिन तुम उस तक जाओगे कैसे ? क्योंकि चोरी की इस कार को अब जंगल से बाहर ले जाना तो खतरनाक होगा । मुमकिन है, कार चोरी होने की रिपोर्ट अब तक पुलिस में भी लिखाई जा चुकी हो और अब पुलिस इसे ढूंढती फिर रही हो ।"

"इसका भी एक तरीका है कमांडर !"

"क्या ?"

"जंगल के दहाने तक मैं कार से जाऊँगा और फिर इसे वहीं झाड़ियों वगैरह में छिपाकर खड़ी करने के बाद, मैं उसके आगे से टैक्सी पकड़ लूँगा ।"

करण सक्सेना के चेहरे पर स्वीकृति के भाव उभर आये ।

"गुड !" उसने कहा, "यह बेहतर रहेगा ।"

□□□

अगले दिन सुबह 10:00 बजे तक रौनक शाह कैमरा लेकर आ गया ।

रात उन्होंने बड़ी मुश्किल से गुजारी थी । हनीफ कड़ावाला का शरीर क्योंकि काफी जल गया था, इसलिये उसके शरीर में से बहुत बुरी तरह बदबू उठने लगी थी और धीरे-धीरे ऐसे हालात बनते जा रहे थे जो उस लाश के साथ वहाँ ठहरना मुश्किल था ।

रौनक शाह सुबह 6:00 बजे ही वहाँ से चला गया और फिर 10:00 बजे तक लौट भी आया ।

करण सक्सेना उसी का बेसब्री से इंतजार कर रहा था ।

"कहीं कुछ मुश्किल तो पेश नहीं आई ?" करण सक्सेना ने उसके आते ही पूछा ।

"नहीं ।"

"कैमरा दिखाओ ।"

रौनक शाह ने गत्ते के एक डिब्बे में से निकालकर इंफ्रारेड कैमरा उसे दिखाया ।

कैमरा एकदम न्यू पीस था और ज्यादा इस्तेमाल शुदा नहीं था ।

करण सक्सेना ने उसमें बहुत हाई पावर वाले लेंस फिट किये और फिर उस इंफ्रारेड कैमरे से हनीफ कड़ावाला के सीने को देखा ।

तुरंत उसके सीने पर कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें खींची हुई और एक अजीब-सी भाषा में कुछ लिखा नजर आया । आड़ी-तिरछी लकीरों का क्या मतलब था और उस अजीब-सी भाषा में क्या लिखा हुआ था, यह करण सक्सेना समझ न सका ।

"क्या कुछ दिखाई दे रहा है ?" रौनक शाह ने कौतुहलतावश पूछा ।

"हाँ ।"

"जरा मैं भी देखूँ ।"

करण सक्सेना पीछे हट गया, तो रौनक शाह ने भी उस कैमरे के लेंस से अपनी आँख सटाई ।

उसे भी सब कुछ नजर आया ।

रौनक शाह काफी देर तक उन दोनों चीजों को समझने की कोशिश करता रहा । आड़ी-तिरछी लकीरें तो उसके बिल्कुल पल्ले नहीं पड़ रही थी, लेकिन भाषा में वह कहीं कुछ अटक गया था ।

रौनक शाह ने एक महत्वपूर्ण काम किया ।

उसने कैमरे से आँख सटाये-सटाये हनीफ कड़ावाला के सीने पर बना वह पूरे का पूरा नक्शा और संदेश एक कागज पर उतार लिया । अब उसे देखने के लिए इंफ्रारेड रेन या इंफ्रारेड कैमरे की आवश्यकता नहीं थी । वह बाकायदा नंगी आँखों से उसे देख सकते थे ।

फिर रौनक शाह ने कैमरा एक तरफ रख दिया और उस नक्शे को ध्यानपूर्वक देखने लगा ।

"क्या बात है ?" करण सक्सेना डनहिल सुलगाता हुआ बोला, "इसे इतना ध्यान से क्यों देख रहे हो ? क्या कुछ समझ आ रहा है ?"

"नहीं, समझ तो कुछ नहीं आ रहा कमांडर !" रौनक शाह ने कहा, "लेकिन न जाने क्यों इस भाषा को देखकर ऐसा लग रहा है कि मैं इसे पहले कहीं देख चुका हूँ ।"

रौनक शाह के उन शब्दों ने कमांडर करण सक्सेना के कान खड़े किये ।

"भाषा को कहीं देख चुके हो, लेकिन कहाँ ?"

"यही तो मुझे याद नहीं आ रहा ।" रौनक शाह अपने दिमाग पर जोर देता हुआ बोला ।

करण सक्सेना फौरन उसके नजदीक आ गया ।

"ध्यान करने की कोशिश करो ।" करण सक्सेना बोला, "तुम इसे पहले कहाँ देख चुके हो । अगर तुम्हें यह याद आ जाता है रौनक शाह; तो हमारा आधे से ज्यादा काम बन जायेगा ।"

रौनक शाह ने अपनी आँखें बंद कर ली ।

वह अपने दिमाग पर अच्छी तरह जोर डालने लगा ।

मगर उसे कुछ याद न आया ।

लेकिन रौनक शाह ने कोशिश न छोड़ी ।

वह अपने दिमाग पर लगातार जोर डालता रहा । उसे लग रहा था, बहुत जल्द उसको वह बात याद आयेगी ।

□□□

कंपाला स्थित पाकिस्तानी दूतावास, जो एक बहुत बड़ी और बहुत भव्य इमारत थी। इस समय उसी पाकिस्तानी दूतावास के अंदर एक बड़ी गुप्त मीटिंग चल रही थी।

वह एक छोटा-सा कमरा था, जिसमें एक गोल टेबल के इर्द-गिर्द सात लोग जमा थे। एक ऊँची पुश्त वाली बेहद खास कुर्सी पर एक चश्माधारी व्यक्ति बैठा था, जो पाकिस्तान का एम्बेसडर था। जबकि उसके सामने टेबल के दाएं-बाएँ आईएसआई के वहीं एजेंट मौजूद थे, जिन्होंने पनामा बार में जबरदस्त हंगामा बरपा किया था और न जाने कितने लोगों को मौत का ग्रास बना डाला था।

"मुझे तो लगता है साहब !" आईएसआई का एक एजेंट पाकिस्तानी एंबेसडर से बोला, "हम खामखाह परेशान हो रहे हैं। जरूर हनीफ कड़ावाला, करण सक्सेना और रौनक शाह उस भीषण अग्निकांड में मारे जा चुके हैं। हमने उन तीनों को साफ-साफ पनामा बार में ऊपर की तरफ भागते देखा था और एक बार ऊपर पहुँचने के बाद फिर बचने का कोई रास्ता नहीं था।"

"नहीं।" उस आईएसआई एजेंट की बात सुनकर पाकिस्तानी एम्बेसडर की गर्दन इंकार की सूरत में हिलने लगी, "बिल्कुल नहीं। मेरा दिल इस बात पर नहीं ठुकता मेरे दोस्त; कि वह तीनों मारे जा चुके हैं।"

"क्यों ?" आईएसआई एजेंट बोला, "क्यों नहीं ठुकता ?"

"क्योंकि मत भूलो, उन दोनों के साथ कमांडर करण सक्सेना भी था और कम से कम कमांडर करण सक्सेना इतनी आसानी से मरने वाली चीज नहीं है। इंपॉसिबल ! यह हो ही नहीं सकता कि वह मारा जाये। हाँ, अगर वह दोनों अकेले होते, तब मैं मान सकता था कि वह उस हादसे का शिकार हो गये होंगे।"

"सच बात तो यह है सर।" वह एक अन्य आईएसआई एजेंट की आवाज थी, "मुझे भी यही लगता है कि वह तीनों अभी जीवित हैं। कम से कम कमांडर करण सक्सेना तो हर हालत में जीवित है।"

"लेकिन सवाल यह है।" पहले वाले आईएसआई एजेंट ने ही आश्चर्यपूर्वक कहा, "अगर वह जीवित हैं तो वह जीवित बचे कैसे ? क्योंकि जिस तरह से संपूर्ण पनामा बार धूं-धूं करके जल रहा था, तो ऐसी परिस्थिति में तीसरी मंजिल पर पहुँचने के बाद तो किसी के भी जीवित बचने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

कोई कुछ न बोला।

किसी के पास भी उस सवाल का जवाब न था।

"देखिये।" एंबेसडर ने गहरी साँस ली और संजीदगी के साथ बोला, "सबसे पहले तो आप लोग एक बात समझ लें, हमारे लिए बहस का असल मुद्दा यह नहीं है कि वह जीवित है या नहीं। बल्कि हमारे वास्ते असल बहस का मुद्दा फारूख अहमद मसूदी है, जिस तक

हमने किसी तरह जल्द से जल्द पहुँचना है और उसे वापस पाकिस्तान ले जाना है। मत भूलो एवरीबडी, अगर फारुख अहमद मसूदी हिंदुस्तान पहुँच गया और उसने पेट्रोल बनाने वाला अपना फॉर्मूला हिंदुस्तान सरकार के हवाले कर दिया, तो यह पाकिस्तान गवर्नमेंट की एक बड़ी हार होगी, जो पाकिस्तान को हिंदुस्तान के हाथों अभी तक नहीं झेलनी पड़ी।"

"लेकिन फिलहाल तो हमें यही मालूम नहीं है।" सामने बैठे आईएसआई एजेंट ने कहा, "कि अगर फारुख अहमद मसूदी कंपाला के अंदर है, तो कहाँ है ?"

"हमें फिलहाल यही पता लगाना है।" एम्बेसडर बोला, "और यह बात हनीफ कड़ावाला जानता है तथा मुमकिन है, अब यह बात कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह भी जानते हों। हनीफ कड़ावाला ने उन्हें सब कुछ बता दिया हो। आखिर वह दोनों पनामा बार में उसके साथ एक घंटे से भी ज्यादा समय तक रहे हैं।"

"लेकिन यह पता लगाने के लिए हमें उन तीनों तक पहुँचना होगा सर !" वह उसी आईएसआईए एजेंट की आवाज थी, जो सबसे पहले बोला था।

"बिल्कुल।"

"और फिलहाल उनके विषय में हमें यही मालूम नहीं है।" वह तेज स्वर में बोला, "कि वह तीनों जिंदा भी हैं या नहीं।"

"सबसे पहले तो यह बात तुम लोग अपने दिमाग से पूरी तरह निकाल दो।" एंबेसडर पूरे यकीन के साथ बोला "कि वह तीनों मर चुके हैं। वह शत-प्रतिशत जिंदा हैं और अब तुम लोगों ने किसी तरह उन तक पहुँचकर दिखाना है।"

"लेकिन कैसे ?"

"मैं बताता हूँ कि कैसे। ऐसी तीन जगह हैं।" एम्बेसडर बोला, "जहाँ अगर वह जिंदा हैं, तो कभी न कभी जरूर पहुँचेंगे।"

"कौन-कौन-सी ?"

सबके चेहरे पर व्यग्रता झलकी।

सब चौंके।

"नंबर एक !" एंबेसडर ने उन जगहों के बारे में बताना शुरू किया, "रौनक शाह का घर। कोई और वहाँ पहुँचे या न पहुँचे लेकिन रौनक शाह कभी न कभी वहाँ जरूर पहुँचेगा। नंबर दो, टैक्सी स्टैंड। वह भी एक ऐसी जगह है, जहाँ उनके पहुँचने की संभावनाएँ हैं और तीसरी तथा आखिरी जगह है, वह होटल जिसमें वह दोनों अभी तक ठहरे हुए थे। तुम लोग एक काम करो, तीनों जगह पर निगाह रखो और जहाँ कहीं भी वह दिखाई पड़े, तुरंत एक-दूसरे को इनफॉर्म करके उन्हें दबोचने की कोशिश करो। राइट ?"

"राइट सर।"

"किसी ने कुछ कहना है, कुछ पूछना है ?"

"नहीं ।"

फिर वह मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गई ।

□□□

दोपहर के उस समय 2:00 बज रहे थे, कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह अभी भी खंडहर के उसी कमरे में थे जहाँ वह रात आकर ठहरे थे ।

अलबत्ता हनीफ कड़ावाला की लाश अब उन्होंने जंगल में ही दफना दी थी । वैसे भी उस लाश में से बहुत बुरी तरह बदबू उठने लगी थी और अब उस लाश के साथ वहाँ ठहरना उनके लिए संभव नहीं था ।

इस बीच रौनक शाह की आँखें बराबर उस कागज पर जमी हुई थी, जिस पर नक्शा बना था और अजीबोगरीब-सी भाषा में कुछ लिखा हुआ था ।

रौनक शाह को काफी देर तक याद न आया कि उसने वह भाषा कहाँ देखी है । दो बजे के बाद एकाएक उसके दिमाग में याददाश्त का बल्ब जला ।

"याद आ गया कमांडर !" रौनक शाह तेजी से बोला, "कि मैंने यह भाषा कहाँ देखी थी ?"

"कहाँ देखी ?" करण सक्सेना भी जबरदस्त सस्पेंसफुल लहजे में बोला ।

"विली के पास ! एक बार विली ने ही मुझे इस तरह का एक दस्तावेज दिखाया था और बोला था, यह एक बड़ी पुरानी अफ्रीकन भाषा है । विली ने तब मुझे यह भी बताया था कि वह उस भाषा को पढ़ना जानता है ।"

"वेरी गुड !" करण सक्सेना की आँखें चमकीं । उसे टैक्सी स्टैंड पर हुई विली से पहली मुलाकात याद आ गई, "यानी हमारा यह काम विली कर सकता है ।"

"हंड्रेड परसेंट कमांडर ।" रौनक शाह की आवाज में जोश था, "हालांकि विली पहली नजर में मतलबी आदमी लगता है, लेकिन वह यारों का यार है । काफी सारे गुणों से भरपूर है । हो सकता है, इस आड़ी-तिरछी लकीरों का भी वह कुछ मतलब बताएँ । क्योंकि उसने अपनी सारी जिंदगी खानाबदोशों की तरह बसर की है और न जाने कहाँ-कहाँ भटका है ।"

"विली अब कहाँ मिलेगा ?"

"विली से मिलने की बस एक ही जगह है ।" रौनक शाह ने बताया, "टैक्सी स्टैंड । वह चौबीसों घंटे वहीं रहता है ।"

"टैक्सी स्टैंड पर ?"

"हाँ, टैक्सी स्टैंड ही उसका घर है कमांडर ! वह वहीं उठता-बैठता, खाता-पीता है और कभी तन्हाई की जरूरत महसूस होती है, तो टैक्सी की फ्रंट सीट पर जाकर लेट जाता है ।"

करण सक्सेना की हैरानी बढ़ी ।

"वाकई तुम्हारा यह विली बड़ा अजीबोगरीब आदमी है ।"

"अजीब है कमांडर, लेकिन दिल का सच्चा है ! हीरा है ।"

"ठीक है ।" करण सक्सेना बोला, "तो विली से मिलते हैं ।"

□□□

रात के उस समय नौ बजे रहे थे । जब वे दोनों विली के पास पहुँचे । विली तक पहुँचने के लिये उन्होंने वही तरीका इस्तेमाल किया था, पहले वह चोरी की कार लेकर जंगल के दहाने तक पहुँचे थे और फिर पैदल चलते हुए आगे चेकपोस्ट तक गये जहाँ से उन्होंने टैक्सी पकड़ ली ।

कुल मिलाकर जब वह टैक्सी स्टैंड पर पहुँचे, तो वहाँ बड़ी गहरी शांति थी । आम दिनों में वहाँ मछली मार्केट जैसा जो हो-हल्ला रहता था, वह उस दिन बिल्कुल नहीं था । उस वक्त भी उनके चेहरे पर मेकअप था, जो एकदम से किसी के लिए भी उन्हें पहचान पाना मुश्किल था ।

दरअसल रात पनामा बार में जो भयानक तबाही मची थी, उसकी वजह से आज कंपाला बंद की घोषणा की गई थी । पूरा कंपाला बंद था और उसका साफ-साफ असर टैक्सी स्टैंड पर भी दिखाई पड़ रहा था । वहाँ आवाजाही लगभग न के बराबर थी और आज काफी सारे टैक्सी चालक भी वहाँ नहीं आये थे ।

टैक्सी स्टैंड के रेस्ट हाउस में घुसते ही करण सक्सेना को विली दिखाई पड़ा ।

उसकी शख्सियत ही ऐसी थी कि वह दूर से ही पहचाना जाता था ।

उसका लंबा कद । अपाचे इंडियन की तरह उसके सिर के आधे गायब बाल और उनमें चौड़ी-चौड़ी नालियाँ बनी हुई । एक कान में कुंडल । वाकई वह टैक्सी ड्राइवर कम और किसी पॉप बैंड का मास्टर ज्यादा नजर आता था ।

विली हमेशा की तरह उस समय रेस्ट हाउस के एक कोने में बैठा था और चरस की सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगा रहा था ।

वह दोनों उसके सामने जा खड़े हुए ।

"क्या काम है बाबा ?"

विली मेकअप की वजह से एकाएक उन दोनों को पहचान न सका ।

"विली !" रौनक शाह बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया, "मैं, रौनक !"

"र... रौनक !"

विली ने न सिर्फ वह आवाज पहचानी बल्कि वह एकदम झटके के साथ उठकर भी खड़ा हुआ ।

"रौनक तुम !" वह विस्फारित निगाहों से उसे देखता हुआ गर्मजोशी के साथ बोला, "बाबा, तुमने क्या काम किया है । कंपाला जैसी जेल तोड़ डाली । कसम से बाबा, तुम ग्रेट हो, ग्रेट ।"

वह रौनक शाह से एकदम कसकर चिपट गया ।

"धीरे बोलो ।" रौनक शाह हड़बड़ा उठा, "धीरे । किसी को पता नहीं चलना चाहिये, मैं यहाँ आया हूँ । और पीछे हटो ।"

विली ने जल्दी से खुद को कंट्रोल किया और पीछे हटा ।

एक कश लगाकर चरस की सिगरेट उसने वहीं फेंक दी ।

"इधर कैसे आना हुआ बाबा ?"

"मेरे साथ बाहर आओ, फिर सब कुछ बताता हूँ ।"

"बाहर ?"

"हाँ ।"

"किस्सा क्या है ?"

"कहा न, बाहर आओ । फिर बताता हूँ ।"

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह रेस्ट हाउस के दरवाजे की तरफ बढ़ गये ।

उन दोनों के पीछे-पीछे विली भी दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

आज रेस्ट हाउस में टैक्सी ड्राइवरों की संख्या काफी कम थी और थोड़े-बहुत जो ड्राइवर वहाँ थे, वह ताश खेलने में मग्न थे ।

बाहर आते ही रौनक, विली की टैक्सी की तरफ बढ़ गया ।

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह उस टैक्सी की पिछली सीट पर बैठ गये । वह ऐसा शो कर रहे थे, जैसे उन्होंने विली की टैक्सी बुक की हो । जबकि विली टैक्सी की ड्राइविंग सीट पर बैठा ।

"अब यहाँ से चलो ।" रौनक शाह ने कहा ।

"चलूँ !" विली चौंका, "किधर ?"

"किसी भी निर्जन इलाके में, जहाँ आसपास कोई न हो ।"

"लेकिन... ।"

"बहस मत करो ।" रौनक शाह ने उसे डपटा, "जल्दी करो । क्विक !"

विली ने फौरन चाबी लगाकर इग्निशन लॉक घुमाया । तत्काल कार का इंजन घरघराकर जाग उठा और फिर वह द्रुतगति के साथ टैक्सियों के रैले में से निकलकर मुख्य सड़क पर भागी ।

"बाबा, आखिर बात क्या है, कुछ तो मुझे बताओ ?" विली के चेहरे पर जबरदस्त सस्पेंस के भाव थे ।

"अभी चलते रहो ।"

कार दौड़ती रही ।

जल्द ही विली ने कार को एक बहुत निर्जन-सी सड़क पर ले जाकर रोका ।

वह तीनों ही इस बात से बेखबर थे कि बड़ी खामोशी के साथ उनका पीछा शुरू कर दिया गया है ।

वह आईएसआई के एजेंट थे, जो बहुत संभलकर उनका पीछा कर रहे थे । वह एक काली कार थी और एक टैक्सी थी । कभी काली कार उनका पीछा करने लगती और थोड़ी देर बाद वह गायब हो जाती, तो उसकी जगह टैक्सी आ जाती । वह बारी-बारी से उनके पीछे थे और इसी वजह से करण सक्सेना तथा रौनक शाह को उन पर शक नहीं हुआ था ।

इसके अलावा सभी आईएसआई एजेंटों के पास लॉन्ग रेंज वाले वॉकी-टॉकी सेट भी थे, जिसकी मार्फत वह एक-दूसरे से संपर्क रखे हुए थे ।

□□□

विली ने जिस निर्जन इलाके में ले जाकर टैक्सी रोकी, वह एक ऐसा क्षेत्र था, जो अभी रिहायशी कॉलोनी के तौर पर डेवलप हो रहा था और वहाँ चारों तरफ बड़ी-बड़ी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बन रही थी । अलबत्ता अभी वहाँ पब्लिक ने आकर रहना शुरू नहीं किया था ।

"बाबा !" विली टैक्सी रोकने के बाद बोला, "मेरा तो सस्पेंस के मारे दम निकला जा रहा है । अगर तुमने मुझे थोड़ी देर यह नहीं बताया कि माजरा क्या है, तो हो सकता है कि मेरा हार्ट ही फेल हो जाये ।"

रौनक शाह ने बिना कोई भूमिका बनाए वह कागज का टुकड़ा विली की गोद में रख दिया, जिस पर अजीबोगरीब-सी भाषा में कुछ लिखा हुआ था और कुछेक आड़ी-तिरछी लकीरें खींची थीं ।

"यह क्या है ?" विली ने कागज के टुकड़े को देखा ।

"इस अजीबोगरीब-सी भाषा को पढ़ने की कोशिश करो । जहाँ तक मुझे याद है, एक बार तुमने मुझे बताया था कि तुम इस भाषा को पढ़ना जानते हो ।"

विली की आँखें फिर कागज के टुकड़े पर जाकर जमी और उसके बाद तुरंत उसमें चमक पैदा हुई ।

"बिल्कुल ।" वह फौरन बोला, "मैं इस भाषा को पढ़ना जानता हूँ ।"

"तो फिर जरा बताओ, इस पर क्या संदेश लिखा हुआ है ?"

विली की आँखें अब पूरी तरह उस कागज के टुकड़े पर केंद्रित हो गईं और वह अपने दिमाग पर जोर डालने लगा ।

तभी करण सक्सेना ने कुछ बोलना चाहा, तो विली ने उसे रोका ।

"नहीं, थोड़ी देर खामोश रहो ।"

करण सक्सेना ने चुप्पी साध ली ।

वक्त अपनी सुस्त रफ्तार से गुजरता रहा ।

रात के उस समय कोई 10:30 बज रहे थे । आसपास की सड़क पर चूंकि कोई रोड लैंप भी नहीं था, इसलिये वहाँ घुप्प अंधेरा फैला हुआ था ।

जबकि विली ने अब चरस की सिगरेट भी सुलगा ली थी जिसका धुआँ उसके सोए हुए स्नायु तंत्रों को खोलने का काम कर रहा था ।

एकाएक विली चौंका ।

"बाबा ।" विली की रीढ़ की हड्डी तक में सिहरन दौड़ी, "यह तो बड़ी खतरनाक जगह का नक्शा है ।"

"खतरनाक जगह !"

"बिल्कुल । कंपाला से कोई 40-50 समुद्री मील दूर अथाह सागर के बीचो-बीच एक छोटा-सा टापू है । उसी टापू पर एक आदमखोरों की बस्ती बसी हुई है । यह संदेश उसी आदमखोरों की बस्ती के बारे में है ।"

करण सक्सेना और रौनक शाह की कौतूहलता बढ़ी ।

"क्या लिखा है उस बस्ती के बारे में ?"

"उस बस्ती के बारे में लिखा है कि वहाँ कोई आदमी कैद है, लेकिन उस आदमी का नाम इस संदेश में नहीं लिखा । मगर मुझे यही बात बड़ी हैरान कर रही है बाबा कि उन लोगों ने किसी आदमी को कैद भी किया हुआ है । वह तो पक्के आदमखोर हैं । इंसान को देखते ही उसे चीर-फाड़ डालते हैं तथा फिर उसे भूनकर खा जाते हैं । वह भला इतना सब्र कहाँ से लाएंगे, जो किसी आदमी को कैद करके रखें ।"

वह दोनों समझ गये, वह कौन आदमी था जो वहाँ कैद था ।

लेकिन उन्होंने उस बारे में विली को कुछ नहीं बताया ।

"क्या तुमने आदमखोरों की उस बस्ती के बारे में पहले कुछ सुना है ?" करण सक्सेना ने पूछा ।

"कुछ क्या, काफी कुछ सुना है । कंपाला शहर का भला ऐसा कौन आदमी है जो पंद्रह-बीस साल से यहाँ रह रहा हो; और आदमखोरों की उस बस्ती के बारे में नहीं जानता हो । बाबा, कोई भी आदमी उस टापू के आसपास नहीं फटकता, जिस पर आदमखोरों की

बस्ती है । वह इंसानों के सख्त दुश्मन है । वह उन्हें पकड़ते हैं तथा फिर मारकर खा जाते हैं । उनकी अलग सभ्यता है, अलग समाज है । वह आज भी सैकड़ों वर्ष पुरानी अपनी दुनिया में जीते हैं ।"

विली सचमुच उन लोगों के बारे में काफी कुछ जानता था और यह भी कुछ कम बड़े आश्चर्य की बात नहीं थी कि फारूख अहमद मसूदी ऐसे खतरनाक लोगों के बीच कैद था ।

कहानी नये-नये ट्विस्ट-टर्न ले रही थी ।

"वह लोग कपड़े वगैरह क्या पहनते हैं ?" करण सक्सेना उन आदमखोरों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करता हुआ बोला ।

"जैसा कि मैंने सुना है ।" विली बोला, "वह कपड़े कुछ नहीं पहनते । सिर्फ उनकी औरतें अपने गुप्तांगों पर कपड़े के कुछ चिथड़े बांधे रहती हैं ।"

"और वह इंसानी मांस के अलावा और क्या-क्या चीजें खाना पसंद करते हैं ?"

"इंसानी मांस के अलावा वह जंगल में उगाई हुई सब्जियाँ खाते हैं । वैसे मछली भी उनका प्रिय आहार है, जिसे वह समुद्र से पकड़ते हैं । आज से कोई 6-7 साल पहले की बात है, तब कंपाला में एक दौर ऐसा चला था कि आदमखोर शहर में घुस आते थे और वह सोते हुए आदमियों को उठाकर ले जाते । शुरू-शुरू में तो काफी दिन यही बड़ा सस्पेंस रहा कि रात को सोते हुए आदमी एकाएक कहाँ गायब हो जाते हैं ! बाद में जब यह रहस्य खुला कि यह काम आदमखोरों का है, तो जनता में बड़ी जबरदस्त दहशत फैली । रातों को आदमी सोते ही नहीं थे । मोहल्लों और सड़कों पर पहरा लगाया जाने लगा था ।"

"यहाँ की गवर्नमेंट ने इतनी खतरनाक खबर सुनने के बाद कोई एक्शन नहीं लिया ?"

"गवर्नमेंट ने भी एक्शन लिया ।" विली चरस की सिगरेट का एक कश लगाते हुए बोला ।

"गवर्नमेंट का एक्शन प्लान क्या था ?"

"गवर्नमेंट ने समुद्र के अंदर भारी मात्रा में कोस्टल गार्ड तैनात किये और उस टापू पर चौबीसों घंटे बारीक निगाहबीनी का इंतजाम किया । हालांकि युगांडा गवर्नमेंट ने तो यह भी चाहा था कि डायनामाइट लगाकर उस पूरे टापू को ही उड़ा दिया जाये और आदमखोरों की उस बस्ती को हमेशा-हमेशा के लिए नष्ट कर दिया जाये । लेकिन कुछ अंतर्राष्ट्रीय नागरिक संस्थाओं ने इस बात की अवहेलना की । इसीलिए युगांडा गवर्नमेंट को मजबूरन कोस्टल गार्ड वाला कदम उठाना पड़ा । लेकिन फिर भी कभी-कभार वह आदमखोर कंपाला में घुस आते हैं और आदमियों को उठाकर ले जाते हैं ।"

"आज भी ?"

"हाँ, आज भी ।"

"ओह !" करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़े, "और उस टापू तक पहुँचने का रास्ता क्या है ?"

"कोई भी रास्ता नहीं है ।" विली ने चरस की सिगरेट का एक कश और लगाया, "सिर्फ समुद्र ही एकमात्र रास्ता है ।"

करण सक्सेना की निगाहें अब उन आड़ी-तिरछी लकीरों पर जाकर ठहर गईं, जो संभवतः कोई नक्शा था और जिसका राज अभी तक नहीं खुला था ।

"इन लकीरों का मतलब मैं भी नहीं जानता ।" विली बोला, "मैं सिर्फ संदेश पढ़ पाया हूँ, जिसके बारे में मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है कि यहाँ कोई आदमी कैद है ।"

टैक्सी के अंदर बैठे हुए वह तीनों अभी बातचीत ही कर+ रहे थे कि तभी एक काली कार सामने की तरफ से चलती हुई आई और उनसे थोड़ा फासले पर आकर रुक गई ।

"खतरा !"

फौरन यही एक बात उन तीनों के दिमाग में हथौड़े की तरह बजी ।

"कमांडर !" रौनक शाह उस कार को देखकर आतंकित मुद्रा में बोला, "मैंने थोड़ी देर पहले भी यह कार अपने पीछे देखी थी ।"

अभी वह आपस में बातचीत कर ही रहे थे कि तभी उनके पीछे भी कोई 50 गज के फासले पर एक टैक्सी आकर रुकी ।

"बाबा !" विली के नेत्र भी दहशत से फटे, "यह तो हम लोगों को घेरा जा रहा है ।"

विली ने जल्दी से अपनी चरस की सिगरेट ड्राइविंग विंडो से बाहर फेंकी और फिर हैंडल घुमाकर टैक्सी से बाहर निकलना चाहा ।

"नहीं ।" करण सक्सेना तेज स्वर में बोला, "टैक्सी से बाहर मत निकलना । यहीं बैठे रहो ।"

विली ठिठक गया ।

माहौल एकाएक खतरनाक हो उठा था ।

उनके आगे-पीछे अब दो गाड़ियाँ थीं और उनमें दो-दो आदमी सवार थे । अलबत्ता उन्होंने फौरन कोई हरकत नहीं दिखाई थी । जिस तरह वह आदमी टैक्सी में बैठे हुए थे, उसी तरह वह भी अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठे थे ।

फिर एक काम और हुआ । जिस जगह विली की टैक्सी खड़ी थी, उस सड़क से बाईं तरफ एक रोड और था, जो कंपाला का बाईपास था । उन तीनों के देखते ही देखते उधर से भी एक कार मंथर गति से चलती हुई आई और वह उनकी टैक्सी से बस थोड़ा ही फासले पर रुक गई ।

उन्हें अब हर तरफ से भली-भांति घेर लिया गया था ।

उस कार में भी दो आदमी सवार थे ।

"लगता है ।" रौनक शाह धीमी आवाज में फुसफुसाया, "यह आईएसआई के एजेंट हैं । वह पहले से ही टैक्सी स्टैंड पर निगाह रखे हुए थे ।"

"ऐसा ही मालूम होता है ।"

इस बीच कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह के हाथ में आनन-फानन रिवॉल्वर निकलकर आ चुके थे ।

विली, रौनक शाह के हाथ में रिवॉल्वर देखकर बुरी तरह चौंका ।

"क्या बात है बाबा ?" विली बोला, "तुम टैक्सी ड्राइवर हो या कुछ और हो ? तथा यह आईएसआई का क्या लफड़ा है ?"

"फिलहाल यह सारी बातें बताने का समय नहीं है विली !" करण सक्सेना तल्ख़ लहजे में बोला, "यह बताओ, तुम रिवॉल्वर चलाना जानते हो या नहीं ?"

"र... रिवॉल्वर ?"

"हाँ ।"

"नहीं ।" विली की गर्दन इनकार की सूरत में हिली, "मैं रिवॉल्वर चलाना नहीं जानता । मैंने कभी रिवॉल्वर को छूआ तक नहीं ।"

"कोई बात नहीं ।" करण सक्सेना बोला, "अगर रिवॉल्वर को छूआ नहीं, तो अब छू लेना । वैसे भी रिवॉल्वर चलाना कुछ मुश्किल नहीं होता ।"

कमांडर करण सक्सेना ने तुरंत अपने क्लेंसी हैट में मौजूद दूसरा कोल्ट रिवॉल्वर निकाला और उसे विली की तरफ बढ़ाया ।

विली उसके हैट में से रिवॉल्वर निकलते देख चौंका ।

उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह किसी मायानगरी में पहुँच गया हो ।

"जब दुश्मन सामने आये ।" करण सक्सेना उसे रिवॉल्वर चलाने की ट्रेनिंग देता हुआ बोला, "तो सिर्फ रिवॉल्वर की नाल दुश्मन की तरफ करके इस लिबलिबी (ट्रिगर) को दबा देना । उसके बाद बाकी काम यह रिवॉल्वर खुद कर देगा । हाँ, हाथ को थोड़ा मजबूती के साथ तानकर रखना । क्योंकि लिबलिबी दबाते ही बैकलैश की वजह से कंधा जख्मी हो सकता है । ओके ?"

"ओके !"

"यह लो ।"

विली ने अपने हाथ में रिवॉल्वर इस तरह कसकर पकड़ ली, जैसे कोई टैंक भेदी तोप उसके हाथ में आ गई हो ।

आईएसआई एजेंट अभी भी अपने-अपने वाहनों में ही थे और सारा माहौल बड़ा सस्पेंसफुल था ।

"विली !" एकाएक करण सक्सेना बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया ।

"यस कमांडर !"

"कार की सभी लाइटें बन्द कर दो ।" करण सक्सेना बोला, "और बहुत धीरे-धीरे रेंगते हुए बाहर निकलो । क्योंकि हमारे ऊपर हमला किसी भी पल हो सकता है ।"

"ओके ।"

आदेश देने की देर थी, विली ने फौरन कार की सभी लाइटें बंद कर दी ।

और ।

उनका कार की लाइटें बंद करना ही गजब हुआ ।

आईएसआई एजेंट भाँप गये कि वह कोई महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रहे हैं । वह टैक्सी से बाहर निकल पाते, उससे पहले ही उन्होंने धुआँधार तीनों दिशाओं से उन पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दी ।

विली की चीख निकल गई ।

हृदयविदारक चीख ।

वह कार की फ्रंट सीट से चिपक गया ।

दरअसल तीनों दिशाओं से गोलियाँ चलाना शुरू होते ही टैक्सी के ग्लास यूँ फूटे थे, जैसे बम फूटे हों । विली चीखता हुआ नीचे गिरा ।

कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह भी नीचे झुक गये ।

कोई दो मिनट गोलियाँ चलने के बाद शांति छा गई ।

गहरी शांति ।

"विली ।" रौनक शाह ने पिछली सीट पर पड़े-पड़े विली को तेज स्वर में आवाज दी ।

"ह... हूँ !" विली की बड़ी भिंची-भिंची, मरियल-सी आवाज उनके आवाज में पड़ी ।

"तुम ठीक तो हो न विली ?"

"हाँ ।"

"कोई गोली तो तुम्हें नहीं लगी ?"

"नहीं ।"

"शुक्र है ।"

कुछ देर वह तीनों अंधेरे में उसी तरह सीट से चिपके रहे । अब टैक्सी की डोम लाइट (छत वाली लाइट) भी नहीं जल रही थी । फिर करण सक्सेना ने रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े अपनी गर्दन थोड़ी ऊपर उठाई और पिछली विंडस्क्रीन से बाहर का नजारा किया । तीनों वाहन अभी भी अपनी-अपनी जगह खड़े थे और कोई भी आईएसआई एजेंट बाहर नहीं निकला था ।

मालूम होता था, इतना करण सक्सेना को उनका भय नहीं था जितना उन्हें उसका भय था ।

तभी धुआँधार कुछ गोलियाँ और चली ।

करण सक्सेना झटके से वापस लेट गया ।

टैक्सी की पिछली विंडस्क्रीन भी अब तेज छनाके के साथ टूट गई ।

अगले ही पल करण सक्सेना ने लपककर एक कदम उठाया । वह फुर्ती के साथ छलांग लगाकर अगली फ्रंट सीट पर पहुँचा, जहाँ विली बिल्कुल छिपकली की तरह सीट के साथ चिपका हुआ था ।

करण सक्सेना के वहाँ पहुँचते ही विली की चीख निकली ।

"पीछे हटो ।"

विली पीछे हटा ।

"क्या करने जा रहे हो बाबा ?" विली के चेहरे पर विचलित भाव थे ।

"ड्राइविंग सीट से पीछे हटो । अभी मालूम हो जायेगा कि मैं क्या करने जा रहा हूँ ।"

विली एक तरफ हो गया ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना ने अधलेटी-सी मुद्रा में कार की ड्राइविंग सीट सम्भाली । ड्राइविंग सीट सम्भालते ही उसने इग्निशन में लगी चाबी घुमाई । तुरंत कार का इंजन जोर से घरघराकर जाग उठा और फिर कार तोप से छूटे गोले की तरह सामने खड़े काली कार की तरफ झपटी ।

काली कार में जो आईएसआई एजेंट बैठे हुए थे, वह घबराये ।

वह कुछ करते या समझ पाते कि करण सक्सेना क्या एक्शन लेने जा रहा है, उससे पहले ही कोल्ट रिवॉल्वर करण सक्सेना की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और उसने दो फायर किये ।

निशाना अचूक था ।

धायं ! धायं !!

दोनों गोलियाँ काली कार की विंड स्क्रीन फाड़ती हुई आईएसआई एजेंटों की खोपड़ी में जाकर लगी ।

वह चीखते हुए धड़ाम से काली कार की फ्रंट सीट पर ही ढेर हो गये । उनकी खोपड़ियों तरबूज की तरह फट पड़ी थीं ।

पीछे से अब दोबारा धुआँधार फायरिंग होने लगी ।

"कमांडर !" रौनक शाह चिल्लाया, "भागो ।"

"नहीं ।" करण सक्सेना के चेहरे पर खतरनाक इरादों की झलक थी, "भागना मुनासिब नहीं । पहले हमारे लिये इन सबसे निपटना जरूरी है ।"

भागते हुए टैक्सी के पहिये चीखते हुए रुके । फिर करण सक्सेना ने यू टर्न देकर तेजी से टैक्सी मोड़ी ।

"रौनक !" करण सक्सेना ने टैक्सी मोड़ते ही कहा, "थोड़ी देर के लिये ड्राइविंग सीट तुम संभालो ।"

"आप क्या करने जा रहे हो कमांडर ?" रौनक शाह के चेहरे पर सहमे-सहमे भाव थे ।

"देखते जाओ ।"

रौनक शाह भी अब पिछली सीट से फ्रंट सीट पर आ गया और उसने थोड़ा नीचे झुककर ड्राइविंग सीट सम्भाली ।

करण सक्सेना के दायें-बायें अब विली और रौनक शाह थे । वह बीच में थे ।

"सामने जो टैक्सी खड़ी है ।" करण सक्सेना बोला, "उसकी तरफ बढ़ो, तेजी से ।"

रौनक शाह ने पहले जैसी तूफानी स्पीड के साथ ही वह टैक्सी सामने की तरफ दौड़ाई ।

बाई पास वाली सड़क पर खड़ी सफेद कार भी अब मुख्य सड़क पर आ चुकी थी । उनकी टैक्सी के आगे कार थी, पीछे टैक्सी ।

टैक्सी के अंदर मौजूद आईएसआई एजेंट अपने दो साथियों को मरते देख बौखला उठे थे ।

उन्होंने आनन-फानन अपनी टैक्सी स्टार्ट की और उसे बैक गियर में डालकर वहाँ से बचकर भागने का प्रयास किया ।

"रौनक !" करण सक्सेना चीखा, "कोई बचकर नहीं भागना चाहिये, कोई नहीं । वरना इन लोगों की वजह से ही हमारे सामने आगे और मुश्किलें खड़ी होंगी ।"

रौनक शाह ने टैक्सी ड्राइव करते-करते गोली चलाई ।

निशाना रौनक शाह का भी अचूक था ।

लाजवाब ।

गोली भागती हुई टैक्सी के सीधे टायर में जाकर लगी ।

टायर यूँ जोरदार आवाज के साथ फटा, जैसे पूरे प्रेशर के साथ पेट्रोल का कोई टैंकर फट पड़ा हो ।

टैक्सी चूंकि फुल स्पीड पर थी, इसलिये उसका बैलेंस बिगड़ गया ।

वह आउट ऑफ कंट्रोल हो गई ।

वह पहले खाली सड़क पर सर्राटे के साथ रपटती हुई काफी आगे चली गई और फिर रबड़ के खिलौनों की तरह उछलकर उसने कलाबाजी खाई ।

वह सड़क पर बिल्कुल उल्टी गिरी ।

टैक्सी में जो आईएसआई एजेंट मौजूद थे, उनकी वीभत्स चीखें निकल गयीं ।

वह हृदयविदारक मंजर था ।

जैसे फिल्म का कोई स्टंट सीन ।

बाईपास की तरफ से जो सफेद कार आई थी और जो उनके पीछे थी, उनमें से भी अब फायरिंग हो रही थी, लेकिन विली ने फिलहाल एक बढ़िया काम किया था। उसने रौनक शाह से टैक्सी ड्राइविंग सीट खुद संभाल ली थी और वह इतने बढ़िया अंदाज में टैक्सी को सड़क पर इधर से उधर लहराता हुआ चला रहा था कि कोई गोली उन तक नहीं पहुँच रही थी।

हाँ, विली ने अभी तक अपनी रिवॉल्वर से कोई गोली नहीं चलाई थी।

उसे इसकी जरूरत ही नहीं पड़ी।

करण सक्सेना और रौनक शाह भी पूरी तरह मोर्चा संभाले हुए थे।

उधर करण सक्सेना दौड़ती हुई टैक्सी में अब एकाएक पीछे की तरफ पलट गया।

इस वक्त उसके सामने सफेद कार थी, जो उन्हीं के पीछे उतनी ही स्पीड से दौड़ी चली आ रही थी।

उसमें बैठे आईएसआई एजेंट शायद कुछ दिलेर थे।

करण सक्सेना ने फौरन सफेद कार के ड्राइवर को भी निशाना बनाकर ट्रिगर दबाया।

ड्राइवर की चीख निकल गई। गोली ठीक उसकी गर्दन में जाकर लगी थी। कार आउट ऑफ कंट्रोल हो गई।

वह किसी शराबी की तरह लड़खड़ाई और इससे पहले कि दूसरा आईएसआई एजेंट उस कार को संभालता, वह धड़ाम की भीषण गर्जना करते हुए एक पेड़ से जा टकराई।

उसी क्षण विली ने टैक्सी के ब्रेक अप्लाई किये।

तूफानी स्पीड से दौड़ती टैक्सी के पहिए चर्र-चर्र की आवाज करके घिसटते हुए रुके।

कमांडर करण सक्सेना ने तत्काल टैक्सी के बाहर छलांग लगा दी।

अब वह खुली सड़क पर था।

बाहर।

उसकी चौकन्नी आँखें हल्की-सी आहट सुनकर सीधे उस तरफ गयीं, जिधर टैक्सी उल्टी हुई पड़ी थी।

फिर उस तरफ से एक फायर हुआ।

करण सक्सेना मलायलम टाइगर क्रैक के छापामारों की तरह कलाबाजी खा गया।

गोली उसके कंधे के बराबर में से सनसनाती हुई गुजरी।

सचमुच।

वह जिंदगी मौत का खेल था।

और करण सक्सेना ऐसे ही खेल खेलता आया था।

मलायमल टाइगर क्रैक छापामारों की तरह कलाबाजी खाते ही वह पलटा। कोल्ट रिवॉल्वर एक मर्तबा फिर उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की भांति घूमी और उसने गोली चलाई।

दोनों आईएसआई एजेंट, जो उल्टी हुई टैक्सी में से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे, वह चीखते हुए वहीं ढेर हो गये। उनका आधा शरीर कार की खिड़की के अंदर था और आधा बाहर था।

थुल-थुल करके उनके मृत शरीर के आसपास खून का तालाब जमा होने लगा।

इस बीच रौनक शाह भी टैक्सी से बाहर आ चुका था।

अलबत्ता विली अभी टैक्सी के अंदर ही था।

फिर करण सक्सेना ने अपना ध्यान उस सफेद कार की तरफ आकृष्ट किया, जो पेड़ से टकराई थी और उसका ड्राइवर मारा जा चुका था। उस सफेद कार में अभी भी एक आईएसआई एजेंट मौजूद था। लेकिन अपने तमाम साथियों को मरते देख वह इस कदर भयभीत था कि उसके अंदर अब इतनी हिम्मत भी नहीं रह गई थी, जो अपनी रिवॉल्वर से उन पर गोली चलाए।

एकाएक वह परली तरफ के साइड डोर से बाहर निकला और बाहर निकलते ही वह निर्माणाधीन मल्टीस्टोरी की तरफ भागा।

भागते हुए उसके कदम लड़खड़ा रहे थे।

चेहरा फक्क था।

"डोंट मूव !" करण सक्सेना ने रिवॉल्वर उसकी तरफ तान दी और गला फाड़कर चीखा, "जहाँ हो, वहीं रुक जाओ। अगर एक कदम और आगे बढ़ाया, तो शूट कर दूँगा।"

भागते हुए आईएसआई एजेंट के तत्काल पैर फ्रिज हो गये।

विली भी पूरी तरह किला फतह होते देख अब टैक्सी से बाहर निकल आया था।

उसी पल आईएसआई एजेंट पलटा। उसके हाथ में अब रिवॉल्वर आ चुकी थी। पलटते ही उसने फायर किया।

विली की चीख निकल गई।

फायर उसी को निशाना बनाकर किया गया था।

हड़बड़ाहट में विली के हाथ में जो रिवॉल्वर मौजूद थी, उसने उसका ट्रिगर दबा दिया।

गोली हड़बड़ाहट में जरूर चलाई गई थी, लेकिन वह ठीक निशाने पर जाकर लगी।

उसने सीधे आईएसआई एजेंट के दिल को छलनी किया।

वह चीखता हुआ नीचे गिरा।

अलबत्ता खड़ा अपनी जगह विली भी नहीं रह सका । वह रिवॉल्वर की बैकलेश की वजह से धड़ाम से पीछे की तरफ गिरा । रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर कई मीटर दूर जा गिरी और उसके कंधे में ऐसी झनझनाहट पैदा हुई, जैसे न मालूम कितनी भारी वस्तु उसके कंधे से आ टकराई हो ।

"वेरी गुड !" रौनक शाह ने लपककर विली को सहारा देकर उठाया, "वेरी गुड विली ! सचमुच तुमने एक गोली चलाई और वही कमाल था ।"

वह हाँफ रहा था ।

"बाबा, गोली तो कमाल थी ।" विली ने अपने कंधे को दबोचा, "लेकिन झटका भी कुछ कम कमाल नहीं था ।"

रौनक शाह के होंठों पर मुस्कुराहट दौड़ गयी ।

करण सक्सेना भी अब तक दोनों के नजदीक आ चुका था ।

"ज्यादा चोट तो नहीं लगी ?" उसने विली से पूछा ।

"नहीं कमांडर !" रौनक शाह की देखा-देखी वह भी करण सक्सेना को कमांडर कह रहा था ।

करण सक्सेना ने आगे बढ़कर दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर भी उठाई ।

"मैं समझता हूँ ।" फिर वह बोला, "सभी आदमी मारे जा चुके हैं ।"

"बिल्कुल कमांडर ! न सिर्फ सभी आदमी मारे जा चुके हैं ।" रौनक शाह बोला, "बल्कि जहाँ तक मैं समझता हूँ, अब आईएसआई एजेंटों की तलवार भी हमारे ऊपर से हट चुकी है । अब हम पूरी आजादी के साथ मसूदी तक पहुँचने की कोशिश कर सकते हैं ।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो । और यह सब विली की बदौलत हुआ है ।" करण सक्सेना ने आभारपूर्वक नेत्रों से विली की तरफ देखा, "विली की बदौलत न सिर्फ हमें उस जगह का एड्रेस मालूम हुआ, जहाँ फारूख अहमद मसूदी कैद है, बल्कि विली की बदौलत ही आज यह सारे आईएसआई एजेंट भी मारे गये । थैंक्यू विली !"

"इसमें थैंक यू की क्या बात है ?" विली गर्मजोशी के साथ बोला, "और एड्रेस आप लोगों को मेरी वजह से जरूर मालूम हुआ है, लेकिन इन सबके मरने के पीछे मैं कहाँ हूँ ?"

"इनकी मौत के पीछे भी तुम ही हो मेरे दोस्त !" करण सक्सेना ने एक कोल्ट रिवॉल्वर वापस क्लेंसी हैट की ग्लिप में फँसाते हुए कहा, "यह शैतान टैक्सी स्टैंड पर निगाह रखे हुए थे । अगर हम तुमसे मिलने वहाँ न पहुँचते, तो इस वक्त यह नौबत न आती ।"

"लेकिन एक बात मैं समझ नहीं पा रहा हूँ ।" विली की आवाज में सस्पेंस झलका ।

"क्या ?"

"यह फारूख अहमद मसूदी कौन है और यह आईएसआई का लफड़ा क्या है ?"

करण सक्सेना की निगाहें अब रौनक शाह के चेहरे पर जाकर ठहर गई ।

जैसे वह पूछ रहा हो कि विली को उस बारे में कुछ बताना चाहिये या नहीं ?

"मेरा ख्याल है कमांडर !" रौनक शाह बोला, "विली को इस बारे में बताने में कोई हर्ज नहीं है ।"

"क्या कुछ सीरियस मामला है ?" विली के नेत्र और ज्यादा सिकुड़े ।

"हाँ ।" करण सक्सेना, विली के चेहरे पर नजरें गड़ाये-गड़ाये बोला, "मामला न सिर्फ सीरियस है बल्कि हद से ज्यादा सीरियस है ।"

उसने विली के सामने संक्षेप में पूरा किस्सा बयान किया ।

"ओह !" विली भौंचक्के लहजे में बोला, "इसका मतलब आप दोनों इंडियन स्पाई हैं ।"

"हाँ ।"

"माई गॉड !"

विली के नेत्र बुरी तरह फट पड़े ।

वह अब उन्हें बड़ी अनोखी नजरों से घूरने लगा ।

सचमुच वह उसके लिये धमाकाखेज न्यूज़ थी ।

"लेकिन मैं एक बात कहूँगा विली !" रौनक शाह बोला, "यह बात सिर्फ तुम तक ही रहनी चाहिये कि हम इंडियन स्पाई हैं और फारूख अहमद मसूदी का लफड़ा क्या है । क्योंकि अगर यह राज खुल गया, तो हो सकता है कि हमारा पूरा मिशन ही फेल हो जाये ।"

"बेफिक्र रहो मेरे दोस्त !" विली की आवाज में यकीन कूट-कूटकर भरा था, "मेरी तरफ से तुम्हारे मिशन में कोई आँच आने वाली नहीं है ।"

"हम जानते हैं, इसलिये हमने तुम्हें इतना बड़ा राज बता भी दिया है विली !"

"थैंक्यू !"

विली ने अपने अपाचे इंडियन जैसे सिर पर हाथ फिराया । फिर वह चरस की एक नई सिगरेट निकालकर सुलगाने लगा ।

□□□

अगली रात बड़ी महत्वपूर्ण थी । वह वो रात थी जब कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह उस टापू पर जाने के लिए तैयार हुए, जिस टापू पर आदमखोरों की बस्ती थी और जहाँ फारूख अहमद मसूदी कैद था ।

बिना शक वह इसलिये भी ज्यादा उत्साहित थे, क्योंकि आखिरकार बड़ी मुश्किल से और इतने लंबे-चौड़े हंगामे के बाद उन्हें फारूख अहमद मसूदी का एड्रेस मालूम हुआ था ।

रात के 2:00 बज रहे थे, जब वह समुद्र के एक बिल्कुल सुनसान तट पर पहुँचे ।

वहाँ पहले से ही पानी के नजदीक रेत में एक नाव पड़ी हुई थी और उसी में एक चप्पू भी रखा था ।

वह रात बड़ी खामोश थी ।

समुद्र का पानी भी शांत था और उसकी उठती-गिरती लहरों में कोई कोलाहल नहीं था ।

दरअसल कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह ने वह नाव भी उसी दिन गोदी से किराये पर अरेंज की थी । जिसे उस नाव का मल्लाह ही वहाँ छोड़ गया था । रौनक शाह ने आधी रात को वह नाव रेत से धकेलकर पानी में डाल दी और फिर वह दोनों उसमें सवार हो गये । नाव का चप्पू भी रौनक शाह ने ही संभाल लिया । उसके बाद वह उसे बहुत धीरे-धीरे खेने लगा ।

नाव समुद्र की उठती-गिरती लहरों पर मचलती हुई अब उस टापू की तरफ बढ़ी, जिस पर आदमखोरों की बस्ती थी ।

"बहुत सावधानी से आगे बढ़ना रौनक शाह !" करण सक्सेना उसे हिदायत देता हुआ बोला, "हमने किसी भी हालत में कोस्टल गार्डों की निगाह में नहीं आना है ।"

"आप बेफिक्र रहो कमांडर ! मैं पूरी एहतियात बरतूंगा ।"

नाव आगे की तरफ बढ़ती रही ।

उन दोनों ने उस समय ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने हुए थे, जिसके कारण वह अंधेरे में काफी घुल-मिल गये थे । नाव पर भी काला रंग पुता था, जिससे वह एकाएक नजर नहीं आ रही थी ।

करण सक्सेना ने अपनी ओवरकोट की जेब से एक बहुत हाई लेंस वाली दूरबीन निकालकर आँखों से सटाई तथा फिर वह उससे समुद्र का दूर-दूर तक का नजारा देखने लगा ।

उसे अपने से काफी फासले पर एक धब्बे के रूप में ऐसी कई मोटरबोट दिखाई पड़ी, जिसमें कोस्टल गार्ड सवार थे ।

"हमें दक्षिण-पश्चिम दिशा से आगे बढ़ना होगा रौनक शाह !"

"किसलिये ?"

"क्योंकि उसी तरफ कोस्टल गार्डों की संख्या कुछ कम है ।"

"ओह !"

रौनक शाह ने चप्पू अब अपने दूसरे हाथ में पकड़ लिया और नाव को दक्षिण-पश्चिम दिशा में खेना शुरु कर दिया ।

विली ने उनके साथ उस टापू पर भी आने की जी तोड़ कोशिश की थी, लेकिन करण सक्सेना ही तैयार नहीं हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी ऐसे आदमी की जान को खतरे में डाला जाये, जो उस मिशन पर नियुक्त नहीं था।

कोई दो घंटे तक लगातार नाव खेने के बाद वह समुद्र में एक लंबा रास्ता काटकर टापू से कोई दो किलोमीटर दूर पहुँचे। अब उससे आगे नाव के द्वारा नहीं जाया जा सकता था, क्योंकि वहाँ और भी सख्त पहरा था।

"अब क्या करें कमांडर ?" रौनक शाह ने करण सक्सेना की तरफ देखा।

"टापू तक पहुँचने के लिए फिलहाल हमें दूसरा तरीका इस्तेमाल करना होगा।"

"कौन-सा दूसरा तरीका ?"

करण सक्सेना ने जवाब देने की बजाय उस एयर बैग की चेन खोल डाली, जिसे वह अपने साथ लेकर आये थे।

उस एयर बैग में गोताखोरों की दो ड्रेस रखी हुई थीं।

"यानी अब हमें तैरकर टापू तक जाना होगा।" रौनक शाह बोला।

"बिल्कुल। क्यों, तुम्हें कोई एतराज है ?"

"नहीं।"

"तो फिर जल्दी से यह ड्रेस पहन लो।"

उसके बाद उन दोनों ने आनन-फानन गोताखोरों की वह ड्रेस पहन डाली।

मुँह पर मास्क लगा लिया।

इसके अलावा पीठ पर छोटे-छोटे ऑक्सीजन सिलेंडर कसे।

अब वह तैयार थे।

"रेडी ?" करण सक्सेना, रौनक शाह से बोला।

"रेडी !"

"मूव।"

अगले ही पल वह तूफानी स्पीड से समुद्र में कूद पड़े और फिर पानी में सतह से कोई 10 फुट नीचे ही नीचे तैरते हुए टापू की तरफ बढ़े।

वह बड़ी खामोशी से तैर रहे थे और इस बात का उन्होंने खास ख्याल रखा हुआ था कि कहीं कोस्टल गार्डों की निगाह उनके ऊपर न पड़ जाये।

वह पूरी तरह सावधान थे।

चौकन्ने।

□□□

बहरहाल कोस्टल गार्डों को धोखा देते हुए वह किसी प्रकार टापू तक पहुँचने में कामयाब हुए ।

हालांकि रौनक शाह को दो किलोमीटर लंबा वह रास्ता तैरते हुए पार करना काफी भारी पड़ा ।

वह अस्थमे का मरीज था ।

फिर साँस भी उसकी कुछ ज्यादा ही जल्दी फूल जाती थी । लेकिन किसी तरह उसने वह रास्ता तय किया और करण सक्सेना के साथ-साथ टापू पर पहुँचा ।

टापू पर पहुँचते ही वह एक पेड़ पकड़कर खड़ा हो गया और मुँह पर हाथ रखकर बुरी तरह खांसने लगा ।

"क्या हुआ ?" करण सक्सेना उसकी तरफ बढ़ा ।

"क... कुछ नहीं हुआ कमांडर, कुछ नहीं ।"

रौनक शाह ने खांसते हुए अपनी जेब से इनहेलर निकाला और उसकी दवाई अपने मुँह में स्प्रे की । कुछ देर वह उसी प्रकार खांसता रहा फिर उसकी साँस संतुलित हो गई ।

"यह अस्थमा अब हद से ज्यादा तंग करने लगा है ।" रौनक शाह धीरे-धीरे हाँफता हुआ बोला, "यह मिशन खत्म हो जाये फिर सबसे पहले इसी का इलाज कराना है ।"

"सचमुच, इस अस्थमे की वजह से तुम्हारे लिए कभी भी खतरा हो सकता है ।"

सुबह के अब चार बज रहे थे ।

लेकिन रात्रि की गहन कालिमा अभी भी चारों तरफ फैली हुई थी और भोर के उजाले के अभी दूर-दूर कोई आसार नहीं थे ।

कमांडर करण सक्सेना ने देखा, टापू पर काफी घने पेड़-पौधे थे और वहाँ जंगली जानवर भी काफी तादाद में थे । जब वह टापू पर पहुँचे थे, उसी क्षण उन्होंने एक बड़े लंबे तेंदुए को बस अपने से थोड़ा ही फासले पर गुजरते देखा था ।

करण सक्सेना ने सावधानीवश रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली ।

रौनक शाह ने भी रिवॉल्वर निकाली ।

"एक बात ध्यान रहे ।" करण सक्सेना उसे सावधान करता हुआ बोला, "किसी भी परिस्थिति में गोली चलाने की नौबत न आये । क्योंकि अगर गोली चली तो पूरे टापू पर हंगामा मच जायेगा और आदमखोर समझ जाएंगे कि कोई बाहर का आदमी यहाँ घुस आया है ।"

"ठीक है कमांडर ।"

वह दोनों अब निःशब्द ढंग से जंगल में अंदर की तरफ बढ़े ।

नीचे जमीन पर चूंकि सूखे पत्ते पड़े हुए थे, इसलिये वह उनके पैरों के नीचे आकर करड़-करड़ की आवाज कर रहे थे । हालांकि उनकी हरचंद कोशिश थी कि पत्ते करड़-

करड़ की आवाज न करें, लेकिन उस आवाज पर उनका बस न था । क्योंकि सूखे पत्ते तमाम जगह फैले हुए थे और घुप्प अंधेरे में वह एकदम से नजर भी नहीं आ रहे थे ।

उन दोनों ने टापू के उस घने जंगल में अभी थोड़ा ही फासला तय किया होगा कि एकाएक उन्हें दूर से किसी नगाड़े के बजने की आवाज सुनाई पड़ी । कोई आदमखोर नगाड़े पर बड़ी जोर-जोर से थाप दे रहा था और नगाड़े बजने की आवाज पूरे टापू पर गूँज रही थी ।

"यह नगाड़ा क्यों बजाया जा रहा है ?" रौनक शाह ने चौंककर पूछा ।

"मैंने सुना है, काफी पहले छोटे-छोटे कबीले के लोग जंगली जानवरों को अपनी बस्ती से दूर रखने के लिए रात को इसी तरह नगाड़े पर थाप दिया करते थे । हो सकता है, आदमखोरों की बस्ती में वही रिवाज अभी भी चला आ रहा हो । आखिर यह उसी तरह हजारों साल पुरानी सभ्यता में जी रहे हैं ।"

"जरूर यही बात है ।"

रौनक शाह ने नगाड़े की वह आवाज बहुत ध्यान से सुनी । वह एक ख़ास लय में बंधी हुई आवाज थी, जो भीषण क्रंदन करती मालूम हो रही थी ।

इसके अलावा उन दोनों ने एक बात और महसूस की, आदमखोरों की बस्ती अभी वहाँ से काफी दूर थी ।

वह आगे बढ़ते रहे ।

अकस्मात एक घटना घटी, हृदयविदारक घटना ।

वह एक आदमखोर था, जो एकाएक घनी झाड़ियों के पीछे से किसी जिन्न की तरह नमूदार हुआ और एकदम उन दोनों के सामने बड़े जानलेवा अंदाज में कूदा ।

रौनक शाह के मुँह से घुटी-घुटी-सी चीख निकल गई ।

वह झटके से पीछे हुआ ।

उन्होंने देखा, वह आदमखोर पूरी तरह निर्वस्त्र था और उसके शरीर पर कपड़े की एक धज्जी तक नहीं थी । सिर्फ कमर के साथ पेड़ के कुछ पत्ते बंधे थे और गले में छोटी-छोटी हड्डियों की एक माला पड़ी थी ।

अलबत्ता उसके हाथ में फरसे जैसा धातु का एक बड़ा पैना हथियार जरूर था, जिसे उसने उन दोनों के सामने कूदते ही बड़े खतरनाक अंदाज में इधर-उधर नचाया ।

"यम... यम... यचूमा !"

उसने अपनी जुबान में कुछ कहा ।

जिसे उन दोनों में से कोई न समझ सका ।

रौनक शाह की उंगली रिवॉल्वर की ट्रिगर की तरफ बढ़ी ।

"नहीं !" करण सक्सेना चीखा, "गोली मत चलाना, गोली नहीं ।"

रौनक शाह ठिठक गया ।

उसी क्षण आदमखोर चीते की तरह उछला और फरसा हाथ में लिए-लिए रौनक शाह की तरफ झपटा ।

वह शायद भाँप गया था कि रौनक शाह उसके ऊपर फायर करने जा रहा है ।

उसके फरसे का निशाना रौनक शाह की गर्दन थी ।

वह एक ही झटके में फरसे से उसकी गर्दन उड़ा देना चाहता था ।

रौनक साहब बड़े ही दहशतनाक अंदाज में चीखा ।

लेकिन फरसा उसकी गर्दन तक पहुँच पाता, उससे पहले ही कमांडर करण सक्सेना कराटे के अपने खौफनाक एक्शन में आ गया ।

उसके शरीर में बिजली-सी भर गई और वह एकदम उस आदमखोर के समानांतर हवा में उछाला । हवा में उछलते ही उसने धड़ाक से आदमखोर के ऊपर उठे हाथ पर अपने हाथ से ब्लॉक लगा दिया ।

आदमखोर का फरसे वाला हाथ यूँ झनझना उठा, जैसे लोहे की कोई रॉड उसके हाथ से आ टकराई हो ।

उसी क्षण करण सक्सेना ने हिजागिरी (घुटने का भीषण प्रहार) उसके पेट में किया ।

आदमखोर यूँ भैंस की तरह बिलबिला उठा, जैसे उसकी आँतें फट पड़ी हों ।

फरसा उसके हाथ से छूटकर नीचे जा पड़ा और उसने जल्दी से अपने पेट को पकड़ा ।

तुरंत कमांडर करण सक्सेना ने लपककर नीचे पड़ा फरसा उठा लिया और इससे पहले कि आदमखोर कोई अगली हरकत दिखाता, उसने फरसे को अपनी पूरी ताकत से उसकी गर्दन पर खींचकर मारा ।

फौरन आदमखोर की गर्दन धड़ से अलग होकर दूर जा गिरी ।

उसे चीखने तक का मौका न मिला ।

रौनक शाह हैरानी से कमांडर को देखता रह गया ।

उस समय कमांडर साक्षात शैतान नजर आ रहा था ।

"चलो ।" फिर करण सक्सेना बोला, "आगे चलो ।"

वह दोनों पूर्व की भांति निर्विकार ढंग से आगे की तरफ बढ़े ।

□□□

आधा घंटे में ही उन्होंने काफी जंगल पार कर लिया ।

अब बस्ती का आभास मिलने लगा था, जैसे एक-दो जगह उन्होंने झोपड़ियाँ बनी हुई देखी । इसके अलावा नगाड़े की आवाज भी अब काफी तेज हो गई थी और ऐसा लग रहा था, जैसे नगाड़ा उनके आसपास ही कहीं बज रहा हो ।

वह जंगल में थोड़ा और आगे बढ़े तो उन्हें आदमखोरों की बस्ती भी दिखाई पड़ी।

वह एक भरी-पूरी बस्ती थी और वहाँ ढेरों झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। वह सब घासफूस की झोपड़ियाँ थीं और उनकी निर्माण पद्धति थोड़ी अलग थी। जैसे उनकी छत त्रिआयामी थी और ऊपर से शंकु आकार थी। इसके अलावा उनमें लकड़ी के या किसी और चीज के दरवाजे नहीं लगे हुए थे। बस झोपड़ी में आने-जाने के लिए जगह छोड़ दी गई थी और फिलहाल उस जगह के बाहर बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए थे, जो जरूर जंगली जानवरों से रात को अपनी हिफाजत करने के लिए उन्होंने वहाँ रखे थे।

"एक बात समझ नहीं आ रही।" रौनक शाह बस्ती के नजदीक पहुँचने के बाद बोला, "वह आदमखोर इतनी रात को घने जंगल में क्या कर रहा था ?"

"हो सकता है, यह लोग जंगली जानवरों को बस्ती से दूर रखने के लिए पहरा भी देते हों। या फिर यह भी संभव है कि जबसे कोस्टल गार्डों ने टापू पर नजर रखनी शुरु की है, तबसे यह लोग भी अलर्ट हो गये हों और पहरा देते हों।"

"यानी वजह चाहे कोई भी हो।" रौनक शाह ने कहा, "लेकिन पहरा यह लोग देते ही देते हैं।"

"लगता तो यही है।"

रौनक शाह के चेहरे पर एकाएक आतंक के भाव उभर आये।

"अगर यह बात है कमांडर !" रौनक शाह ने कहा, "तब तो हमारे आसपास और भी आदमखोर होंगे। आखिर ऐसा तो नहीं हो सकता कि सिर्फ एक ही आदमी पहरे पर नियुक्त किया गया हो।"

रौनक शाह की बात सुनकर कमांडर के चेहरे पर भूकंप जैसे भाव उभरे।

वह तुरंत उसका आशय भाँप गया।

"य... यानी तुम यह कहना चाहते हो।" करण सक्सेना बोला, "हमारे आसपास खतरा है !"

"बिल्कुल।"

अभी उनके वह शब्द पूरे ही हुए थे कि उसी पल उन्हें अपने पीछे हल्की-सी सरसराहट महसूस हुई।

वह झटके से पलटे।

तुरंत दो आदमखोर टाइगर क्रैक के छापामारों की भांति पेड़ों के ऊपर से तीर की भांति उनकी तरफ झपटे।

उनमें से एक के हाथ में वही फरसे जैसा हथियार था, जबकि दूसरा अपने हाथ में तीर पकड़े था।

तीर वाले ने कूदते ही करण सक्सेना को निशाना बनाकर अपना तीर छोड़ा।

करण सक्सेना ने दायीं तरफ छलांग लगाई ।

तीर उसके बिल्कुल बराबर में से सर्राटे के साथ गुजरा ।

"यम... यमा यूँ !" वह चीखे ।

लेकिन उनकी भाषा करण सक्सेना की फिर समझ नहीं आई ।

अलबत्ता वह अपनी भाषा में ही कुछ कह जरूर रहे थे ।

"रौनक !" करण सक्सेना चिल्लाया, "बचो ।"

रौनक शाह ने देखा, फरसे वाला तूफ़ानी वेग उसकी तरफ झपटा था ।

रौनक शाह ने एकदम से अपना शरीर नीचे गिरा दिया ।

आदमखोर झोंक में उसके ऊपर से गुजरता हुआ दूसरी तरफ जाकर गिरा ।

वह संभलकर खड़ा होता, उससे पहले ही रौनक शाह उसके ऊपर जा पहुँचा और उसने पूरी शक्ति के साथ रिवॉल्वर की बैरल का प्रचंड प्रहार उसकी खोपड़ी पर किया ।

आदमखोर बिलबिला उठा ।

लेकिन वह महाबलशाली था ।

खोपड़ी पर प्रचंड प्रहार सहने के बावजूद वह झटके से पलटा और उसने रौनक शाह को दूर उठाकर फैंका ।

रौनक शाह के जिस्म की एक-एक हड्डी कड़कड़ा उठी ।

उधर रौनक शाह को देखते ही वह फिर फरसा लेकर उसकी तरफ झपटा । अब रौनक शाह के सामने मौत थी, साक्षात मौत ।

और ।

तब रौनक शाह ने रिवॉल्वर का ट्रेगर दबा दिया ।

धायं ।

गोली चलने की बहुत भीषण आवाज हुई और वह रात के सन्नाटे में दूर-दूर तक गूँजी । उसी के साथ आदमखोर के भी गला फाड़कर चिल्लाने की आवाज प्रतिध्वनित हुई ।

गोली सीधे उसके सीने में जाकर लगी थी ।

गोली लगते ही उसके हाथ से फरसा छूटकर दूर जा गिरा और वह सांड की तरह डकराता हुआ वहीं ढेर हो गया ।

उधर कमांडर करण सक्सेना और उस दूसरे आदमखोर का भी कुछ कम बड़ा द्वंद्व युद्ध नहीं चल रहा था ।

अलबत्ता करण सक्सेना ने गोली चलाने जैसा आसान रास्ता नहीं अपनाया था ।

फिलहाल वह मार्शल आर्ट की अपनी अद्वितीय युद्ध कला का प्रदर्शन करते हुए उसके मुकाबले पर टिका था ।

अलबत्ता वह आदमखोर जरूरत से कुछ ज्यादा ही खतरनाक था ।

वह न सिर्फ अपने जहर बुझे तीरों से कमांडर को मार डालना चाहता था बल्कि द्वंद्व युद्ध के दौरान वह कई मर्तबा अपने नुकीले दांतों से उसके जिस्म की बोटी भी उतारने की कोशिश कर चुका था । उस आदमखोर ने करण सक्सेना को निशाना बनाकर फिर तीर चलाया ।

करण सक्सेना फौरन उसके साथी के फरसे की तरफ झपट पड़ा ।

अगले ही पल फरसा उसके हाथ में था और फरसा हाथ में आते ही करण सक्सेना ने मौका नहीं चूका ।

उसका फरसे वाला हाथ बिजली जैसी रफ्तार से चला । तुरंत आदमखोर का वह हाथ कटकर दूर जा पड़ा, जिसमें उसने तीर पकड़ा हुआ था ।

आदमखोर भीषण अंदाज में बिलबिलाया ।

सर्राटे के साथ करण सक्सेना का फरसे वाला हाथ फिर घूमा और इस बार उसने आदमखोर की खोपड़ी उड़ा दी ।

"हे भगवान !" रौनक शाह के मुँह से यही दो शब्द निकले ।

उसने खौफ से आँखें बंद कर लीं ।

मृत आदमखोर के शरीर से अब थुल-थुल करके खून निकल रहा था ।

□□□

गड़बड़ हो चुकी थी ।

जबरदस्त गड़बड़ ।

हालांकि दोनों आदमखोरों की लाशें उनके सामने पड़ी थी, लेकिन गड़बड़ गोली चलने की वजह से हुई ।

गोली की भीषण आवाज जंगल में गूँजते ही एकाएक वह नगाड़ा बजना बंद हो गया, जिसकी आवाज थोड़ी देर पहले तक सुनाई पड़ रही थी ।

जंगल में शांति छा गई ।

गहरी शांति ।

लेकिन वह शांति किसी बड़े हंगामे की सूचक थी ।

कोई पाँच मिनट ही जंगल में वह शांति रही थी, उसके बाद जंगल में पहले से कहीं ज्यादा जोर-जोर से तथा अलग सुर और लय के साथ नगाड़े पर थापें दी जाने लगीं । इस बार नगाड़े की वह थाप और भी ज्यादा भीषण क्रंदन कर रही थी ।

कोई पूरे जोर-शोर के साथ नगाड़े पर थाप दे रहा था ।

"यह सब क्या हो रहा है ?" रौनक शाह के शरीर में झुरझुरी दौड़ी ।

"लगता है, नगाड़े की इस धुआँधार थाप द्वारा तमाम आदमखोरों को अब यह बताया जा रहा है कि हमारा कोई दुश्मन टापू पर घुस आया है ।"

"ओह, यह तो बड़ी खतरनाक बात है !"

"मैंने तुमसे पहले ही मना किया था, गोली मत चलाना । मुझे इसी बात का अंदेशा था और वही हुआ ।"

"सॉरी !" रौनक शाह के चेहरे पर आहत भाव उभरे ।

सचमुच उससे भारी गलती हो चुकी थी ।

"ऐनी वे, जो हुआ, हुआ ।"

"अब क्या करें कमांडर ?"

"फिलहाल एक ही तरीका है ।" करण सक्सेना बोला, "जब तक मामला शांत नहीं हो जाता, तब तक हम बस्ती की तरफ बढ़ने की बजाय जंगल के अंदर ही छुपे रहे । जल्दी वापस आओ ।"

वह दोनों जल्दी से जंगल में वापस घुस गये ।

तभी उन्होंने बस्ती की तरफ से आदमखोरों का एक बड़ा हुजूम जंगल की तरफ आते देखा । वह सब हाथ में मशाल उठाए हुए थे ।

उस हुजूम में आदमी-औरतें सब शामिल थे ।

कुछ हथियार तो ऐसे थे, जिन्हें करण सक्सेना और रौनक शाह ने पहले कभी नहीं देखा था ।

"फौरन पेड़ पर छुप जाओ ।" करण सक्सेना चिल्लाकर बोला, "पेड़ पर छिपकर ही इन लोगों से बचा जा सकता है ।"

वह दोनों तेजी से अब दो अलग-अलग पेड़ों पर छिप गये ।

माहौल एकाएक बड़ा खौफनाक हो उठा था ।

"यम... यम यचूमा !"

"यम... यम यचूमा !"

चारों तरफ इन शब्दों का शोर-सा उमड़ रहा था ।

तमाम आदमखोर चीख-पुकार मचाते हुए जंगल के अंदर घुस आये । फिर एक खतरनाक काम और हुआ । आदमखोर उन्हीं पेड़ों के इर्द-गिर्द जमा होने लगे, जिन पेड़ों पर करण सक्सेना और रौनक शाह छिपे थे ।

इतना ही नहीं, वह गर्दन उठाकर ऊपर की तरफ देख रहे थे ।

करण सक्सेना और रौनक शाह के शरीर का एक-एक रोआँ खड़ा हो गया ।

तो क्या उन लोगों को पता चल चुका था कि वह दोनों उन्हीं पेड़ों पर मौजूद हैं ?

ओह माय गॉड !

करण सक्सेना को अपनी बुद्धि पर अफसोस हुआ । वह यह क्यों भूल गया था कि वह आदमखोर थे और इंसानों की गंध दूर से ही सूंघ लेते हैं ।

जरूर उनकी गंध भी वह सूँघ चुके थे ।

इसका मतलब उनका खेल खत्म था ।

"यम... यम यचूमा !" यह आवाज अब धीमी पड़ रही थी ।

देखते ही देखते आदमखोरों ने वहाँ अच्छी तरह अपनी घेराबंदी कर ली । उनकी संख्या सात-आठ सौ से कम नहीं थी ।

और उनके हाथ में जो मशालें थीं, उससे उन्होंने उस जंगल में अब दिन जैसा उजाला बिखेर दिया था ।

जल्द ही कमांडर और रौनक शाह इस बात के प्रति कन्फर्म हो गये कि आदमखोर इनके पेड़ पर छिपे होने का रहस्य जानते हैं ।

फिर उस हुजूम में से एक आदमखोर निकलकर करण सक्सेना वाले पेड़ के नजदीक आया । वह दूसरे आदमखोरों की बजाय कुछ सभ्य नजर आ रहा था । दूसरे आदमखोर जहाँ बिल्कुल निर्वस्त्र थे, वहीं उसने अपनी कमर के नीचे तक कपड़ा बांधा हुआ था और वह गन्दा भी नहीं था ।

"देखो, हमें पता चल गया है !" वह गर्दन उठाकर अफ्रीकन भाषा में ही बोला, "कि तुम लोग इन पेड़ों पर छिपे हुए हो । अगर अपनी जान बचाना चाहते हो, तो फौरन नीचे उतर आओ ।"

वह बिल्कुल आम लोगों की तरह बोल रहा था ।

आम अफ्रीकनों की तरह ।

"जल्दी करो ।" उसने चिल्लाकर पुनः चेतावनी दी, "वरना हम लोग तुम्हारे खिलाफ हथियार उठाने पर मजबूर हो जायेंगे ।"

पेड़ों पर बैठे-बैठे कमांडर और रौनक शाह की निगाह एक-दूसरे से टकराई ।

दोनों ही असमंजस में थे ।

"मैं तीन तक गिनती गिनूंगा ।" आदमखोर ने गला फाड़कर कहा, "अगर तुम लोग फिर भी पेड़ से नीचे नहीं उतरे, तो हम लोग इन पेड़ों को ही उखाड़ फेंकेंगे ।"

उसके बाद उसने गिनती शुरू की ।

"एक ।"

वह धीरे-धीरे बोल रहा था ।

जैसे उन्हें पूरा मौका देना चाहता हो ।

"दो ।"

करण सक्सेना और रौनक शाह के चेहरे पर सस्पेंस अब हद से ज्यादा बढ़ गया ।

"तीन ।"

तीन उसने एक झटके के साथ कहा और उसके तीन कहते ही एकदम से कई आदमखोर उन पेड़ों पर झपट पड़े तथा उन पर धुआँधार फरसों और बल्लम जैसी चीजों से प्रहार करने लगे ।

"कमांडर !" रौनक शाह चीखा ।

उसी क्षण करण सक्सेना ने एक हवाई फायर कर दिया ।

हवाई फायर करते ही तमाम आदमखोर दहशत से एकदम पीछे हो गये ।

शायद बारूद से वह डरते थे ।

मगर उनकी वह दहशत बस थोड़ी देर ही रही । क्योंकि तभी पीछे की तरफ से आदमखोरों ने फिर उनके पेड़ों पर हमला बोल दिया था और पहले से ज्यादा उग्र अंदाज में बोल दिया था ।

वह पेड़ों को बुरी तरह हिलाने लगे, झकझोरने लगे ।

"मैं फिर कहता हूँ ।" उनमें जो थोड़ा सभ्य आदमखोर था, वह फिर चिल्लाया, "हथियार डाल दो । तुम दोनों लोहे के इन खिलौनों से ज्यादा देर हमारा सामना नहीं कर पाओगे ।"

करण सक्सेना भाँप गया, वह सही बोल रहा था ।

हालात वाकई नाजुक थे ।

"ठीक है ।" करण सक्सेना ने भी पेड़ पर बैठे-बैठे चीखकर कहा, "इन लोगों को रोको, हम पेड़ों से उतरते हैं ।"

"कोई चालाकी तो नहीं करोगे ?"

"नहीं ।"

आदमखोर ने अब अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिये और वह उन्हीं जैसी अजीब-सी भाषा में कुछ चिल्लाने लगा ।

"यम... यमा यम यम ।"

"यम... यमा यम यम ।"

वह निरन्तर चिल्लाते हुए शायद अपने साथियों को बता रहा था कि दुश्मन हथियार डालने के लिये तैयार हो गया है, इसलिये अब रुक जाओ ।

जल्द ही आदमखोर फिर पीछे हट गये ।

उसके बाद कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह धीरे-धीरे पेड़ से नीचे उतरे तथा उस सभ्य आदमखोर के सामने जा खड़े हुए ।

उन दोनों के हाथों में रिवॉल्वर अभी भी थी ।

"लाओ।" वह आदमखोर बोला, "सबसे पहले अपने लोहे के यह खिलौने मेरे हवाले करो।"

दूसरा कोई चारा ही न था, उन दोनों ने चुपचाप अपनी-अपनी रिवॉल्वर उसे सौंप दी।

"हुमा... हुमा...।"

"हुमा... हुमा।"

आदमखोर चिल्लाये।

वह शायद उसके रिवॉल्वर सौंपने से खुश हुए थे।

लेकिन इतनी खामोशी से आत्मसमपर्ण करने के बाद भी उनके साथ जो सलूक हुआ, वह ठीक नहीं था।

□□□

उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

बस्ती के बीचो-बीच बना वह एक काफी बड़ा पत्थर का मकान था, जहाँ फिर वह उन्हें लेकर पहुँचे। उन झोपड़ियों के बीच में बना पत्थर का वह मकान बहुत विशिष्ट मालूम हो रहा था। बाद में करण सक्सेना और रौनक शाह को मालूम हुआ, वह उस बस्ती के सरदार का मकान था।

बहरहाल पत्थर के उसी मकान के एक कमरे में ले जाकर उन्हें बन्द कर दिया गया।

वह कमरा शायद कैदखाना ही था, जहाँ कैदियों को लेकर बन्द किया जाता था। क्योंकि उस कमरे के दरवाजे पर लोहे का सींखचेदार एक बड़ा मजबूत दरवाजा चढ़ा था। इसके अलावा करण सक्सेना ने उस पत्थर के मकान में ऐसी और कई बातें देखीं, जिनसे साबित होता था कि कम से कम उनका सरदार काफी सभ्य था।

"क्या तुम्हीं इस बस्ती के सरदार हो ?" करण सक्सेना ने कैदखाने में पहुँचने के बाद उस व्यक्ति से पूछा, जो उन आदमखोरों में थोड़ा सभ्य नजर आ रहा था।

"नहीं-नहीं।" वह व्यक्ति हड़बड़ा उठा और जल्दी से बोला, "क्या बात करते हो ! मेरा नाम लिंगफू है और मैं यहाँ का इंचार्ज हूँ।"

"लिंगफू !"

"हाँ।"

"फिर तुम्हारे सरदार का क्या नाम है ?" करण सक्सेना ने पूछा।

"उनका नाम मिस्टर मारकोपोलो है।" लिंगफू ने बताया, "मिस्टर मारकोपोलो के सामने तुम दोनों को कल पेश किया जायेगा और फिर वही तुम्हें सजा भी सुनायेंगे।"

"हमारी सजा क्या होगी ?" रौनक शाह के चेहरे पर कौतूहलता के भाव थे।

आखिर यह जानने की इच्छा किसे न होगी कि उन्हें क्या सजा मिलने वाली है।

"तुम्हें भी वही सजा मिलेगी ।" लिंगफू बोला, "जो हम अपने हर दुश्मन को सजा देते हैं । कल शाम को पहले तुम दोनों की बलि दी जायेगी और फिर रात के वक़्त बस्ती वाले एक बड़े रंगारंग कार्यक्रम में तुम दोनों के गोश्त की दावत उड़ायेंगे । वैसे भी इंसान का लजीज गोश्त उन्हें बहुत दिन बाद चखने को मिलेगा ।"

लिंगफू की बात सुनकर रौनक ने उस बात की परवाह किये बिना उससे एक दूसरा सवाल पूछा, "एक बात बताओ ।"

"बोलो ।"

"क्या तुम्हारे सरदार, यानी मिस्टर मारकोपोलो भी तुम्हारी तरह अफ्रीकन भाषा बोलना जानते हैं ?"

"बिल्कुल ।" लिंगफू ने एकदम कहा, "न सिर्फ मेरी तरह, बल्कि मुझसे कहीं ज्यादा अच्छी अफ्रीकन भाषा बोलना जानते हैं ।"

करण सक्सेना ने थोड़ी राहत की साँस ली ।

क्योंकि उसे डर था, कहीं वह भी पूरी तरह जंगली न हो ।

बहरहाल फिर लिंगफू उन दोनों को उसी कैदखाने में बंद करके चला गया ।

रौनक शाह उस वक़्त जहाँ मिलने वाली सजा के बारे में सोच रहा था, वहीं कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में एक ही बात मंडरा रही थी, फारूख अहमद मसूदी उस टापू पर कहाँ हो सकता है ?

आखिर कौन-सी जगह ?

फारूख अहमद मसूदी की वजह से ही इतना बड़ा प्रपंच रचा गया था और अभी तक उसी फारूख अहमद मसूदी का कहीं कुछ पता नहीं था ।

□□□

सुबह की हल्की-हल्की प्रकाश रश्मियाँ अब चारों तरफ फैलने लगी थीं ।

पत्थर के उस मकान की कई गतिविधियाँ करण सक्सेना को बड़ी असामान्य लग रही थीं । वहाँ ऐसी कई वस्तुएँ थीं, जिनसे यह साबित हो रहा था कि उनका सरदार जंगली नहीं है । जैसे जब पत्थर के उस मकान में उन्हें कैदखाने की तरफ लाया जा रहा था, तो कमांडर करण सक्सेना ने एक कमरे में चार-पाँच कुर्सियों पड़ी देखीं और एक दीवार पर काफी बड़ी पेंटिंग भी देखी । इस तरह की वस्तुएँ किसी ऐसे आदमखोर कबीले में नहीं हो सकती थीं, जो सैकड़ों-हजारों साल पुरानी सभ्यता में जीवन यापन कर रहा हो ।

करण सक्सेना का सस्पेंस बढ़ने लगा ।

उसे लग रहा था, उस टापू पर कोई और षड्यंत्र भी पनप रहा है तथा अब वह षड्यंत्र खुलने का समय आ चुका है ।

तभी एक चौंका देने वाला वाकया और पेश आया ।

सुबह के अब 7:00 बज चुके थे और दिन पूरी तरह निकल आया था । कमांडर करण सक्सेना उस समय कैदखाने के सींखचों के पास खड़ा बाहर का नजारा कर रहा था । इस बीच वह उस ताले को भी देख चुका था, जिसे उस कैदखाने पर लिंगफू डालकर गया था । वह बहुत बड़ा और बाबा आदम के जमाने का ताला था, जिसमें चाबी भी कोई छह इंच लम्बी लगती थी । करण सक्सेना भाँप गया, उस ताले को खोलना उसके बस की बात नहीं है । वह ताला किसी तार वगैरह से नहीं खोला जा सकता था । करण सक्सेना की नजर अभी भी उस ताले पर ही थी । उसी क्षण उसने एक ऐसे शख्स को कैदखाने के सामने से गुजरते देखा, जिसे देखकर उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं ।

गहन आश्चर्य से ।

वह सोच भी नहीं सकता था, उस शख्स से उसकी वहाँ मुलाकात होगी । आदमखोरों की उस खतरनाक बस्ती में ।

वह लवलीना थी ।

लवलीना, एक स्ट्रीट वॉकर !

सड़क पर घूमकर धंधा करने वाली लड़की । वही लवलीना, जिसमें कमांडर करण सक्सेना की टिप-टॉप क्लब में तब मुलाकात हुई थी, जब वह रौनक शाह का बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहा था ।

"लवलीना !" करण सक्सेना ने उसे फौरन आवाज दी ।

लवलीना के कदम भी तुरंत ठिठके और उसने कैदखाने की तरफ देखा ।

करण सक्सेना को वहाँ देखते ही लवलीना की आँखों में भी तुरंत पहचान के चिन्ह उभरे और वह चौंकी ।

हालांकि क्लब में उन दोनों की मुलाकात बहुत मुख्तसर थी, मगर ऐसी थी, जो न भुलाये जाने लायक थी ।

वह फौरन कैदखाने के नजदीक पहुँची ।

"पहचाना मुझे ?" करण सक्सेना बोला ।

"तुम भी कोई भुलाने वाली चीज हो हैंडसम !" लवलीना का लहजा पहले की तरह ही गरमजोशी से भरा था, "लेकिन तुम यहाँ कैसे ?"

"मुझे छोड़ो ।" करण सक्सेना बोला, "तुम यह बताओ, तुम यहाँ क्या कर रही हो ?"

लवलीना के चेहरे पर एकाएक उदासी के भाव उभर आये और वह संजीदा हो उठी ।

"दरअसल आदमखोरों की इस बस्ती का जो सरदार है ।" लवलीना ने बताया, "वह बहुत बदमाश आदमी है ।"

"तुम मारकोपोलो की बात कर रही हो ?"

"वही । मारकोपोलो ही मुझे कुछ दिन पहले क्लब में से यहाँ उठाकर ले आया था और अब उसने मुझे कीप (रखैल) बनाकर रखा हुआ है । वह रोजाना रात में मेरे साथ सेक्स करता है । इस तरह शहरी लड़कियों को अपनी कीप बनाकर रखना मारकोपोलो का शौक है । वह पहले भी कंपाला में कई गोरी लड़कियों को उठाकर यहाँ ला चुका है । बाद में जब उसका उनसे दिल भर जाता है, तो वह उन्हें कत्ल कर डालता है ।"

"ओह ! तो एक दिन वह तुम्हारे साथ भी यही करेगा ।"

"बिल्कुल ।" लवलीना ने वह शब्द पूरी दिलेरी के साथ कहे ।

करण सक्सेना हैरत से लवलीना को देखता रह गया ।

"लेकिन तुम यहाँ कैसे आये ?" लवलीना की आँखों में सवालिया निशान थे ।

"मेरी भी अपनी अलग कहानी है ।" करण सक्सेना बोला, "दरअसल मैं एक आदमी को तलाश करता-करता यहाँ आया हूँ, मुझे पता चला है कि वह यहाँ कैद है ।"

"इस टापू पर ?"

"हाँ ।"

"इम्पॉसिबल ! ऐसा हो ही नहीं सकता ।" लवलीना पूरे यकीन के साथ बोली, "कि यह आदमखोर यहाँ किसी आदमी को लम्बे समय तक कैद करके रखे । यहाँ तो जो आदमी लाया जाता है, उसे कुछ घण्टे बाद ही यह लोग बलि देकर चट कर जाते हैं । आदमी के गोश्त के तो यह सब भूखे हैं, उसे तो यह जिंदा देख ही नहीं सकते । मैं भी अभी तक सिर्फ इसलिये चलती-फिरती नजर आ रही हूँ, क्योंकि मारकोपोलो मुझे जिंदा रखना चाहता है ।"

"परन्तु मुझे गारंटी से मालूम है कि उस आदमी को यहीं कैद करके रखा गया है ।" करण सक्सेना के स्वर में दृढ़ता थी, "इसी टापू पर । इतना ही नहीं, मेरे पास उस जगह का नक्शा भी है, जहाँ वह कैद है ।"

"जरा वह नक्शा मुझे दिखाओ ।"

करण सक्सेना ने फौरन वह कागज निकालकर लवलीना को दिखाया, जिस पर अजीबोगरीब-सी भाषा में कुछ लिखा था और आड़ी-तिरछी लकीरें खिंची थीं ।

रौनक शाह भी अब उन दोनों का वार्तालाप सुनकर उस सींखचेदार दरवाजे के नजदीक ही आ खड़ा हुआ था ।

इस बात ने उसे ढांढस बंधाया कि उस पत्थर के मकान में कोई ऐसा शख्स भी है, जिससे कमांडर करण सक्सेना वाकिफ है ।

लवलीना कुछ देर तक बहुत गौर से उन आड़ी-तिरछी लकीरों को देखती रही ।

"नहीं ।" फिर लवलीना की गर्दन इनकार की सूरत में हिली, "मैं भी इस नक्शे को नहीं समझ पा रही हूँ ।"

"दरअसल यह काफी मुश्किल नक्शा है ।" करण सक्सेना बोला, "यह अभी तक किसी के समझ में नहीं आया ।"

"लेकिन तुम इस बात के प्रति श्योर हो ।" लवलीना ने करण सक्सेना की तरफ वेधक निगाहों से देखा, "कि तुम्हें जिस आदमी की तलाश है, उसे इसी टापू पर कैद किया गया है ?"

"हंड्रेड परसेंट श्योर हूँ ।" करण सक्सेना बोला, "शक की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं । वैसे भी वह बहुत खास आदमी है । अगर किसी को उसकी खासियतों का पता होगा, तो वह भूलकर भी उसका खून नहीं करेगा ।"

"ऐसी क्या खास बात है उसमें ?" लवलीना के चेहरे पर व्यग्रता के भाव उभरे ।

"यह एक बहुत लंबी कहानी है, उस सबको छोड़ो ।"

"हूँ ।"

लवलीना की आँखें फिर उस नक्शे पर जाकर केंद्रित हो गईं ।

जबकि कमांडर बहुत चौकन्नी निगाहों से इधर-उधर भी देख रहा था कि कहीं कोई उस तरफ आ तो नहीं रहा है ।

"इस नक्शे को !" लवलीना होंठों-ही-होंठों में बुदबुदाई, "यहाँ सिर्फ एक ही आदमी समझकर बता सकता है ।"

"कौन ?"

"बूढ़ा जागीरा ।"

कमांडर करण सक्सेना ने विस्मित निगाहों से लवलीना की तरफ देखा ।

"यह बूढ़ा जागीरा कौन है ?"

"बूढ़ा जागीरा, वह इस पूरे टापू पर सबसे ज्यादा उम्रदराज व्यक्ति है । बताते हैं, उसकी उम्र 120 साल से भी ज्यादा है । अब इसमें कितना सच है और कितना झूठ, यह तो मैं नहीं जानती लेकिन इतना जरूर है कि उसे यहाँ इस तरह की बातों का सबसे ज्यादा ज्ञान है । फिर वह कई भाषाएँ भी जानता है, इसलिये हमें उससे सवाल-जवाब करने में भी परेशानी नहीं होगी ।"

"हूँ, बूढ़ा जागीरा !" करण सक्सेना ने भी वह नाम होंठों-ही-होंठों में बुदबुदाया ।

उसे लग रहा था, वह बूढ़ा बहुत जल्द उसके काफी काम आने वाला है ।

जबकि लवलीना की निगाहें अब रौनक शाह पर जाकर ठिठक गईं ।

"यह आदमी कौन है ?" उसने रौनक शाह के बारे में पूछा ।

करण सक्सेना मुस्कुराया ।

"इसका नाम रौनक शाह है ।" करण सक्सेना बोला, "और यह वही आदमी है, जिसका मैं उस रात टिप-टॉप क्लब में बेसब्री के साथ इंतजार कर रहा था और यह नहीं पहुँचा था ।"

"ओह, तब तो तुम जरूरी इसी के कारण इस संकट में फँसे हो ।"

"हरगिज़ नहीं ।" करण सक्सेना बोला, "बल्कि यह व्यक्ति मेरे कारण इस संकट में फँसा है ।"

लवलीना के नेत्र सिकुड़ गये ।

जबकि रौनक शाह के होंठों पर मुस्कुराहट नहीं आ सकी थी । वहाँ के माहौल की दहशत उसके दिलो-दिमाग पर बुरी तरह हावी थी ।

"अब क्या करना है ?" लवलीना बोली ।

"फिलहाल हमें किसी तरह जल्द से जल्द यहाँ से निकलकर बूढ़े जागीरा तक पहुँचना है ।"

"लेकिन यह काम कुछ आसान नहीं । तुम शायद जानते नहीं, आज शाम तक तो तुम दोनों की बलि दे दी जायेगी, फिर तुम जागीरा से कैसे मिलोगे ?"

"बलि के बारे में हम भी जानते हैं ।" करण सक्सेना बोला, "लेकिन हमें उससे पहले ही कुछ करना होगा ।"

कमांडर का दिमाग एकाएक काफी तेज स्पीड से चलने लगा ।

"लेकिन क्या करना होगा ?"

"देखो, यह बात मुझसे बेहतर तुम सोच सकती हो ।" करण सक्सेना बोला, "कि हम बलि से बचने के लिए क्या कर सकते हैं, क्योंकि तुम यहाँ के माहौल से मुझसे ज्यादा वाकिफ हो । इसके अलावा एक बात और ध्यान रखो, हम दोनों यहाँ एक-दूसरे के बड़े अच्छे मददगार बन सकते हैं ।"

"हूँ ।" लवलीना की विचारपूर्ण मुद्रा बन गई, "ठीक है । मुझे सोचने का थोड़ा मौका दो । मैं थोड़ी देर बाद तुम्हारे पास फिर आऊँगी । ओके ?"

"ओके ।"

लवलीना चली गई ।

कोई आधा घंटे बाद लवलीना की फिर वापसी हुई । उसके कदमों में तेजी थी और चेहरे पर व्यग्रता के भाव थे ।

"कुछ सोचा ?" करण सक्सेना ने उससे सवाल किया ।

"हाँ ।" लवलीना बोली, "एक आइडिया मेरे दिमाग में आया है ।"

"क्या ?"

"दरअसल इस कैदखाने की एक चाबी यहाँ लिंगफू के पास है । वहीं दूसरी चाबी मारकोपोलो के पास है ।" लवलीना उसे अपनी तरकीब बताती हुई बोली, "मारकोपोलो के पास जो चाबी है, मैं किसी प्रकार वह चाबी हासिल करने की कोशिश कर रही हूँ । जैसे ही चाबी मुझे मिलेगी, मैं ताला खोलकर तुम दोनों को आजाद करा दूँगी ।"

लवलीना का आइडिया बुरा नहीं था ।

बशर्ते कि चाबी उसके हाथ लग जाती ।

"कुछ कहना चाहते हो ?" लवलीना बोली ।

"नहीं ।"

"ठीक है, तो फिर मैं चलती हूँ ।"

लवलीना जितनी तेजी के साथ वहाँ आई थी, उतनी ही तेजी के साथ आगे बढ़ गई ।

कमांडर ने भी उसे नहीं रोका ।

वह नहीं चाहता था कोई उन्हें एक साथ देखें ।

□□□

समय धीरे-धीरे गुजरता रहा ।

दो घंटे से भी ज्यादा गुजर गये । कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह जब बड़ी बेसब्री के साथ लवलीना के वापस लौटने का इंतजार कर रहे थे, तब लवलीना की जगह वहाँ लिंगफू आया ।

लिंगफू के साथ चार आदमी और थे ।

चारों आदमखोर थे और उन दोनों को ऐसी भूखी निगाहों से देख रहे थे, जैसे उन्हें महीनों से खाना न मिला हो और अब एकाएक छप्पन व्यंजनों से सजी थाली उनके सामने आ गई हो ।

लिंकफू ने ताला खोला और अंदर आ गया ।

"तुम दोनों को सजा सुनाने का वक्त आ पहुँचा है ।" लिंगफू बोला ।

"यानी अब हमें सरदार के पास ले जाया जायेगा ?"

करण सक्सेना के स्वर में बिल्कुल भी घबराहट न थी ।

"हाँ ।"

चारों आदमखोर ने उन्हें आगे-पीछे हर तरफ से घेर लिया ।

करण सक्सेना के लिए वह भी कैदखाने से भाग निकलने का एक बेहतरीन मौका था ।

आखिर लोहे का सींखचेदार दरवाजा चौपट खुला हुआ था और उन पाँचों से निपटना भी उसके लिए कुछ जटिल न था। खासतौर पर ऐसी हालत में जब उसके हैट के अंदर एक कोल्ट रिवॉल्वर भी मौजूद थी।

लेकिन करण सक्सेना ने ऐसा कोई कदम न उठाया।

उनके सरदार से मिलने की खुद उसकी भी बड़ी इच्छा थी।

"चलो।"

करण सक्सेना और रौनक शाह दरवाजे की तरफ बढ़ गये।

जबकि चारों आदमखोर अब उन्हें घेरकर चल रहे थे और लिंगफू उनमें सबसे आगे था। जल्द ही लिंगफू उन दोनों को एक काफी बड़े कमरे में लेकर पहुँचा। वह कमरा भी पत्थरों का ही बनाया गया था। इस समय उस कमरे में और भी कई आदमखोर मौजूद थे। कमरे में सामने ही एक कुर्सी पड़ी हुई थी, जिस पर एक आदमी बैठा था।

करण सक्सेना उस आदमी को देखते ही चौंका।

क्योंकि वह आदमी किसी भी एंगल से आदमखोर या जंगली नजर नहीं आ रहा था। उसने चमड़े की काली चमकदार जैकेट और चमड़े की ही पैंट पहनी हुई थी। उसकी शेविंग बनी हुई थी और शरीर में से भीनी-भीनी सुगंध फूट रही थी, जो जरूर किसी टेलकम पाउडर स्प्रे की थी। अलबत्ता छोटी-छोटी हड्डियों की एक माला उसके गले में भी पड़ी हुई थी, जो उसके बाकी व्यक्तित्व से बिल्कुल भी मेल नहीं खा रही थी।

लिंगफू सहित सारे आदमखोर उसके सामने गर्दन झुकाकर खड़े हो गये।

"हुम... हुआ...हुम !"

हुम... हुआ...हुम !"

लिंगफू ने अपनी ही भाषा में कुछ कहा।

जबकि मारकोपोलो पहले की तरह कुर्सी पर बैठा रहा। वह करण सक्सेना और रौनक शाह के चेहरे को बहुत ध्यान से देख रहा था। जैसे उनके चेहरे पर कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहा हो।

"क्या तुम इंडियन हो ?" मारकोपोलो ने थोड़ी देर की खामोशी के बाद पूछा।

"हाँ।" करण सक्सेना उसके पहले ही सवाल पर भौचक्का रह गया। उसका सवाल वाकई बड़ा अप्रत्याशित था।

"ओह ! फिर तो मैं सब कुछ समझ गया हूँ।" मारकोपोलो बोला, "कि तुम इस टापू पर क्यों आये हो ? जरूर उस महान वैज्ञानिक फारूख अहमद मसूदी की तलाश तुम्हें यहाँ तक खींचकर लाई है, जिसने पानी से पेट्रोल बनाने जैसा असंभव कार्य कर दिखाया है। एक उसी आदमी की तलाश में इतना दम हो सकता है कि कोई आदमखोरों के इस टापू तक खींचा चला आये। क्यों, मैं सही कह रहा हूँ न ?"

करण सक्सेना कुछ न बोला।

वह खामोश रहा।

उस समय कमांडर जानता था, वह जितना खामोश रहेगा, उसके लिये उतना बेहतर होगा। वह सिर्फ मारकोपोलो की एक-एक बात रीड कर रहा था।

उसने मारकोपोलो के अंदर कुछ खास बातें नोट कीं। जैसे वह पढ़ा-लिखा आदमी था और अगर उन आदमखोरों के बीच रह रहा था, तो जरूर उसका कोई खास उद्देश्य था।

"लेकिन तुम लोग शायद नहीं जानते।" मारकोपोलो आगे बोला, "मसूदी को अब यहाँ से निकालकर ले जाना असंभव है, नामुमकिन। इसके अलावा मैं तुम लोगों को एक बात और बता दूँ। तुम इन जंगली लोगों की आँखों में धूल झोंक सकते हो, लेकिन मेरी आँखों में नहीं। क्योंकि मैं जंगली नहीं हूँ। मैंने काफी समय बाहर गुजारा है और मैंने कई बड़े-बड़े अपराध किये हैं।"

"अपराध!"

करण सक्सेना और रौनक शाह, दोनों चिहुँके।

वह एक नया अध्याय था, जो उनके सामने खुल रहा था।

"हाँ, अपराध।" मारकोपोलो ने निर्विकार अंदाज में वह सारी बातें कबूल की, "मैं मूल रूप से एक खूनी हूँ। मैंने अपनी जिंदगी में पचास से ज्यादा खून किये हैं और दुनिया के कई मुल्कों की पुलिस मेरे पीछे है। सच तो यह है, आज की तारीख में यह टापू मेरे छुपने की सबसे बेहतर जगह है। मैं यहाँ से ज्यादा कहीं भी सुरक्षित नहीं और लिंगफू मेरा दोस्त है। मेरा राजदार है।"

"लेकिन तुमने फारूख अहमद मसूदी का अपहरण क्यों किया ?" करण सक्सेना ने मारकोपोलो से पहला सवाल पूछा," उससे तुम्हें क्या फायदा होगा ?"

मारकोपोलो हँसा।

उसकी हँसी बड़ी वीभत्स थी।

"बहुत बड़ा फायदा होगा। फारूख अहमद मसूदी और उसके फॉर्मूले को जितना तुम लोग समझते हो, उतना ही मैं भी समझता हूँ। मैं फारूख अहमद मसूदी का सौदा कर रहा हूँ। इस संबंध में अमेरिका और पाकिस्तान से मेरी अलग-अलग डील चल रही है, लेकिन मैं जानता हूँ, पाकिस्तान ही मुझे उसकी सबसे मोटी रकम देगा। क्योंकि उसे अपनी हार की चिंता है। वह किसी हालत में नहीं चाहता कि फारूख अहमद मसूदी भारत या किसी दूसरे कंट्री के हाथ में पहुँचे।"

सचमुच मारकोपोलो को उस पूरे प्रकरण की बहुत नॉलेज थी और उस जैसे आदमी को किसी चीज की इतनी अंदरूनी नॉलेज होना खतरनाक बात थी।

"इस समय फारूख अहमद मसूदी कहाँ है ?" रौनक शाह ने थोड़ी हिम्मत दिखाकर वह सवाल पूछा ।

"इसी टापू पर है और जिंदा है । अलबत्ता मैंने उसे बहुत गुप्त जगह छिपाकर रखा हुआ है । आखिर वह बेहद कीमती है, किसी कोहिनूर हीरे से भी ज्यादा ।"

वह बात कहकर मारकोपोलो हँसा ।

उसके हँसने की स्टाइल वाकई बड़ी अजीब थी ।

"अलबत्ता तुम लोगों के लिए एक बुरी खबर जरूर है ।" मारकोपोलो कुर्सी पर बैठा-बैठा बोला, "आज शाम को तुम दोनों बहादुर जवानों की बलि दे दी जायेगी तथा फिर रात को यहाँ एक रंगारंग कार्यक्रम होगा, जिसमें तुम्हारे गोश्त की दावत उड़ेगी । सच बात तो यह है, जबसे तुम्हें गिरफ्तार किया गया है, तबसे आदमखोर तुम्हारी बलि चढ़ाई जाने के लिए उतावले हो रहे हैं । अभी थोड़ी देर बाद जब मैं बस्ती के सारे आदमखोरों के सामने तुम्हारी बलि की घोषणा करूँगा; तो फिर तुम लोग देखना, वह कितना खुश होंगे ।"

करण सक्सेना शांत खड़ा रहा ।

मारकोपोलो के शब्दों का जैसे उसके ऊपर कोई प्रभाव न था ।

"याचूका ।" एकाएक मारकोपोलो जंगलियों की जबान में ही जोर से चिल्लाकर बोला, "यम यमा याकूली यसाला... याकूली यसाला !"

तुरंत लिंगफू सहित कई आदमखोरों ने आगे बढ़कर कमांडर और रौनक शाह के हाथ कसकर पकड़ लिए ।

उनके बन्धन मजबूत थे ।

"याकूली... याकूली ।" मारकोपोलो ने फिर जोर से चिल्लाकर कहा ।

वह पुनः उन्हें कोई आदेश दे रहा था ।

उसके बाद वह आदमखोर करण सक्सेना और रौनक शाह को लेकर उस पत्थर के मकान से बाहर की तरफ बढ़े ।

पत्थर के मकान से बाहर निकलते ही करण सक्सेना चौंका, क्योंकि वहाँ आदमखोरों का हुजूम उमड़ा हुआ था । पूरी बस्ती के आदमखोर वहाँ बाहर खुले मैदान में जमा थे और बहुत व्यग्र दिखाई पड़ रहे थे ।

"यम... यम याचूका !"

"यम... यम याचूका !"

करण सक्सेना और रौनक शाह को देखते ही वह जोर-जोर से चिल्लाने लगे ।

वह सचमुच उनका गोश्त खाने के लिए बहुत उतावले हो रहे थे ।

"यम यला यू ।" तभी मारकोपोलो की बहुत गरजदार आवाज गूँजी ।

मारकोपोलो की आवाज गूँजते ही आदमखोर का पूरा हुजूम शांत हो गया ।

वहाँ एकदम पिन ड्रॉप साइलेंस जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई ।

वहीं एक ऊँचा-सा मंच बना हुआ था । मारकोपोलो उस मंच पर जाकर खड़ा हो गया । फिर कमांडर करण सक्सेना और रौनक शाह को भी पकड़कर उसी मंच पर लाया गया ।

उनके साथ भेड़-बकरियों जैसा बर्ताव किया जा रहा था ।

वाकई अजीब नजारा था ।

मंच पर पहुँचने के बाद मारकोपोलो ने शाम के वक्त उन दोनों के बलि दिये जाने तथा रात को रंगारंग कार्यक्रम और दावत की घोषणा कर दी ।

"यमाली हुआ हु । याचूका यम याली वकली यास्ती । यमा यदि यमाला यू ।"

मारकोपोलो के वह घोषणा करते ही आदमखोरों में पुनः हर्ष की लहर दौड़ गई ।

वह जोर-जोर से ताली बजाने लगे और खुशी से उछलने लगे ।

उनका हर्षोन्माद देखते ही बनता था ।

"हुमा, हुमा !"

"हुमा, हुमा !"

अब वह खुशी से गला फाड़-फाड़कर चीख रहे थे ।

"देखो ।" मारकोपोलो अपनी आँखों में चमक भरकर करण सक्सेना से बोला, "वह कैसे बच्चे की तरह खुश हो रहे हैं । जबकि वह नहीं जानते, मैं उनका किस तरह इस्तेमाल कर रहा हूँ ।"

करण सक्सेना, मारकोपोलो को देखता रह गया ।

सचमुच वह डेंजर आदमी था ।

सजा सुनाने के बाद करण सक्सेना और रौनक शाह को वापस उसी कैदखाने में लाकर बंद कर दिया गया था, जहाँ वह थोड़ी देर पहले बंद थे ।

इस बीच लवलीना का कहीं कुछ पता न था ।

वह गायब हो चुकी थी ।

करण सक्सेना समझ नहीं पा रहा था, लवलीना कहाँ चली गई है ? उसे अभी चाबी नहीं मिली थी या फिर कुछ और बात थी ? जो भी था, लवलीना को आने में जितनी देर हो रही थी, उतना मामला जटिल होता जा रहा था ।

दोपहर के लगभग बारह बजे लवलीना उन्हें दिखाई पड़ी ।

वह बहुत चोरी-छिपे कैदखाने तक आई थी और चाबी उसके पास थी । कैदखाने के नजदीक आते ही उसने ताला खोला और जल्दी से अंदर आ गई ।

"क्या बात है ?" करण सक्सेना ने उसे देखते ही कहा, "बड़ी देर लगाई आने में ?"

"दरअसल चाबी मिलने में देर हो गई थी । मैं चाबी उसके कमरे में तलाश कर रही थी, जबकि वह उसकी जेब में थी । अब भी मैं बड़ी मुश्किल से यह चाबी उसकी जेब में से निकालकर लाई हूँ ।"

"जेब में से ?"

"हाँ ।"

"कहीं उसे शक तो नहीं हो गया ?"

"बिल्कुल भी नहीं । और यह लो, लिंगफू ने तुम दोनों से जो रिवॉल्वर हासिल की थी, वह भी मैं ले आई हूँ ।" लवलीना ने अपने कपड़ों में छुपी दो रिवॉल्वर निकालकर उनकी तरफ बढ़ाई ।

"वेरी गुड !" रिवॉल्वर देखते ही करण सक्सेना की आँखों में उसके प्रति प्रशंसा के भाव उभर आये, "यह तुमने सबसे अच्छा काम किया है ।"

उन दोनों ने अपनी-अपनी रिवॉल्वर पकड़ ली ।

"अलबत्ता तुम लोग अब यहाँ से निकलने में थोड़ा जल्दी करो ।" लवलीना बेचैनी जाहिर करती हुई बोली, "अब एक सेकेंड और भी तुम लोगों का यहाँ रुकना खतरनाक है । वैसे भी पत्थर के इस मकान में फिलहाल कोई नहीं है ।"

करण सक्सेना और रौनक शाह फौरन लपककर उस कैदखाने से बाहर आ गये ।

जबकि लवलीना ने सींखचेदार दरवाजा लगाकर वापस उस पर ताला लगा दिया ।

"चलो ।" वह मकान में अंदर की तरफ दौड़ी ।

करण सक्सेना और रौनक शाह भी उसके पीछे-पीछे लपके ।

"कहाँ ले जा रहे हो ?" करण सक्सेना ने पूछा ।

"देखते जाओ !"

जल्द ही लवलीना उन्हें एक काफी बड़े कमरे में लेकर पहुँची, जो उसी पत्थर के मकान का एक हिस्सा था और उसमें अटैच्ड बाथरूम वगैरह सब कुछ था ।

"अब जब तक मामला शांत नहीं हो जाता ।" लवलीना बोली, "तब तक तुम लोग यहीं रहोगे ।"

"यह किसका कमरा है ?"

"यह मेरा कमरा है ।" लवलीना ने बताया, "कोई भी इस बात पर शक नहीं कर पायेगा कि तुम मेरे कमरे में छिपे हुए हो । ओके ?"

"ओके ।"

"तुम लोग अब यहीं रहो, मैं अभी आती हूँ ।"

करण सक्सेना चौंका ।

"तुम कहाँ जा रही हो ?"

"इससे पहले कि यह राज खुले, तुम दोनों कैदखाने से निकल भागे हो, मैं यह चाबी वापस मारकोपोलो की जेब में रख देना चाहती हूँ। क्योंकि बाद में जब वह चाबी अपनी जेब से गायब देखेगा, तो उसका सीधा-सीधा शक मेरे ऊपर जायेगा।"

लवलीना बिल्कुल ठीक कह रही थी।

उसकी बात में दम था।

"ठीक है।" करण सक्सेना ने कहा, "तुम जल्दी से चाबी रख आओ।"

लवलीना वहाँ से चली गई।

मगर वह जाते-जाते उस कमरे का बाहर से दरवाजा बंद करके जाना नहीं भूली।

लड़की सचमुच बुद्धिमान थी।

एक घंटे बाद ही पूरी बस्ती में एक इस बात को लेकर हंगामा मच गया था कि दोनों कैदी कैदखाने से निकल भागे हैं।

चारों तरफ उनकी ढूंढ मच गई।

जैसाकि स्वाभाविक था, पत्थर के बस उस मकान के अंदर ही उन्हें नहीं तलाशा गया। क्योंकि कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि वह कैदखाने से निकलने के बाद अभी भी उस पत्थर के मकान में ही छुपे होंगे।

जिस समय बाहर जबरदस्त अफरा-तफरी मची थी और शोर की आवाजें आ रही थीं, उसी क्षण लवलीना कमरे में वापस आई।

कमरे में आते ही उसने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया।

"तुम दोनों के भाग निकलने की आदमखोरों पर बड़ी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई है।" लवलीना अंदर आते ही फुसफुसाये स्वर में बोली, "वह सब रात को होने वाले रंगारंग कार्यक्रम की तैयारियों में व्यस्त थे कि तुम दोनों के भागने ने उनकी सारी खुशी काफूर कर दी है। वह बिल्कुल पागलों की तरह तुम्हें ढूंढते फिर रहे हैं। अगर ऐसे में तुम उनके हाथ लग गये, तो वह शायद तुम्हें अभी चीर-फाड़कर खा जाएंगे।"

लवलीना उस समय थोड़ा घबराई हुई थी।

भयभीत !

"हे भगवान !"

वह बात सुनकर रौनक शाह के चेहरे पर भी आतंक की छाया दौड़ी।

"अब हम क्या करें ?" रौनक शाह बोला।

"कुछ करने की जरूरत नहीं है।" लवलीना ने कहा, "कुछ घंटे में ही या फिर बड़ी हद शाम तक यह सारा मामला ठंडा पड़ जायेगा, तब हम खामोशी के साथ यहाँ से बाहर निकलेंगे।"

"फ़िलहाल आदमखोर हमें कहाँ तलाश कर रहे हैं ?" करण सक्सेना का दिमाग एकाएक सक्रिय हो उठा था ।

"वह तुम दोनों को तलाश करते हुए इस वक्त जंगल की तरफ गये हैं, क्योंकि उनका यही अनुमान ज्यादा है कि तुम जंगल की तरफ भागे होओगे ।"

उन तीनों के बीच अभी बातचीत चल ही रही थी कि तभी किसी ने बाहर से लवलीना के कमरे का दरवाजा जोर-जोर से थपथपाया ।

दोनों चौंके ।

"यह कौन आ गया ?"

"मैं देखती हूँ ।"

लवलीना दरवाजे की तरफ लपकी और उसने झिरी में से बाहर झांका ।

जितनी तेजी के साथ वह दरवाजे के पास गई थी, उससे दोगुनी तेजी के साथ वापस लौटी ।

"मारकोपोलो है ।" उसने मानो बम-सा फोड़ा ।

"म... मारकोपोलो !" दोनों के शरीर में चींटियाँ रेंगी, "मारकोपोलो यहाँ क्या करने आया है ?"

"मालूम नहीं । तुम लोग जल्दी से बाथरूम में जाकर छुप जाओ, फिर मैं दरवाजा खोलती हूँ ।"

वह दोनों बाथरूम की तरफ झपटे ।

□□□

मारकोपोलो उस क्षण बेहद उदास था और उसके माथे पर ढेर सारी परेशानी की लकीरें खींची हुई थीं । लवलीना जबसे टापू पर आई थी, तबसे उसने मारकोपोलो को इस कदर उदास नहीं देखा था ।

उसके दरवाजा खोलते ही मारकोपोलो अंदर आ गया और सामने जो बिस्तर पड़ा हुआ था, वह सीधा उस पर जा बैठा ।

"क्या कर रही थीं ?" उसने धीमी आवाज में पूछा ।

"कुछ नहीं ।" लवलीना बोली, "बस अभी-अभी बाहर से आई थी और कपड़े चेंज करने जा रही थी ।"

"क्या तुम्हें मालूम नहीं, दोनों कैदी कैदखाने से भाग निकले हैं ?"

"मालूम है । मैं तुम्हारे पास गई भी थी ।" लवलीना ने उसे बताया, "लेकिन तुम अपने आदमियों के बीच बेहद बिजी थे, इसलिये वापस लौट आयी ।"

"हूँ ।"

मारकोपोलो शांत बैठा रहा ।

साफ लग रहा था, मौजूदा हालात ने उसे झंझोर डाला है । वह गर्दन झुकाए बिस्तर पर बैठा रहा । फिर उसने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और एक सिगरेट सुलगाई । उसके अंदर की बेचैनी उसकी एक-एक हरकत से जाहिर हो रही थी ।

"समझ नहीं आ रहा ।" फिर वह खुद-ब-खुद बड़बड़ाया, "कि वह दोनों कैदी आखिर कैसे कैदखाने से निकलकर भागे । मुझे तो लगता है, किसी ने उसकी इनसाइड हेल्प की है ।"

"इनसाइड हेल्प !" लवलीना की निगाहें उसके चेहरे पर जाकर गड़ गयी, "यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"मैं ठीक कह रहा हूँ । बिना अंदरूनी मदद के वह दोनों भाग ही नहीं सकते थे ।"

"लेकिन यहाँ उनकी अंदरूनी मदद कौन करेगा ?"

"यही सोच-सोचकर मेरा दिमाग परेशान हो रहा है । लिंगफू ? नहीं-नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकता । वह मेरा वर्षों पुराना दोस्त है । देखो लवलीना !" एकाएक मारकोपोलो बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया और उसने लवलीना के दोनों कंधे कसकर पकड़े, "कहीं तुम तो नहीं ?"

"क्या बात कर रहे हो !" लवलीना अंदर तक दहल उठी, "मैं ?"

लवलीना को ऐसा लगा जैसे उसके शरीर का एक-एक रोआँ खड़ा हो गया हो ।

उसके चेहरे की रंगत एकदम हल्दी की तरह पीली जर्द पड़ गयी ।

"मैं सोच भी नहीं सकती थी ।" लवलीना ने अपने कंधे छुड़ाए और झटके के साथ मारकोपोलो की तरफ से पीठ फेरकर बैठ गयी, "कि तुम मेरे ऊपर इतना घटिया इल्जाम लगाओगे । ऐसा शक करोगे ।"

"सॉरी !" मारकोपोलो घूमकर उसके सामने आ गया, "मैं जानता हूँ, मेरी बात से तुम्हारा दिल दुखा होगा । लेकिन इस वक़्त मेरा दिमाग मेरे काबू में नहीं है । मैं चलता हूँ ।"

मारकोपोलो ने सिगरेट फेंककर उसे जूते से मसला तथा फिर तेजी के साथ कमरे से बाहर निकल गया ।

लेकिन उसने अपने पीछे सस्पेंस का जो सन्नाटा छोड़ा, वह काफी देर तक बरकरार रहा ।

□□□

रात का उस वक्त एक बज रहा था, जब वह तीनों पत्थर के उस मकान से बेहद चुपचाप बाहर निकले और बस्ती में ही तेजी के साथ एक तरफ बढ़े ।

बस्ती में तब गहरी खामोशी थी ।

सारा दिन आदमखोर उन दोनों को ढूंढते रहे थे और अब थक-हारकर सो चुके थे । अलबत्ता इस बात का दुख उन सभी को बहुत था कि उनकी दावत रह गई थी ।

"अब हम कहाँ जा रहे हैं ?" रौनक शाह ने पेड़ों की आड़ में छिप-छिपकर भागते हुए पूछा ।

"बूढ़े जागीरा के पास ।" लवलीना बोली ।

"क्या उसकी झोंपड़ी ज्यादा दूर है ?"

"नहीं, बस करीब में ही है ।"

लवलीना ने गलत नहीं कहा था, मुश्किल से दस मिनट बाद ही वह बूढ़े जागीरा की झोपड़ी के सामने पहुँच गये ।

"बूढ़े जागीरा के घर में और कौन-कौन हैं ?" करण सक्सेना का हाथ तेजी से ओवरकोट की उस जेब की तरफ रेंगा, जिसमें रिवॉल्वर थी ।

"कोई नहीं है, बूढ़ा जागीरा यहाँ अकेला रहता है ।"

"गुड !"

करण सक्सेना ने देखा, दूसरी झोपड़ियों की तरह बूढ़े जागीरा की झोपड़ी के दरवाजे पर भी एक बड़ा-सा पत्थर रखा था, जो जानवरों से हिफाजत के लिए रखा गया था ।

"मैं पत्थर हटाता हूँ ।" करण सक्सेना दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

"मैं भी आपकी कुछ मदद करूँ कमांडर ?" रौनक शाह बोला ।

"नहीं, तुम्हारा साँस फूल जायेगा । इस वक़्त तुम सिर्फ अपनी तबियत सम्भालकर रखो ।"

रौनक शाह ठिठक गया ।

करण सक्सेना ने अब अपनी बांहें फैलाकर पत्थर को दोनों तरफ से कसकर पकड़ लिया था और अपने जिस्म की सारी शक्ति एक ही बिंदु पर केंद्रित करके उसने वह पत्थर हटा दिया ।

यह सचमुच हैरतअंगेज बात थी कि इतने भारी-भरकम पत्थर वह आदमखोर रोजाना रात को अपने झोपड़ी के दरवाजे पर रखते थे और दिन निकलने पर हटाते थे ।

पत्थर हटने से हल्की-सी आवाज हुई, जिससे बूढ़े जागीरा की आँख खुल गई ।

"यलाली यू, यलाली यू याला !" अंदर से एक बहुत घरघराई-सी आवाज आई ।

"वह पूछ रहा है ।" लवलीना फुसफुसाई, "कौन है, बाहर कौन है ?"

बूढ़ा जागीरा झोंपड़ी से बाहर आता, उससे पहले ही करण सक्सेना झोंपड़ी के अंदर जा घुसा और रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ गयी ।

रिवॉल्वर कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी ।

जबकि लवलीना ने झपटकर दीवार में लगी मशाल जलाई । सेकेंड के सौवें हिस्से में झोंपड़ी के अंदर रोशनी फैल गयी ।

सामने ही एक घास-फूस का बिस्तर था, जिस पर बूढ़ा जागीरा लेटा हुआ था और आहट सुनकर अभी बस उठने की ही कोशिश कर रहा था । वह भी पूरी तरह निर्वस्त्र था और करण सक्सेना ने देखा, उसकी उम्र वाकई एक सौ बीस साल से किसी भी हालत में कम नहीं थी । वह दस-बीस साल और ज्यादा ही हो सकती थी । उसकी आँखों के पपोटे अब एक-एक इंच नीचे को झूल रहे थे । पूरे जिस्म की खाल लटक गई थी और वह कागज की तरह बिल्कुल पतली थी तथा चुड़चुड़ी हो गई थी ।

"तुम !" करण सक्सेना और रौनक शाह को देखकर वह अफ्रीकन भाषा में बोला और एकदम से उठकर खड़ा हुआ, "तुम दोनों तो वही हो न, जिसकी आज शाम बलि दी जाने वाली थी और जो कैदखाने से भाग खड़े हुए ?"

"हाँ ।" करण सक्सेना रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े निर्विकार अंदाज में बूढ़े जागीरा की तरफ बढ़ा, "हम वही हैं ।"

"और तुम !" बूढ़े जागीरा ने अब लवलीना की तरफ देखा, "तुम सरदार की रखैल लवलीना, वही लवलीना, जिस पर आजकल सरदार कुछ ज्यादा ही मेहरबान है ।"

लवलीना कुछ न बोली ।

उसके चेहरे पर कड़वाहट के भाव उभरे ।

शायद उसे अपने लिये 'रखैल' शब्द अच्छा नहीं लगा था ।

हालांकि वह एक स्ट्रीट वॉकर थी । लेकिन कुछ भी होने से पहले वह जन्मजात तौर पर एक औरत थी । औरत, जो हजार बदफेली करती है । हजार मर्दों के साथ बिस्तर पर सोती है, लेकिन फिर भी उसके दिल के किसी कोने में दबी-खुची-सी यह ख्वाहिश होती है कि मर्द उसके साथ इज्जत से पेश आये । उसे पूरा-पूरा ऐहतराम दे ।

"ओह !" बूढ़ा जागीरा अब लवलीना की तरफ देखता हुआ थोड़े क्रोधित अंदाज में कह रहा था, "तो इन दोनों को कैदखाने से भगाने में तुम्हारा ही हाथ है । यह सारी साजिश तुमने रची ?"

"हाँ !" लवलीना बे-खौफ बोली, "यह सारी साजिश मैंने ही रची ।"

बूढ़ा जागीरा आवेश में लवलीना को मारने के लिये उसकी तरफ झपटा । उसके शरीर में अभी भी बहुत जान थी ।

"ऐ !" करण सक्सेना तुरंत बूढ़े जागीरा और लवलीना के बीच आ खड़ा हुआ, "वहीं रुक जाओ, वहीं ! वरना इस रिवॉल्वर का सारा बारूद तुम्हारे सीने में उतार दूँगा ।"

बूढ़ा जागीरा झटके के साथ रुक गया और कुछ डरा-डरा नजर आने लगा ।

इस बीच रौनक शाह ने भी अपनी रिवॉल्वर निकाल ली और उसे बूढ़े जागीरा की तरफ तान दिया ।

"एक बात समझ लो ।" करण सक्सेना बूढ़े जागीरा को साफ-साफ धमकी देता हुआ बोला, "अगर जरा भी चालाकी दिखाने की कोशिश करोगे, तो अभी यहीं तुम्हारी लाश पड़ी होगी ।"

बूढ़े जागीरा ने अपने शुष्क अधरों पर जबान फेरी ।

वह दूसरे आदमखोरों के मुकाबले कुछ समझदार था, इसलिये ज्यादा बेवकूफी से भरी हरकतें नहीं कर रहा था ।

"त... तुम मेरे पास क्यों आये हो ?" बूढ़े जागीरा ने उससे सीधा मतलब का सवाल पूछा ।

"हमें तुमसे बस एक छोटा-सा काम है । हमारा वह काम कर दो, उसके बाद हम यहाँ से चले जाएंगे ।"

"कैसा काम ?"

कमांडर करण सक्सेना ने रौनक शाह को आँख से इशारा किया ।

रौनक शाह ने तुरंत आगे बढ़कर वह कागज बूढ़े जागीरा को दिखाया, जिस पर आड़ी-तिरछी लकीरें खींची थीं और अजीबोगरीब-सी भाषा में कुछ लिखा हुआ था ।

"इस पर जो कुछ लिखा है ।" करण सक्सेना बूढ़े जागीरा पर रिवॉल्वर ताने-ताने बोला, "वह हम पढ़ चुके हैं । लेकिन यह नक्शा हमारे समझ में नहीं आ रहा है । हमें पता चला है, यहाँ पर यह काम सिर्फ तुम कर सकते हो ।"

बूढ़े जागीरा की निगाहें आड़ी-तिरछी लकीरों पर जाकर ठहर गई ।

"और खबरदार !" करण सक्सेना के स्वर में गुर्राहट पैदा हुई, "हमें कोई गलत बात बताने की कोशिश न करना । क्योंकि हम तब तक तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगे, जब तक संतुष्ट नहीं हो जाते ।"

"लेकिन मैं खुद इस नक्शे को समझ नहीं पा रहा हूँ ।" बूढ़ा जागीरा असमंजसपूर्ण जैसी मुद्रा में बोला ।

करण सक्सेना ने फौरन निर्दयतापूर्वक रिवॉल्वर की बैरल का भीषण प्रहार बूढ़े जागीरा की खोपड़ी पर किया ।

बूढ़ा जागीरा बिलबिलाकर चीखता हुआ दूर झोपड़ी के पथरीले फर्श पर जा गिरा ।

वह उठकर खड़ा होता, उससे पहले ही कमांडर करण सक्सेना उसके नजदीक जा पहुँचा और उसने जूता बूढ़े जागीरा के सीने पर रखा ।

रिवॉल्वर एक मर्तबा फिर उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की भांति घूमी और बूढ़े जागीरा के ऊपर तन गयी ।

"मुझे ज्यादा बहस करने की आदत नहीं है जागीरा !" करण सक्सेना की आँखों में कहर के भाव थे, "मुझे इस नक्शे का जवाब तुमसे चाहिये और जल्दी चाहिये । बताओ, यह किस जगह का नक्शा है ?"

बूढ़ा जागीरा अब करण सक्सेना से डरा-डरा नजर आने लगा ।

वह चाहे कितना ही तंदुरुस्त था, लेकिन उम्र का तकाजा उसके ऊपर हावी था ।

वैसे भी उसकी खोपड़ी दर्द करने लगी थी ।

"जल्दी बोलो ।"

"द... देखो !" बूढ़े जागीरा ने कांपते हुए कहा, "अगर मैंने तुम्हें यह बता भी दिया कि यह किस जगह का नक्शा है, तब भी तुम उस कैदी तक नहीं पहुँच पाओगे, जहाँ उसे कैद किया गया है ।"

"मैं तुमसे सलाह नहीं मांग रहा हूँ ।" करण सक्सेना दहाड़ा, "बल्कि तुमसे उस जगह का पता पूछ रहा हूँ ।"

कमांडर करण सक्सेना ने उसकी पसलियों पर अपने जूते की एक बड़ी जोरदार ठोकर जड़ी ।

और !

उसके बाद रुका नहीं कमांडर !

वह उसके ऊपर धुआँधार लात-घूंसे बरसाने लगा ।

"रुको-रुको ।" बूढ़ा जागीरा चीखा, "मैं बताता हूँ, सब कुछ बताता हूँ ।"

करण सक्सेना रुका ।

"यहाँ हमारे देवता का जो मंदिर है, यह उस जगह का नक्शा है ।" बूढ़े जागीरा ने हाँफते हुए कहा, "त... तुम जिस आदमी को तलाश करते घूम रहे हो, वह आदमी उसी मंदिर के नीचे तहखाने में बंद है ।"

"उस मंदिर के तहखाने में पहुँचने का रास्ता क्या है ?"

"उ... उस मंदिर के बारे में मैं और कुछ नहीं जानता !"

"यह झूठ बोल रहा है ।" लवलीना चीखी, "इस टापू पर ऐसा कोई रहस्य नहीं है, जिसे यह बूढ़ा जागीरा न जानता हो ।"

करण सक्सेना का जूता फिर उसकी पसलियों पर पड़ने के लिए बड़ी द्रुतगति के साथ हवा में उठा ।

"रुको !" बूढ़ा जागीरा आतंकित लहजे में चीखा, "र... रुको, वह भी बताता हूँ ।"

करण सक्सेना का पैर फिर ठिठका ।

बूढ़े जागीरा ने अब उसे तहखाने में पहुँचने का रास्ता भी बताया । तहखाने में पहुँचने का जो रास्ता था, वह वाकई अद्भुत था, हैरतअंगेज था ।

तत्काल कमांडर करण सक्सेना कराटे के एक्शन में आ गया और फिर उसकी एक कराटे चेप बूढ़े जागीरा की खोपड़ी पर पड़ी ।

उसके हाथ-पैर फैल गये ।

"क्या यह मर गया ?" लवलीना चौंकी ।

"नहीं, सिर्फ आठ-दस घण्टे के लिये बेहोश हुआ है । अब यहाँ से जल्दी निकलो और यह बताओ, क्या तुमने इनका मंदिर देखा है ?"

"हाँ, देखा है ।"

तीनों फौरन बाहर की तरफ दौड़े ।

□□□

अब वह छिपते-छिपते बस्ती में दक्षिण दिशा की तरफ दौड़े जा रहे थे ।

कमांडर करण सक्सेना ने एक बात और महसूस की, आज बस्ती के आसपास कुछ ज्यादा पहरा था । जरूर वह उन दोनों के लिए ही था । उसकी वजह से उन तीनों को और भी ज्यादा संभल-संभलकर चलना पड़ा था । जल्द ही बस्ती खत्म होने लगी और जंगल शुरू हो गया ।

"क्या मंदिर जंगल के अंदर बना है ?" रौनक शाह ने पूछा ।

"हाँ, बस थोड़ा ही आगे है । जंगल में दाखिल होने के बाद हमें लगभग एक किलोमीटर और पैदल चलना होगा ।"

"ओह !"

वह तीनों जंगल में दाखिल हो गये ।

वह एक आदमखोर था, जो झाड़ियों में से निकलकर एकदम झटके से उनके सामने कूदा और फिर उन्हें कच्चा चबा जाने के लिए उनकी तरफ झपटा ।

वह आदमी का गोश्त खाने के लिए जरूरत से कुछ ज्यादा ही उतावला हो रहा था ।

बार-बार अपने मुँह से अजीब-अजीब आवाजें निकालता, लेकिन उसका मुकाबला भी कमांडर करण सक्सेना जैसी शख्सियत से था ।

कमांडर ने इस बार रेसलिंग का दांव इस्तेमाल किया । आदमखोर जहाँ अपने दाँतों से बार-बार उसके शरीर का मांस उखाड़ डालना चाहता था, वहीं करण सक्सेना ने जैसे ही ड्रैग ट्रैप दांव इस्तेमाल किया, तो वह चक्कर खाता हुआ धड़ाम से नीचे गिरा ।

वह संभल पाता, उससे पहले ही करण सक्सेना ने आर्म अंडर डाइव खेला ।

उसने आदमखोर की दोनों जांघों के बीच में हाथ देकर उसे झटके से ऊपर हवा में उठा दिया तथा फिर उसे वही रखें एक पत्थर पर जोर से पटका ।

आदमखोर की खोपड़ी तरबूज की तरह फट पड़ी और पूरे पत्थर पर खून ही खून फैल गया।

"माई गॉड !"

लवलीना की आँखों में दहशत के भाव उभर आये।

उसने करण सक्सेना का वह रौद्र रूप पहली बार देखा था।

"अभी यहाँ ज्यादा समय बर्बाद मत करो।" करण सक्सेना बोला, "आगे बढ़ो।"

तीनों फिर आगे बढ़े।

□□□

जंगल में अभी उन्होंने थोड़ा ही फासला तय किया होगा कि इस बार उन्हें पहले से भी ज्यादा बड़े संकट का सामना करना पड़ा।

वह पहरा देने वाले आदमखोरों का एक पूरा का पूरा झुंड था, जो एकदम से उनके पीछे लग गया।

उन सबके हाथ में मशालें थीं।

इतना ही नहीं, वह उन्हें देखकर जोर-जोर से चिल्लाने भी लगे।

"यम, यम याचूका !"

"यम, यम, याचूका !"

उनकी आवाज बुलंद थी।

आदमखोरों को देखकर वह तीनों बेतहाशा भागे तो आदमखोर भी उनके पीछे झपटे।

जल्द ही उन तीनों ने आदमखोरों को काफी पीछे छोड़ दिया।

मगर जल्द ही उन्हें मालूम हुआ, ऐसा सोचना उनका वहम था कि उन्होंने आदमखोरों को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने जंगल में एक शॉर्टकट रास्ते से आदमखोरों को अपनी तरफ आते देखा।

"भागो !" रौनक शाह चीखा।

वह और भी जी-जान लगाकर भागे।

"देखो।" करण सक्सेना भागते-भागते बोला, "इन आदमखोरों से पीछा छुड़ाना कोई आसान बात नहीं है, क्योंकि यह हमारे जिस्म की गंध सूंघकर हमारा पीछा कर रहे हैं। अगर हम उन्हें धोखा देकर आगे चले भी जाएंगे, तो हमारी गंध की बदौलत यह फिर बहुत सहजता के साथ हमें ढूंढ निकालेंगे।"

"फिर हम क्या करें कमांडर ?" रौनक शाह बोला।

"इसका एक दूसरा तरीका है।"

"क्या ?"

"रुक जाओ ।"

करण सक्सेना के साथ-साथ वह दोनों भी रुक गये । उन्होंने पलटकर देखा, फिलहाल आदमखोरों का झुंड उन्हें नजर तो नहीं आ रहा था, लेकिन उनके कोलाहल की आवाजें निरंतर उनके कानों में पड़ रही थीं और उसी से जाहिर था, आदमखोर उनसे ज्यादा दूर नहीं थे ।

"जल्दी से अपने शरीर का एक-एक कपड़ा उतार डालो ।"

"उससे क्या होगा ?"

रौनक शाह और लवलीना के चेहरे पर उत्सुकता के भाव थे ।

"जैसा मैं कह रहा हूँ, वैसा करो ।"

कमांडर करण सक्सेना ने जहाँ अपना ओवरकोट उतारा, वहीं उन दोनों ने भी अपने-अपने शरीर का एक-एक कपड़ा उतार डाला ।

"अब जल्दी से मेरे पीछे-पीछे कुछेक पेड़ों की परिक्रमा करो ।"

"लेकिन... ।"

"जल्दी ।" करण सक्सेना गुर्राया, "यह सवाल-जवाब का समय नहीं है ।"

करण सक्सेना ने फौरन एक पेड़ के गिर्द गोल-गोल चक्कर काटने शुरु कर दिये ।

वह दोनों भी उसके पीछे-पीछे घूमने लगे ।

अलबत्ता समझ उनके कुछ नहीं आ रहा था ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना ने इस बार एक बहुत दूर की कौड़ी चली थी । दरअसल वह यह तो भाँप ही गया था कि आदमखोर उसके जिस्म की गंध सूंघकर उनका पीछा कर रहे हैं, इसलिये उसने कुछेक पेड़ों के इर्द-गिर्द घूमकर वहाँ तीनों के शरीर की गंध अच्छी तरह रचा-बसा दी, ताकि आदमखोर जैसे ही वहाँ आयें, तो वह यह सोचकर कंफ्यूज हो जायें कि कहीं यह तीनों उसी जगह तो छिपे हुए नहीं हैं ।

इसके अलावा कमांडर ने अपने-अपने शरीर का एक-एक कपड़ा भी अलग-अलग पेड़ों पर डाल दिया ।

इससे उनके शरीर की जहाँ गंध बढ़ी, वहाँ ऐसा माहौल भी बना जैसे वह पेड़ों पर मौजूद हो ।

"चलो ।" फिर करण सक्सेना बोला, "अब आगे बढ़ो ।"

वह तीनों पहले की तरह मंदिर की तरफ दौड़े ।

लेकिन थोड़ा आगे जाकर जब उन्होंने पीछे की तरफ पलटकर देखा, तो पाया कि कमांडर करण सक्सेना की तरकीब काम कर गई थी ।

आदमखोर अब उन्हीं पेड़ों के नजदीक रुक गये थे और इधर-उधर घूमते हुए उन्हें तलाश कर रहे थे । फिर उन्होंने जहर बुझे तीरों और फरसों से उन पेड़ों पर हमला भी बोल दिया, जिन पर कपड़े पड़े हुए थे ।

"इससे पहले कि उन्हें हमारी चालाकी पता चले ।" करण सक्सेना बोला, "हमें मंदिर पहुँच जाना चाहिये ।"

वह और भी ज्यादा तेजी के साथ मंदिर की तरफ दौड़ पड़े ।

□□□

भागते-भागते रौनक शाह ने अपनी जेब से इनहेलर निकाल लिया और उसकी दवाई मुँह में स्प्रे की ।

मगर पूरी तरह उससे भी कुछ बात न बनी ।

उसकी साँस थी कि उखड़ती जा रही थी और चेहरे की रंगत हर पल पहले से ज्यादा सुर्ख हो उठती थी ।

वह तीनों भागते हुए किसी तरह मंदिर पहुँचे ।

मंदिर पहुँचते ही कमांडर करण सक्सेना को एक और जबरदस्त झटका लगा । वहाँ मारकोपोलो तथा लिंगफू पहले से ही मौजूद थे और उनके साथ चार आदमखोर और थे, जिनकी गणना बस्ती के सबसे दुर्दांत आदमखोरों में होती थी ।

मारकोपोलो उन तीनों को देखकर मुस्कुराया ।

उसके हाथ में रिवॉल्वर थी । उन्हें देखते ही वह रिवॉल्वर उनकी तरफ तन गई ।

"हैलो !" मारकोपोलो गरमजोशी के साथ बोला, "हम जानते थे, तुम अगर भाग खड़े हुए हो, तो आज रात यहाँ जरूर पहुँचोगे । तुमने यहाँ पहुँचना ही था । क्योंकि यहाँ फारूख अहमद मसूदी मौजूद है, जो आज की तारीख में कोहिनूर हीरे से भी ज्यादा कीमती है ।"

उन तीनों के चेहरे का रंग निचुड़ गया ।

"और माई हनी डार्लिंग, तुम !" मारकोपोलो टहलता हुआ लवलीना कि नजदीक पहुँचा, "वाकई बेहद चालाक निकली तुम । मेरा शक सही ही था कि कैदखाने से निकालने में इनकी इनसाइड हेल्प की गई थी और वह इनसाइड हेल्प तुमने की थी ।"

लवलीना कुछ न बोली ।

वह बोलती भी क्या, आखिर वह रंगों हाथों पकड़ी गई थी ।

"बहरहाल, अब तुम तीनों का अंत समय आ चुका है ।" मारकोपोलो बोला, "तुम्हारी जो बलि शाम को ही दी जाने वाली थी, वह अब दी जायेगी और सुबह तुम तीनों के गोश्त की दावत उड़ेगी ।"

मारकोपोलो के अभी शब्द भी पूरे नहीं हुए थे कि लवलीना बौखलाहट में एक कदम उठा बैठी ।

वह मुड़ी और वहाँ से भागी ।

वह सब दरअसल उस समय मंदिर के प्रांगण में जमा थे । मंदिर के प्रांगण में जगह-जगह चट्टानें रखी हुई थीं और वह एक खास आकार लिए थीं ।

लवलीना जैसे ही भागी तुरंत चारों आदमखोरों ने तथा मारकोपोलो और लिंगफू ने उसके ऊपर हमला बोल दिया ।

अब करण सक्सेना और रौनक शाह भी वहाँ से भागने पर विवश हो गये ।

"फौरन चट्टानों के पीछे छिप जाओ ।" करण सक्सेना ने भागते हुए चीखकर कहा, "चट्टानों के पीछे ।"

आदेश देने की देर थी, रौनक शाह और लवलीना अलग-अलग चट्टानों के पीछे छुप गये । खुद कमांडर करण सक्सेना भी एक चट्टान के पीछे छिपा और उसने पोजीशन संभाली ।

"तुम लोग चाहे कितनी भी चालाकी दिखा लो ।" मारकोपोलो बोला, "लेकिन अब तुम लोग इस टापू से जिंदा बचकर नहीं भाग सकोगे । आज की रात तुम्हारे लिए कयामत की रात होगी ।"

रिवॉल्वर अब कमांडर करण सक्सेना के हाथ में भी आ चुकी थी ।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही वह उंगलियों के गार्ड फिरकनी की तरह घूमी । फिर एकाएक कमांडर करण सक्सेना चट्टान के पीछे से किसी देव की तरह बाहर निकला और उसने सामने खड़े लिंगफू पर गोली चलाई ।

लिंगफू की गगनभेदी चीख से मानो पूरा जंगल दहल उठा ।

गोली ठीक लिंगफू के सीने में जाकर लगी थी । वह दहाड़ा और मुँह के बल धड़ाम से आगे की तरफ गिरा । गिरते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये ।

उसी पल रौनक शाह ने भी अपनी चट्टान के पीछे से निकलकर गोलियाँ चलाई । दो आदमखोर और दहाड़ते हुए प्रांगण में गिरे ।

इससे मारकोपोलो बौखला उठा ।

तभी करण सक्सेना की निगाह रौनक शाह पर पड़ी । वह अब पहले की तरह चट्टान के पीछे छुपा हुआ था, लेकिन करण सक्सेना ने देखा, उसकी हालत अब ठीक नहीं थी । वह बार-बार अपना मुँह भींच रहा था और कभी गला दबाने लगता ।

कमांडर के देखते ही देखते रौनक शाह को अस्थमे का बड़ा भयानक दौरा पड़ गया और रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर उसके घुटनों के पास जा पड़ी ।

"रौनक !" करण सक्सेना तीव्र स्वर में चीखा ।

लेकिन रौनक शाह पर कोई प्रतिक्रिया न हुई ।

उसी पल करण सक्सेना ने देखा, मारकोपोलो दबे पाँव लवलीना वाली चट्टान की तरफ बढ़ रहा था ।

करण सक्सेना ने फौरन उसे निशाना बनाकर कई गोलियाँ चलाई । मारकोपोलो की दहशतनाक चीख निकल गई ।

एक गोली ठीक मारकोपोलो के उस हाथ में जाकर लगी थी, जिसमें उसने रिवॉल्वर पकड़ा हुआ था ।

उसका पूरा हाथ झनझना उठा और रिवॉल्वर छूटकर नीचे गिरी ।

□□□

तभी एक ऐसी घटना घटी, जिसने कमांडर को दहलाकर रख दिया ।

एक आदमखोर न जाने कैसे रौनक शाह वाली चट्टान के पीछे पहुँच गया था और वहाँ पहुँचते ही उसने रौनक शाह को निशाना बनाकर जहर से बुझा तीर चला दिया ।

"क... कमांडर !"

रौनक शाह वीभत्स अंदाज में चीखा ।

तीर सीधा उसकी पसलियों में जा घुसा था ।

करण सक्सेना की निगाह फौरन रौनक शाह की तरफ गई । जबकि तीर चलाने के बाद भी रुका नहीं था आदमखोर । वह अफ्रीकन तेंदुए की तरह रौनक शाह के ऊपर झपट पड़ा था और फिर उसने ब्लेड जैसे अपने पैने दांत रौनक शाह की पीठ में गड़ा दिये तथा फिर झटके के साथ अपना मुँह पीछे खींचा ।

रौनक शाह फिर दहशतनाक अंदाज में बिलबिलाया ।

उसकी पीठ का ढेर सारा मांस उखड़कर अब आदमखोर के मुँह में दबा नजर आ रहा था । फिर आदमखोर उस कच्चे मांस को ही जल्दी-जल्दी चबा गया ।

लवलीना उस मंजर को देखकर बुरी तरह चीखने लगी ।

उधर आदमखोर, रौनक शाह के शरीर का और मांस उखाड़ता, करण सक्सेना ने फायर कर दिया ।

आदमखोर डकराता हुआ वहीं रौनक शाह के शरीर के पास ढेर हो गया ।

फिर कमांडर करण सक्सेना की निगाह मारकोपोलो की तरफ उठी ।

एक के बाद एक अपने आदमियों को ढेर होते देख मारकोपोलो घबरा गया था और अब वह बड़ी तेजी के साथ लिंगफू की रिवॉल्वर की तरफ झपटा ।

लेकिन कमांडर के रहते वह मौका भी उसे नहीं मिला ।

कमांडर ने फायर कर दिया ।

गोली लिंगफू की रिवॉल्वर में लगी और वह उछलकर उससे कई मीटर दूर जाकर गिरी ।

उसके बाद करण सक्सेना एकदम खुले मैदान में आ गया ।

वह और मारकोपोलो अब आमने-सामने थे ।

मारकोपोलो भूखे शेर की तरह करण सक्सेना की तरफ झपटा और उसने अपने दाँतों से उसके शरीर का मांस नोच लेना चाहा ।

लेकिन उसे नहीं मालूम था, उसका मुकाबला कमांडर करण सक्सेना से है ।

मार्शल आर्ट के ऐसे जबरदस्त योद्धा से, जिससे आज तक कोई भी नहीं जीत पाया था ।

मारकोपोलो जैसे ही उसकी तरफ झपटा, कमांडर कराटे के खौफनाक एक्शन में आ गया । उसने उरेकान का एक भीषण प्रहार उसके पेट में किया तथा फिर हिजागिरी का दांव खेला ।

मारकोपोलो की आँखों के सामने अनार छूट पड़े ।

वह बिलबिला उठा ।

जल्दी से संभलकर वह फिर करण सक्सेना की तरफ झपटा ।

लेकिन करण सक्सेना ने इस बार रेसलिंग का शोल्डर थ्रो इस्तेमाल किया ।

मारकोपोलो धड़ाम से नीचे गिरा ।

फिर करण सक्सेना ने तुरंत उसके गले में अपनी बांह का मजबूत फंदा जकड़ दिया और रिवॉल्वर उसकी खोपड़ी पर रखी ।

"मारकोपोलो !" करण सक्सेना दांत किटकिटाता हुआ विषधर की भांति फुफकारा, "बलि आज की रात हमारी नहीं, तुम्हारी दी जायेगी, तुम्हारी । और हो सकता है, सुबह इस बस्ती के लोग तुम्हारे ही गोश्त की दावत उड़ाये । आखिर यह जंगली हैं, इन्हें सिर्फ इंसानी गोश्त चाहिये, चाहे वह उनके सरदार का ही क्यों न हो ।"

"न... नहीं ।" मारकोपोलो भयभीत हो उठा ।

"यह सच है मारकोपोलो ! कभी-कभी इंसान खुद उसी कुएँ में जा गिरता है, जो उसने दूसरे के लिए खोदा होता है । गुड बाय एंड गुड लक ।"

रिवॉल्वर कमांडर करण सक्सेना की उंगलियों के गिर्द पुनः फिरकनी की भांति घूमी और फिर ट्रिगर दबा ।

मारकोपोलो की खोपड़ी किसी तरबूज की तरह फट पड़ी ।

उसे चीखने तक का अवसर मिला ।

□□□

लवलीना अब रौनक शाह के पास थी और जोर-जोर से उसका शरीर झंझोड़ रही थी ।

रौनक शाह, जिसकी साँस उल्टी-सीधी चल रही थी ।

उसके शरीर के आसपास खून का तालाब बन गया और जहर बुझे तीर की बदौलत उसके जिस्म की रंगत हर पल नीली पड़ती जा रही थी ।

कमांडर करण सक्सेना भी दौड़कर रौनक शाह के पास पहुँचा और उसने उसका शरीर अपनी बांहों में भरा ।

रौनक शाह भी उसकी गोद में इस तरह सिमट गया, मानो किसी बच्चे को आसरा मिल गया हो । उसने करण सक्सेना का हाथ अपने कँपकँपाते हाथों में कसकर पकड़ा तथा फिर बहुत भाव-विह्वल नेत्रों से उसके चेहरे की तरफ देखा ।

उसकी आँखों में प्यार था ।

करुणा थी ।

"त... तुमने सच कहा था कमांडर !" वह लरजते स्वर में बोला, "यह अस्थमा की बीमारी किसी दिन मुझे लेकर डूबेगी और... और आज यह मुझे लेकर डूब ही गई ।"

"नहीं ।" करण सक्सेना ने उसे अपनी बांहों में समेटा, "तुम्हें कुछ नहीं होगा रौनक शाह, कुछ नहीं होगा । मैं हूँ न ।"

रौनक शाह के चेहरे पर मुस्कुराहट पैदा हुई ।

"म... मैं बच्चा नहीं हूँ कमांडर, जिसे बहलाया जा सके ।" वह अपनी उठती-गिरती साँसों के बीच बोला, "मैं जानता हूँ, मुझे जो होना था, वह हो चुका है । अ... अब मेरे चक्कर में अपना समय बर्बाद मत करो । जल्दी से जाकर फारूख अहमद मसूदी को आजाद कराओ । वैसे... वैसे भी गोलियाँ चलने की आवाज पूरी बस्ती में गूँजी होगी । अ... और अब यहाँ बड़ी संख्या में आदमखोर बस आने ही वाले होंगे ।"

"लेकिन... ।"

उसी पल रौनक शाह की साँस और भी ज्यादा तेज-तेज चलने लगी ।

"रौनक-रौनक !" करण सक्सेना चीखा ।

उसने शीघ्रतापूर्वक उसकी जेब से इनहेलर निकाला और उसकी ढेर सारी दवाई उसके मुँह में स्प्रे की ।

लेकिन फिर भी रौनक शाह की साँस न संभली ।

"क... कमांडर !" वह बस धीरे-धीरे एक ही बात बड़बड़ा रहा था, "ज... जल्दी करो, जल्दी ।"

और फिर उसकी वह बड़बड़ाहट भी बंद हो गई ।

वह खामोश हो गया था और उसकी वह खामोशी चिरकालिक खामोशी थी । उसकी गर्दन दाईं तरफ जा पड़ी ।

करण सक्सेना के सीने पर जोरदार घूंसा पड़ा ।

"क्या यह मर गया ?" लवलीना हतप्रभ लहजे में बोली ।

"हाँ, यह मर चुका है ।" करण सक्सेना बेइंतहा अफसोस के साथ उसकी आँखें बंद करता हुआ बोला, "लेकिन यह शहीद हुआ है, इसने अपने देश के लिए कुर्बानी दी है ।"

"शहीद, क्या मतलब ?"

"तुम फिलहाल इस राज को नहीं समझोगी ।"

करण सक्सेना ने खड़े होकर अपना क्लेंसी हैट उतारा तथा फिर रौनक शाह को एक जोरदार सेल्यूट मारा ।

ऐसा लग रहा था, जैसे चंद्रमा के ऊपर बादल का कोई टुकड़ा आ गया हो जिसने उस रात को और भी अंधेरी बना दिया था ।

□□□

उसके बाद कमांडर करण सक्सेना और लवलीना मंदिर के अंदर दाखिल हुए ।

वह भी पत्थर का बना हुआ एक काफी बड़ा मंदिर था, जिसके हॉल में सामने की तरफ एक आठ बाई छः का काफी बड़ा चबूतरा बना हुआ था और उस चबूतरे पर पत्थर की एक मूर्ति विद्यमान थी । वह उन आदमखोरों के देवता की मूर्ति थी, जो अत्यंत विशालकाय थी । गले में काफी सारे नरमुंड थे । करण सक्सेना ने देखा, उस मूर्ति के बारह हाथ थे और सभी हाथों में बड़े-बड़े साइज के काफी बड़े अलग-अलग फरसे थे । उनमें कोई भी फरसा ऐसा नहीं था, जो दूसरे फरसे से मेल खाता हो ।

इसके अलावा उस पत्थर की मूर्ति के सीने में भी एक काफी बड़ा छेद था, जो किसी वस्तु का खांचा मालूम हो रहा था ।

"क्या यही तहखाने में पहुँचने वाले रास्ते का खांचा है ?" लवलीना व्यग्रतापूर्वक बोली ।

"हाँ ।"

"और इसकी चाबी कहाँ है ?" लवलीना के चेहरे पर कौतूहलता के भाव थे ।

"इसकी चाबी इन्हीं में से एक फरसा है ।"

कमांडर करण सक्सेना अब चबूतरे पर चढ़ गया और उसने मूर्ति के दायीं तरफ वाले पाँचवें हाथ में जो फरसा था, उसे पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया ।

वह फरसा बिना किसी मुश्किल के मूर्ति की मुट्ठी में से निकलकर करण सक्सेना के हाथ में आ गया । अगले ही पल करण सक्सेना ने उस फरसे को नोक की तरफ से मूर्ति के सीने वाले खांचे में उतार दिया ।

उसके बाद जो कुछ हुआ, वह किसी चमत्कार से कम नहीं था ।

एकाएक पत्थर का चबूतरा घूमने लगा, जिस पर कमांडर करण सक्सेना खड़ा था। ऐसा लग रहा था, जैसे वह किसी गरारी पर घूम रहा हो।

करण सक्सेना तुरंत उस चबूतरे से उतर गया।

देखते ही देखते वह पत्थर का चबूतरा एक तरफ हट गया और फिर नीचे तहखाने में जाने वाली सीढ़ियाँ नजर आने लगीं।

कमांडर करण सक्सेना और लवलीना वह सीढ़ियाँ उतरते चले गये।

वह तहखाने में पहुँचे।

रिवॉल्वर अभी भी करण सक्सेना के हाथ में थी।

तहखाने में उस वक्त ऐसा घुप्प काजली अंधेरा फैला था कि हाथ को हाथ भी सुझाई देना मुश्किल था।

"यहाँ तो कुछ नजर ही नहीं आ रहा है।" लवलीना बोली।

"अभी रोशनी का भी बंदोबस्त करता हूँ।"

करण सक्सेना ने लाइटर निकालकर पहले वहाँ मशाल टटोली और फिर उसे रोशन किया।

मशाल जलते ही उन्हें वहाँ सबसे पहले जो शख्स दिखाई पड़ा, वह फारूख अहमद मसूदी ही था।

वह एक कोने में बैठा हुआ था और जैसे ही मशाल रोशन हुई, वह जल्दी से उस कोने में अंदर की तरफ दुबकने की कोशिश करने लगा। उसके चेहरे पर उस वक्त वहशियाना भाव थे और वह बहुत बुरी स्थिति में था। जैसे उसकी शेव बढ़ी हुई थी, कपड़े तार-तार करके फटे हुए थे और ऐसा लग रहा था, मानो कोई राज उगलवाने के लिए उसे बुरी तरह टॉर्चर किया गया था।

"नहीं-नहीं।" करण सक्सेना और लवलीना को देखते ही वह सूखे पत्ते की तरह कंपकंपाने लगा और दीवार में जबरदस्ती अंदर की तरफ घुसने की कोशिश में जुट गया, "म... मैंने कुछ नहीं किया। मैं निर्दोष हूँ। मैंने अपनी बेटियों को नहीं मारा। वह... वह तो अपने आप मर गयीं। मैं उनका बाप हूँ, मैं उन्हें भला कैसे मार सकता था ! इन हाथों से उनका गला कैसे घोंट सकता था, जिन हाथों से कभी उन्हें पाला। यह देखो, इ... इन हाथों पर कहीं भी खून के निशान नहीं है। कहीं भी नहीं है।" वह करण सक्सेना को अपने हाथ उलट-पुलटकर दिखाने लगा और फिर उसने जल्दी से अपने हाथ पीठ के पीछे छुपा लिए।

जैसे उसे उन पर कहीं खून लगा हुआ नजर आ गया था।

जबकि उसके वह शब्द सुनकर करण सक्सेना के दिमाग पर हथौड़े से पड़ते चले गये। उसे ऐसा लगा, जैसे नगाड़े पर कोई जोर-जोर से चोट करने लगा हो।

"कहीं... कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये ?"

मसूदी एकाएक बहुत जोर से खिलखिलाकर हँस पड़ा ।

उसकी हँसी बहुत डरावनी थी ।

"ज... जानते हो, मैं कौन हूँ ?" वह दीवार से चिपका-चिपका करण सक्सेना की तरफ आँख दिखाकर बोला, "मैं फारूख अहमद मसूदी हूँ । सारी दुनिया में मेरे से बड़ा वैज्ञानिक कोई नहीं है, फिर मैं पागल कैसे हो सकता हूँ ।"

वह बात कहकर फारूख अहमद मसूदी और भी ज्यादा जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगा ।

जबकि कमांडर करण सक्सेना भौंचक्की निगाहों से उसे देख रहा था ।

कुछ ऐसी ही हालत लवलीना की थी ।

"मालूम !" फिर एकाएक मसूदी की हँसी को ब्रेक लगे । वह रहस्यमयी अंदाज में फुसफुसाया, "मैंने एक ऐसा फॉर्मूला ईजाद किया है, जो पानी से पेट्रोल बन जायेगा । फिर सारी दुनिया की गाड़ियाँ पानी से चलेंगी । पेट्रोल की कहीं कोई मुश्किल ही नहीं रहेगी । लेकिन... लेकिन मैंने वह फॉर्मूला आज तक किसी को भी नहीं बताया है... किसी को भी नहीं ।"

"अच्छा ।"

"बिल्कुल ।"

करण सक्सेना अब धीरे-धीरे फारूख अहमद मसूदी की तरफ बढ़ा ।

"इस समय वह फॉर्मूला कहाँ है ?" करण सक्सेना की आवाज भी रहस्यमयी थी ।

"बताऊँ ?"

"हाँ ।"

"किसी दूसरे से कहोगे तो नहीं ?"

"बिल्कुल नहीं ।" करण सक्सेना ने सख्ती के साथ इनकार में गर्दन हिलाई ।

"ठीक है, तो फिर पहले मेरी कसम खाओ ।"

फारूख अहमद मसूदी का बर्ताव एकाएक बिल्कुल बच्चों जैसा हो गया था ।

"तुम्हारी कसम ।"

"अब ठीक है । मैं तुम्हें बताता हूँ । तुम सचमुच कोई अच्छे आदमी हो । वह फॉर्मूला यहाँ पर है ।" फारूख अहमद मसूदी ने अपना सिर खटखटाया, "मेरे दिमाग में ।"

"वह दिमाग से बाहर कैसे आयेगा ?"

मसूदी फिर जोर-जोर से हँसने लगा ।

"वह दिमाग से बाहर कभी नहीं आयेगा । कभी नहीं । क्योंकि उसे मैं खुद भूल चुका हूँ ।" फारूख अहमद मसूदी उठकर खड़ा हो गया और फिर जोर-जोर से ताली बजाता हुआ चारों तरफ नाचने लगा ।

उछलने लगा ।

कमांडर करण सक्सेना के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी ।

जिस आदमी की तलाश में वह इतना दर-ब-दर भटका था, जिसकी तलाश में इतना हंगामा हुआ था और कई लोग मारे गये थे, वह आदमी आज उससे मिला भी था तो किस हालत में !

कम से कम कमांडर को अब इस मामले में शक-शुबहे की कहीं कोई गुंजाइश नहीं बची थी कि फारूख अहमद मसूदी पागल हो गया था ।

"आश्चर्य है !" लवलीना विस्मित निगाहों से मसूदी को नाचता देखकर बोली, "तुमने इसी पागल आदमी के लिए अपनी जान खतरे में डाली और इस टापू तक आये । मैं तो अपनी आँखों पर यकीन नहीं कर पा रही हूँ ।"

"यकीन मुझे भी नहीं हो रहा है ।" करण सक्सेना ने गहरी साँस छोड़ी, "क्योंकि यह आदमी इस रूप में मुझे यहाँ मिलेगा, मैंने भी नहीं सोचा था । तुम नहीं जानती, पागल होने के अलावा भी इस आदमी की अपनी एक पहचान है । अपनी एक आईडेंटिफिकेशन है । इस समय वह आइडेंटिफिकेशन कोई छोटी आईडेंटिफिकेशन नहीं है । इस समय यह हँस रहा है, तो इसकी हँसी में भी बहुत कुछ छिपा है । ढेर सारा दर्द ! ढेर सारी तड़प ! ढेर सारी ऐसी टीस जिसका कहीं कोई अंत नहीं । जानती हो, कुछ लोग दूसरों के सताए होते हैं, जब कोई दूसरा सताता है तो इतना दर्द नहीं होता । क्योंकि पराया तो पराया है, मगर जब कोई अपना सताता है तो मन में ज्वार-भाटा-सा उमड़ पड़ता है और यह आदमी अपनों का सताया हुआ है । इसने जिस मुल्क की खुशहाली के लिए जिंदगी बसर करनी चाही, उसी मुल्क ने आज इसे इस हालत में पहुँचा दिया है । जानती हो, इसने अपनी दो जवान-जहान बेटियों का खुद अपने हाथों से गला घोंटा है और बेहद मजबूरी में घोंटा है । क्योंकि उनकी आबरू पर लगा दाग यह बर्दाश्त नहीं कर सका था और अब अपराध बोध के कारण यह आदमी पागल हो गया है । इसके दिमाग का तवाज्जुन हिल गया है ।"

लवलीना हैरानी से कमांडर करण सक्सेना को देखती रह गई ।

अभी थोड़ी देर पहले जब वह आदमी आदमखोरों का खून कर रहा था, तो वह उसे इस दुनिया का सबसे निर्दयी व्यक्ति लगा था ।

लेकिन अब उसे महसूस हो रहा था, यह पूरी तरह सच नहीं था ।

वह जज्बातों से भरा एक खूबसूरत दिल भी रखता था ।

□□□

उसके बाद उन्हें उस टापू से बाहर निकलने में कोई परेशानी नहीं हुई ।

इससे पहले कि आदमखोरों का झुंड मंदिर तक पहुँचता, कमांडर करण सक्सेना, लवलीना और फारूख अहमद मसूदी को लेकर वहाँ से निकल गया था ।

वह एयरबैग कमांडर और रौनक शाह झाड़ियों में ही छिपा आये थे, जिसमें गोताखोरों की ड्रेस थी । वापसी में करण सक्सेना ने वह दोनों ड्रेसें निकाली । एक ड्रेस वह पहले से ही फारूख अहमद मसूदी के लिए फालतू लाए थे ।

अलबत्ता रौनक शाह वाली ड्रेस लवलीना ने पहनी ।

उसके बाद उन तीनों ने वह दो किलोमीटर लंबा रास्ता तय किया । करण सक्सेना ने ही मसूदी को कब्जाया हुआ था और वह अपने साथ-साथ उसे भी लेकर तैर रहा था ।

वह नाव भी उन्हें किस्मत की बदौलत वहाँ मिल गई, जहाँ वह उसे छोड़ आये थे । दरअसल वहाँ रेत का एक टीला था, जिसके सहारे वह नाव रुक गई थी ।

कुल मिलाकर कमांडर करण सक्सेना, फारूख अहमद मसूदी को लेकर हिंदुस्तान लौटा ।

हालांकि उसे जो मिशन सौंपा गया था, उसने उसे अंजाम दे दिया था, मगर फिर भी उस मिशन की कामयाबी से किसी को भी खुशी हासिल नहीं हुई ।

फारूख अहमद मसूदी हालांकि जिंदा था, लेकिन एक वैज्ञानिक के तौर पर उसकी मौत हो चुकी थी ।

एक वैज्ञानिक मर चुका था और उस वैज्ञानिक की मौत का खुद उसका अपना मुल्क जिम्मेदार था ।

उस मिशन में दर्द था ।

पीड़ा थी ।

कमांडर करण सक्सेना बहुत कम इमोशनल होता था, लेकिन फारूख अहमद मसूदी की हालत ने उसे भी भावुक कर दिया था ।

ए थिंग इज वैल्यूड वेयर इट बिलोंग्ज ।

समाप्त